

श्री कामाख्या-रहस्यम्

श्री कामाख्या-रहस्यम्



योगेश्वरानन्द एवं मुमित गिरधरदाल



योगेश्वरानन्द एवं मुमित गिरधरदाल



योगेश्वरानन्द

वी. श्रीकामाख्यालालं द्वारा लिखित
ब्रह्म ग्रन्थ

- श्री कामाख्यालालं द्वारा लिखित
- श्रीकामाख्यालालं
(लीला पूजा चर्चा)
- ब्रह्म ग्रन्थ
- ब्रह्म ग्रन्थ
- श्री कामाख्यालालं
- श्री कामाख्यालालं द्वारा लिखित
- ब्रह्म ग्रन्थ

ब्रह्मगीता शुभार्थ

- श्रीकामाख्यालालं द्वारा लिखित
- श्रीकामाख्यालालं
- ब्रह्मगीता शुभार्थ
- श्रीकामाख्यालालं द्वारा लिखित
- श्रीकामाख्यालालं द्वारा लिखित
- श्रीकामाख्यालालं द्वारा लिखित
- श्रीकामाख्यालालं द्वारा लिखित



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

श्री कामाख्या-रहस्यम्

रविशशियुतकर्णं कुंकुमापीतवर्णं,
 मणिकनकविचित्रा लोलजिह्वा त्रिनेत्रा।
 अभयवरदहस्ता साक्षसूत्रप्रहस्ता,
 प्रणतमुरनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
 अरुण-कमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था,
 नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।
 शबहृदि पृथुतुंगा स्वांघ्रि, युग्मा मनोज्ञा,
 शिशुरविसमवस्था सर्वकामेश्वरी सा।
 विपुलविभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी,
 दलितकरकदन्ता सामिचन्द्रावनध्रा।
 मनसिज-दृशदिस्था योनिमुद्रांलसन्ती,
 पवनगगनसक्तां संश्रुतस्थानभागा॥
 चिन्त्या चैव दीप्यदग्निप्रकाशा,
 धर्मार्थाद्यैः साधकैर्वाजितार्थः॥

लेखक एवं संकलयिता
 योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल



प्रकाशक
आस्था प्रकाशन मन्दिर
 दिल्ली • बागपत

श्री कामाख्या-रहस्यम्

योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरबाल

चेतावनी –

श्री चृद्धि और सुख-शानि के लिए मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र साधनाओं का विशेष महत्व है। परन्तु यदि किसी साधक को प्रसन्नत पुस्तक में वीर्य साधना के प्रयोग में विधिगत, वस्तुगत अशुद्धता अथवा त्रुटि के कारण किसी भी प्रकार की बलेशजनक हानि होती है, अथवा कोई अनिष्ट होता है, तो इसका उत्तरदायित्व स्वयं उसी का होगा। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक उसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। अतः कोई भी प्रयोग योग्य व्यक्ति के संरक्षण में ही करें।

© : लेखक (सर्वाधिकार लेखकाधीन)

ISBN : 978-93-5300-470-5

अनुवाद-मूल्य : 360/- रुपये

प्रथम संस्करण : 2018

शब्द-संयोजक : अतुल ग्राफिक्स, ट्रॉनिका मिटी, गाजियाबाद (उप्र०)

मुद्रक : सागर प्रिंटर्स, दिल्ली

प्रकाशक/सम्पादक : आस्था प्रकाशन मन्दिर,
‘हेम कुंज’ कोटे रोड, गली नं. 6, भजन विहार कॉलोनी,
बागपत-250609 (उप्र०)

Phone : 9410030994, 9540674788

E-mail : asthaprakashanmandir@gmail.com

Website : www.asthaprakashan.com

मुख्य प्राप्ति स्थान : • चौखम्बा पर्लिशिंग हाउस, दिल्ली, फोन : 01132996391
• कर्मसिंह, अमरसिंह, हरिद्वार, फोन : 01334225619
• सरदार सोहन मिंह, इन्दौर, फोन : 0731-2532344
• ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर, फोन : 0141-2575532

मुख्य आकर्षण

- श्री कामाख्या पूजन-विधान
- कामाख्या यन्त्र निर्माण
- पुरश्चरण-विधान
- कामाख्या-कवचम्
- कामाख्या-स्तोत्रम्
- श्री कामाख्या मन्त्र युक्त श्री कालिका सहस्रनाम होम व अर्चन साधना
- कामाख्या चालीसा व आरती
- कुमारी-पूजन
- योनि-स्तोत्रम् (1) व (2)
- कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान
- श्री कामाख्या-तन्त्रम् (सार्थ)



आस्था प्रकाशन मन्दिर
दिल्ली • बागपत

श्री कामाख्या साधना क्यों करें?

- माँ कामाख्या के सम्पर्क में आने के उपरान्त साधक के समस्त राग, द्वेष, विघ्न आदि भस्म हो जाते हैं।
- माँ कामाख्या-साधक के व्यक्तित्व में विशेष तेजस्विता व्याप्त हो जाती है, जिस कारण उसके प्रतिद्वन्द्वी उसे देखते ही पराजित हो जाते हैं।
- माँ कामाख्या का स्नेह अपने साधकों पर सदैव ही अपार रहता है, जो उनके सर्वांगीण कल्याण का कारक बनता है।
- भगवती कामाख्या की साधना से श्री सुख- सम्पन्नता, वैभव, तथा श्रेष्ठता का वरदान भी साधक को प्राप्त होता है। साधक का घर कुबेरसंज्ञक अक्षय भण्डार बन जाता है।
- कामाख्या-साधना से सहज ही साधक को समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। मारण, मोहन, कामक्रोध नाशन, इष्टदेव मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, मन का वशीकरण तथा मोक्ष-प्राप्ति- ये सभी इस साधना से सिद्ध हो जाते हैं।
- जो साधक इस साधना को सम्पूर्ण श्रद्धा व भक्ति-भाव से सम्पन्न करता है, वह निश्चय ही चारों वर्गों में

स्वामित्व की प्राप्ति करता है, साथ ही माँ का सामीष्य भी प्राप्त करता है।

- भगवती कामाख्या की साधना से साधक के समस्त रोगों का नाश होता है और वह दीर्घायु प्राप्त करता है।
- इस साधना को सम्पन्न करने से साधक में तेजस्विता आती है जिस कारण नारीवर्ग उसकी ओर स्वतः ही आकर्षित होने लगता है।
- भगवती कामाख्या अपने उपासकों को चारों पुरुषार्थ, महापाप को नष्ट करने की शक्ति तथा समस्त भोग व ऐश्वर्य प्रदान करती है।

ॐ

दो शब्द

कामरूप कामाख्या का स्थान आसाम प्रदेश में है। आसाम प्रदेश का प्राचीन नाम कामरूप ही है जो भारत के पूर्वी भाग में स्थित है। यह तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा है। यहाँ की प्रमुख नदी ब्रह्मपुत्र भारत की महानदियों में से एक है जो बहुत ही गहरी और तीव्र बहाव वाली है। गोहाटी अथवा गुवाहाटी यहाँ का प्रमुख नगर है जिसमें भगवती कामाख्या देवी का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है। मुख्य गोहाटी से यहाँ की दूरी 4-5 किलोमीटर है। जिस पहाड़ी पर यह शक्तिपीठ स्थित है, उसका नाम भी कामाख्या पर्वत है। अनुमानतः एक मील ऊंची पहाड़ी को नीलांचल या नील पर्वत भी कहा जाता है। यहाँ सती को कामाख्या अथवा कामाक्षा और भगवान शिव को उमानन्द कहते हैं। इस मन्दिर के समीप ही उत्तर की ओर भगवती की क्रीड़ा पुष्करिणी है, जिसे सौभाग्य कुण्ड कहते हैं। यह मान्यता है कि इस तालाब की परिक्रमा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है और भगवती की कृपा प्राप्त होती है।

कामाख्या मन्दिर में शक्ति की पूजा योनि-रूप में होती है। यहाँ कोई देवमूर्ति नहीं है, केवल एक शिलाखण्ड है जो योनि के आकार का बना हुआ है और रक्त वर्ण के वस्त्र तथा रक्त पुष्पों से ढका रहता है। प्राचीनकाल से सतयुगीन तीर्थ कामाख्या वर्तमान में तन्त्र-सिद्धि का सर्वोच्च स्थल है। नीलांचल पर्वत मालाओं पर स्थित भगवती

कामाख्या का सिद्ध शक्तिपीठ सती के 51 शक्तिपीठों में सर्वोच्च स्थान रखता है। कामरूप कामाख्या में सती की योनि का निपात हुआ था, इसलिए इसे योनिपीठ कहा जाता है। भगवती कामाख्या के भैरव उमानन्द हैं जिनका मन्दिर विशाल ब्रह्मपुत्र के पीकाक टापू पर स्थित है। भगवान शिव को समर्पित इस मन्दिर का निर्माण अहोम राजा गदाधर सिंह के शासनकाल में (1681-1696) हुआ था। यह विश्वास किया जाता है कि सोमवती अमावस्या पर यहां पूजन करने से अभीष्ट की सिद्धि होती है।

कामाख्या मन्दिर में अम्बूदाची मेले का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस पर्व के दौरान भगवती कामाख्या रजस्वला होती हैं इसलिए तीन दिन के लिए मन्दिर के कपाट स्वतः ही बन्द हो जाते हैं। नित्य पूजाओं के अतिरिक्त इस मन्दिर में वर्ष भर बहुत सी अन्य पूजायें भी होती हैं, जैसे दुर्गा-पूजा, अम्बूदाची पूजा, पोहनविद्या, दुर्गाडियूल पूजा, वसन्ती पूजा आदि। अम्बूदाची पर्व यहां का मुख्य पर्व है। इस पावन और अलौकिक पर्व पर तान्त्रिक, अधोरी आदि अपने विशेष अनुष्ठान सम्पन्न करने के लिए यहां आते हैं। भगवती कामाख्या को माँ काली और तारा का मिथित स्वरूप कहा जाता है। कुछ विद्वान इसे भगवती घोड़शी का रूप भी मानते हैं। चारों प्रकार की वाणियों में कामाख्या परावाक् हैं। महातीर्थ कामाख्या भगवती कुमारी रूप में विराजित हैं, जिस कारण यहां कुमारी-पूजा का विधान है। कुमारी-पूजा यहां एक आवश्यक कृत्य है। कुमारी-पूजन करने से सभी देवी-देवताओं के पूजन का फल स्वतः ही साधक को मिल जाता है। यहां सभी वर्णों की कुमारियां पूजनीय हैं। वर्ण-जाति का भेद यहां नहीं किया जाता है।

कामाख्या पीठ वाम-मार्गीय साधना की सर्वोच्च पीठ है। भारतवर्ष में यही एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ दायें-बायें किसी भी हाथ से पूजा सम्पन्न की जा सकती है। यह स्थान काम और देवी की शक्ति के रूप में विख्यात है। इस मन्दिर के विषय में यह भी प्रचलित है कि यहाँ देवी रात्रि में निर्वस्त्र होकर नृत्य करती हैं।

वाम-मार्ग विशेष रूप से स्त्री को शक्ति के रूप में पूजने की विधि है। एक वाम-मार्गी साधक स्त्री की पूजा करके, परमशिव का सायुज्य प्राप्त करना चाहता है। स्त्री की योनि को वाम-मार्गीय साधक जगत् की क्रियात्मक शक्ति मानते हैं। उसके दूर से दिखने वाले दृश्य को ये 'दीपशिखा' का नाम देते हैं। वाम-मार्ग में योनि दीपशिखा के समान ज्ञान का प्रकाश करने वाली मानी जाती है। हठयोगी जिस प्रकार दीपशिखा में ध्यान केन्द्रित करके शक्ति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार वाम-मार्गीय साधक भी दीपशिखा में मन का नियोग करके आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं।

वामाचार में व्यक्ति के जीवन को तीन भागों में विभाजित किया गया है— पशु भाव, वीर भाव और दिव्य भाव। पशु भाव व्यक्ति के जन्म से सोलह वर्ष की अवस्था तक रहता है, वीर भाव सोलह वर्ष से पचास वर्ष की अवस्था तक और पचास वर्ष की अवस्था से आगे दिव्य भाव होता है। यद्यपि अवस्था के अनुसार इन भावों का विभाजन किया गया है और शक्ति की उपासना करने वाला प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष भाव से ज्ञात अथवा सुप्त भाव से इन भावों का भोग करता है, फिर भी साधना करने का उद्देश्य यह होता है कि व्यक्ति अवस्था से पहले ही दिव्य भाव को प्राप्त कर ले।

वीर भाव में पंचमकार की साधना का आदेश दिया गया है। वैसे

भी इस अवस्था में संभोग की इच्छा बलशाली होती है। संभोग-कर्म भी शक्ति की ही इच्छा है जो भावात्मक स्तर पर उत्पन्न होकर स्नायु मंडल और मांस-पेशियों को उत्तेजित करती है। शक्ति ही इस कार्य के पीछे प्रेरणा तथा क्रिया के रूप में सक्रिय रहती है।

भगवती का पूजन सदैव दिव्य भाव से किया जाता है। दिव्य भाव साधना की उच्चतम भूमि है। इसे प्राप्त करने के लिए पशु भाव और वीर भाव पर विजय प्राप्त करनी होती है। दिव्य भाव परमहंस की स्थिति होती है। इन्द्रियगत् विषयों से ऊपर उठकर दिव्य भाव को प्राप्त किया जा सकता है। इस भाव में स्त्री को शक्ति का और पुरुष को शिव का स्वरूप मानना आवश्यक है। इस भाव में संसार और सांसारिक वस्तुओं का कोई महत्व साधक के लिए नहीं रह जाता। इन्द्रियां और इन्द्रियों के विषय उसके आत्मज्ञान के साधन बन जाते हैं। जो शक्ति मुक्ति का अवरोध करती है, तन्त्र में वही शक्ति मुक्ति का साधन बन जाती है।

एक वामाचारी साधक पंचमकार को हेय नहीं समझता बल्कि वह उसे अपनी मुक्ति का साधन मानता है। मदिरा का पान वह मादकता के लिए नहीं करता बल्कि एकाग्रता स्थिर करने के लिए करता है। “कुलार्णव तन्त्र” कहता है कि ‘बहुत से अज्ञानी लोग मदिरापान को पवित्र मानकर उसे अपना धर्म बना लेते हैं किन्तु यह उचित नहीं है। यदि मदिरापान से ही सिद्धि मिल जाती तो सभी मध्यपायी सिद्ध हो जाते; मांस-भक्षण से यदि पुण्य होता तो सभी मांस-भोजी पुण्यात्मा होते; मैथुन, स्त्री-संभोग से ही यदि मोक्ष मिलता तो सारे लोग मुक्त हो जाते।’ “कौलाचार ग्रहण किये विना मदिरा को देखकर सूर्य का दर्शन करने से, सूंघने पर तीन प्राणायाम करने से,

छूने पर एक दिन नाभि तक जल में खड़ा रहकर जप करने से और यदि मदिरापान कर लिया हो तो जलती अग्नि में प्रवेश करने से ही दोषमुक्त हुआ जा सकता है। अपने स्वाद अथवा ऐन्द्रिय-तृप्ति के लिए जो मांस-भक्षण करता है, अथवा किसी पशु-पक्षी का वध करता तो वध्य पशु के जितने रोम होते हैं, उतने वर्षों तक नरक भोगता है। तन्त्र के नाम पर इस प्रकार का पाखंड करने वाले लोग महापातकी होते हैं।"

सुरा को सुरा इसलिए कहा जाता है कि सु + मन = थ्रेष्ठ पुरुष इसका पान करते हैं और यह राजत्व और आनन्द-प्राप्ति का एक कारण है। मुद्रा के लिए कहा गया है कि इससे देवता प्रसन्न होते हैं और महामाया इससे द्रवित होती हैं। मदिरापान से अष्ट सिद्धियाँ, मांस-भक्षण से नारायण पद की प्राप्ति, मत्स्य-भक्षण से भगवती का दर्शन, मुद्रा से विष्णु-पद की प्राप्ति और मैथुन से शिवत्व की उपलब्धि होती है। लेकिन इनके प्रयोग की अनुमति केवल दिव्य भाव प्राप्त कर लेने वाले साधक को ही होती है।

तान्त्रिक उपासना में "रज" भी नैवेद्य माना जाता है। रज तीन प्रकार का होता है— स्वयंभु रज— जब कन्या प्रथम बार रजस्वला होती है। कुण्डोद्भव रज— विवाहित सधवा स्त्री का रज। गोलोद्भव रज— विधवा स्त्री का रज। रजस्वला स्त्री को चक्र-पूजा में प्रवृत्त होने की अनुमति नहीं होती क्योंकि इस अवधि में स्त्री अग्निस्वरूपा होती है। रज शक्ति का प्रसाद है।

मद्य-मांस आदि पंचमकारों का सम्बन्ध पृथ्वी आदि पांच तत्वों से है, लेकिन इनका प्रयोग करते समय गुरु, मन्त्र, मन, देवता और ध्यान तत्व का पालन करना अनिवार्य है। मदिरा वामाचार में

मोक्ष-साधन का प्रथम सोपान है किन्तु उसे मद के रूप में उपयोग करने से यादव वंश नष्ट हो गया और दानव अमृत से वंचित हो गये, इसलिए भगवान् कृष्ण ने और दानवगुरु शुक्राचार्य ने मदिरा तत्व को ही श्राप दे दिया। अतः साधक के लिए आवश्यक है कि इन तत्वों का शोधन करते समय मदिरा को कृष्ण-शाप और शुक्र-शाप से मुक्त कर ले। साधिका स्त्री का शोधन करना भी आवश्यक है। अशुद्ध द्रव्यों से देवी की अर्चना और अशुद्ध स्त्री का पूजा में सम्मिलित होना वर्जित है।

भगवती कामाख्या की साधना में कौलाचार को भी प्रश्रय दिया गया है। अब प्रश्न उठता है कि वास्तव में “कौलाचार” है क्या? तान्त्रिकों ने सात आचारों का उल्लेख किया है, उनमें से एक आचार कौलाचार है। सप्ताचार इस प्रकार हैं—

आचारों का वर्गीकरण

उत्तम पशु-	वीर भाव	दिव्य भाव
साधकों के	साधकों के	साधकों के
आचार	आचार	आचार
↓	↓	↓
1. वैदिकाचार	1. वामाचार	कुलाचार
2. वैष्णवाचार	2. सिद्धान्ताचार	↓
3. शैवाचार		1. पूर्व कौल
4. दक्षिणाचार		2. उत्तर कौल

कौलावली तन्त्र के अनुसार—

1. श्रेष्ठ आचार है— वेदाचार ।
2. वेदाचार से श्रेष्ठतर है— वैष्णवाचार ।
3. वैष्णवाचार से श्रेष्ठतर है— शैवाचार ।
4. शैवाचार से श्रेष्ठतर है— दक्षिणाचार ।
5. दक्षिणाचार से श्रेष्ठतर है— सिद्धान्ताचार ।
6. सिद्धान्ताचार से श्रेष्ठतर है— कौलाचार ।

विश्वसार तन्त्र में कहा गया है— “वैदिकं वैष्णवं शैवं
दक्षिणं पाशवं स्मृतम्।” इस प्रकार पहले चार आचार पश्वाचार
हैं। कौलाचार के दो प्रकार हैं— 1. आर्द्र 2. शुष्क ।

आर्द्र कौलाचार पंचमकार समन्वित होता है जबकि शुष्क कौलाचार
पंचमकार रहित होता है ।

तन्त्रालोक, कौलज्ञान-निर्णय आदि ग्रन्थों के प्रमाणों के
आधार पर यह कहा गया है कि कौलमार्ग के प्रवर्तक मत्स्येन्द्रनाथ थे ।
विभिन्न परम्परायें भी इसी तथ्य की पुष्टि करती हैं । लेकिन जब
कौलज्ञान की विभिन्न दृष्टियों, सिद्धान्तों तथा मत-मतान्तरों को
संयुक्त रूप से देखा गया, तब यह निष्कर्ष निकला कि कौलगम
अथवा कौलज्ञान का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है । कौलज्ञान निर्णय
के पटल 6 के श्लोक संख्या-9 में कहा गया है कि “यह कौलिक ज्ञान
श्रुति परम्परा से बहुत प्राचीनकाल से चला आ रहा है ।” इस कथन
से यह सिद्ध होता है कि कौलमार्ग के आदि प्रवर्तक मत्स्येन्द्रनाथ नहीं
हैं बल्कि वे उस लुप्तप्रायः कौलज्ञान अथवा कौलमत के उद्धारक

मात्र हैं। मत्स्येन्द्रनाथ का ज्ञान तो शिवोपदिष्ट ज्ञान है।

“मत्स्येन्द्रनाथ” का जन्म स्थान “कामरूप” के निकट चन्द्रगिरी नामक स्थान पर हुआ कहा जाता है। इनका प्रादुर्भाव नौवीं शताब्दी में किसी समय हुआ था। उन्होंने स्त्री-साहचर्य प्रधान साधना “कौलसाधना” कदली वन (स्त्री देश) में की थी, जो कि कामरूप ही हो सकता है। कदली वन आसाम का उत्तरी भाग है।

फयाजुल्ला द्वारा प्रणीत “गोरक्ष-विजय” एवं श्यामादास द्वारा प्रणीत “मीनचेतन” पुस्तकों के अनुसार— शिव तथा चार सिद्धों— मीन, हाड़िया, गोरक्षनाथ और कानुफा का जन्म विधाता से प्रत्यक्ष रूप से हुआ था। आद्य और आद्या शक्ति ने सर्वप्रथम देव-सृष्टि की और फिर चार सिद्धों को जन्म दिया। इसके बाद गौरी नामक कन्या उत्पन्न करके विवाह के लिए उसे शिव को सौंप दिया। शिव गौरी को लेकर पृथ्वी पर आ गये।

मीननाथ, गोरक्षनाथ, जालन्धरनाथ तथा कानुफा ने अन्न का त्याग करके केवल वायु के आहार पर रहकर योगाभ्यास प्रारम्भ किया। गोरक्षनाथ ने मीननाथ का तथा कानुफा ने हाड़िया का शिष्यत्व ग्रहण किया। हाड़िया जालन्धरनाथ का ही नाम है।

एक दिन गौरी ने शिव के गले में पड़ी मुण्डमाला का कारण पूछा। तब शिव ने कहा कि यह मुण्डमाला तो तुम्हारे मुण्डों की माला है। गौरी ने अपनी मृत्युर्धर्मिता और शिव के मृत्युंजयत्व का कारण पूछा तो शिव ने उस रहस्य को क्षीरसागर में, एक नाव पर चढ़कर वहाँ एकान्त में बताने की बात कही। शिव और गौरी दोनों क्षीरसागर में पहुंचे तो मीननाथ, जो गोरक्षनाथ के गुरु थे, मत्स्य बनकर नीचे बैठ गये। शिव ने अमरत्व का रहस्य बताना शुरू किया तो देवी को निद्रा

आ गयी। लेकिन उनकी नींद के समय मीननाथ लगातार हुंकारा भरते रहे। जागने पर गौरी ने कहा कि— “मुझे तो नींद आ गयी थी इसलिए मैंने उपदेश को सुना ही नहीं।” शिव ने हुंकारा भरते हुए व्यक्ति का परिचय जानने के लिए जब ध्यान किया तो नाव के नीचे मीननाथ को छिपा हुआ पाया। तब शिव ने शाप दिया कि तुम महाज्ञान को भूल जाओगे।

एक बार भगवती गौरी ने कैलाश पर विराजित शिव से आग्रह किया कि आप सिद्धों को विवाह करके वंश चलाने की आज्ञा दें। शिव ने उन्हें बताया कि ये सिद्धु “काम” के विकार से परे हैं। इस पर देवी ने सिद्धों की परीक्षा लेने हेतु शिवजी से अनुमति ली और सिद्धों की परीक्षा ली। उस समय हाड़िया पूर्व में, कानफा दक्षिण में, गोरक्ष पश्चिम में तथा मीननाथ उत्तर में तपस्या में रह थे। भगवान शिव ने चारों का आवाहन किया। वे चारों उपस्थित हुए तो देवी ने भुवन सुन्दरी का वेश धारण करके उन्हें भोजन परोसा। वे चारों ही तब देवी पर मोहित हो गये। मीननाथ ने मन में सोचा कि यदि यह सुन्दरी मुझे प्राप्त हो जाये तो मैं उसके साथ सारी रात आराम से बिताऊंगा। ऐसा आशय समझकर देवी ने मीननाथ को श्राप दिया कि तुम महाज्ञान भूलकर कदली देश में 1600 सुन्दरियों के साथ रतिमग्न हो जाओ।

हाड़िया ने मन में विचार किया कि ऐसी सुन्दर नारी का तो झाड़ू लगाने वाला बनने में भी सीभाग्य है। अतः वे भी देवी के श्राप से श्रापित होकर रानी मैनावती के घर में झाड़ू लगाने वाले सफाईकर्मी बन गये।

कानफा ने देवी को देखकर मन में विचार किया कि ऐसी सुन्दरी

मुझे प्राप्त हो जाये तो मैं प्राण देकर भी अहोभागी हो जाऊँगा । उसे देवी ने श्राप दिया कि तुम तुरमान में डाहुका हो जाओ ।

गोरखनाथ की सोच सबसे अलग थी । उन्होंने सोचा कि यदि ऐसी सुन्दर नारी मुझे प्राप्त हो जाये तो मैं उसकी गोद में बैठकर उसकी ममता भी प्राप्त करूँ और उसका दूध भी पीऊँ ।

“श्रीमद्भागवत” में भगवान ऋषभदेव अपने 100 पुत्रों को उपदेश देते हुए कहते हैं—

नूनं प्रमत्तः कुरुते विकर्म, यदिन्द्रियप्रीतय आपृणोति।
न साधु मन्ये यत आत्मनोऽयमसन्नपि क्लेशाद आस देहः॥

अर्थात्, जब मनुष्य इन्द्रियतृप्ति को ही जीवन का लक्ष्य मान बैठता है तो वह भौतिक रहन-सहन के पीछे प्रमत्त होकर सभी प्रकार के पापकर्मों में प्रवृत्त हो जाता है । वह नहीं जानता कि अपने विगत पापकर्मों के ही कारण उसे यह क्षणभंगुर शरीर प्राप्त हुआ है, जो दुखों की खान है । वास्तव में जीवात्मा को यह भौतिक देह नहीं धारण करनी चाहिए थी, किन्तु इन्द्रियतृप्ति के लिए यह भौतिक देह दिया गया है । अतः मैं मानता हूँ कि बुद्धिमान मनुष्य प्राणी के लिए यह शोभा नहीं देता कि वह पुनः इन्द्रियतृप्ति के कार्यों में प्रवृत्त हो, जिससे उसे एक के बाद दूसरा भौतिक शरीर धारण करना पड़े ।

गोरखनाथ इस परीक्षा में सफल हुए । अन्य सिद्ध इन्द्रियतृप्ति की चाह में दुर्गति को प्राप्त हुए ।

जब गोरखनाथ परीक्षा में सफल हो गये तो देवी ने पुनः उनकी परीक्षा ली । एक बार वे बकुल वृक्ष के नीचे समाधि लगाये हुए थे । तभी देवी उनके समक्ष मार्ग में नितान्त नग्नावस्था में सो गयीं । समाधि टूटने पर गोरखनाथ ने जब यह देखा तो उन्होंने विल्वपत्रों से

उनका शरीर ढक दिया । तब देवी ने गोरक्षनाथ के पेट में प्रवेश करके पीड़ा उत्पन्न कर दी । इस पर गोरक्षनाथ ने श्वास रोककर देवी को क्षुब्ध कर दिया । तब देवी राक्षसी बनकर मानव-भक्षण करने लगीं । तब शिवजी के आदेश से गोरक्ष ने देवी का उद्धार किया और उनके स्थान पर एक मूर्ति स्थापित की । आज वही प्रतिमा कलकत्ता की सर्वपूज्या प्रतिमा है । इस पर देवी ने प्रसन्न होकर गोरक्ष को सुन्दर नारी प्राप्त करने का वरदान दिया तो शिवजी ने एक नारी उत्पन्न करके गोरक्ष को प्रदान की । गोरक्ष उस स्त्री के घर जाकर, छः माह के बालक बनकर उसका दूध पीने का आग्रह करने लगे । गोरक्षनाथ ने उस नारी से कहा कि मैं तो काम-विकार से दूर हूँ लेकिन यदि तुम मेरा कोपीन धोकर पी लोगी तो तुम्हें एक पुत्र अवश्य प्राप्त होगा । उस नारी ने ऐसा ही किया । परिणामस्वरूप उसे जो पुत्र प्राप्त हुआ, उसका नाम ही कर्पटीनाथ पड़ा ।

उधर देवी के श्राप के कारण मीननाथ कदली प्रदेश में जा पहुँचे । वहाँ स्त्रियों का ही शासन था । कोई भी पुरुष वहाँ नहीं था । वहाँ पहुँचकर मीननाथ स्त्रियों के मायाजाल में फँस गये और वहाँ की 1600 सुन्दरियों के साथ विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे । अतीत का कुछ भी उन्हें स्मरण नहीं रहा था । बाद में उनके शिष्य गोरक्षनाथ ने उन्हें वहाँ से मुक्त कराया ।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कौलमार्ग का उद्भव चन्द्रद्वीप में हुआ । यह स्थान सम्भवतः बंगाल में सूर्यद्वीप है । दूसरे मत्स्येन्द्रनाथ गोरक्षनाथ के गुरु थे और तीसरा यह कि कौलमार्ग का उपदेश सर्वप्रथम कामरूप अर्थात् कामाख्या में हुआ ।

इस विषय पर मैं यहीं विराम लेता हूँ क्योंकि यह विषय बहुत

ही विस्तृत है। और अधिक लिखने से पुस्तक के आकार में वृद्धि हो जायेगी। यह सब कहने का मेरा यही उद्देश्य है कि कामाख्या धाम यद्यपि वाम-मार्गीय पूजा के लिए अत्यधिक उत्तम है लेकिन पूजन-अर्चन किस विधि से सम्पन्न किया जाये यह साधक की इच्छा पर निर्भर करता है। वह चाहे वैदिक रीति से करे अथवा वाम-मार्गीय रीति से। सुपरिणाम उसे प्राप्त होता ही है। जो जिस मार्ग का अनुयायी हो, वहाँ वह उसी मार्ग से साधना सम्पन्न कर सकता है।

अनेक योनियों में सहस्रों जन्मों के बाद अपने पुण्यों के संचय से भाग्यवश ही मनुष्य जीवन को प्राप्त करता है। ऐसा दुर्लभ शरीर पाकर भी जिसने अपनी आत्मा को मुक्त नहीं किया, तब उससे अधिक दुर्भाग्यशाली और कौन होगा? चूंकि देह के बिना कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकता, इसलिए देह, धन की रक्षा करते हुए ज्ञान-प्राप्ति तक मनुष्य को कर्मरत् रहना चाहिए। सल्कर्मों और सद्व्याज्ञान के प्रकाशित होने पर निश्चय ही जीव शिवत्व की प्राप्ति करता है। जप, होम, पूजा, तीर्थाटन आदि की आवश्यकता तभी तक है, जब तक मनुष्य को तत्वज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता। बस यही वह तत्वज्ञान है जिसकी प्राप्ति के लिए तान्त्रिक तन्त्र-मार्ग का, योगी योगाभ्यास का और वेदान्ती उपनिषद्- उपदिष्ट मार्ग का आश्रय ग्रहण करते हैं। लक्ष्य सभी का एक है केवल मार्ग पृथक्-पृथक् हैं, जो जैसा चाहे वैसी राह चले।

एक लेखक और साधक में बहुत अन्तर होता है। लेखक केवल किसी विषय का सरलीकरण करके प्रस्तुतीकरण कर सकता है। उसका अपना कोई अनुभव नहीं होता। वह सब कुछ यन्त्रवत् करता है जबकि एक साधक के साथ उसके अपने साधनागत् अनुभव भी जुड़े होते हैं। विषय के सरलीकरण के साथ-साथ वह अपने अनुभव

भी विधि-विधान के साथ प्रस्तुत करता है, जिससे कोई भी साधक अथवा जिज्ञासु कम समय में अपने अभीष्ट की प्राप्ति करने में सफल रहता है। श्री योगेश्वरानन्द केवल लेखक ही नहीं हैं, वे भगवती कामाख्या तथा बगलामुखी के अच्छे स्तर के उपासक भी हैं जिस कारण किसी भी साधना को लिखते समय सटीक विधि-विधान के प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ वे अपने व्यक्तिगत साधनात्मक अनुभवों का भी संयोजन करते हैं, जिस कारण विषय-वस्तु का सरलीकरण तो होता ही है, उसके साथ-साथ कुछ ऐसे विन्दु भी होते हैं जो सामान्यतः ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होते। उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों में साधना में सिद्धि प्राप्त करने का सरलतम तथा सूक्ष्मतम विधान अकित होता है, जो इस क्षेत्र के नवीनतम विद्यार्थियों अथवा परिपक्व साधकों के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में भी उनके द्वारा भगवती कामाख्या की साधना का सरलतम विधान अपने साधनागत् अनुभवों के साथ प्रस्तुत किया गया है। पुरश्चरण हेतु पंचांग सहित साधकों के लिए सम्पूर्ण सामग्री इस ग्रन्थ में उपलब्ध है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रन्थ नये व पुराने साधकवर्ग के लिए एक प्रकाश स्तम्भ के समान पथ-प्रदर्शक का कार्य करेगा।

आपके अमूल्य सुझावों की मुझे सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

सुमित गिरधरवाल

सम्पर्क-सूत्र :

Phone : 9540674788

Email : sumitgirdharwal@yahoo.com

Website : www.baglamukhi.info

अपनी बातें, अपनों से

जिस प्रकार भूतभावन भगवान सदाशिव प्राणियों के कल्याण हेतु विभिन्न तीर्थों में पाषाणलिंग के रूप में आविर्भूत हुए, उसी प्रकार अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड-नायिका, समस्त प्रपंचों की आधारभूता भगवती भी विभिन्न प्रकार की लीलाओं करती हुई विभिन्न तीर्थों में पाषाण-रूप में अपने भक्तों पर अनुग्रह करने हेतु अवस्थित हैं। इन सभी तीर्थ स्थानों को शक्तिपीठ के नाम से जाना जाता है।

ब्रह्माजी ने “एक से अनेक हो जाऊं” का विचार करते हुए मानवीय सृष्टि का विस्तार करने के लिए अपने दक्षिण भाग से मनु तथा अपने वाम भाग से शतरूपा को उत्पन्न किया। मनु और शतरूपा के संयोग से दो पुत्रों तथा तीन कन्याओं की उत्पत्ति हुई। तीनों कन्याओं में सबसे छोटी कन्या प्रसूति का विवाह मनु ने प्रजापति दक्ष से कर दिया। दक्ष ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे। राजा दक्ष ने ब्रह्माजी से प्रेरणा पाकर सहस्रों वर्षों तक आद्याशक्ति भगवती शिवा की आराधना की और उनके उपस्थित होने पर उनसे अपने घर में पुत्री के रूप में जन्म लेने हेतु वरदान मांगा। तब भगवती ने राजा दक्ष से कहा— “प्रजापति दक्ष! पुरातनकाल में भगवान शिव ने मुझसे मुझे अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की थी, अतः मैं तुम्हारे घर में तुम्हारी पुत्री के रूप में अवतरित होकर भगवान शिव से विवाह करके उनकी पत्नी बनूंगी। लेकिन तुम्हारी इस

घोर तपस्या का पुण्य क्षीण होने के कारण जब तुम्हारे द्वारा भगवान शिव और मेरा अपमान होगा तब मैं आप सहित सम्पूर्ण जगत् को विमोहित करके अपने धाम को प्रस्थान कर जाऊँगी।” ऐसा कहकर भगवती अन्तर्धान हो गयी।

कुछ समय ब्यतीत होने पर भगवती शिवा ने प्रसूति के गर्भ से जन्म लिया। उस कन्या का नाम दक्ष ने सती रखा। बाल-सुलभ क्रीड़ाओं से सती अपने पिता दक्ष और माता प्रसूति के मन को आनन्दित करते हुए उनकी तपस्या का फल उन्हें प्रदान करने लगीं।

धीरे-धीरे सती बड़ी हो गयीं और प्रसूति तथा दक्ष के मन में उसके विवाह का विचार उत्पन्न हुआ। शुभ समय देखकर दक्ष ने स्वयंवर का आयोजन किया, जिसमें भगवान शिव के अतिरिक्त सभी देव, दानव, यक्ष, गंधर्व तथा ऋषि-मुनि आदि उपस्थित हुए। भगवान शिव को राजा रक्ष ने शमशानवासी भिक्षुक मानकर आमन्त्रित नहीं किया था, अतः शिवविहीन स्वयंवर-सभा को देखकर सती ने वरमाला भूमि को समर्पित कर दी। उनके ऐसा करते ही भगवान सदाशिव अन्तरिक्ष में प्रकट हो गये और वरमाला उनके गले में सुशोभित होने लगी। इसके बाद भगवान शिव अन्तर्धान हो गये। तब ब्रह्माजी के कहने पर राजा दक्ष ने भगवान शंकर को बुलाकर सती के साथ विधि-विधान से उनका विवाह कर दिया। उन्होंने यह विवाह तो कर दिया लेकिन वे शिव और सती से द्वेष-भावना मन में रखने लगे। इसी द्वेष-भाव के कारण उन्होंने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने सभी देवताओं को आमन्त्रित किया लेकिन न तो सती को ही बुलाया और न ही भगवान शिव को।

जब नारदजी से भगवान शिव और सती ने राजा दक्ष द्वारा

विशाल यज्ञ का आयोजन करने के सम्बन्ध में सुना तो मोहवश सती ने भगवान शिव से यज्ञ में जाने की अनुमति मांगी। भगवान शिव के द्वारा इंकार करने पर सती ने अपना विराट् स्वरूप प्रकट किया। उस समय भगवती सती दश महाविद्याओं से घिरी हुई थीं। उन्होंने भगवान शिव से कहा कि मैं या तो आपको यज्ञ में भाग दिलाऊंगी अन्यथा यज्ञ का विध्वंस कर दूँगी। इस पर भगवान शिव ने उन्हें यज्ञ में जाने की अनुमति प्रदान कर दी। सती ने दश हजार सिंहों से युक्त स्वर्ण-रथ में आरूढ़ होकर नन्दी को सारथि बनाया और प्रजापति दक्ष के महल में पहुंच गयीं। वहां पहुंचने पर माता प्रसूति ने तो सती का स्वागत किया लेकिन अन्य उपस्थित सगे-सम्बन्धियों ने उनका परिहास किया।

सती यज्ञमण्डप में पहुंचीं तो प्रजापति दक्ष देवताओं के साथ यज्ञ कर रहे थे। वहां शिव का भाग न देखकर सती क्रुद्ध हो गयीं और महाकाली का रूप धारण कर लिया। राजा दक्ष भी क्रुद्ध हो गया था अतः उसने भी सती को द्वेषपूर्ण और निन्दित बचन कहे। तब सती ने अपने ही समान रूपवाली छाया-सती को उत्पन्न किया और उसे यज्ञकुण्ड में प्रवेश करके यज्ञ का नाश करने का आदेश दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गयीं। यद्यपि सती स्वयं पलभर में करोड़ों दक्षों का संहार करने में सक्षम थीं लेकिन पिता की गरिमा को बनाये रखने के लिए उन्होंने छाया-सती को उत्पन्न किया था।

छाया-सती सभी उपस्थित देवताओं के देखते ही देखते यज्ञाग्नि में प्रवेश कर गयीं।

नारदजी ने यह समाचार भगवान शिव को दिया तो वे क्रोध और शोक से विहळ द्वारा नेत्र से वीरभद्र प्रकट हुए जो

कालान्तक यम के समान भयानक रूप वाले थे। वीरभद्र ने दक्ष का सिर काट डाला और यज्ञ नष्ट कर दिया। भगवान शिव साधारण पुरुष के समान शोक-विहळ हो रहे थे। उन्होंने छाया-सती को अपने कंधे पर धारण कर लिया और उन्मत्त होकर ताण्डव नृत्य करने लगे जिससे प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो गयी। तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के छाया-शरीर के टुकड़े करने शुरू कर दिये। इस प्रकार सती के शरीर के 51 टुकड़े भूमि पर गिरे। जहां-जहां वे टुकड़े गिरे वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ बन गये। सभी शक्तिपीठों में भगवान भोलेनाथ भी भैरव-रूप में विराजमान हुए।

कामरूप क्षेत्र में भगवती का महामुद्रा (योनि) गिरा, उसी से “कामाख्या महापीठ” का उद्भव हुआ। भगवान शिव यहां उमानन्द भैरव के रूप में प्रतिष्ठित हुए। सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थित शक्तिपीठों में कामाख्या धाम ही सर्वथ्रेष्ठ माना जाता है। विश्व के सभी तांत्रिकों के लिए वर्ष में एक बार जून माह में पड़ने वाला अम्बूवाची योग पर्व वस्तुतः एक दैवीय वरदान है। यह पर्व सती का रजस्वला पर्व होता है। पुराणों और शास्त्रों के अनुसार सतयुग में यह पर्व 16 वर्षों में एक बार, द्वापर युग में 12 वर्षों में केवल एक बार तथा त्रेता युग में 7 वर्षों में एक बार मनाया जाता था। कलियुग में यह पर्व प्रत्येक वर्ष जून के उत्तरार्ध में तिथि के अनुसार मनाया जाता है।

गुवाहाटी से करीब दो मील पश्चिम में नीलगिरी अथवा नीलकूट पर्वत पर भगवती कामाख्या की प्रधान सिद्धपीठ है, जिसे कामाख्या या कामाक्षा के नाम से पुकारा जाता है। “कालिकापुराण” के अनुसार इस स्थान पर सती की योनि गिरी थी। अतः यहां का प्रधान तीर्थ एक अंधेरी सी गुफा के भीतर स्थित योनिपीठ है। यहां केवल

एक कुण्ड जैसी आकृति बनी हुई है, जो पुण्यों से ढकी रहती है। इस पीठ के विषय में कहा जाता है कि भगवती यहा प्रतिमाह रजस्वला होती हैं। उस समय यहां के पुजारी शुद्ध वस्त्र भगवती के योनिस्थ रज में रंग लेते हैं, जिसे भक्तों को प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है।

आसाम की कामाख्या पीठ विश्व की सर्वाधिक जाग्रत एवं तान्त्रोक्त शक्तिपीठ है। एक हाथ लम्बा, 12 अंगुल चौड़ा दिव्य योनिमण्डल गुफा में स्थित है। आदिगुरु शंकराचार्य के समय में यह योनिमण्डल अपने सम्पूर्ण वैभव और विलास के साथ सुसज्जित था। यहां पर महामाया पूर्ण जाग्रत हैं और यहां पर वास्तविक श्रीसाधना होती है। निश्चय ही यह विश्व का सृजन-क्षेत्र है, विश्व की योनि है और विश्व का उद्गम-स्थल है। वाम-मार्गीय साधना का तो यह सर्वोच्च स्थान है। मल्त्येन्द्रनाथ, लोना चमारी, गोरखनाथ, इस्माईल जोगी आदि तन्त्र-साधक भी यहां पर तन्त्र-क्षेत्र में अपना उच्च स्थान प्राप्त करके अमर हुए हैं। आज भी दूर-दूर से तान्त्रिक लोग यहां आकर अपने जीवन और साधना को धन्य मानते हैं। यह मन्दिर काम और देवी की शक्ति के रूप में प्रसिद्ध है। मां भगवती-पार्वती, सती, काली, त्रिपुर सुन्दरी, भगवती आदि अनेकों नामों से इस स्थान की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। भगवान कामेश्वर और कामेश्वरी देवी की भी यहां स्थापना है और भक्तगण सर्वप्रथम इन दोनों के दर्शन करते हैं उसके उपरान्त ही भगवती की महामुद्रा का दर्शन करते हैं। यह स्थान उत्पत्ति और ऊर्जा का प्रतीक है।

कामाख्या पीठ में भगवती का योनिमण्डल गिरा। योनि-प्रदेश ही वह पवित्र स्थान है, जहां से हम सबकी उत्पत्ति होती है, इस सम्पूर्ण

सृष्टि की रचना होती है। यह वह पवित्र स्थल है, जहां दशों महाविद्यायें और भैरव स्वयं अपने परिवार सहित निवास करते हैं। यही वह शक्ति-पुंज है, जो सम्पूर्ण विश्व को जन्म देने में सक्षम है। एक स्थान पर भगवान शिव स्वयं कहते हैं कि— “हे नगनन्दिनि! सुनो! सृष्टि, स्थिति एवं संहार के कारक ब्रह्मा, तथा रुद्र जैसे समस्त देवगण इसी योनि से उत्पन्न हैं। यदि शक्ति- उपासक इस योनिपीठ के समक्ष उस विद्या का पूजन न करें जिसमें वह दीक्षित है, तो मन्त्र एवं पूजा जैसी चीजें उसके लिए नरक में जाने का कारण बन जाती हैं। हे देवि! तुम्हारी योनि अर्थात् शक्ति के कारण ही मैं निरन्तर तुम्हारा चिन्तन तथा अपने हृदय-कमल में तुम्हारा पूजन करता हूँ। मेरे इस हृदय में तुम दिव्य भाव और वीर भाव से विराजित हो। हे दुर्ग! मुक्ति तो अनायास ही तुम्हारे हाथों में बसी हुई है। जो व्यक्ति शक्ति मन्त्र के द्वारा योनि-पीठ अर्थात् शक्तिपीठ की उपासना करता है, वह धन्य है। ऐसा व्यक्ति कवि, बुद्धिमान तथा सुरासुरगणों द्वारा पूजित होता है।”

हमारे समाज में ‘योनि’ का नाम लेना भी बुरा समझा जाता है। यहां काम-भाव को विकार की श्रेणी में रखा गया है। लेकिन यदि गहनता से विचार करें तो क्या इसके अभाव में सृष्टि की रचना सम्भव है? कदापि नहीं। सृष्टि- रचना के लिए योनि से उत्तम कौन सी भूमि हो सकती है? बीज का महत्व शून्य है यदि भूमि उर्वरक न हो तो अकेले बीज से कुछ भी नहीं होगा। फिर जैसी भूमि होगी, जैसी उसकी गुणवत्ता होगी, वैसा ही वृक्ष या पौधा उससे उत्पन्न होगा। उस वृक्ष पर लगने वाले फल भी वैसी ही श्रेणी के होंगे, जो श्रेणी उस भूमि की होगी। यही स्थिति योनि की भी है। उसमें उत्पन्न करने की,

निर्माण करने की क्षमता है। वह परिवर्तन, विकास और उत्कृष्टता का आधार है।

काम-भाव प्रत्येक जीव में विद्यमान है। उससे हम भाग नहीं सकते। ऊपरी आवरण हमने भले ही कैसा भी ओढ़ रखा हो। हम साधु बन गये हों, सन्न्यासी बन गये हों, हमने विवाह ही नहीं किया हो या फिर हमारी पत्नी शरीर का त्याग कर चुकी हो, लेकिन क्या हम काम-वासना से भाग सकते हैं? जितना इससे भागने की कोशिश हम करेंगे, यह उतनी ही तीव्र और प्रबल होगी, उद्दीप्त होगी। अपने ऊपरी आवरणों के कारण अथवा लोक-लाज के भय से हम स्वयं को कितना भी निर्लिप्त दिखाने की चेष्टा करें, काम-भाव से विहीन होने का ढोंग करें, लेकिन क्या हम अन्दर से भी उतने ही निर्लिप्त रह पाते हैं। नहीं, कदापि नहीं। काम-भाव सबको पीड़ित करता है, सभी में व्याप्त रहता है, जिसे केवल एक सीमा तक ही रोका जा सकता है, उससे आगे नहीं। क्योंकि हम ब्रह्मा के वेद-वाक्य “एकोहं बहुध्यामि” से प्रतिबन्धित हैं और इसीलिए कामदेव और रति की उत्पत्ति की गयी है ताकि विपरीत लिंग के प्रति आसक्ति बनी रहे। स्मरण रहे! विरक्ति तब तक उत्पन्न नहीं हो सकती जब तक आसक्ति पूर्ण नहीं हो जाती। आसक्ति एक चाह है, एक लगन है, वासना है, इच्छा है किसी भी वस्तु को पूर्णता से प्राप्त कर लेने की। जबकि विरक्ति है— त्यागने की प्रक्रिया। जिसमें त्याग हो, अरुचि हो, छोड़ देने की भावना हो अथवा उससे मन की खिन्नता हो। जब किसी वस्तु को पूर्णता के साथ भोगा ही नहीं तो ऐसे में विरक्ति का प्रश्न ही कहाँ उत्पन्न होता है। विरक्ति अथवा त्याग तो उसी को कहा जा सकता है, जब किसी वस्तु का इतना अधिक उपभोग कर लिया गया हो कि

मन उससे खिन्न होने लगे। उसे देखकर उबकाई सी आने लगे। ठीक यही स्थिति काम-वासना की भी है। परन्तु प्रत्येक वस्तु का उपभोग एक सीमा तक ही अच्छा होता है। अधिकता प्रत्येक वस्तु की खराब होती है। अल्प उपभोग सदैव ही श्रेयकर है। इसलिए काम की भी सीमायें हैं। सन्तानोत्पत्ति के लिए पत्नी के साथ सम्पन्न किया गया सहवास वासना की श्रेणी में नहीं आता। इसके लिए व्यक्ति को काम-ग्रसित भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यह सृष्टि के लिए, नयी संरचना के लिए, परिवर्तन, सुजन अथवा विकास के लिए किया गया सहवास होता है, न कि अपनी वासनापूर्ति के लिए। इसीलिए जो युगल केवल सन्तान की उत्पत्ति के लिए सहवास करते हैं उन्हें योगी अथवा ब्रह्मचारी कहा जाता है, न कि भोगी। भोग वह होता है जो वासनापूर्ति के लिए किया जाता है। विवाहित ऋषि-मुनि अथवा राजा जनक जैसे व्यक्ति संन्यासी अथवा ब्रह्मचारियों की श्रेणी में इसीलिए गिने जाते हैं। इसलिए इस योनि के रहस्य को समझना नितान्त ही आवश्यक है। यदि आसक्ति को पूर्ण किये बिना अर्थात् योनि की उपयोगिता को जाने बिना ही विरक्ति का लिवास ओढ़ लिया तो ऐसा व्यक्ति सदैव काम-भाव से पीड़ित रहेगा, काम के विकार से ग्रस्त रहेगा और काम-विकार से ग्रसित व्यक्ति कभी भी शिवत्व को प्राप्त नहीं कर सकता। काम से भागे जीव को कहीं ठिकाना नहीं मिलता, अतः इसकी अतृप्ति के कारण ही उसे बार-बार योनि के अधीन होना पड़ेगा। बार-बार उसे जीवन-मरण के चक्र से गुजरना पड़ेगा क्योंकि भगवती त्रिपुर सुन्दरी की यह पूर्णतः अवज्ञा है, जो व्यक्ति को भोग और मोक्ष प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर और प्रतिबद्ध हैं।

योनि का भेद-ज्ञान साधारण बात नहीं है। इसके रहस्य को

समझने में बड़े-बड़े विद्वान भी अक्षम रहे हैं। इसे बिना जाने ही व्यक्ति पुस्तकें पढ़ता है, ध्यान करता है, गुरु की शरण में जाता है, संन्यास ग्रहण करता है, और भी न जाने क्या-क्या करता है। आखिर ये सब किसलिए? केवल ब्रह्मचारी बनने के लिए अथवा संन्यासी होने के लिए? वह चाहे कितना भी अध्ययन करे, कितने भी अन्य उपाय करे लेकिन योनि की उत्कृष्टता को, उसके विलास को समझने में वह कदापि सफल नहीं हो सकता। यही तो उस महामाया की क्रीड़ा है। साइकिल के पहिये के समान वह जीवन-मृत्यु की धुरी पर चक्कर काटता रहता है। क्यों आखिर क्यों? वह इसलिए कि वह योनि से दूर भागना चाहता है। वह उसके विलास को समझ नहीं पाता है क्योंकि योनि-मण्डल की अधिष्ठात्री हैं— माँ कामाख्या, अर्थात् काम की नायिका, जिनका एक नाम त्रिपुर सुन्दरी भी है। त्रिपुर सुन्दरी अर्थात् तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी। ऐसी महासुन्दरी, जिनके सौन्दर्य, रूप, विलास, ऐश्वर्य और परम दिव्य स्वरूप पर तीनों लोक मोहित हैं। जो महामाया और तीनों पुरों की नायिका हैं, उनसे भागने का दुस्साहस भला कौन कर सकता है। कामाख्या अर्थात् काम की व्याख्या से भला कौन जीव कहां भागकर जा सकता है?

मैंने पूर्व में ही उल्लेख किया है कि योनि एक ऐसा पवित्र स्थल है, जिसमें दशों महाविद्यायें और भैरव सपरिवार निवास करते हैं। उसकी गृहिणी, उसकी विराटता, उसकी दिव्यता को जानने के लिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण आवश्यक है, तभी जीव बन्धनमुक्त हो सकता है। लोग किसे-कहानी सुनते हैं, सारा जीवन व्रत-उपवास करते रहते हैं, बिना सार की बातें सुनने में बच्चों के समान जीवन व्यतीत कर देते हैं। बुढ़ापे में आकर उनके मनोभाव कुठित हो जाते हैं और

आध्यात्म की वैशाखी का सहारा लेकर तथाकथित ब्रह्मचर्य और संन्यास आदि के पाठ वच्चों से लेकर वयस्कों तक को प्रवचन के रूप में पढ़ाते हैं। लेकिन क्या वे स्वयं भी भीतर से उतने ही पवित्र और सुरक्षित हैं? नहीं कदापि नहीं। उन्होंने केवल और केवल झूठे आध्यात्म का आवरण ओढ़ रखा है। वे स्वयं ही मुक्त नहीं हैं तब फिर किसी को मुक्ति का क्या मार्ग दिखा पायेंगे? वे भगवती त्रिपुर सुन्दरी के विलास को ढकने का प्रयास करते हैं क्योंकि वृद्धावस्था में वे भोगों का भोग नहीं कर सकते। वृद्धावस्था और भोग— दोनों का कोई मेल नहीं है। ये तो दो विपरीत व्यावहार की अवस्थायें हैं। ये वास्तविकता पर आवरण ढकने की कोशिश करते हैं। जो भी समाज अथवा आध्यात्म के प्रवर्तक हुए हैं, वे युवा ही रहे हैं, फिर चाहे वे बुद्ध हों या कृष्ण हों। इसा मसीह हों अथवा राम-कृष्ण हों। उन्होंने घिसे-पिटे पुजारी, पण्डितों, मठाधीशों अथवा भूपतियों के आध्यात्म का अनुसरण नहीं किया बल्कि उसमें परिवर्तन किया। मूल सिद्धान्तों से, वास्तविकताओं से समाज को अवगत कराया, ज्ञान दिया। इतिहास साक्षी है, महावीर भी वयस्क थे, विवाहित थे, पुत्र-पुत्रियों वाले थे, भूपति थे, भोग-विलास और ऐश्वर्यों से युक्त थे और उन्होंने भी इसकी अनुभूति की। आदि शंकराचार्य भी वयस्क थे, उन्होंने विवाह तो नहीं किया लेकिन जब मण्डन मिश्र उनसे शास्त्रार्थ में पराजित हो गये तब उनकी पत्नी उभय भारती ने आदि शंकर को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा और उलाहना दिया कि— “संन्यासी मिथ्या में जीते हैं। स्वयं स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होते हैं और उसी को लाचार, निरीह और निम्न समझते हैं।” तब आदि शंकर ने गहनता से विचार किया कि संन्यासी होने के कारण वे स्त्री-पक्ष के बहुत से पहलुओं से अनभिज्ञ

हैं, जिनका भेदन आवश्यक है। अतः उन्होंने शास्त्रार्थ करने के लिए उभय भारती से बीस दिन का समय मांगा। वे एक बाल-ब्रह्मचारी थे, इसलिए उन्हें कामशास्त्र, कौल विज्ञान, कुलशास्त्र आदि का कोई ज्ञान नहीं था और उभय भारती ने उनकी इसी कमजोरी पर प्रश्नों के द्वारा भीषण प्रहार किया था। अतः वे उत्तर देने में असमर्थ हो गये। अन्त में समय मांगने पर उभय भारती ने अपने प्रश्नों का उत्तर देने के लिए समय दे दिया।

आदि शंकर अपने शिष्यों के साथ प्रश्नोत्तरों की खोज में चल दिये। मार्ग में एक राजा का शव आ रहा था। उनकी अनेकों रानियां विलाप कर रही थीं। आदि शंकर को प्रश्नों के उत्तर जानने का यह समय उपयुक्त लगा अतः उन्होंने परकाया-प्रवेश के माध्यम से राजा सुधन्वा के शरीर में प्रवेश करने का विचार करते हुए अपने शिष्यों से कहा कि मेरे शरीर को इसी गुफा में सुरक्षित रख लेना। ठीक बीस दिन बाद मैं अपने शरीर में प्रवेश कर जाऊंगा। ऐसा कहकर उन्होंने मृत राजा के शरीर में प्रवेश किया और राजा पुनः जीवित हो उठा। अब राजा अत्यधिक भोग-विलासी हो गया था। अत्यधिक दान-पुण्य करने लगा। वह सदैव अपनी रानियों से धिरा रहता और उनकी संतुष्टि करता। प्रजा भी पहले से अधिक खुशहाल होने लगी। शंकर का सूक्ष्म शरीर रानियों की भाव-भौगिमाओं का सुक्ष्मता से निरीक्षण करता था क्योंकि उन्हें अपने प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ना था। उनका एकमात्र लक्ष्य था— कामसूत्र के गोपनीय रहस्यों को जानना और उनमें पूर्णता प्राप्त करना।

पूर्व निर्धारित समय पर आदि शंकर ने पुनः अपने सुरक्षित रखे शरीर में प्रवेश किया और फिर उन्होंने उभय भारती को उसके प्रश्नों

का उत्तर दिया। इसलिए जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए जीवन के प्रत्येक पहलू का ज्ञान होना आवश्यक है।

काम-विकार से युक्त होकर कोई भी आध्यात्म के मार्ग पर नहीं चल सकता। एक तड़प, एक अधूरापन, एक प्यास उसके भीतर सदैव झंझावत उत्पन्न करते रहते हैं। एक भी व्यक्ति भोग, विलास, ऐश्वर्य और सौन्दर्य का तिरस्कार नहीं कर सकता, ना ही किसी ने किया है। हम सब योनि-मण्डल से ही उत्पन्न हुए हैं। हम सभी मैथुनी-सृष्टि के अंग हैं इसलिए सत्य को नकारना असम्भव है। इस संसार में रहने वाले सभी जीव काम-भाव से आबद्ध हैं। काम-भाव से ग्रसित जीवों के द्वारा ही हम सबकी उत्पत्ति हुई है। हमारी अंगूठे के आकार वाली आत्मा ने इसी योनि-क्षेत्र में शरीर धारण किया है। हमारे अंगों-प्रत्यंगों की इसी योनि-क्षेत्र में उत्पत्ति हुई है। हम सब इसी क्षेत्र में गर्भवास झेलते हुए, मल-मूत्र का पान करते हुए, योनि-द्वार से ही इस संसार में आये हैं, फिर इसके प्रति वितृष्णा का झूठा भाव क्यों? झूठे आवरणों से सत्यता अधिक समय तक नहीं टिकती।

आदि शंकर इस तथ्य से भली-भांति सुपरिचित हो गये थे। वे योनि के रहस्य को, उसके महत्व को, उसके परिवर्तन, पल्लव और विकास के गुण को अच्छी तरह जान गये थे। इसीलिए उन्होंने कहा था—

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।

इह संसारे बहु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे॥

अर्थात् फिर जन्म, फिर मरण, फिर मां के पेट में शयन, इन सब में बहुत कष्ट है। अतः हे मां त्रिपुर सुन्दरी! हे मां कामाख्या! मुझे इस सबसे पार उतार दो, अर्थात् मुझे जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति देकर

मोक्ष प्रदान करो ।

यदि हम भगवती कामाख्या के स्वरूप पर दृष्टिपात करें तो वे ही त्रिपुर सुन्दरी हैं। विष्णु भगवान् सिंह के रूप में विराजित हैं और उनकी पीठ पर भगवान् सदाशिव शब के रूप में लेटे हुए हैं, जिनकी नाभि से कमलरूपी ब्रह्मा निकल रहे हैं, जिस पर माँ कामाख्या विराजित हैं। तीनों देव—ब्रह्मा, विष्णु और महेश पशु एवं वनस्पति भाव से आलिप्त हैं और उन पर एकमात्र शासन करने वाली हैं—भगवती कामाख्या। कामाख्या अर्थात् काम की व्याख्या। जो काम की व्याख्या करती हैं और जो काम का प्रमाणीकरण करती हैं, जो काम के विषय में स्पष्ट संदेश देती हैं, वही कामाख्या हैं। जिसने काम को, योनि के रहस्य को नहीं जाना, वह अल्पज्ञ है और ऐसा व्यक्ति ही कामविहीन कहलाता है, जो सृजन की अल्पता का प्रतीक होता है। यदि सृजन करना है तो योनि की उपयोगिता, उसकी श्रेष्ठता और उसके रहस्य को जानना ही होगा।

योनि ऊर्जा और उत्पत्ति का प्रतीक है। इसके अभाव में सृष्टि की संरचना संभव ही नहीं है। योनि-मण्डल के आस-पास दशों महाविद्यायें निवास करती हैं। यह भाग जीव के लिए सर्वाधिक सुरक्षित माना जाता है। इसकी रक्षा के लिए भगवान् विष्णु सहित समस्त देवीय शक्तियां प्रतिपल सजग रहती हैं क्योंकि यही वह परिक्षेत्र है जो महा उत्पादन का मूल स्रोत है। यह सर्वाधिक गुप्त एवं क्रियाशील अंग है। ऐसी शक्तियां जो सृष्टि का विनाश चाहती हैं, उसे नष्ट करना चाहती हैं अथवा सृजन-क्षेत्र पर अतिक्रमण करके स्वयं उत्पादन करना चाहती हैं, वे बार-बार योनि-मण्डल के आस-पास मंडराती रहती हैं और उस पर अधिकार प्राप्त करना चाहती हैं। उन्हें

दूर रखने के लिए ही दैवीय शक्तियां योनि-मण्डल की सुरक्षा में लगी रहती हैं।

मानव-चित्त अतीव रहस्यपूर्ण सूक्ष्म वस्तु है जो चेतन-शक्ति से ओत-प्रोत है। यह चेतन-शक्ति यद्यपि मानव-शरीर में अनेकानेक रूपों में क्रियाशील है तो भी उसका मुख्य स्रोत मानसिक शक्ति ही है। मानसिक शक्ति के प्रबल होने पर काम-शक्ति भी प्रबल होती है। हमारी मानसिक शक्ति के विकास का मूल 'मन' है और मन का सहज धर्म है— उत्पत्ति करना, सृष्टि की रचना करना। लेकिन जब तक मन का सम्बन्ध किसी बाह्य चेतन अथवा अचेतन पदार्थ अथवा वस्तु से नहीं होगा, वह सृष्टि की उत्पत्ति नहीं कर सकता। मन पदार्थ के सहज आस्तित्व से जो कामना उत्पन्न होती है— वही 'काम' है। 'काम' किसी भी वस्तु अथवा पदार्थ से हो सकता है। किसी भी चीज की इच्छा जाग्रत होना ही काम है। विषय-वासनाओं के मूल में भी काम है और काम के मूल में आकर्षण है जो प्राणी में सहज ही उत्पन्न हो जाता है। स्त्री-पुरुषों में आकर्षण संयुक्त रूप से उत्पन्न होता है जो मैथुन की इच्छा को जन्म देता है, उसे प्रबल करता है। इसीलिए आदिशक्ति का रूप 'काम' किसी सहचर के साथ है और वह सहचर कोई पुरुष होता है। मैथुन का आनन्द सांसारिक जीवन में आनन्द की पराकाष्ठा है। आनन्द ही समस्त कार्यों का प्राण है। इसकी प्रेरणा से ही सभी कार्य सम्पादित होते हैं। इसी पर बुद्धि और आस्तित्व निर्भर करते हैं। आनन्द का प्रत्यक्ष और स्थूल अनुभव मैथुनी-क्रिया से ही होता है। यह विश्व ही वासना है और विश्व वासना की प्रतिमा 'स्त्री' है। समाज में व्यक्तियों का सम्बन्ध 'मैथुन' सम्बन्ध ही है। जितने भी सामाजिक बंधन हैं, सभी में कामशक्ति प्रधान है। सभी प्रकार का

सम्बन्ध कामात्मक, आकर्षणात्मक तथा मैथुनात्मक है। पुरुष की प्रवृत्ति देने वाली है, लेने की प्रवृत्ति स्त्री की होती है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है। स्त्री की प्रवृत्ति शान्त्यात्मक और सहनात्मक होती है, जबकि पुरुष की प्रवृत्ति रौद्रात्मक, विसर्गात्मक तथा रसात्मक होती है। सभी जगह यही नियम लागू होता है।

उपर्युक्त समस्त परिचर्चा का सारांश यह है कि सत्, रज, तम्, जो महदादि एवं अन्य भूत-प्रेत, प्राणी हैं, वे सब इसी प्रकृति (योनि) से उत्पन्न हुए हैं। यह योनि ही पराशक्ति कामाख्या है, यही त्रिपुर सुन्दरी है और यही कामेश्वर की कामेश्वरी है। यही सारे चराचर संसार को उत्पन्न करती है। इस प्रकार योनि ही इस सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का आधार है। वही ऊर्जा प्रदान करने वाली है और वही सृजन करने वाली है इसलिए सर्वप्रथम वही पूज्या है। भगवती कामाख्या इसी योनि का प्रतीक हैं, प्राणी की समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाली हैं, इसीलिए वे परमाराध्या और प्रथम पूज्या हैं।

कुछ समय पूर्व मां कामाख्या की साधना से सम्बन्धित विधान मैंने अपनी वेबसाइट पर लिखा था, जिसे काफी पाठकों/साधकों द्वारा सराहा गया। उसके उपरान्त अनेकों जिज्ञासुओं और साधकों द्वारा मुझसे भगवती कामाख्या की साधना-विधि स्पष्ट करने हेतु अनेकों बार आग्रह किया गया। यथाशक्ति मैंने उनका मार्गदर्शन दूरभाष एवं साक्षात्कार द्वारा किया भी लेकिन ऐसी गृह और गुह्य विद्या से सम्बन्धित समस्त विधान बार-बार दूरभाष अथवा साक्षात्कार होने पर बताया जाना सम्भव नहीं हो पाता है, जिस कारण मां कामाख्या की साधना-विधि पर वह ग्रन्थ लिखने की मुझे आवश्यकता प्रतीत हुई। इसी कारण उन पराम्बा जगदम्बा की कृपा से इस ग्रंथ का लेखन

किया है ताकि साधकरण एवं जिज्ञासु व्यक्ति भगवती कामाख्या की विधिवत् साधना करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष— चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कर सकें। यद्यपि भगवती पराम्बा की साधना-विधि प्रस्तुत करने में मेरे द्वारा पूर्ण सतर्कता बरती गयी है लेकिन अज्ञानवश यदि कहीं कोई त्रुटि हुई हो तो समस्त विद्वजन से मेरा अनुरोध है कि मेरी त्रुटियों के सम्बन्ध में मेरा मार्गदर्शन करने का कष्ट करें।

बस इन्हीं शब्दों के साथ

आपका
योगेश्वरानन्द

सम्पर्क सूत्र :

9410030994, 9917325788

Email : shaktisadhna@yahoo.com

Website : www.yogeshwaranand.org

www.baglamukhi.info

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
श्री कामाख्या साधना क्यों करें?	v-vi
दो शब्द	vii-xx
अपनी बातें, अपनों से	xxi-xxxvi
भगवती कामाख्या के मुख्य मन्त्र	xliv
1. श्री कामाख्या पूजन-विधान	1-20
प्रणाम मन्त्र, स्पर्श मन्त्र 1; चरणामृत पान मन्त्र, अनुज्ञा मन्त्र 2; आचमन, पुण्य शुद्धि, कर-शुद्धि, शरीर-शुद्धि, यज्ञोपवीत 3; भस्म और टीका, न्यास- विधि, जीव न्यास, करांगन्यास, अंगन्यास 4; मातृका न्यास, अंगन्यास करन्यासी, प्राणायाम मन्त्र 5; पीठ न्यास, पीठ शक्तिन्यास 6; व्यापक न्यास 7; शंख की प्रार्थना, शान्ति पाठ एवं मंगल श्लोक 8; संकल्प 10; पोडशोपचार पूजन-विधान, ध्यान 11; आवाहन,	

प्राण-प्रतिष्ठा, विनियोग 12; अर्घ्य, आचमन, स्नान 13; पंचामृत स्नान, दुग्ध स्नान, दधि स्नान 14; धूत स्नान, मधु-स्नान, शर्करा स्नान, मांगलिक स्नान 15; शुद्धोदक स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, अलंकरण 16; यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, पुष्प माला, सिन्दूर 17; अबीर गुलाल, सुगन्धीद्रव्य, धूप, दीप 18; हस्तप्रकाशन, नैवेद्य निवेदन, करोद्धर्तन के लिए चन्दन, ताम्बूल 19; दक्षिणा समर्पण, जप समर्पण 20।

**2. श्री कामाख्या यन्त्र निर्माण तथा 21-36
देवी का ध्यान**

विनियोग इस प्रकार करें, ध्यान 22; कुंजिका स्तोत्र 23; अथ मन्त्र 24; तन्त्रोक्त देवी-सूक्तम् 26; परमदेवी सूक्त, विनियोग, ऋष्यादिन्यास 32; महाविद्यान्यास, कामाख्या ध्यानम् 33; फलश्रुति 36।

3. पुरश्चरण-विधान 37-50

पुरश्चरण की अनिवार्यता 37; मन्त्र, गुरु तथा देवता में अभेद 38; प्रबल भाव, श्रद्धा एवं भक्तिभाव, पुरश्चरण के अंग 39; फल की प्राप्ति 40; प्रतिनिधि द्वारा पुरश्चरण, उचित स्थान, पुरश्चरण-विधि 41; क्षेत्रपाल का मन्त्र, बलि-मन्त्र, अनुमति मन्त्र 42; इन्द्रादि बलि 43; असमर्थता में होमादि का विधान, जप के नियम 44; पुरश्चरण के नियम, अन्न और जल का अभिमन्त्रण, अन्य आवश्यक कर्तव्य 45;

बुरे स्वप्नों का परिहार, मन्त्र-सिद्धि के लक्षण 46; सिद्धि प्राप्त होने तक पुरश्चरण का अभ्यास, अशौच की स्थिति में क्या करें 47; ग्रहणकाल में पुरश्चरण 48—49; कुछ विशेष 50।	
4. श्री कामाख्या-कवचम्	51-54
5. श्री कामाख्या-स्तोत्रम्	55-60
कुछ विशेष 60।	
6. श्री कामाख्या मन्त्र युक्त श्री कालिका सहस्रनाम होम व अर्चन साधना	61-112
संक्षिप्त होम व अर्चन विधि 61; संकल्प, विनियोग, ऋष्यादि न्यास, ध्यान 62; मानस पूजा 63; पूर्णाहुति एवं विसर्जन 112।	
7. कामाख्या चालीसा व आरती	113-122
कामाक्षायाष्टक 117; कामाक्षा माँ की आरती 120; प्रदक्षिणा, दण्डवत् प्रणाम, वर-याचना, क्षमा-प्रार्थना, देवी विसर्जन 121; शान्ति मन्त्र, प्रार्थना 122।	
8. कुमारी-पूजन	123-146
कुमारी-पूजन का महत्व 123; कुमारी-भेद 124; कुमारियों का वर्ण-भेद 125; कुमारी-दान-क्रम-फल 126; अथ कुमारी-पूजा प्रयोग 127; हृदयादि- षडंगन्यास, ध्यान 128; कन्या-पूजन 130; प्रणाम	

132—135। कुमारी स्तोत्र 136—138; फलश्रुति,
कुमारी-कवच 139; पूर्व पीठिका, कवच 140;
फल-श्रुति 141; भावार्थ फल-श्रुति 142—146।

9. योनि-स्तोत्रम् 147-170

योनि-स्तोत्रम् (1) 147; योनि-ध्यान 148; स्तोत्र
149; विनियोग, स्तोत्र पाठ 151; फलश्रुति 153;
भावार्थ 154; योनि-स्तोत्रम् (2) 156; भावार्थ
159—161। योनि-कवचम् 162; विनियोग, कवच,
फलश्रुति 163; भावार्थ 164—166। कुण्डलिनीस्तोत्रम्
167—170।

10. कामाख्या मन्त्र एवं विधान 171-275

त्र्यक्षरी मन्त्र, विनियोग, घड़ंगन्यास, ध्यान 171;
द्विविंशत्यक्षर मन्त्र 172, विनियोग, घड़ंगन्यास, ध्यान
173, प्रयोग 175, श्री कामाख्या यन्त्रम् 176, तान्त्रिक
पद्धति, विशिष्ट शाक्त साधकों हेतु श्री कामाख्या-
पूजन-विधान, कवच 177, स्तोत्र 181, ध्यान 187,
भूतशुद्धि 189, विनियोग, करन्यास 191,
हृदयादिन्यास, चक्रन्यास, ध्यान, कण्ठे विशुद्धिचक्रे,
हृदये अनाहतचक्रे, नाभौ मणिपूरे, स्वाधिष्ठाने, मूलाधारे
192, बहिर्मातृकान्यास, विनियोग, ऋष्यादिन्यास,
करन्यास 193, हृदयादिन्यास, ध्यानम् 194, यन्त्र
स्थापना एवं पीठ पूजा 198, सामान्यार्थ्य 200,
कलश स्थापना 201, मीनादि शोधन 203, योनि-मुद्रा,

मत्स्य मुद्रा, धेनु मुद्रा 204, श्रीपात्र स्थापना 206,
भैरवादि तर्पण 209, तत्व शोधन 210, इष्टदेवता का
आवाहनादि 211, आवरण पूजन, प्रथम आवरण
214, द्वितीय आवरण 215, तृतीय आवरण 216,
चतुर्थ आवरण, पंचम आवरण 218, षष्ठम आवरण
219, सप्तम आवरण 220, अष्टम आवरण 221,
नवम आवरण 222, दशम आवरण 224, एकादश
आवरण, द्वादश आवरण 225, त्र्योदश आवरण 226,
चतुर्दश आवरण 227, होम 229, ईशान (बटुक
भैरव), वायव्य (योगिनी) 230, नैऋत्य (क्षेत्रपाल),
आग्नेय (गणपति), उत्तर (सर्वभूत) 231, कामाख्या
मूल मन्त्र 234, प्रेतवाधा निवारण हेतु मन्त्र 235,
श्रेष्ठ पुत्र-प्राप्ति मन्त्र 236, वशीकरण मन्त्र 237,
शावर मन्त्र : गर्भ-स्थापना हेतु 238, सुख-शान्ति
हेतु, अक्षय धन-प्राप्ति मन्त्र 239, बल-प्राप्ति मन्त्र
240, विद्या-प्राप्ति मन्त्र, विद्या-स्मरण मन्त्र 241,
नौकरी-प्राप्ति मन्त्र 242, महालक्ष्मी मन्त्र, अनायास
धन-प्राप्ति मन्त्र 243, विघ्न-विनाशन मन्त्र, आय
बढ़ाने का मन्त्र 244, सिद्ध वशीकरण मन्त्र 245,
शूकरदन्त वशीकरण मन्त्र, वशीकरण टोटका 246,
पैंतीस अक्षरी मन्त्र (सर्वसिद्धि) 248, प्रश्न का उत्तर
पाने का मन्त्र, अघोर काली मन्त्र 253, औघड़-सिद्धि
मन्त्र 254, शत्रु-नाशक भैरव मन्त्र 255, असाध्य
रोग-निवारक मन्त्र, रुठी हुई स्त्री का वशीकरण

मन्त्र 256, भाग्योदय हेतु अनुभूत मन्त्र 257, शरीर की कान्ति बढ़ाने का मन्त्र, सांसारिक कठिनाइयों को दूर करने का मन्त्र, श्री भैरव जज्जीरा मन्त्र 258–259, भैरव-कृपा मन्त्र 260, श्री भैरव-सिद्धि मन्त्र, श्री भैरव चेटक मन्त्र, भैरव जी की चौकी मूकने का मन्त्र 261, शत्रु-विनाशक मन्त्र, टोना लगाने का मन्त्र 262, टोना फूंकने का मन्त्र, सर्वसौख्य-प्रदायक मन्त्र, इष्ट ग्रह कुमार बीसा यन्त्र 263, स्त्री मोहन यन्त्र 264, अमोघ बीसा यन्त्र, कला के क्षेत्र में प्रवेश हेतु कामाख्या यन्त्र 265, मस्तिष्क वृद्धि यन्त्र 266, सर्वजन वशीकरण यन्त्र, पुरुष-वशीकरण यन्त्र 267, विक्री बढ़ाने का यन्त्र, रोने वाले बच्चे के गले में बांधने का यन्त्र 268, बच्चे की निद्रा के समय भय दूर भगाने का यन्त्र, व्यापार में लाभ होने का यन्त्र 269, स्त्री-वशीकरण यन्त्र 270, सर्वकामना सिद्धि यन्त्र 271, लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र 272, स्त्री वशीकरण कामाख्या यन्त्र 273, पुरुष वशीकरण कामाख्या यन्त्र, सौभाग्योदय यन्त्र 274–275।

श्री कामाख्या-तन्त्रम् (सार्थ) 276–378

- | | |
|--|---------|
| 1. प्रथमः पटलः (श्री कामाख्या-माहात्म्य) | 277–280 |
| 2. द्वितीयः पटलः (मन्त्रोद्धार) | 281–284 |

3. तृतीयः पटलः (काली-तारा मंत्रदान में विचार-निषेध)	285–297
4. चतुर्थः पटलः (मन्त्र का स्वरूप)	298–306
5. पंचमः पटलः (गुरु-तत्व का वर्णन)	307–323
6. षष्ठः पटलः (पञ्चतत्व-माहात्म्य)	324–333
7. सप्तमः पटलः (शत्रु-विनाश-विधान)	334–338
8. अष्टमः पटलः (पूर्णाभिषेक एवं गुरु-लक्षण)	339–360
9. नवमः पटलः (मुक्ति का साधन)	361–366
10. दशमः पटलः (कामाख्या-स्वरूप)	367–372
11. एकादशः पटलः (कामाख्या-पीठ-स्थान)	373–378

भृ

भगवती कामाख्या के मुख्य मन्त्र

1. त्रीं त्रीं त्रीं।
2. ॐ कामाक्ष्यै नमः।
3. ॐ ॐ वषट् ठः ठः।
4. क्षीं ॐ ॐ वषट् ठः ठः।
5. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा।
6. ॐ नमः ह्रीं क्लीं सर्वार्थं साधिन्यै कामाक्ष्यै स्वाहा।
7. ॐ ये परक्षों भयं भगवती कामाक्ष्या रेक्ष स्वाहा।
8. ॐ नमो नमो कामरूपवासिनी सर्वलोक वश्यकरी स्वाहा।
9. ॐ भू भुवः स्वः ॐ कामाक्ष्यै चामुण्डायै विद्महे भगवत्यै धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। (कामाख्या गायत्री)।
10. ॐ भू भुवः स्वः ॐ कामाक्ष्यै चामुण्डायै विद्महे भगवत्यै धीमहि तनो गौरी प्रचोदयात्। (कामाख्या गायत्री)।
11. ॐ भूर्भुव स्वः कामाक्ष्यै विद्महे भगवत्यै धीमहि तनो गौरी प्रचोदयात्। (कामाख्या गायत्री)।

अध्याय १

श्री कामाख्या पूजन-विधान

सर्वप्रथम अपने पूजा-स्थल में लाल रंग का उत्तम कपड़ा बिछाकर उस पर भगवती कामाख्या की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करें। यदि कामाख्या शक्ति-पीठ में हों तो माँ कामाख्या के विग्रह अथवा चित्र को ग्रणाम निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करते हुए करें—

ग्रणाम मन्त्र—

कामाख्ये काम सप्पने कामेश्वरि हरप्रिये।

कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥

इसके उपरान्त भगवती के चरणों को स्पर्श इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए करें—

स्पर्श मन्त्र—

मनोभव गुहा मध्ये रक्त-पाषाण रूपिणी।

तस्याः स्पर्श-मात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते॥

स्पर्श के उपरान्त ‘चरणामृत-पान’ अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए करें—

चरणामृत-पान-

शुकादिनांच यज् ज्ञानं यमादि परिशोधितम्।

तदेव द्रव-स्त्रपेण कामाख्या योनिमण्डले॥

अनुज्ञा मन्त्र— अब भगवती से हाथ जोड़कर ‘अनुज्ञा मन्त्र’ का उच्चारण करें—

कामदे कामरूपस्थे सुभगे सुरसेविते।

करोमि दर्शनं देव्याः सर्व-कामार्थ-सिद्धये॥

इसके बाद अपने आसन को बिठाकर उसके नीचे एक त्रिकोण मण्डल  बनाकर निम्नाकित मन्त्र से त्रिकोण मण्डल का गन्ध, पुष्प, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें—

हीं आधार शक्तये नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः।

उपरोक्तानुसार पूजन करने के बाद त्रिकोण का स्पर्श निम्नाकित मन्त्र से करें—

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता-लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्॥

किसी भी पूजा कर्म का सम्पादन करने से पहले आचमन एक आवश्यक कृत्य है। लेकिन आचमन करते समय जल का नाखून से स्पर्श नहीं होना चाहिए तथा होठों से शब्द नहीं बोलना चाहिए। पहले आचमन से आध्यात्मिक, दूसरे आचमन से अधिभौतिक तथा तीसरे आचमन से अधिदैविक शान्ति मिलती है। आचमन-मन्त्र इस प्रकार है—

आचमन—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय
नमः।

उपर्युक्त तीनों मन्त्रों से दायें हाथ में जल लेकर आचमन करें।
इसके बाद 'ॐ हृषीकेशाय नमः' बोलकर दोनों हाथों को धो लें।

पुष्प-शुद्धि— तत्पश्चात् पुष्प-शुद्धि करें। पूजा के लिए लाल
रंग के सुगन्धित पुष्प लेने चाहिए। पुष्प को देखते हुए नीचे लिखे
मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्प सम्भवे।

पुष्प चमा वकीर्णन च हुं फट् स्वाहा॥

कर-शुद्धि— पुष्प-शुद्धि के बाद कर-शुद्धि अर्थात् हाथों की
शुद्धि करनी चाहिए। साधक को ऐं बोलकर पुष्प को हाथ में लेना
चाहिए। फिर ॐ बोलकर दोनों हाथों में उसे घुमाकर ईशानकोण में
रख देना चाहिए।

इसके बाद साधक को अपने ऊपर जल छिड़कते हुए नीचे लिखे
मन्त्र को बोलकर शरीर-शुद्धि करनी चाहिए—

शरीर-शुद्धि—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्था गतोऽपिवा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सावाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पुनः पूजन सामग्री पर जल छिड़कें।

मन्त्र— ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु।

यज्ञोपवीत— तब इस मन्त्र से यज्ञोपवीत धारण करें—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
 आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
 तत्पश्चात् दो बार आचमन करें।

भस्म और टीका- ॐ हुं फट् से मस्तक, कण्ठ, हृदय और बाहु में त्रिपुण्ड धारण करें। पुनः ‘ऐं’ कहकर रोली लेकर हाथ पर रखें और ‘हीं’ का उच्चारण कर जल मिलाकर दाहिने हाथ की अनामिका उंगली से गीला करें और ‘ओं’ बोलकर मध्यमा उंगली से मस्तक के मध्य में एक लम्बा टीका लगाएं। ‘बलीं’ बोलते हुए हाथ धोएं और पुनः हाथ जोड़ ‘ॐ’ का उच्चारण कर देवी का ध्यान करें।

न्यास विधि

जीव न्यास- ॐ सोहं बोलकर हृदय पर हाथ रखकर उच्चारण करें— ॐ, आं, हीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हों, हंस मम प्राणा:इह प्राणा ॐ आं, हीं, क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों हंसः मम जीव इह स्थितः पुनः ॐ आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों हंसः सर्वेन्द्रियाणि पुनः ॐ आं हीं से हंसः तक पुनः लिखें— ममवाङ्गमनश्चशक्षु श्रोत ग्राण प्राण पाद पादानि इहैवागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा।

करांगन्यास- ॐ अं, कं, खं, गं, घं, डं, आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं, चं, छं, जं, झं, झं, ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ तं, टं, ठं, डं, ढं, णं, ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ एं, तं, थं, वं, धं नं, ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं, पं, फं, बं, भं, म, औं कनिष्ठाभ्यां वषट्। ॐ अं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, अः करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्वाय फट्।

अंगन्यास- ॐ अं, कं, खं, गं, घं, डं, आं हृदये नमः।
 ॐ इं, चं, छं, जं, झं, जं, ई शिरसे स्वाहा। ॐ उं, टं, ठं,
 डं, ढं, णं, ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं, तं, थं, दं, धं नं, ऐं
 कवचाय हुम्। ॐ ओं, पं, फं, बं, भं, म, औं नेत्राभ्यां वषट्।
 ॐ अं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, अः करतलकर
 पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

मातृका न्यास- आधारे वं नमः। शं नमः। षं नमः। सं
 नमः लिंगे। बं नमः। भं नमः। मं नमः। यं नमः। रं नमः। लं नमः
 नामे। डं नमः। ढं नमः। णं नमः। तं नमः। थं नमः। दं नमः। धं
 नमः। नं नमः। पं नमः। फं नमः हृदये। कं नमः। खं नमः। गं
 नमः। घं नमः। डं नमः। चं नमः। छं नमः। जं नमः। झं नमः।
 अं नमः। टं नमः। ठं नमः कठो। अं नमः। आं नमः। इं नमः। ईं
 नमः। उं नमः। ऊं नमः। ऋं नमः। ऋूं नमः। लूं नमः। लूं नमः।
 एं नमः। ऐं नमः। ओं नमः। औं नमः ललाटे।

अंगन्यास करन्यासी- ॐ कामाक्ष्ये अंगुष्ठाभ्यां नमः।
 ॐ कामाक्ष्ये तर्जनीभ्यां नमः। ॐ कामाक्ष्ये मध्यमाभ्यां वषट्।
 ॐ सृष्टि कारिणी कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ कामाक्ष्ये सृष्टि
 रक्षिणी करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्। ॐ कामाक्ष्ये कामं
 हृदयाय नमः। ॐ कामाक्ष्ये शिरसि स्वाहा। ॐ कामाक्ष्ये
 शिखायै वषट्। ॐ सृष्टिकारिणी कवचाय हुम्। ॐ कामाक्ष्ये
 कामदायिनी नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ कामाक्ष्ये सृष्टिकारिणी
 करतलकर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

प्राणायाम मन्त्र

‘क्लीं’ पूरक प्राणायाम में सोलह बार मन्त्र को जपें। कुम्भक
 श्री कामाख्या पूजन-विधान (5)

प्राणायाम् में चौंसठ बार तथा रेचक में बत्तीस बार उच्चारण करें।
(16 : 64 : 32)

पीठन्यास

हृदय— ॐ आधार शक्तये नमः। ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ
कुम्मार्यै नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ क्षीर
समुद्रायै नमः। ॐ रति द्वीपाय नमः। ॐ मणि मण्डलाय
नमः।

दक्षिण-स्कन्ध— ॐ धर्माय नमः।

वाम-स्कन्ध— ॐ ज्ञानाय नमः।

दक्षिण उर मूले— ॐ वैराज्ञाय नमः।

वाम उर मूले— ॐ ऐश्वर्याय नमः।

मुख— ॐ धर्माय नमः।

दक्षिण पाश्व— ॐ आज्ञानाय नमः।

वाम पाश्व— ॐ अवैराय नमः।

नाभि— ॐ अनैश्वर्याय नमः।

पुनः

हृदय— ॐ शोधाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ सूर्य
मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐ सोम मण्डलाय षोडश
कलात्मने नमः। ॐ भीम मण्डलाय द्वादश कलात्मने
नमः। ॐ सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः।
ॐ आं आत्मने नमः। ॐ षं पात्मने नमः। ॐ क्लीं ज्ञानात्मने
नमः।

पीठ शक्तिन्यास

हृतपदमस्य पूर्वादिकेशरेषु आं प्रमायै नमः । ई आयायै नमः ।
ॐ गंगायै नमः । एं सूक्ष्मायै नमः । ॐ विशुद्धायै नमः । ओं नन्दिन्यै
नमः । औं प्रभायै नमः । अं विजयायै नमः । अः सर्वसिद्धिदात्र्यै नमः ।
मध्ये— ॐ वज्रं नषदंष्ट्रयुधाय महासिंहाय ॐ हुँ फट् नमः ।

व्यापक न्यास

कल्पी मन्त्र कहते हुए सिर से पैर तक तीन बार अंग स्पर्श करें ।

अर्ध स्थापन तथा शंख, घंटादि का पूजन

ॐ अस्त्राय फट्— यह मन्त्र कहकर शंख को धो
लें ।

तब वाम भाग में त्रिकोण मण्डल बनाकर शंख उस पर स्थापित
करें ।

‘ॐ नमः’ यह मन्त्र कहकर गन्ध, पुष्प, अक्षत शंख में छोड़
दें । फिर निम्नलिखित मन्त्र से शंख में जल छोड़ें ।

ॐ जं नमः । ॐ त्रं नमः । ॐ क्षं नमः । ॐ हं नमः । ॐ
सं नमः । ॐ षं नमः । ॐ शं नमः । ॐ वं नमः । ॐ लं नमः ।
ॐ रं नमः । ॐ यं नमः । ॐ मं नमः । ॐ भं नमः । ॐ बं
नमः । ॐ फं नमः । ॐ पं नमः । ॐ नं नमः । ॐ धं नमः । ॐ
दं नमः । ॐ थं नमः । ॐ तं नमः । ॐ णं नमः । ॐ ढं नमः ।
ॐ डं नमः । ॐ ठं नमः । ॐ टं नमः । ॐ जं नमः । ॐ झं
नमः । ॐ जं नमः । ॐ छं नमः । ॐ चं नमः । ॐ डं नमः । ॐ
घं नमः । ॐ गं नमः । ॐ खं नमः । ॐ कं नमः । ॐ अः नमः ।

ॐ अं नमः। ॐ औं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ए नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लूं नमः। ॐ त्रृं नमः। ॐ त्रहं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ इं नमः। ॐ आं नमः। ॐ अं नमः। ॐ ऐं हीं बलीं श्री कामाक्ष्ये नमः। ॐ पूर्णायै नमः।

भौम कलात्मने— ॐ वह्नि मण्डलाय नमः।

अंधदेश कलात्मने— ॐ सूर्य मण्डलाय नमः।

शंख घोडश कलात्मने— ॐ चन्द्र मण्डलाय नमः।

अब शंख की गन्ध, अक्षत, पुण्य, धूप और नैवेद्य दक्षिणादि से पंचोपचार पूजन करें। इसी प्रकार घंटा, घड़ियाली का भी साथ में पूजन करें। तब हाथ में पुण्य लेकर दोनों की अलग-अलग प्रार्थना करें।

शंख की प्रार्थना—

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुनाविधृताकरे।

निर्मितः सर्व देवैश्च पञ्चजन्य नमस्तुते॥

घड़ी, घंटा, घड़ियाली की प्रार्थना—

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्।

घंटानादं प्रकुर्वीत् पश्चाद् घण्टा प्रपजयेत्॥

शांति पाठ एवं मंगल श्लोक

साधक हाथ में पुण्य और चावल लें, हाथ जोड़कर निम्न श्लोक पढ़ें और सब देवों को नमस्कार करें।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्नाशो विनायकः॥

धूप्रकेतुगणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
 द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
 विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
 संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
 शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नं वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
 अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
 सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
 सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिकेः।
 शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
 सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
 येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः॥
 तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
 विद्याबलं देवबलं तदेव, लक्ष्मीपते!
 तेऽङ्गिनियुगं मरामि॥
 लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
 येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो, जनार्दनः॥
 सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
 देवा विशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥
 श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥ श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां
 नमः॥ श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥
 शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः॥
 इष्टदेवताभ्यो नमः॥ कुलदेवताभ्यो नमः॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः॥

स्थान देवताभ्यो नमः॥ वास्तु देवताभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो
ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः॥

पुण्य अक्षत को श्रद्धापूर्वक पृथ्वी पर रख पुनः पुण्य अक्षत ले
तथा निम्न मन्त्र से देवी की प्रार्थना करें—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै शततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रार्थं निहताः प्रणतास्म् ताम्॥

संकल्प

अब कुश, अक्षत, पुण्य, जल लेकर निम्न प्रकार से संकल्प करें।
(अमुक के स्थान पर आगे का नाम का उच्चारण करता जाए।)

हरि: ॐ तत्सत् श्री विष्णुविष्णुविष्णुः अद्य ॐ नमः
परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय ब्रह्मणोहि द्वितीयपराद्द्वेष्ट्री
श्वेत वाराहकल्ये जम्मूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तेक देशान्तर्गते
श्री मद्विष्णुप्रजापति क्षेत्रे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे कलि प्रथम चरणे अमुक क्षेत्रे (यथा प्रयाग क्षेत्रे,
विंध्य क्षेत्रे, काम्य क्षेत्रे इत्यादि) अमुक नाम संवत्सरे मासोत्तमे
मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे
श्रुतिस्मृति- पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुक
शर्माहं (ब्राह्मण शर्मा कहें क्षत्रिय वर्मा और वैश्य गुप्त कहें)
सकलदुरितोपशमनं सर्वापच्छान्ति पूर्वक अमुक (यदि कोई
मनोरथ हो) मनोरथ सिद्ध्यर्थं यथासंपादित सामिग्रया श्री
कामाख्यादेवी पूजनं करिष्ये॥

तदंगत्वेन कलश स्थापनं वरुण पूजनं सूर्यादि नौग्रह
देवता स्थापनं पूजनं करिष्ये॥

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च
करिष्ये॥

कहकर भूमि पर छोड़ दें।

षोडशोपचार पूजन विधान

इस प्रकार संकल्प पढ़कर हस्तगत जलाक्षत-द्रव्य किसी भूमि पर
रखे पात्र में छोड़ दें। तत्पश्चात् देवी कामाख्या का पूजन आरम्भ करें।
सबसे पहले निम्नांकित श्लोकों के अनुसार देवी कामाख्या का ध्यान
करें तत्पश्चात् उनका आवाहन करें—

ध्यान

रविशशियुतकर्णा कुंकुमापीतवर्णा,
मणिकनकविचित्रा लोलजिह्वा त्रिनेत्रा।
अभ्यवरदहस्ता साक्षसूत्रप्रहस्ता,
प्रणतसुरनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
अरुण-कमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था,
नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।
शबहृदि पृथुतुंगा स्वांघि, युग्मा मनोज्ञा,
शिशुरविसमवस्त्रा सर्वकामेश्वरी सा।
विपुलविभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी,
दलितकरकदन्ता सामिचन्द्रावनभ्रा।
मनसिज-दृशदिस्था योनिमुद्रालसन्ती।
पवनगगनसक्तां संश्रुतस्थानभागा॥

चिन्त्या चैवं दीप्यदग्निप्रकाशा,
धर्मार्थाद्यैः साधकैर्वाज्ञितार्थः॥

आवाहन

ॐ भगवती स्वकीय गण तथा परिवार सहिते इहागच्छ
इह तिष्ठ, मम पूजा गृहाण, सम्मुखे भव वरदो भव।
सिंहचर्मोत्तरासंगा कामाख्या विपलोदरी।
वैयाघ्रधर्मवसना तथा चैव हरोदरी॥
चण्डित्व चण्डिरूपोसि सुरतेजो महाबले।
आगच्छ तिष्ठ यज्ञेस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम्॥

प्राण-प्रतिष्ठा

(देवी की प्रतिमा अथवा चित्र में)

विनियोग— ॐ अस्य श्री कामाख्या देव्याः प्राण-प्रतिष्ठा
मन्त्रस्य ब्रह्मा, विष्णुः महेश्वरा ऋषयः ऋग् यजुसामनिच्छन्दासि
चैत्यन्त देवता प्राण प्रतिष्ठायाः विनियोगः।

ॐ आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः कामाक्षायाः
प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः
कामाक्षायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं हीं क्रौं यं रं कामाक्षायाः
(अस्या मूर्तौ व चित्रौ) सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्वक्षुः
श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं
तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवतवमचीर्यं मामहेति च कश्चन॥

अब साधक या पूजनकर्ता मूल मन्त्र ॐ ह्रीं देव्यै नमः का जप करें पुनः पूर्वोक्त विधि अनुसार अंगन्यास मातृका न्यास करावें तथा नीचे लिखे कामाख्या गायत्री मन्त्र से तीन बार पुष्पांजलि प्रदान करें।

ॐ भूः भुवः स्वः ॐ कामाख्यै चामुण्डायै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्मो गौरी प्रचोदयात्।

अब देवी की पोडशोपचार विधि से पूजन करें। ॐ एं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा यह देवी का द्वादश अक्षर वाला मन्त्र है। इसी एक मन्त्र से देवी का पूजन करना चाहिए तथा तीन पत्तियाँ वाले बेलपत्ते की पंखुड़ी आसन के लिए इस तरह बीलकर दें—

एं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा आसनं समर्पयामि।

अर्घ्य

तदनन्तर गन्ध आदि से युक्त अर्घ्यजल अर्पित करें और निमाकित मन्त्र पढ़ें—

ॐ एं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन— इसके अनन्तर गंगाजल से आचमन करायें और नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करें—

कपूरिण सुगंधेनवासितं स्वादु सुशीतलम्।

तोयमाचनीयार्थं गृहाणं परमेश्वरी॥

ॐ एं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा आचमनीयं समर्पयामि।

स्नान— तदनन्तर नीचे दिये हुए मन्त्र को बोलकर गंगाजल से स्नान कराने की भावना से स्नानीय जल अर्पित करें—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देवी स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा जलं समर्पयामि।

पञ्चामृत-स्नान

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर पञ्चामृत से स्नान करायें—

पञ्चामृत मयाऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शकरा च सपायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।
पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

इसके बाद दूध दही आदि से पृथक्-पृथक् स्नान कराकर शुद्ध जल से भी स्नान कराना चाहिए। दूध से स्नान कराने के लिए मन्त्र निम्नलिखित हैं—

दुग्ध-स्नान—

कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा स्नानं समर्पयामि।
पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि-स्नान—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, दधिस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृत-स्नान-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, घृतस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधु-स्नान-

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, मधुस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा-स्नान-

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।

मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, शर्करास्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

इसके बाद सुगन्धित इत्र या अन्य द्रव्य (अल्कोहल रहित) आदि अर्पित करें—

मांगलिक स्नान (सुवासित तैल या इत्र)

चम्पकाशोकबकु लमालतीमोगरादिभिः।

वासितं स्त्रिरधताहेतुतैलं चारु प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, मुवासितं तैलं समर्पयामि।

शुद्धोदक-स्नान— तदनन्तर गंगाजल या तीर्थ जल से शुद्ध स्नान करायें।

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदा सिन्धुः कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र—

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिः प्रयच्छ मे॥

ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र—

उत्तरीयं तथा देवी नानाचित्रितमुत्तमम्।

गृहाणेदं मया भक्त्या दत्तं तत् सफलीकुरु॥

ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, उपवस्त्रं समर्पयामि।
तदन्ते आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, वस्त्रोपवस्त्रार्थं रक्तसूत्रं समर्पयामि।

अलंकरण—

ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, अलंकरणार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीत-समर्पण-

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा, आचमनं समर्पयामि।

चन्दन-

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाद्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा, गन्धं समर्पयामि।

अक्षत्-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प माला-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै शिवे।

मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा, पुष्पमालां समर्पयामि।

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर गुलाल-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।

नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, नानापरिमलद्रव्याणि
समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य-

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलादभुतम्।

गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप-

वनस्पतिरसोदभूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, धूपमाद्ग्रापयामि।

दीप-

सान्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपन्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ अग्निज्योतिज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिज्योतिः
सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा सूर्यो वचो
ज्योतिर्वचः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन—

ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो लें।

नैवेद्य-निवेदन—

अनं चतुर्विंधं स्वादुःरसैः षडिभः समन्वितम्।

नैवेद्यं गृह्णतां देवी भक्तिं मे हृचलां कुरु॥

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, नैवेद्यं ऋतुफलानि च समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, आचमनीयं मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं च समर्पयामि।

करोद्वर्तन के लिए चन्दन—

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्तनकं देवी गृहणं परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ताम्बूल-अर्पण—

पुंगीफलं महदिदव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्णताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, मुखवासार्थ-मेलापुंगीफलादिसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा-समर्पण-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा, कृतायाः पूजायाः
सादृश्यार्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

जप-समर्पण— इसके उपरान्त निर्धारित मन्त्र का जप करें।
मन्त्र-जप पूर्ण करके भगवती के बायें हाथ में समर्पण कर दें—

गुह्याति गुह्या गोष्ठी, त्वं गृहाणा स्मत्कृतं जपम्।

सिद्धि-र्भवतु मे देवि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरी॥

॥ संक्षिप्त पूजा पटल ॥



अध्याय २

श्री कामाख्या यन्त्र निर्माण तथा देवी का ध्यान

सिन्दूरमण्डलं कृत्वा त्रिकोणज्य समालिखेत्।
निजबीजानि तन्मध्ये योजयेत् साधकोत्तमः॥
चतुरसं लिखेद् देवि ततो बज्ञाष्टकं प्रिये।
अष्टदिक्षु यजेत्ताज्य न्यासजालं विधाय च॥
अक्षोभ्यश्च ऋषिः प्रोक्तः छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम्।
कामाख्या देवता सर्वसिद्धये विनियोजिता॥
करांगन्यासकादीनि निजबीजेन कारयेत्।
षड्दीर्घभाजां ध्यायेत् कामाख्याभीष्टदायिनीम्॥
रक्तवस्त्रां वरोदयुक्तां सिन्दूरतिलकान्विताम्।
निष्कलंकं सुधाधामवदनकमलोज्ज्वलाम्॥
स्वर्णादिमणिमाणिक्यभूषणैर्भूषितां पराम्।
नानारत्नादिनिर्माणसिंहासनोपरिस्थिताम् ॥
हास्यवक्रां पद्मरागमणिकान्तिमनुत्तमाम्।
पीनोन्तुंगकुचां कृष्णां श्रुतिमूलगतेक्षणाम्॥

कटाक्षैश्च महासम्पददायिनीं परमेश्वरीम्।
 सर्वांगसुन्दरीं नित्या विद्याभिः परिवेष्टिताम्॥
 डाकिनीयोगिनीविद्याधरीभिः परिशोभिताम्।
 कामिनीभिर्युतां नानागन्धाद्यैः परिगच्छिताम्॥
 ताम्बूलादिकराभिश्च नायिकाभिर्विराजिताम्।
 समस्तसिद्धवर्गाणां प्रणतानां प्रतीक्षणाम्॥
 त्रिनेत्रां सम्मोहकरां पुष्पचापेषु विभृतीम्।
 भगलिंगसमाख्यानं किन्नरीभ्योऽपि शृणवतीम्॥
 वाणीलक्ष्मीसुधावाक्यप्रतिवाक्यमहोत्सुकाम् ।
 अशेषगुणसम्पन्नां करुणासागरां शिवाम्॥

भावार्थ- सिन्दूर से वृत्त बनाकर उसके भीतर त्रिकोण बनायें। इसके उपरान्त उस त्रिकोण के भीतर 'त्रीं' बीज लिखें। हे देवि! फिर वृत्त के बाहर एक चतुर्भुज बनाकर उसके बाहर वज्राष्टक बनायें। तदोपरान्त न्यास आदि करके आठों दिशाओं में भगवती काली का पूजन करें। काली मन्त्र के ऋषि अक्षोभ्य, छन्द अनुष्टुप तथा देवता कामाख्या हैं। यह सभी प्रकार की सिद्धियों के लिए विनियोजित हैं।

(विनियोग इस प्रकार करें— ॐ अस्य श्री कामाख्या मन्त्रस्य
 अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, कामाख्या देवता सर्वसिद्धये
 जपे विनियोगः।)

ध्यान

अभीष्ट को प्रदान करने वाली कामाख्या देवी का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए। छः दीर्घ स्वरों वाले बीज मन्त्र त्रां त्रीं त्रूं त्रीं त्रीं

त्रः वाली ये देवी रक्त वस्त्र किये हुए हैं। इनके एक हाथ में वर मुद्रा है और इन्होंने सिन्दूर का तिलक लगाया हुआ है। कलंकरहित चन्द्रमा के जैसा अथवा कमल जैसे आभायुक्त मुख वाली, स्वर्ण तथा मणि माणिक्य आदि जटित भूषणों से युक्त, अत्यन्त उच्च कोटि के रत्न आदि से निर्मित सिंहासन पर आसीन, हास्ययुक्त मुख वाली, पद्मराग मणि के समान कान्ति वाली श्रेष्ठ, चौड़े तथा पुष्ट स्तनों वाली, पतली, कानों तक फैले हुए नेत्रों वाली, दृष्टि मात्र से महासम्पत्ति प्रदान करने वाली, परमेश्वरी, सर्वांग सुन्दरी, नित्या, विद्याओं से धिरी हुई, डाकिनी, योगिनी विद्याधरी से धिरी हुई, सुन्दर स्त्रियों से युक्त, विविध प्रकार की गन्धों से सुगन्धित, सिद्ध साधकों के प्रति करुणामयी, तीन नेत्रों वाली आकर्षित करने वाली, पुष्पों का धनुष-बाण धारण किये हुए, किन्नरियों द्वारा भी भग-लिंग-समाख्यान को सुनती हुई, महासरस्वती और लक्ष्मी के अमृत-वचन और प्रतिवचन के लिए अति उत्सुक, समस्त गुण-सम्पन्न, करुणा की सागर ऐसी भगवती काली का ध्यान करें।

कुञ्जिका स्तोत्र

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
 येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥
 न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
 न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो नापि चार्चनम्॥
 कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
 अति गुह्यतरं देवि! देवानामपि दुर्लभम्॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
 मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्॥
 पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चामुण्डायै विच्चै॥ ॐ गलौं हुं कलीं जूं
 सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं कलीं
 चामुण्डायै विच्चै ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

ॐ नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
 नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥
 नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
 जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे॥२॥
 एंकारी सृष्टिरूपाये ह्रींकारी प्रतिपालिका।
 कलींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥३॥
 चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।
 विच्चै चाभयदां नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥४॥
 धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नीं वां वीं वं वागधीश्वरी।
 क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥५॥
 हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जं जम्भनादिनी।
 भ्रां भ्रीं भूं भैरवी भद्रे भवान्त्रै ते नमो नमः॥६॥
 अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दं ऐं वीं हं क्षं।
 धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥७॥

यां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥८॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥९॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥१०॥

भावार्थ ॥१॥— हे रुद्ररूपिणी! तुम्हें नमस्कार। हे मधुमर्दिनी!
तुम्हें नमस्कार। कैटम दैत्य को मारने वाली! तुम्हें नमस्कार। हे
महिपमर्दिनी! तुम्हें नमस्कार है।

भावार्थ ॥२॥— हे शुभ्म को मारने वाली! हे निशुभ्म को मारने
वाली! तुम्हें नमस्कार है।

भावार्थ ॥३॥— हे महादेवी! मेरे जप को जाग्रत कर सिद्ध
करो। ‘ऐकार’ के रूप में सृष्टिरूपिणी, ‘हीं’ के रूप में सृष्टि का
पालन करने वाली।

भावार्थ ॥४॥— ‘कलीं’ के रूप में कामरूपिणी और बीजरूपिणी
(ब्रह्माण्ड में) देवि! तुम्हें नमस्कार है। ‘चामुण्डा’ के रूप में चण्ड
दैत्य को मारने वाली और ‘यैकार’ के रूप में तुम वरदायिनी हो।

भावार्थ ॥५॥— ‘विच्चे’ रूप में तुम नित्य अभय देने वाली
हो और मन्त्र रूपिणी हो।

भावार्थ ॥६॥— ‘धां धीं धूं’ के रूप में धूर्जटी अर्थात् शिव
की पल्ली हो। ‘वां वीं वूं’ के रूप में तुम वाणी की अधीश्वरी हो।
‘क्रां क्रीं क्रूं’ के रूप में कालिका देवी, ‘शां शीं शूं’ के रूप में मेरा
शुभ करो।

भावार्थ ॥७॥— ‘हुं हुं हुंकार’ रूपिणी, ‘जं जं जं’ जम्बनाशिनी, ‘आं आं आं भूं’ के रूप में हे कल्याणी मैरवी भवानी तुमको बारम्बार नमस्कार।

भावार्थ ॥८॥— ‘अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं’ इन सबको तोड़कर दीप्त करो। ‘यां पीं पूं’ के रूप में तुम पार्वती पूर्णा हो। ‘खां खीं खूं’ के रूप में तुम आकाशचारिणी तथा ‘खेचरी’ मुद्रा हो।

‘सां सीं सूं’ स्वरूपिणी सप्तशती देवी के मन्त्र को मेरे लिए सिद्ध करो।

भावार्थ ॥९॥— यह कुञ्जिका स्तोत्र मन्त्र को जगाने के लिए है, इसे अभक्त व्यक्ति को नहीं देना चाहिए। हे पार्वति! इसे गुप्त रखो।

भावार्थ ॥१०॥— कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ किये बिना जो सप्तशती का पाठ करता है, उसे उसी प्रकार सिद्धि नहीं मिलती, जिस प्रकार वन में विलाप करना व्यर्थ होता है।

तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।

ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥२॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुम्ह्यै नमो नमः।

नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥३॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥४॥

अतिसौम्यातिरीढायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै दैव्यै कृत्यै नमो नमः॥५॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥६॥

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥७॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥८॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥९॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१०॥

या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥११॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१२॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१३॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१४॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१५॥
 या देवी सर्वभूतेषु लग्जारूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१६॥
 या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१७॥
 या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१८॥
 या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१९॥
 या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२०॥
 या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२१॥
 या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२२॥
 या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२३॥
 या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२४॥
 या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२५॥

या देवी सर्वभूतेषु भान्तिरूपेण संस्थिता।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२६॥
 इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
 भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥२७॥
 चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२८॥
 स्तुताः सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
 तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
 करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
 शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥२९॥
 या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैर-
 स्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
 या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
 सर्वापदो भक्तिविनम्प्रमूर्तिभिः॥३०॥

भावार्थ- देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सदैव
 नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम लोग नियमपूर्वक
 जगदम्बा को नमस्कार करते हैं॥१॥ रीढ़ा को नमस्कार है। नित्या,
 गौरी एवं धात्री को बारम्बार नमस्कार है। ज्योत्स्नामयी, चन्द्रस्त्रिणी
 एवं सुखस्वरूपा देवी को सतत् प्रणाम है॥२॥ शरणागतों का कल्याण
 करने वाली वृद्धि एवं सिद्धिरूपा देवी को हम बारम्बार नमस्कार करते
 हैं। नैऋती (राक्षसों की लक्ष्मी), राजाओं की लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिव
 पत्नी) स्वरूपा आप जगदम्बा को बार-बार नमस्कार है॥३॥ दुर्गा,
 दुर्गापारा (दुर्गम संकट से पार उतारने वाली), सारा (सबकी सारभूता),

सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रा देवी को सर्वदा नमस्कार है॥४॥
अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्र रूपा देवी को हम नमस्कार करते हैं, उन्हें हमारा बारम्बार प्रणाम है। जगत् की आधारभूता कृति देवी को बारम्बार नमस्कार है॥५॥ जो देवी सब प्राणियों में विष्णु माया के नाम से कही जाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥६॥

जो देवी सब प्राणियों में चेतना कहलाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥७॥ जो देवी सब प्राणियों में बुद्धि रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥८॥ जो देवी सब प्राणियों में निद्रा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥९॥ जो देवी सब प्राणियों में क्षुधा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१०॥ जो देवी सब प्राणियों में छाया रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥११॥ जो देवी सब प्राणियों में शक्ति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१२॥ जो देवी सब प्राणियों में तृष्णा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१३॥ जो देवी सब प्राणियों में क्षान्ति (क्षमा) रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१४॥ जो देवी सब प्राणियों में जाति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१५॥ जो देवी सब प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१६॥ जो देवी सब प्राणियों में शान्ति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको

बारम्बार नमस्कार है॥१७॥ जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१८॥ जो देवी सब प्राणियों में कान्ति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१९॥ जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२०॥

जो देवी सब प्राणियों में वृत्ति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२१॥ जो देवी सब प्राणियों में स्मृति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२२॥ जो देवी सब प्राणियों में दया रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२३॥ जो देवी सब प्राणियों में तुष्टि रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२४॥ जो देवी सब प्राणियों में माता रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२५॥ जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्ति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२६॥ जो जीवों के इनिद्रय वर्ग की अधिष्ठात्री देवी एवं सब प्राणियों में सदा व्याप्त रहने वाली हैं, उन व्याप्ति देवी को बारम्बार नमस्कार है॥२७॥ जो देवी चैतन्य रूप से इस सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२८॥ पूर्वकाल में अपने अभीष्ट की प्राप्ति होने से देवताओं ने जिनकी स्तुति की तथा देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिनका सेवन किया, वह कल्याण की साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले॥२९॥ उद्ददंड दैत्यों से सताये हुए हम सभी देवता

श्री कामाख्या यन्त्र निर्माण तथा देवी का ध्यान (31)

जिन परमेश्वरी को इस समय नमस्कार करते हैं तथा जो भक्ति से विनम्र पुरुषों द्वारा स्मरण की जाने पर तत्काल ही सम्पूर्ण विपत्तियों का नाश कर देती हैं, वे जगदम्बा हमारा संकट दूर करें॥३०॥

परमदेवी-सूक्त

(इस गोपनीय परम-देवी सूक्त का नित्य पाठ करने वाला साधक सर्वसिद्धियों का स्वामी, सर्वत्र विजय तथा जगत् को वश में करने वाला हो जाता है।) निरन्तर तीन वर्षों तक जो इसका पाठ करता है, वह भगवती का साक्षात् दर्शन करता है। इस सूक्त की रचना ‘मार्कण्डेय सुमेधा’ ऋषियों के द्वारा की गयी थी, जिसकी प्रेरणा उन्हें स्वयं भगवती पराम्बा से हुई थी। ‘श्री विद्या-रहस्य’ और ‘डामर-तन्त्र’ में यह पाठ प्राप्त होता है। ‘श्री विद्या-रहस्य’ में इसे ‘परमदेवी-सूक्त’ के नाम से और ‘डामर-तन्त्र’ में इसे ‘सिद्धिचण्डिका सहस्राक्षर मन्त्र’ का नाम दिया गया है। दोनों के विनियोग एवं ध्यान में भी थोड़ा भेद है। भगवती कामाख्या के ध्यान सहित इस पाठ का बहुत ही उत्तम परिणाम अनुभव में आया है अतः उनके ध्यान सहित ही इसका उल्लेख यहां किया जा रहा है।

• विनियोग •

“ॐ अस्य श्री परमदेवता सूक्तमाला मन्त्रस्य मार्कण्डेय सुमेधा ऋषिः, गायत्र्यादि नानाविधानी छन्दान्सि त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः क्लीं कीलकं चतुर्विध-पुरुषार्थं सिद्धये जपे विनियोगः।”

• ऋष्यादिन्यास •

श्री मार्कण्डेय सुमेधा ऋषिभ्यां नमः शिरसि। गायत्र्यादि

नानाविधानि छंदोभ्यो नमः मुखे। त्रिशक्तिरूपिणी चण्डका
देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजं नमः गुह्ये। सौँ: शक्तयो नमः
पादयो। कलीं कीलकाय नमः नाभौ। चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये
जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

• महाविद्यान्यास •

ॐ श्रीं नमः सहस्रारे। ॐ हैं नमः भाले। ॐ कलीं नमः
नेत्रयुगले। ॐ ऐं नमः कर्णद्वये। ॐ सौँ नमः नासापुट द्वये।
ॐ ॐ नमो मुखे। ॐ हीं ॐ नमः कणठे। ॐ श्रीं नमो हृदये।
ॐ ऐं नमो हस्तयुग्मे। ॐ कलीं नमः उदरे। ॐ सौँ नमः
कट्यां। ॐ ऐं नमो गुह्ये। ॐ कलीं नमः जंघा युग्मे। ॐ हीं
नमो जानुद्वये। ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे।

कामाख्या ध्यानम्

रविशशियुतकर्णा कुंकुमापीतवर्णा,
मणिकनकविचित्रा लोलजिह्वा त्रिनेत्रा।
अभयवरदहस्ता साक्षसूत्रप्रहस्ता,
प्रणतसुरनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
अरुण-कमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था,
नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।
शवहृदि पृथुतुंगा स्वांघ्रि, युग्मा मनोज्ञा,
शिशुरविसमवस्त्रा सर्वकामेश्वरी सा।
विपुलविभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी,
दलितकरकदन्ता सामिचन्द्रावनभ्रा।

मनसिज-दृशदिस्था योनिमुद्रांलसन्ती।
 पवनगगनसक्तां संश्रुतस्थानभागा॥
 चिन्त्या चैवं दीप्यदग्निप्रकाशा,
 धर्मार्थाद्यैः साधकैर्वाज्ञितार्थः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं
 सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्री जय जय महालक्ष्मि जगदाद्ये बीजे सुरासुर
 त्रिभुवन निदाने दयांकुरे सर्वतेजो रूपिणि महा महामहिमे
 महा-रूपिणि महामहामाये महामायास्वरूपिणि विरञ्चित संस्तुते!
 विधिवरदे सच्चिदानन्दे विष्णुदेहावते महामोहिनि मधु कैटभ
 जिह्वांसिनि नित्यवरदान तत्परे! महासुधाब्धिवासिनि
 महामहतेजो धारिणि! सर्वाधारे सर्वकारण कारणे अचिन्त्यरूपे!
 इन्द्रादि निखिल निर्जर सेविते! सामगान गायिनि पूर्णोदय
 कारिणि! विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसर्वसुन्दरि रक्तांशुके
 सूर्यकोटि संकाशे चन्द्र-कोटि-सुशीतले अग्नि-कोटि दहनशीले
 यम-कोटि-कूरे वायु-कोटि-वहन सुशीतले!

ॐ कार नाद-चिदरूपे निगमागम मार्गदायिनि महिषासुर
 निर्दलनि धूम्रलोचन वध परायणे चण्डमुण्डादि शिरश्छेदिनि
 रक्तबीजादि रुधिर-शोषिणि रक्तपान प्रिये महोयोगिनि-
 भूतवेताल भैरवादि तृष्णिविधायिनि शुभ-निशुभ-
 शिरश्छेदिनि! निखिलासुर- खादिनि त्रिदश-राज्यदायिनि
 सर्व-स्त्रीरत्न-रूपिणि दिव्यदेहे निर्गुणे सद्-सद्गूपथारिणि
 सुरवरदे भक्तत्राण तत्परे!

वर वरदे सहस्रारे दशशताक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटिचामुण्डा
 रूपिणि नवकोटि-कात्यायनिरूपिणि अनेकशक्त्या

लक्ष्या-लक्ष्य स्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रुद्राणि कौमारि वैष्णवि
वाराहि शिवदूति ईशानि भीमे भ्रामरि नारसिंहि! त्रयस्त्रिंशत
कोटि दैवते अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड-नायिके
चतुरशीतिलक्ष-मुनिजन- संस्तुते! सप्तकोटि मन्त्र स्वरूपे
महाकाले रात्रि प्रकाशे कला-काष्ठादि रूपिणि चतुर्दश भुवना
विर्भावकारिणि गरुड़ गामिनि! ओंकार-क्रौंकार-हौंकार-हींकार-
श्रींकार-छ्रौंकार-जूंकार-सौंकार-ऐंकार-क्लौंकार-ह्वक्लींकार-
ह्वक्लांकार-हौंकार-नानाबीज-मन्त्रराज-विराजित सकल-
सुन्दरीगण- सेवित-चरणारविन्दे-श्रीबगला सुन्दरी कामेशदयिते
करुणारस कल्लोलिनि कल्पवृक्षाधिष्ठिते चिन्तामणि
द्वीपावस्थिते मणिमन्दिर निवासे! चापिनि खड्गिनि चक्रिणि
गदिनि शंखिनि पद्मिनि निखिल भैरवाराधिते समस्तयोगिनि
चक्रपरिवृते!

कालि-कंकाली-तारे तोतुले सुतारे ज्वालामुखि छिनमस्तके
भुवनेश्वरि! त्रिपुरे त्रिलोक जननि विष्णु वक्षः स्थलालंकार-
कारिणि अजिते अमिते अपराजिते अनौपमचरिते गर्भवासादि-
दुःखापहारिणि मुक्तिक्षेत्राधिष्ठायिनि शिवे शान्ति कुमारि
देवि देविसूक्त संस्तुते महाकालि-महालक्ष्मी-महासरस्वति-
त्रयीविग्रहे! प्रसीद-प्रसीद मम सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वारिष्ट
विघ्नं छेदय छेदय सर्वग्रहपीडा-ज्वरोग्र भयं विघ्नंसय विघ्नंसय
सद्यस्त्रिभुवन-जीवजातं वशमानय वशमानय मोक्षमार्ग दर्शय
दर्शय ज्ञानमार्ग प्रकाशय प्रकाशय अज्ञानतमो निरसय निरसय
धन-धान्याभिवृद्धिं कुरु कुरु सर्वकल्याणानि कल्पय कल्पय,
मां रक्ष रक्ष सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय मम वज्र शरीरं
साधय साधय, ॐ ऐं हीं कलीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

1. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमो देव्यै महादेव्यै शिवाये सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्मताम्॥
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वं मंगलं मांगल्ये शिवे सर्वार्थं साधिके!
शरण्ये त्र्यम्बके कामाख्ये! नारायाणि नमोऽस्तुते॥

फलश्रुति

परं देव्या इदं सूक्तंयः पठेत्प्रयतो नरः,
सर्वासिद्धिमवाज्ञोति सर्वत्र विजयी भवेत्॥१॥

संग्रामेषुजयेच्छत्रून् मतंगानिव केसरी, वश्ये- निखिलानेकान्
विशेषेण महीपतीन्॥२॥

त्रिकालं च पठेनित्यं देव्याः सूक्तमिदं परम्, तस्य विज्ञाः
प्रलीयन्ते ग्रहपीडाश्च दारुणाः॥३॥

ज्वरादिरोगशमनं परकृत्यानिवारणम् पराभिचारशमनं
तीव्रदारिद्रव्यनाशनम्॥४॥

परकल्याण निलयं देव्याः सन्तोषकारकम् सहस्रावृत्तितो
देवि मनोरथसिद्धिदम्॥५॥

द्विसहस्रावृत्ति-जपात्सर्वसंकटनाशनम्, त्रिसहस्रावृत्तितस्तु
वशकृद्राजयोषिताम्॥६॥

शतत्रयं पठेद्यस्तु वर्षत्रयमतन्द्रितः स पश्येच्चण्डिकां साक्षात्
वरदानं कृतोद्यमाम्॥७॥

इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रत्यन्तः न वाच्यं कस्यचिद् देवि
निधानमिव कामाख्या॥८॥

अध्याय 3

पुरश्चरण-विधान

जिस क्रम में इस सृष्टि की रचना हुई है, उसके विपरीत क्रम में इसका विलय अथवा विनाश होता है— यह सब कुछ एक आध्यात्मिक सीमा तक निश्चित है। इसीलिए हमारे ऋषियों, महर्षियों ने विग्रहों (आकृतियों) का आलम्बन लेकर साधना-विधि का सार्थक ज्ञान कराया है। इस साधना-विधि का सर्वाधिक विशिष्ट अंग पुरश्चरण ही माना जाता है।

पुरश्चरण की अनिवार्यता

जब हम किसी मन्त्र का जप एक निश्चित संख्या तथा निश्चित दिनों में करने का संकल्प लेकर करते हैं तो वह पुरश्चरण कहलाता है। इसी विधान को अनुष्ठान भी कहा जाता है। किसी भी मन्त्र की सिद्धि के लिए पुरश्चरण करना आवश्यक है क्योंकि विना पुरश्चरण किये कोई भी मन्त्र सिद्ध नहीं होता। पुरश्चरण में मन्त्र-जप ही मुख्य है, जबकि होम, तर्पण, मार्जन आदि उसके अंग माने जाते हैं। मन्त्र-जप का क्रम मानसिक, उपांशु और वाचिक हो सकता है। साधक के लिए वही क्रम उत्तम होता है, जिसमें उसका मन भ्रमित न

हो। वैसे मन्त्र-सिद्धि के लिए मानसिक, भौतिक समृद्धि के लिए उपांशु तथा क्रूर कर्मों के लिए वाचिक जप विशेष उपयोगी होते हैं।

मन्त्र-जप प्रक्रिया के अन्तर्गत मन्त्र की संख्या का विशेष महत्व होता है। इसमें माला को मुख्य आधार माना गया है ताकि जप-संख्या में कोई त्रुटि न हो। यद्यपि पृथक्-पृथक् देवी-देवताओं के लिए अलग-अलग विशिष्ट मालाओं से मन्त्र-जप करने का विधान है तो भी रुद्राक्ष माला से विविध मन्त्रों का जप किया जा सकता है।

मन्त्र, गुरु तथा देवता में अभेद

एक साधक के लिए गुरु, मन्त्र और देवता में कोई भेद नहीं होता, ये तीनों समान स्थान रखते हैं। देवता, गुरु और मन्त्र में ऐक्यता का भाव इसलिए उत्पन्न होता है कि मन्त्र से हमें विशिष्ट फल अथवा सिद्धि प्राप्त होती है। मन्त्र को सिद्ध करके हम देवता को प्रसन्न करते हैं। सम्बन्धित देवता को प्रसन्न करने वाला मन्त्र हमें गुरुदेव से मिलता है। इस प्रकार एक के अभाव में दूसरा अपूर्ण है। जब इन तीनों में ऐक्यता हो जाती है तभी हमें पूर्ण फल प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है कि—

यथा घटश्च कलशः कुम्भश्चैकार्य वाचकाः।

तथा मन्त्रा देवता च गुरुश्चैकार्थ वाचकाः॥

अर्थात्, जिस प्रकार घट, कलश और कुम्भ— ये तीनों शब्द पर्यायवाची हैं, जबकि अर्थ तीनों का एक ही है, भेद केवल नाम से ही है, ठीक उसी प्रकार मन्त्र, देवता और गुरु— ये तीनों एकार्थवाची हैं। इन तीनों में ऐक्यता के कारण ही अपने गुरु के समक्ष बैठकर पुरश्चरण करना सर्वोत्तम माना जाता है।

किसी भी फल की प्राप्ति के लिए विश्वास सबसे पहली सीढ़ी है, श्रद्धा दूसरी, गुरु-पूजन तीसरी, सबके प्रति समान भाव चौथी, इन्द्रिय-नियंत्रण पांचवीं और अल्पाहार छठी सीढ़ी है। ये सब ही मन्त्र-सिद्धि में सहायक होते हैं।

प्रबल भाव- पुरश्चरण करते समय अपने इष्ट देवता से प्रार्थना करने का प्रबल भाव आवश्यक है। हमें भावना करनी चाहिए कि हम प्रार्थना कर रहे हैं और हमारा इष्ट देवता हमारी प्रार्थना स्वीकार करते हुए हमें मनोवाञ्छित फल प्रदान कर रहा है। हमें यह भी भावना करनी चाहिए कि इष्ट देव हमारे हृदय-कमल पर विराजित हैं और हमारा निवेदन प्रसन्न हृदय से स्वीकार करते हुए हमारे जप को एकाग्र भाव से सुन रहे हैं।

श्रद्धा एवं भक्तिभाव- पुरश्चरण काल में अपने जप पूर्ण श्रद्धा, भक्ति तथा विश्वास के साथ करने चाहिए। जप काल में साईक के हृदय में वैसे ही भाव उत्पन्न होने चाहिए जो देवता के प्रत्यक्ष दर्शन के समय हो सकते हैं।

पुरश्चरण के अंग

इस सम्बन्ध में कहा गया है कि “जपा होमस्तर्पणञ्चाभिषेको द्वाह्य भोजनम्”— अर्थात् मन्त्र का जप, होम, तर्पण, अभिषेक और द्वाह्यण भोजन— ये पुरश्चरण के पांच आवश्यक अंग माने जाते हैं। पुरश्चरण के साथ-साथ तीनों संध्याओं अर्थात् तीनों समय की पूजा का भी विधान है। पुरश्चरण में जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन अथवा अभिषेक और मार्जन का दशांश अर्थात् दशवां भाग द्वाह्यण भोजन होता है। द्वाह्यण भोजन पुरश्चरण का बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। यदि द्वाह्य भोजन

दशांश से भी अधिक कराया जाये तो और भी अच्छा है।

इस प्रकार पुरश्चरण के उपर्युक्त पांच अंग माने जाते हैं, लेकिन इसके दश अंग भी कहे गये हैं। अन्य पांच अंग इस प्रकार हैं—

पटलं पद्धतिर्वमं तथा नाम सहस्रकम्।

स्तोत्राणिचेति पञ्चांग देवतोपासने स्मृतम्॥

अर्थात् पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम तथा स्तोत्र अन्य पांच अंग हैं। पटल देवता का सिर, सहस्रनाम देवता का मुख, कवच देवता का शरीर, पद्धति देवता के हाथ और स्तोत्र देवता के पैर होते हैं। पद्धति से तात्पर्य पूजा की पद्धति से है। पुरश्चरण में गुरु-परम्परा की पद्धति से ही पूजन किया जाता है। इसके अभाव में पुरश्चरण सफल होने में संशय ही बना रहता है। यदि साधक सिद्धि प्राप्त करना चाहता है तो उसे उपर्युक्त दशांशों का पालन अवश्य ही करना चाहिए।

फल की प्राप्ति— यदि साधक पुरश्चरण का फल प्राप्त करना चाहता है तो उसे चाहिए कि योग्य गुरु से दीक्षा प्राप्त करके मन्त्र का पुरश्चरण करे। कई बार ऐसा भी होता है कि पुरश्चरण करने पर भी साधक को सिद्धि प्राप्त नहीं होती। ऐसी स्थिति में उसे चाहिए कि अपने गुरुदेव से विचार-विमर्श करके पुरश्चरण की पुनरावृत्ति करें।

दीक्षा ग्रहण करने के उपरान्त यदि साधक मन्त्र का पुरश्चरण नहीं करता है तो उसे भारी पाप लगता है। एक स्थान पर शिव पार्वती से कहते हैं कि— “पुरस्करोति यो नैकं तस्य विद्या पराङ्गमुखी” अर्थात् जो उपासक गुरु से दीक्षा प्राप्त करने के बाद मन्त्र का कभी पुरश्चरण नहीं करता है, उसकी विद्या, उसका इष्ट और मन्त्र उससे

पराइमुख हो जाते हैं अर्थात् उससे मुँह मोड़ लेते हैं और उसे कष्ट व पीड़ा भोगने पड़ते हैं।

प्रतिनिधि द्वारा पुरश्चरण

यदि कोई उपासक अपने गुरुदेव से दीक्षा ग्रहण करके गुरु द्वारा दिये गये मन्त्र का पुरश्चरण अशक्तावस्था अथवा अन्य किसी कारणवश नहीं कर पाता है या फिर किन्हीं अपरिहार्य कारणों से उसका पुरश्चरण खंडित हो जाता है तो किसी योग्य साधक को अपना प्रतिनिधि बनाकर उसके द्वारा पुरश्चरण पूर्ण करा सकता है। यद्यपि नियम यह है कि सबसे पहले अपने पुरश्चरण को पूरा कराने हेतु अपने गुरुदेव से ही प्रार्थना करनी चाहिए। यदि ऐसा सम्भव न हो तभी उसे कोई योग्य व्यक्ति पुरश्चरण की पूर्णता के लिए चुनना चाहिए।

उचित स्थान- पुरश्चरण काल में स्थान का चुनाव करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। पुरश्चरण के लिए पुण्य क्षेत्र, नदी का किनारा, गुफा, पर्वत की चोटी, सागर-संगम, तपोवन, बिल्व-वृक्ष की जड़ में, तुलसी-वन, प्राचीन देवालय आदि का चयन करना चाहिए। सूर्य, अग्नि, गुरु, चन्द्र, दीपक, जल, ब्राह्मण तथा गौशाला के निकट किया गया पुरश्चरण अत्यधिक फलदायक होता है।

पुरश्चरण विधि- पुरश्चरण के लिए स्थान का चयन करने के उपरान्त साधक को मण्डप की रचना करनी चाहिए। स्थान चयन के समय कूर्म चक्र का आश्रय लेना चाहिए। इस दिन साधक को दिन में केवल एक बार अल्पाहार करना चाहिए। अगले दिन स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत होकर वेदी के चारों ओर पीपल, गूलर, बट अथवा बड़ के वृक्ष की बारह अंगुल प्रमाण की दश कीलें बनाकर दशों

दिशाओं में भूमि में गाड़ दें। उसके बाद एक अष्टदल कमल (आठ पंखुड़ियाँ) बनाकर उनके मध्य कर्णिका में क्षेत्राधीश्वर का पूजन करके शेष आठ दलों में क्रमशः अनलाख्य, अग्नि, केश, कराल, घण्टाख्य, मध्यकोश-पिशिताशन, पिशिताश और ऊर्ध्वकेश क्षेत्रपालों का पूजन करें।

क्षेत्रपाल का मन्त्र— ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय नमः।

क्षेत्रपाल का ध्यान इस प्रकार करें—

नीलाञ्जनाद्रि निभमूर्ढ्द्ध पिशांगकेशां।

वृत्तोग्र लोचनमुपात्त गदा कपालम्॥

आशाम्बरं भुजंग भूषणमुग्र-दंष्ट्रम्।

क्षेत्रेशमद्भुतमहं प्रणामामि देवम्॥

क्षौं बीज से षडंगन्यास करके उपर्युक्त ध्यान करें फिर पंचोपचार पूजन करें। फिर निम्नांकित मन्त्र से माष (उड़द, दही) से बलि प्रदान करें—

बलि मन्त्र— “ऐहि बलि कुरु-कुरु, भक्षय-भक्षय, तर्पय-तर्पय, विघ्नान नाशय-नाशय, महाभैरव क्षेत्रपाल बलिं गृहण-गृहण स्वाहा।”

इसके उपरान्त क्षेत्रपाल से अनुष्ठान आरम्भ करने की अनुमति हाथ जोड़कर मांगें। अनुमति मन्त्र निम्नवत् है—

अनुमति मन्त्र—

“ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपमः।

भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातु मर्हसि॥”

मानसिक अनुमति प्राप्त करने के उपरान्त वास्तु पुरुष और

ईशान का पूजन करें। तदोपरान्त दशों गाड़ी गयी कीलों में दशलोकपालों का पंचोपचार पूजन करके निम्नांकित मन्त्र से बलि प्रदान करें। सर्वप्रथम इन्द्रदेव को बलि प्रदान करें, यथा—

इन्द्रादि-बलि— “एहीन्द्र पूर्व दिग्भागे पूजितो वृक्ष कीलके मां पालय, निर्विज कार्य साधय-साधय भक्त बलि गृहण-गृहण स्वाहा।”

इस उपर्युक्त मन्त्र के अनुसार ही अन्य दिग्पालों के मन्त्र भी बन जाते हैं। केवल दिशा और दिग्पाल का नाम जोड़कर अन्य मन्त्र बनाया जा सकता है।

यहां यह ज्ञातव्य है कि यदि पुरश्चरण किसी मन्दिर में किया जाये तभी दिग्पालों का आवाहन, पूजन किया जाता है, अन्यथा नहीं।

पिछले पृष्ठ पर हमने जो दशों कीलों को गाड़ने के लिए कहा था, उन्हें गाड़ते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

“ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि-दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्न भूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥
मर्यैतत् कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विजं सिद्धिस्तु मे॥”

इसके उपरान्त जिस देवता के मन्त्र का जप करना हो उस देवता के गायत्री मन्त्र का एक हजार अथवा दश हजार की संख्या में जप करें। इस दिन उपवास रखकर एक समय ही फलाहार करना चाहिए। तदोपरान्त अगले दिन संकल्प लेकर निश्चित संख्या में जप करें। जप से पूर्व भूतशुद्धि, प्राणायाम, मातृका न्यास तथा अन्य न्यास आदि एवं मुद्राओं का प्रयोग करते हुए निर्धारित दिनों में निश्चित संख्यांक जप

करके उसका दशांश अर्थात् 1/10 भाग हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन (अभियेक) करें। मार्जन का 1/10 भाग अर्थात् दशांश ब्राह्मणों को भोजन व दक्षिणा देकर तृप्त करें। अपने गुरुदेव व माता- पिता को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। इनके आशीर्वाद के अभाव में मन्त्र-सिद्धि में संशय ही बना रहता है।

तर्पण करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यदि नदी समीप हो तो साधक को उसमें नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर जल में मन्त्र की भावना करते हुए उसमें सूर्य मण्डल से तीर्थों का आवाहन करके अपने इष्ट देव की तर्पण-क्रिया करें। यदि पुरश्चरण कहीं अन्यत्र किया गया हो और अपने कक्ष में ही तर्पण करना हो तो किसी ताम्र पात्र में पहले थोड़ा गंगाजल डालकर उसमें साधारण स्वच्छ जल भर लें। इसके उपरान्त उसमें वांछित सामग्री डालकर देवता का तर्पण करें। इस सम्पूर्ण कृत्य में हमें गुरुपदिष्ट प्रणाली का ही आश्रय लेना चाहिए।

असमर्थता में होमादि का विधान- यदि कोई साधक मन्त्र-जप के उपरान्त होमादि का विधान करने में असमर्थ हो तो उसे होम के स्थान पर दो गुना अथवा चार गुना जप कर लेना चाहिए। “रुद्रयामल तन्त्र” के अनुसार उपर्युक्त स्थिति में अर्थात् होम कर्म में असमर्थ होने पर ब्राह्मण को होम की संख्या का दो गुना, क्षत्रिय को तीन गुना और वैश्य को चार गुना जप करना चाहिए। स्त्री साधिकओं के लिए होम आवश्यक नहीं है लेकिन यदि वे समर्थ हैं तो होम अवश्य ही करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि होमादि क्रियाओं के अभाव में पुरश्चरण अंगहीन माना जाता है, जो कि उचित नहीं है।

जप के नियम— अनुष्ठान काल में जप प्रतिदिन समान संख्या में करने चाहिए। कम या अधिक कदापि न करें। कभी कम या कभी अधिक जप करना निष्फल माना जाता है। साधक को अनुष्ठान काल में तीनों संध्याओं में इष्टदेव की पूजा करनी चाहिए। यदि तीन बार न कर सकें तो दो बार अथवा एक बार अवश्य करें। इस काल में तीनों समय स्नान करना उत्तम रहता है, तीनों समय यदि न भी करें तो एक बार तो अवश्य ही करना चाहिए।

पुरश्चरण के नियम— जप-काल में यदि जंभाई, छींक, हिचकी आये अथवा अधोवायु निस्सृत हो तो आचमनपूर्वक पड़ंगन्यास करें अथवा सूर्य-दर्शन कर लेना चाहिए। भूख लगने पर भी निरन्तर जप करते रहना चाहिए। जप के समय यदि लघुशंका अथवा शाँच के लिए जाना पड़े तो निवृत्त होने के उपरान्त स्नान करके वस्त्र बदल लेने चाहिए। यदि किसी कारणवश स्नान न कर सकें तो मन्त्र स्नान अथवा भस्म स्नान कर लेना चाहिए। आसन ग्रहण करने के उपरान्त पुनः पड़ंगन्यास करके जप आरम्भ करना चाहिए।

अन और जल का अभिमन्त्रण— अनुष्ठान काल हो अथवा सामान्य जीवनचर्या हो, साधक को अपना भोजन अपने इष्ट देवता के सामने रखकर मूल मन्त्र से उसका प्रोक्षण करने के साथ-साथ पुनः सात बार प्रत्येक पदार्थ को अभिधिंचित करके भोजन करना चाहिए तथा जल को बत्तीस बार मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पीना चाहिए।

अन्य आवश्यक कर्तव्य

पुरश्चरण अथवा अनुष्ठान काल में साधक को भूमि पर शयन करना चाहिए। अष्टविध मैथुन (मनसा, वाचा, कर्मणा) से सर्वथा दूर

रहना चाहिए। यथाशक्ति मौन धारण करके, पंचगव्य अथवा आंवलों के रस से स्नान करके अपने आचार्य अथवा गुरु की सेवा करनी चाहिए। अपने इष्ट देवता की पूजा में कोई व्यतिक्रम ना हो तथा देवता के नाम पर किसी सत्पात्र को कुछ न कुछ दान अवश्य देना चाहिए।

बुरे स्वप्नों का परिहार- साधना काल के मध्य यदि साधक को बुरे स्वप्न यथा— कौआ, उल्लू, गिर्दू, गधा, बिल्ली, मैंसा, चाण्डाल, भयंकर अथवा काला पुरुष या स्त्री, शून्य, सूखा वृक्ष, सूखी नदी, तालाब या सूखा जलाशय, कट्टिदार वृक्ष, खण्डित मन्दिर अथवा राजभवन, स्वयं को नग्न, पागल, बदहवाश, भयभीत अथवा किसी संकट में पड़ा हुआ दिखायी दे तो इनका परिहार अथवा शान्ति अवश्य करनी चाहिए। शान्ति के लिए पहले नृसिंह मन्त्र का जप करना चाहिए—

उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।

नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाप्यहम्॥

इसके बाद निम्नांकित मन्त्र का जप करें—

नृसिंहाय नमो दोषान् जहि दुःस्वप्नजान् मम।

यतः स्वप्नाधि-पस्त्ववै सर्वेषां फलदो मतः॥

मन्त्र-सिद्धि के लक्षण : मन्त्र सिद्ध होने पर साधक को मन की प्रसन्नता, सन्तोष, अत्य भोजन, कम निद्रा जैसे लक्षण, सवारी करना अथवा राजा की सवारी देखना, सर्वत्र प्रकाश देखना अथवा स्वयं के शरीर को प्रकाशमान देखना जैसे स्वप्न आने लगते हैं। इसके अतिरिक्त “नारद पाञ्चरात्र” के अनुसार मन्त्र-आराधना में लगे साधक को पहले तीन वर्षों में अनेक प्रकार के विष्ण तथा बाधायें

आती हैं। लेकिन यदि फिर भी वह आराधना में प्रवृत्त रहता है तो तीसरे वर्ष के उपरान्त बड़े-बड़े घमण्डी राजा, जर्मीदार आदि उसकी प्रसन्नता के लिए उसके सामने प्रार्थना करते हैं और कभी भी निष्ठुर वचन नहीं बोल पाते। नवें वर्ष के उपरान्त मन्त्र स्वयं-सिद्ध हो जाता है। साधक अत्यन्त आनन्दित रहता है और आश्चर्यजनक क्रीड़ाएं देखता है। वह कभी आकाश में नगाड़ों की ध्वनि, कभी गीत तो कभी मधुर संगीत सुनता रहता है। उसे झरनों की कल-कल और कभी मन्दिर की घटियों जैसी आवाजें सुनाई देने लगती हैं। उसे चारों ओर सुगन्ध अनुभव होती है। कभी आकाश को क्षणभर के लिए सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से एक साथ व्याप्त देखता है। कभी गगन मंडल में स्थित विचित्र ताराओं को और योगियों को देखता है।

मन्त्र-सिद्धि के प्रभाव से वह तेजस्वी कान्तिमान, गतिशील हो जाता है। उसके मल-मूल और निद्रा में कमी आ जाती है। विना भोजन भी वह काफी समय तक रह पाता है। इन लक्षणों से ज्ञात हो जाता है कि उसका मन्त्र सिद्ध हो गया है और उसके इष्टदेव उस पर प्रसन्न हैं।

सिद्धि प्राप्त होने तक पुरश्चरण का अभ्यास- यदि एक पुरश्चरण अथवा अनुष्ठान करने से सिद्धि प्राप्त न हो तो दूसरा पुरश्चरण करना चाहिए। यदि दूसरे से भी प्राप्त ना हो तो तीसरा करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जब तक साधक को सिद्धि प्राप्त न हो, उसे पुरश्चरण की आवृत्ति करते रहना चाहिए।

अशौच की स्थिति में क्या करें?— पुरश्चरण के शुरू करने पर यदि जातकाऽशौच या मृताशौच (जन्म अथवा मृत्यु अशौच) हो जाये तो साधक को पुरश्चरण बन्द नहीं करना चाहिए। नित्यार्चन भी

बन्द नहीं करना चाहिए। अशौच होने पर उन्हें कोई पाप या सूतक नहीं लगता। अशौच होने पर उसकी शुद्धि स्नान मात्र से ही हो जाती है।

इस सम्बन्ध में “विष्णुयामल तन्त्र” में कहा गया है कि “यज्ञ, व्रत, विवाह, श्राद्ध, अर्चन और जप में अशौच तभी तक माना जाता है, जब तक कार्य आरम्भ नहीं होता। इनके शुरू हो जाने पर अशौच का दोष नहीं माना जाता।”

पञ्चांग उपासना सहित पुरश्चरण से जिस साधक ने एक मन्त्र की सिद्धि प्राप्त कर ली हो उसे सब मन्त्रों की सिद्धि थोड़े से प्रयास से ही प्राप्त हो जाती है।

ग्रहणकाल में पुरश्चरण—“मेरुतन्त्र” स्पष्ट करता है कि साधक ग्रहणकाल में व्रत रखकर चलती नदी में नाभि तक जल में खड़े होकर स्पर्शकाल से मोक्षकाल, अर्थात् ग्रहण लगने के समय से ग्रहण समाप्त होने तक, मन्त्र-जप करे। उसके बाद तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोज कराया जाना चाहिए। यदि नदी निकट न हो तो शुद्ध जल से स्नान करके यह क्रिया करनी चाहिए।

ग्रहणकाल में स्नान, सन्ध्या, पाठ, जप, पुरश्चरण तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वर्ण, रजत, रत्न, भूमि, गौ, भैंस और भैंसा आदि का दान विशेष फलदायक होता है। यह भी कहा जाता है कि इस पवित्र अवसर पर मन्त्र जपने से सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।

इसके उपरान्त अपने इष्टदेवता की बड़ी पूजा करके अन्त में ब्राह्मणों को भोजन व दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। स्मरण रखें कि कोई भी काम्य प्रयोग करने से पूर्व मन्त्र सिद्धि अवश्य ही कर लेनी चाहिए।

यहां एक बात विशिष्ट रूप से ज्ञातव्य है कि यदि चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण के स्पर्शकाल से लेकर मोक्षकाल तक पांच हजार जप हुए हों तो उसके हवन, तर्पण तथा मार्जन आदि भी पांच-पांच हजार की संख्या में ही होंगे, न कि दशांश की संख्या में। निश्चय ही ग्रहणकाल में किया गया पुरश्चरण सिद्धि देने वाला होता है।

यदि कहीं जातकशौच अथवा मृताशौच हो गया हो और इस बीच ग्रहणकाल उपस्थित हो रहा हो तो साधक उस समय भी पुरश्चरण कर सकता है। अशौच के कारण ऐसा उत्तम अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इसीलिए कहा भी गया है कि— “जाताऽशौचं मृताऽशौचं गृहणे नास्ति पार्वति!”

अनेक विद्वानों का मत है कि ग्रहणकाल में पितृश्राद्ध करना भी अत्यन्त आवश्यक है। इस सम्बन्ध में कहा गया है कि अपनी शक्ति के अनुसार 1, 2 या 3 दिन का उपवास रखकर सूक्ष्म रीति से श्राद्ध आदि करके समुद्र में गिरने वाली नदी में नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर पूर्वोक्तानुसार जप करके हवन तर्पण आदि प्रयोग करें। जो मनुष्य ग्रहणकाल में पुरश्चरण त्याग कर श्राद्ध करने वैठता है तो वह नरकगामी होता है।

ॐ

कुछ विशेष

(नोट करने के लिए)

अध्याय 4

श्री कामाख्या-कवचम्

कामाख्या देवी का यह कवच साधकों के मध्य अत्यन्त ही प्रतिष्ठित स्थान रखता है। यह प्रमाणित है कि जो श्रेष्ठ साधक इस कवच का पाठ करता है उसे आधि-व्याधि का कदापि भय नहीं होता। वह अग्नि, जल, वैरियों के मध्य तथा राज-दरबार में भी निर्भय रहता है। वह पुत्र-पौत्रादि से युक्त होकर लम्बे समय तक ऐश्वर्य का उपभोग करता है। किसी भी प्रकार के बंधन में बंधने पर अथवा संकट उत्पन्न होने पर या फिर संग्राम में जो साधक इस कवच का पाठ करता है वह तत्काल संकटों से मुक्त हो जाता है।

ॐ कामाख्याकवचस्य मुनिर्बृहस्पतिः स्मृतः।

देवी कामेश्वरी तस्य अनुष्टुप्छन्द इष्यते॥

विनियोगः सर्वसिद्धौ तज्ज्व शृण्वन्तु देवताः।

शिरः कामेश्वरी देवी कामाख्या चक्षुषी मम॥

शारदा कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं तथा।

कण्ठे पातु महामाया हृदि कामेश्वरी पुनः॥

कामाख्या जठरे पातु शारदा पातु नाभितः।
 त्रिपुरा पाश्वयोः पातु महामाया तु मेहने॥
 गुदे कामेश्वरी पातु कामाख्योरुद्धये तु माम्।
 जानुनीः शारदा पातु त्रिपुरा पातु जंघयोः॥
 महामाया पादयुगे नित्यं रक्षतु कामदा।
 केशे कोटेश्वरी पातु नासायां पातु दीर्घिका॥
 (शुभगा) दन्तसंघाते मातड्यवतु चांगयोः।
 बाह्योम्मा ललिता पातु पाण्योस्तु वनवासिनी॥
 विन्ध्यवासिन्यड्गुलीषु श्रीकामा नखकोटिषु।
 रोमकूपेषु सर्वेषु गुप्तकामा सदावतु॥
 पादांगुलिपार्छिभागे पातु मां भुवनेश्वरी।
 जिह्वायां पातु मां सेतुः कः कण्ठाभ्यन्तरेऽवतु॥
 पातु नश्चान्तरे वक्षः ईः पातु जठरान्तरे।
 सामिन्दुः पातु मां वस्तौ विन्दुविर्वद्वन्तरेऽवतु॥
 ककारस्त्वचि मां पातु रकारोऽस्थिषु सर्वदा।
 लकारः सर्वनाडिषु ईकारः सर्वसन्धिषु॥
 चन्द्रःस्नायुषु मां पातु विन्दुर्मञ्जासु सन्ततम्।
 पूर्वस्यां दिशि चाग्नेय्यां दक्षिणे नैऋति तथा॥
 वारुणे चैव वायव्यां कौवेरे हरमन्दिरे।
 अकाराद्यास्तु वैष्णवा अष्टौ वर्णास्तु मन्त्रगाः॥
 पान्तु तिष्ठन्तु सततं समुद्भवविवृद्धये।
 ऊर्ध्वाधः पातु सततं मान्तु सेतुद्वयं सदा॥

श्री कामाख्या-रहस्यम् (52)

नवाक्षराणि मन्त्रेषु शारदा मन्त्रगोचरे।
 नवस्वरास्तु मां नित्यं नासादिषु समन्ततः॥
 वातपित्तकफेभ्यस्तु त्रिपुरायास्तु त्र्यक्षरम्।
 नित्यं रक्षतु भूतेभ्यः पिशाचेभ्यस्तथैव च॥
 तत् सेतु सततं पाता क्रव्यादभ्यो मानिवारकौ।
 नमः कामेश्वरी देवीं महामायां जगन्मयीम्।
 या भूत्वा प्रकृतिर्नित्यं तनोति जगदायतम्॥
 कामाख्यामक्षमालाभयवरदकरां सिद्धसूत्रैकहस्तां
 श्वेतप्रेतोपरिस्थां मणिकनकयुतां कुंकमापीत-
 वर्णाम्।

ज्ञानध्यानप्रतिष्ठामतिशयविनयां ब्रह्मशक्रादिवन्द्या
 मग्नी विन्दुन्तमन्त्रप्रियतमविषयां नौमि विद्वैरति-
 स्थाम्॥

मध्ये मध्यस्य भागे सततविनिमिता भावहारावली
 या

लीला लोकस्य कोष्ठे सकलगुणयुता व्यक्त-
 रूपैकनप्रा।

विद्या विद्यैकशान्ता शमनशमकरी क्षेमकर्त्री वरास्या
 नित्यं पायात् पवित्रप्रणववरकरा कामपूर्वेश्वरी
 नः॥

इति ह(रे:) कवचं तनुकेस्थितं शमयति व्यतिक्रम्य शिवे
 यदि।

इह गृहाण यतस्व विमोक्षणे सहित एष विधिः सह
चामरैः॥

इतीन्दं कवचं यस्तु कामाख्यायाः पठेद् बुधः।
सुकृत् तं तु महादेवी तनु व्रजति नित्यदा॥
नाधिव्याधिभयं तस्य न क्रव्यादभ्यो भयं तथा।
नागिनितो नापि तोयेभ्यो न रिपुभ्यो न राजतः॥
दीर्घायुर्बहुभोगी च पुत्रपौत्रसमन्वितः।
आवर्त्तयन् शतं देवी मन्दिरे मोदते परे॥
यथा तथा भवेद् बद्धः संग्रामेऽन्यत्र वा बुधः।
तत्क्षणादेव मुक्तः स्यात् स्मरणात् कवचस्य तु॥

(कालिका-पुराण से उद्धृत)

५५

अध्याय 5

श्री कामाख्या-स्तोत्रम्

भगवती कामाख्या का यह परम पुनीत स्तोत्र अत्यन्त ही सुफलदायी और साधक को मनोवाञ्छित फल प्रदान करने वाला है। यदि किसी राजा का राज्य दुष्ट शासकों द्वारा छीन लिया गया हो अथवा कोई व्यक्ति अपनी धन-सम्पत्ति खोकर दीन-हीन हो गया हो तो उनके लिए यह स्तोत्र अमोघ अस्त्र है। ऐसे व्यक्तियों को अष्टमी अथवा चतुर्दशी को उपवास रखकर पवित्र अवस्था में इस स्तोत्र का अधिकाधिक संख्या में पाठ करना चाहिए। निश्चय ही राजा को राज्य और दीन-हीन व्यक्तियों को उनकी धन-सम्पत्ति वापिस प्राप्त होती है और वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका निष्कंटक उपभोग करते हैं। उनके समस्त पापों का क्षय हो जाता है और अन्त में उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जय कामेशि चामुण्डे जय भूतापहारिणि।
जय सर्वगते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
विश्वमूर्ते शुभे शुद्धे विरूपाक्षि त्रिलोचने।
भीमरूपे शिवे विद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

मालाजये जये जम्बे भूताक्षि क्षुभितेऽक्षये।
 महामाये महेशानि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 भीमाक्षि भीषणे देवि सर्वभूतक्षयंकरि।
 कालि विकरालि च कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 कालि करालविक्रान्ते कामेश्वरि हरप्रिये।
 सर्वशास्त्रसारभूते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 कामरूपप्रदीपे च नीलकूटनिवासिनि।
 निशुम्भशुम्भमथनि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 कामाख्ये कामरूपस्थे कामेश्वरि हरप्रिये।
 कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 वपानाद्य (महा)वक्त्रे (तथा)त्रिभुवनेश्वरि।
 महिषासुरवधे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 छागतुष्टे महाभीमे कामाख्ये सुरवन्दिते।
 जय कामप्रदे तुष्टे कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 भृष्टराज्यो यदा राजा नवम्यां नियतः शुचिः।
 अष्टम्याज्य चतुर्दर्शयामुपवासी नरोत्तमः॥
 संवत्सरेण लभते राज्यं निष्कंटकं पुनः।
 य इदं शृणुयाद् भक्त्या तव देवि समुद्भवम्॥
 सर्वपापविनिर्मुक्तः परं निर्वाणमृच्छति।
 श्रीकामरूपेश्वरि भास्करप्रभे प्रकाशिताम्भोज-
 निभायतानने।
 सुरारिक्षःस्तुतिपातनोत्सुके त्रयीमये देवनुते नमामि॥

सितासिते रक्तपिंशंगविग्रहे रूपाणि यस्याः प्रति-
भान्ति तानि।

विकाररूपा च विकल्पितानि, शुभाशुभानामपि तां
नमामि॥

कामरूपसमुद्भूते कामपीठावतंसके।
विश्वाधारे महामाये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
अव्यक्तविग्रहे शान्ते सन्तते कामरूपिणि।
कालगम्ये परे शान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
या सुषुम्नान्तरालस्था चिन्त्यते ज्योतियपिणी।
प्रणतोऽस्मि परां वीरां कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
दंष्ट्राकरालवदने मुण्डमालोपशोभिते।
सर्वतः सर्वगे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
चामुण्डे च महाकालि कालि कपालहारिणि।
पाशहस्ते दण्डहस्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
चामुण्डे कुलमालास्ये तीक्ष्णदंष्ट्रे महाबले।
शवयानस्थिते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

(योगिनी-तन्त्र से उद्धृत)

भावार्थ— हे कामेशि ! हे चामुण्डे ! हे भूतापहारिणि ! तुम्हारी जय हो । हे सर्वगते देवि ! तुम्हारी जय हो । हे कामेश्वरि ! तुम्हारी जय हो । तुम्हें मेरा प्रणाम । हे विश्वमूर्ते ! हे शुभे ! हे शुद्धे ! हे विरुपाक्षि ! हे त्रिलोचने ! हे भीमरूपे ! हे शिवे ! हे विद्ये ! हे कामेश्वरि ! आपको मेरा प्रणाम । हे मायाजये ! हे जये ! हे जम्भे ! हे भूताक्षि ! हे क्षुभिते ! हे भक्षये ! हे महामाये ! हे महेशानि ! हे कामेश्वरि ! आपको मैं नमन

करता हूं। हे भीमाक्षि! हे भीषण! हे देवि! हे सर्व भूतों को नष्ट करने वाली! आप ही काली और विकराली हो! हे कामेश्वरि! आपको मैं नमस्कार करता हूं।

हे कालि! हे करालविक्रान्ते! हे कामेश्वरि! हे हरप्रिये! हे सर्व-शास्त्र-भूते! आपको मेरा नमस्कार है। आप ही कामरूप-प्रदीपा और आप ही नीलांचल पर्वतवासिनी हो। हे शुभ-निशुभ-मथनि! हे कामेश्वरि! आपको प्रणाम है। हे कामाख्ये! हे कामरूप में स्थित! हे कामेश्वरि! हे हरि की प्रिया! मेरे मनोरथ को पूरा करो। हे कामेश्वरि! मैं आपको प्रणाम करता हूं। हे वपानाद्य-वक्त्रे! हे तीनों लोकों की स्वामिनि! हे महिषासुर संहारिणि! हे देवि कामेश्वरि! मैं आपको नमन करता हूं।

हे छागतुष्टे! हे महाभीमे! हे कामाख्ये! हे देवों द्वारा वन्दिते! हे कामप्रदे! हे सन्तुष्टे! हे कामेश्वरि! आपको मैं प्रणाम करता हूं। जिस राजा ने अपना राज्य खो दिया हो, वह पूर्ण पवित्रता के साथ अष्टमी अथवा चतुर्दशी को व्रत रखकर भगवती की आराधना करे तो अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त करता है। जो इस स्तोत्र का पाठ भक्तिपूर्वक सुनता है वह आपकी कृपा का पात्र बन जाता है। उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और वह मोक्ष को प्राप्त करता है। हे कामरूपेश्वरि! हे भास्कर-प्रभे! हे प्रकाशित-मुखाम्बोजे! हे निभायतानने! हे त्रयीमये! मैं आपको प्रणाम करता हूं।

हे सितासते! हे रक्त-पिंशंग विग्रहे! आपके अनेक स्वरूप प्रतिभासित होते हैं तथा शुभ-अशुभ का विकल्पित रूप प्रकाशित होता है। आपको मेरा नमस्कार है। हे कामरूप-समुद्रभूते! हे कामपीठ-निवासिनी! हे विश्वाधारे! हे महामाये! हे कामेश्वरि! आपको मेरा प्रणाम है।

हे अव्यक्त-विग्रहे ! हे शांते ! हे सन्तते ! हे कामरूपिणि ! हे काल से भी अगम्य परमे ! हे कामेश्वरि ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ । जो सुषुम्ना नाड़ी में ज्योतिरूपिणी होकर योगियों द्वारा चिन्तित होती हैं, उन कामेश्वरि को मेरा प्रणाम है ।

हे दंष्ट्राकराल वदने ! हे मुण्डमाला सुशोभिते ! हे सर्वतः सर्वगे ! हे देवी कामेश्वरि ! आपको मेरा प्रणाम है । हे चामुण्डे ! हे महाकालि ! हे कालि ! हे कपाल-हारिणि ! हाथों में पाश और शूल धारण करने वाली हे कामेश्वरि ! आपको मेरा प्रणाम है । हे चामुण्डे ! हे कुलमालास्य ! हे तीक्ष्ण-दंष्ट्रे ! हे महाबले ! हे शवारुद्धे देवि ! हे कामेश्वरि ! आपको मेरा प्रणाम है ।

४५

कुछ विशेष

(नोट करने के लिए)

अध्याय 6

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना

संक्षिप्त होम व अर्चन-विधि

अपने दाहिने हाथ के प्रमाण लम्बी-चौड़ी तथा एक अंगुल ऊंची बालू अथवा मिट्टी की वेदी बनायें। वेदी को मूल मन्त्र “ॐ त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये प्रसीद त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं स्वाहा” अथवा “कामाख्यै नमः” नमस्कार मन्त्र बोलकर देखें। ‘फट्’ मन्त्र बोलकर पंच-पात्र के पवित्र जल से वेदी का प्रोक्षण (छिड़कें) करें। पुनः ‘फट्’ मन्त्र बोलकर ‘कुश’ के अग्रभाग से ‘वेदी’ का ‘ताड़न’ करें। ‘हुम्’ मन्त्र बोलकर एक मुट्ठी जल से वेदी का सिंचन करें।

फिर लाल चन्दन से वेदी पर एक अधोमुखी छु त्रिकोण बनायें। फिर अग्नि लेकर उसका एक अंगार मूल मन्त्र अथवा ‘कामाख्यै नमः’ ‘हूं फट् क्रव्यादेभ्यो नमः’ मन्त्र पढ़कर वेदी के नैऋत्य कोण में क्रव्याद का अंश समझकर रख दें। फिर अग्नि को मूल मन्त्र (अथवा श्री कामाख्यै नमः) पढ़ते हुए वेदी पर बने त्रिकोण में रख दें और समिधा रखकर अग्नि प्रज्वलित कर यह मन्त्र पढ़ें—

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना { 61 }

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे, जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णं - वर्णमनलं, ममीद्धः सर्वतो मुखम्॥

संकल्प

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर 'संकल्प' पढ़ें। यथा—
“ॐ तत्सत्। अद्यैतस्य, ब्रह्मणोऽहि-द्वितीय- प्रहराद्द्वै,
श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त-देशे,
अमुक-पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-
संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे,
अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक- नाम-शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास, श्री
कामाख्या-प्रीत्यर्थे सर्वाभीष्ट-सिद्धयर्थे क्षौं ॐ-बीज-युत
श्रीकालिका- सहस्र-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति होमं करिष्ये।”
फिर 'मूल-मन्त्र' से 'प्राणायाम्' कर 'विनियोग-ऋष्यादि-
न्यास' करें। यथा—

विनियोग— ॐ अस्य क्षौं ॐ सम्पुटित श्रीकालिका-
सहस्र-नाम-स्तोत्रस्य श्रीमहा-काल-भैरव ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः।
श्रीकालिका देवता। धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे होमे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीमहा-काल-भैरव-ऋषये नमः शिरसि।
त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकालिका-देवतायै नमः हृदि। ध
र्मार्थ-काम-मोक्षार्थे होमे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान

ॐ उत्तप्त-हेम-रुचिरां रविचन्द्र वह्नि नेत्रां,
धनुशशर-युतांकुश-पाण-शूलम्।

रम्भैर्भुजैश्च दधतीं शिव-शक्ति-रूपां,
कामेश्वरी हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥

अर्थ— मैं उस शिवशक्ति रूपा कामेश्वरी भगवती का हृदय में
भजन करता हूं, जो तपे हुए स्वर्ण के समान मनोहर गौर रूपा हैं।
सूर्य-चन्द्रमा और अग्नि जिनके तीन नेत्र हैं, जिसने चन्द्रमा की रेखा
मस्तक पर धारण की हुई है और मनोहर भुजाओं में धनुष, बाण,
अंकुश, पाश तथा शूल धारण किये हुए हैं।

मानस-पूजा

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीकामाख्या-प्रीतये
समर्पयामि नमः।

ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्यं श्रीकामाख्या-प्रीतये
समर्पयामि नमः।

ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीकामाख्या-प्रीतये
आग्रपयामि नमः।

ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीकामाख्या-प्रीतये दर्शयामि
नमः।

ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीकामाख्या-प्रीतये
निवेदयामि नमः।

ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीकामाख्या-प्रीतये
समर्पयामि नमः।

फिर 'मूल-मन्त्र' पढ़कर अथवा श्रीकामाख्ये नमः कहकर
'अग्नि' के ऊपर जल छिड़कें। 'अग्नि' का 'पंचोपचारों से
पूजन' करें तथा भगवती कामाख्या का अग्नि-रूप में ध्यान करें।

अब 'अग्नि' में 'धृत' या 'पायस' की आहुतियां निम्न मन्त्रों से प्रदान करें— ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा। ॐ स्वस्ति-पूर्णाय शिरसे स्वाहा। ॐ उत्तिष्ठ-पुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा। ॐ धूम-व्यापिने कवचाय हुम् स्वाहा। ॐ सप्त-जिह्वाय नेत्र-त्रयाय वौषट् स्वाहा। ॐ धनुर्दर्ढराय अस्त्राय फट् स्वाहा।

फिर 'वैश्वानर, जातवेद, इहावह लोहिताक्ष! सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा'— यह मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन आहुतियां दें।

तब अग्नि में देवता का ध्यान कर एक फूल को कर-कच्छप मुद्रा से लें। भावना एवं श्वास द्वारा प्राण-शक्ति को परा-शक्ति से ब्रह्म-रन्ध्र में मिलायें और फूल को अग्नि में रखकर देवता का स्थापन अग्नि में इस प्रकार करें— “ॐ क्षीं ॐ कामाख्ये देवि! इहागच्छ इहागच्छ। इह तिष्ठ।”

तब देवी को पुष्पांजलि देकर उनके पद्मगों को एक-एक आहुति दें—

ॐ त्रां हृदयाय नमः स्वाहा। ॐ त्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ त्रूं शिखायै वषट् स्वाहा। ॐ त्रैं कवचाय हुम् स्वाहा। ॐ त्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट् स्वाहा। ॐ त्रः अस्त्राय फट् स्वाहा।

इसके बाद— ‘क्षीं ॐ कामाख्ये स्वाहा’ मन्त्र से 25 बार, “क्षीं ॐ सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्री कामाख्ये स्वाहा” से 3 बार, ‘क्षीं ॐ स्वाहा’ से 16 बार आहुतियां प्रदान करें।

फिर ‘स्वाहा’ युक्त चतुर्थ्यन्त भगवति कामाख्या बीज मन्त्र से

सम्पुटि भाँ कालिका के नामों को क्रम से पढ़ते हुए आहुतियां प्रदान करें।

(नोट— हवन के स्थान पर यदि साधक 'अर्चन' करना चाहें तो 'स्वाहा' के स्थान पर 'नमः' का प्रयोग करें।)

१. ॐ क्षौं ॐ शमशान-कालिकायै नमः स्वाहा
२. ॐ क्षौं ॐ काल्यै नमः स्वाहा
३. ॐ क्षौं ॐ भद्र-काल्यै नमः स्वाहा
४. ॐ क्षौं ॐ कपालिन्यै नमः स्वाहा
५. ॐ क्षौं ॐ गुह्य-काल्यै नमः स्वाहा
६. ॐ क्षौं ॐ महा-काल्यै नमः स्वाहा
७. ॐ क्षौं ॐ कुरु-कुल्लायै नमः स्वाहा
८. ॐ क्षौं ॐ विरोधिन्यै नमः स्वाहा
९. ॐ क्षौं ॐ कालिकायै नमः स्वाहा
१०. ॐ क्षौं ॐ काल-रात्र्यै नमः स्वाहा
११. ॐ क्षौं ॐ महा-काल-नितम्बिन्यै नमः स्वाहा
१२. ॐ क्षौं ॐ काल-भैरव-भार्यायै नमः स्वाहा
१३. ॐ क्षौं ॐ कुल-वर्त्म-प्रकाशिन्यै नमः स्वाहा
१४. ॐ क्षौं ॐ कामदा-कामिन्यै नमः स्वाहा
१५. ॐ क्षौं ॐ कन्यायै नमः स्वाहा
१६. ॐ क्षौं ॐ कमनीय-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
१७. ॐ क्षौं ॐ कस्तूरी-रस-लिप्तांग्यै नमः स्वाहा
१८. ॐ क्षौं ॐ कुञ्जरेश्वर-गामिन्यै नमः स्वाहा
१९. ॐ क्षौं ॐ ककार-वर्ण-सर्वांग्यै नमः स्वाहा

२०. ॐ क्षीं ॐ कामिनी-काम-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
२१. ॐ क्षीं ॐ कामार्त्तायै नमः स्वाहा
२२. ॐ क्षीं ॐ काम-रूपायै नमः स्वाहा
२३. ॐ क्षीं ॐ काम-धेनवे नमः स्वाहा
२४. ॐ क्षीं ॐ कलावती-कान्तायै नमः स्वाहा
२५. ॐ क्षीं ॐ काम-स्वरूपायै नमः स्वाहा
२६. ॐ क्षीं ॐ कामाख्या-कुल-कामिन्यै नमः स्वाहा
२७. ॐ क्षीं ॐ कुलीनायै नमः स्वाहा
२८. ॐ क्षीं ॐ कुल-वत्यम्बायै नमः स्वाहा
२९. ॐ क्षीं ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा
३०. ॐ क्षीं ॐ दुर्गाति-नाशिन्यै नमः स्वाहा
३१. ॐ क्षीं ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा
३२. ॐ क्षीं ॐ कुलजायै नमः स्वाहा
३३. ॐ क्षीं ॐ कृष्णायै नमः स्वाहा
३४. ॐ क्षीं ॐ कृष्ण-देहायै नमः स्वाहा
३५. ॐ क्षीं ॐ कृशोदर्यै नमः स्वाहा
३६. ॐ क्षीं ॐ कृशांग्यै नमः स्वाहा
३७. ॐ क्षीं ॐ कुलिशांग्यै नमः स्वाहा
३८. ॐ क्षीं ॐ क्रीकार्यै नमः स्वाहा
३९. ॐ क्षीं ॐ कमलायै नमः स्वाहा
४०. ॐ क्षीं ॐ कलायै नमः स्वाहा
४१. ॐ क्षीं ॐ करालास्यायै नमः स्वाहा

४२. ॐ क्षीं ॐ करात्यै नमः स्वाहा
४३. ॐ क्षीं ॐ कुल-कान्ताऽपराजितायै नमः स्वाहा
४४. ॐ क्षीं ॐ उग्रायै नमः स्वाहा
४५. ॐ क्षीं ॐ उग्र-प्रभायै नमः स्वाहा
४६. ॐ क्षीं ॐ दीप्तायै नमः स्वाहा
४७. ॐ क्षीं ॐ विप्र-चित्तायै नमः स्वाहा
४८. ॐ क्षीं ॐ महा-बलायै नमः स्वाहा
४९. ॐ क्षीं ॐ नीलायै नमः स्वाहा
५०. ॐ क्षीं ॐ घनायै नमः स्वाहा
५१. ॐ क्षीं ॐ मेघ-नादायै नमः स्वाहा
५२. ॐ क्षीं ॐ मात्रायै नमः स्वाहा
५३. ॐ क्षीं ॐ मुद्रायै नमः स्वाहा
५४. ॐ क्षीं ॐ मिताऽमितायै नमः स्वाहा
५५. ॐ क्षीं ॐ ब्राह्मयै नमः स्वाहा
५६. ॐ क्षीं ॐ नारायण्यै नमः स्वाहा
५७. ॐ क्षीं ॐ भद्रायै नमः स्वाहा
५८. ॐ क्षीं ॐ सुभद्रायै नमः स्वाहा
५९. ॐ क्षीं ॐ भक्त-वत्सलायै नमः स्वाहा
६०. ॐ क्षीं ॐ माहेश्वर्यै नमः स्वाहा
६१. ॐ क्षीं ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा
६२. ॐ क्षीं ॐ वाराहीै नमः स्वाहा
६३. ॐ क्षीं ॐ नारसिंहिकायै नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना { 67 }

६४. ॐ क्षौं ॐ वज्रांगयै नमः स्वाहा
६५. ॐ क्षौं ॐ वज्र-कंकाल्यै नमः स्वाहा
६६. ॐ क्षौं ॐ नृ-मुण्ड-मणिवण्यै नमः स्वाहा
६७. ॐ क्षौं ॐ शिवायै नमः स्वाहा
६८. ॐ क्षौं ॐ मालिन्यै नमः स्वाहा
६९. ॐ क्षौं ॐ नर-मुण्डाली-गलद्-रक्त-विभूषणायै नमः
स्वाहा
७०. ॐ क्षौं ॐ रक्त-चन्दन-सिकतांगयै नमः स्वाहा
७१. ॐ क्षौं ॐ सिन्दूरारुण-मस्तकायै नमः स्वाहा
७२. ॐ क्षौं ॐ घोर-रूपायै नमः स्वाहा
७३. ॐ क्षौं ॐ घोर-दंष्ट्रायै नमः स्वाहा
७४. ॐ क्षौं ॐ घोरायै नमः स्वाहा
७५. ॐ क्षौं ॐ घोर-तरायै नमः स्वाहा
७६. ॐ क्षौं ॐ शुभायै नमः स्वाहा
७७. ॐ क्षौं ॐ महा-दंष्ट्रायै नमः स्वाहा
७८. ॐ क्षौं ॐ महा-मायायै नमः स्वाहा
७९. ॐ क्षौं ॐ सु-वन्त्यै नमः स्वाहा
८०. ॐ क्षौं ॐ युग-दन्तुरायै नमः स्वाहा
८१. ॐ क्षौं ॐ सु-लोचनायै नमः स्वाहा
८२. ॐ क्षौं ॐ विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा
८३. ॐ क्षौं ॐ विशालाक्ष्यै नमः स्वाहा
८४. ॐ क्षौं ॐ त्रिलोचनायै नमः स्वाहा

८५. ॐ क्षीं ॐ शारदेन्दु-प्रसन्नास्यायै नमः स्वाहा
८६. ॐ क्षीं ॐ स्फुरत्-स्मेराम्बुजेक्षणायै नमः स्वाहा
८७. ॐ क्षीं ॐ अट्टहासायै नमः स्वाहा
८८. ॐ क्षीं ॐ प्रफुल्लास्यायै नमः स्वाहा
८९. ॐ क्षीं ॐ स्मेर-वक्त्रायै नमः स्वाहा
९०. ॐ क्षीं ॐ सुभाषिण्यै नमः स्वाहा
९१. ॐ क्षीं ॐ प्रफुल्ल-पद्म-वदनायै नमः स्वाहा
९२. ॐ क्षीं ॐ स्मितास्यायै नमः स्वाहा
९३. ॐ क्षीं ॐ प्रिय-भाषिण्यै नमः स्वाहा
९४. ॐ क्षीं ॐ कोटराक्षयै नमः स्वाहा
९५. ॐ क्षीं ॐ कुल-श्रेष्ठायै नमः स्वाहा
९६. ॐ क्षीं ॐ महत्यै नमः स्वाहा
९७. ॐ क्षीं ॐ बहु-भाषिण्यै नमः स्वाहा
९८. ॐ क्षीं ॐ सु-मत्यै नमः स्वाहा
९९. ॐ क्षीं ॐ कु-मत्यै नमः स्वाहा
१००. ॐ क्षीं ॐ चण्डायै नमः स्वाहा
१०१. ॐ क्षीं ॐ चण्ड-मुण्डाति-वेगिन्यै नमः स्वाहा
१०२. ॐ क्षीं ॐ प्रचण्डायै नमः स्वाहा
१०३. ॐ क्षीं ॐ चण्डकायै नमः स्वाहा
१०४. ॐ क्षीं ॐ चण्डयै नमः स्वाहा
१०५. ॐ क्षीं ॐ चर्चिकायै नमः स्वाहा
१०६. ॐ क्षीं ॐ चण्ड-वेगिन्यै नमः स्वाहा

१०७. ॐ क्षौं ॐ सुकेशयै नमः स्वाहा
१०८. ॐ क्षौं ॐ मुक्त-केशयै नमः स्वाहा
१०९. ॐ क्षौं ॐ दीर्घ-केशयै नमः स्वाहा
११०. ॐ क्षौं ॐ महा-कषायै नमः स्वाहा
१११. ॐ क्षौं ॐ प्रेत-देह-कर्ण-पूरायै नमः स्वाहा
११२. ॐ क्षौं ॐ प्रेत-पाणि-सु-मेखलायै नमः स्वाहा
११३. ॐ क्षौं ॐ प्रेतासनायै नमः स्वाहा
११४. ॐ क्षौं ॐ प्रिय-प्रेतायै नमः स्वाहा
११५. ॐ क्षौं ॐ प्रेत-भूमि-कृतालयायै नमः स्वाहा
११६. ॐ क्षौं ॐ शमशान-वासिन्यै नमः स्वाहा
११७. ॐ क्षौं ॐ पुण्यायै नमः स्वाहा
११८. ॐ क्षौं ॐ पुण्यदायै नमः स्वाहा
११९. ॐ क्षौं ॐ कुल-पण्डितायै नमः स्वाहा
१२०. ॐ क्षौं ॐ पुण्यालयायै नमः स्वाहा
१२१. ॐ क्षौं ॐ पुण्य-देहायै नमः स्वाहा
१२२. ॐ क्षौं ॐ पुण्य-श्लोकायै नमः स्वाहा
१२३. ॐ क्षौं ॐ पावन्यै नमः स्वाहा
१२४. ॐ क्षौं ॐ पूतायै नमः स्वाहा
१२५. ॐ क्षौं ॐ पवित्रायै नमः स्वाहा
१२६. ॐ क्षौं ॐ परमायै नमः स्वाहा
१२७. ॐ क्षौं ॐ परायै नमः स्वाहा
१२८. ॐ क्षौं ॐ पुण्य-विभूषणायै नमः स्वाहा

१२९. ॐ क्षौं ॐ पुण्य-नाम्यै नमः स्वाहा
१३०. ॐ क्षौं ॐ भीति-हरायै नमः स्वाहा
१३१. ॐ क्षौं ॐ वरदायै नमः स्वाहा
१३२. ॐ क्षौं ॐ खड्ग-पाशिन्यै नमः स्वाहा
१३३. ॐ क्षौं ॐ नृ-मुण्ड-हस्तायै नमः स्वाहा
१३४. ॐ क्षौं ॐ शस्त्रायै नमः स्वाहा
१३५. ॐ क्षौं ॐ छिन-मस्तायै नमः स्वाहा
१३६. ॐ क्षौं ॐ सु-नासिकायै नमः स्वाहा
१३७. ॐ क्षौं ॐ दक्षिणायै नमः स्वाहा
१३८. ॐ क्षौं ॐ श्यामलायै नमः स्वाहा
१३९. ॐ क्षौं ॐ श्यामायै नमः स्वाहा
१४०. ॐ क्षौं ॐ शान्तायै नमः स्वाहा
१४१. ॐ क्षौं ॐ पीनोन्त-स्तन्यै नमः स्वाहा
१४२. ॐ क्षौं ॐ दिगम्बरायै नमः स्वाहा
१४३. ॐ क्षौं ॐ घोर-रावायै नमः स्वाहा
१४४. ॐ क्षौं ॐ सूक्कान्त-रक्त-वाहिन्यै नमः स्वाहा
१४५. ॐ क्षौं ॐ महा-रावायै नमः स्वाहा
१४६. ॐ क्षौं ॐ शिवा-संज्ञा-निःसंगायै नमः स्वाहा
१४७. ॐ क्षौं ॐ मदनातुरायै नमः स्वाहा
१४८. ॐ क्षौं ॐ मत्तायै नमः स्वाहा
१४९. ॐ क्षौं ॐ प्रमत्तायै नमः स्वाहा
१५०. ॐ क्षौं ॐ मदनायै नमः स्वाहा

१५१. ॐ क्षौं ॐ सुधा-सिन्धु-निवासिन्यै नमः स्वाहा
१५२. ॐ क्षौं ॐ अति-मत्तायै नमः स्वाहा
१५३. ॐ क्षौं ॐ महा-मत्तायै नमः स्वाहा
१५४. ॐ क्षौं ॐ सर्वाकर्षण-कारिण्यै नमः स्वाहा
१५५. ॐ क्षौं ॐ गीत-प्रियायै नमः स्वाहा
१५६. ॐ क्षौं ॐ वाद्य-रतायै नमः स्वाहा
१५७. ॐ क्षौं ॐ प्रेत-नृत्य-परायणायै नमः स्वाहा
१५८. ॐ क्षौं ॐ चतुर्भुजायै नमः स्वाहा
१५९. ॐ क्षौं ॐ दश-भुजायै नमः स्वाहा
१६०. ॐ क्षौं ॐ अष्टादश-भुजायै नमः स्वाहा
१६१. ॐ क्षौं ॐ कात्यायन्यै नमः स्वाहा
१६२. ॐ क्षौं ॐ जगन्मात्रे नमः स्वाहा
१६३. ॐ क्षौं ॐ जगती-परमेश्वर्यै नमः स्वाहा
१६४. ॐ क्षौं ॐ जगद्-बन्धुर्जगद्भात्र्यै नमः स्वाहा
१६५. ॐ क्षौं ॐ जगदानन्द-कारिण्यै नमः स्वाहा
१६६. ॐ क्षौं ॐ जगञ्जीव-वत्यै नमः स्वाहा
१६७. ॐ क्षौं ॐ हैम-वत्यै नमः स्वाहा
१६८. ॐ क्षौं ॐ मायायै नमः स्वाहा
१६९. ॐ क्षौं ॐ महा-लयायै नमः स्वाहा
१७०. ॐ क्षौं ॐ नाग-यज्ञोपवीतांगयै नमः स्वाहा
१७१. ॐ क्षौं ॐ नागिन्यै नमः स्वाहा
१७२. ॐ क्षौं ॐ नाग-शायिन्यै नमः स्वाहा

१७३. ॐ क्षीं ॐ नाग-कन्यायै नमः स्वाहा
१७४. ॐ क्षीं ॐ देव-कन्यायै नमः स्वाहा
१७५. ॐ क्षीं ॐ गान्धायै नमः स्वाहा
१७६. ॐ क्षीं ॐ किन्यै नमः स्वाहा
१७७. ॐ क्षीं ॐ ऐश्वर्यै नमः स्वाहा
१७८. ॐ क्षीं ॐ मोह-रात्रै नमः स्वाहा
१७९. ॐ क्षीं ॐ महा-रात्रै नमः स्वाहा
१८०. ॐ क्षीं ॐ दारूणाभायै नमः स्वाहा
१८१. ॐ क्षीं ॐ सुराऽसुर्यै नमः स्वाहा
१८२. ॐ क्षीं ॐ विद्या-धर्यै नमः स्वाहा
१८३. ॐ क्षीं ॐ वसु-पत्यै नमः स्वाहा
१८४. ॐ क्षीं ॐ यक्षिण्यै नमः स्वाहा
१८५. ॐ क्षीं ॐ योगिन्यै नमः स्वाहा
१८६. ॐ क्षीं ॐ जरायै नमः स्वाहा
१८७. ॐ क्षीं ॐ राक्षस्यै नमः स्वाहा
१८८. ॐ क्षीं ॐ डाकिन्यै नमः स्वाहा
१८९. ॐ क्षीं ॐ वेद-मत्यै नमः स्वाहा
१९०. ॐ क्षीं ॐ वेद-भूषणायै नमः स्वाहा
१९१. ॐ क्षीं ॐ श्रुति-स्मृतिर्महा-विद्यायै नमः स्वाहा
१९२. ॐ क्षीं ॐ गुह्य-विद्यायै नमः स्वाहा
१९३. ॐ क्षीं ॐ पुरातन्यै नमः स्वाहा
१९४. ॐ क्षीं ॐ चिन्ताऽचिन्तायै नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना { 73 }

१९५. ॐ क्षीं ॐ स्वधायै नमः स्वाहा
१९६. ॐ क्षीं ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा
१९७. ॐ क्षीं ॐ निद्रायै नमः स्वाहा
१९८. ॐ क्षीं ॐ तन्द्रायै नमः स्वाहा
१९९. ॐ क्षीं ॐ पार्वत्यै नमः स्वाहा
२००. ॐ क्षीं ॐ अर्पणायै नमः स्वाहा
२०१. ॐ क्षीं ॐ निश्चलायै नमः स्वाहा
२०२. ॐ क्षीं ॐ लोलायै नमः स्वाहा
२०३. ॐ क्षीं ॐ सर्व-विद्या-तपस्विन्यै नमः स्वाहा
२०४. ॐ क्षीं ॐ गंगायै नमः स्वाहा
२०५. ॐ क्षीं ॐ काश्यै नमः स्वाहा
२०६. ॐ क्षीं ॐ शच्यै नमः स्वाहा
२०७. ॐ क्षीं ॐ सीतायै नमः स्वाहा
२०८. ॐ क्षीं ॐ सत्यै नमः स्वाहा
२०९. ॐ क्षीं ॐ सत्य-परायणायै नमः स्वाहा
२१०. ॐ क्षीं ॐ नीत्यै नमः स्वाहा
२११. ॐ क्षीं ॐ सु-नीत्यै नमः स्वाहा
२१२. ॐ क्षीं ॐ सु-रुच्यै नमः स्वाहा
२१३. ॐ क्षीं ॐ तुष्ट्यै नमः स्वाहा
२१४. ॐ क्षीं ॐ पुष्ट्यै नमः स्वाहा
२१५. ॐ क्षीं ॐ धृत्यै नमः स्वाहा
२१६. ॐ क्षीं ॐ क्षमायै नमः स्वाहा

२१७. ॐ क्षीं ॐ वाण्यै नमः स्वाहा
२१८. ॐ क्षीं ॐ बुद्ध्यै नमः स्वाहा
२१९. ॐ क्षीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
२२०. ॐ क्षीं ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
२२१. ॐ क्षीं ॐ नील-सरस्वत्यै नमः स्वाहा
२२२. ॐ क्षीं ॐ स्त्रोतस्वत्यै नमः स्वाहा
२२३. ॐ क्षीं ॐ स्त्रोत-वत्यै नमः स्वाहा
२२४. ॐ क्षीं ॐ मातंग्यै नमः स्वाहा
२२५. ॐ क्षीं ॐ विजयायै नमः स्वाहा
२२६. ॐ क्षीं ॐ जयायै नमः स्वाहा
२२७. ॐ क्षीं ॐ नद्यै नमः स्वाहा
२२८. ॐ क्षीं ॐ सिन्धवे नमः स्वाहा
२२९. ॐ क्षीं ॐ सर्व-मव्यै नमः स्वाहा
२३०. ॐ क्षीं ॐ तारायै नमः स्वाहा
२३१. ॐ क्षीं ॐ शून्य-निवासिन्यै नमः स्वाहा
२३२. ॐ क्षीं ॐ शुद्धायै नमः स्वाहा
२३३. ॐ क्षीं ॐ तरंगिण्यै नमः स्वाहा
२३४. ॐ क्षीं ॐ मेधायै नमः स्वाहा
२३५. ॐ क्षीं ॐ लाकिन्यै नमः स्वाहा
२३६. ॐ क्षीं ॐ बहु-रूपिण्यै नमः स्वाहा
२३७. ॐ क्षीं ॐ सदानन्द-मव्यै नमः स्वाहा
२३८. ॐ क्षीं ॐ सत्यायै नमः स्वाहा

२३९. ॐ क्षौं ॐ सर्वानन्द-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
२४०. ॐ क्षौं ॐ सुनन्दायै नमः स्वाहा
२४१. ॐ क्षौं ॐ नन्दिन्यै नमः स्वाहा
२४२. ॐ क्षौं ॐ स्तुत्यायै नमः स्वाहा
२४३. ॐ क्षौं ॐ स्तवनीयायै नमः स्वाहा
२४४. ॐ क्षौं ॐ स्वभाविन्यै नमः स्वाहा
२४५. ॐ क्षौं ॐ रकिण्यै नमः स्वाहा
२४६. ॐ क्षौं ॐ टकिण्यै नमः स्वाहा
२४७. ॐ क्षौं ॐ चित्रायै नमः स्वाहा
२४८. ॐ क्षौं ॐ विचित्रायै नमः स्वाहा
२४९. ॐ क्षौं ॐ चित्र-रूपिण्यै नमः स्वाहा
२५०. ॐ क्षौं ॐ पद्मायै नमः स्वाहा
२५१. ॐ क्षौं ॐ पद्मालयायै नमः स्वाहा
२५२. ॐ क्षौं ॐ पद्म-मुख्यै नमः स्वाहा
२५३. ॐ क्षौं ॐ पद्म-विभूषणायै नमः स्वाहा
२५४. ॐ क्षौं ॐ शाकिन्यै नमः स्वाहा
२५५. ॐ क्षौं ॐ हाकिन्यै नमः स्वाहा
२५६. ॐ क्षौं ॐ क्षान्तायै नमः स्वाहा
२५७. ॐ क्षौं ॐ राकिण्यै नमः स्वाहा
२५८. ॐ क्षौं ॐ रुधिर-प्रियायै नमः स्वाहा
२५९. ॐ क्षौं ॐ भ्रान्त्यै नमः स्वाहा
२६०. ॐ क्षौं ॐ भवान्यै नमः स्वाहा

२६१. ॐ क्षौं ॐ रुद्राण्यै नमः स्वाहा
२६२. ॐ क्षौं ॐ मृडान्यै नमः स्वाहा
२६३. ॐ क्षौं ॐ शत्रु-मर्दिन्यै नमः स्वाहा
२६४. ॐ क्षौं ॐ उपेन्द्राण्यै नमः स्वाहा
२६५. ॐ क्षौं ॐ महेशान्यै नमः स्वाहा
२६६. ॐ क्षौं ॐ ज्योत्सनायै नमः स्वाहा
२६७. ॐ क्षौं ॐ इन्द्र-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
२६८. ॐ क्षौं ॐ सूर्यात्मिकायै नमः स्वाहा
२६९. ॐ क्षौं ॐ रुद्र-पत्न्यै नमः स्वाहा
२७०. ॐ क्षौं ॐ रौद्रयै नमः स्वाहा
२७१. ॐ क्षौं ॐ स्त्रियै नमः स्वाहा
२७२. ॐ क्षौं ॐ प्रकृत्यै नमः स्वाहा
२७३. ॐ क्षौं ॐ पुंसे नमः स्वाहा
२७४. ॐ क्षौं ॐ शक्त्यै नमः स्वाहा
२७५. ॐ क्षौं ॐ सूक्त्यै नमः स्वाहा
२७६. ॐ क्षौं ॐ मति-मत्यै नमः स्वाहा
२७७. ॐ क्षौं ॐ भुक्त्यै नमः स्वाहा
२७८. ॐ क्षौं ॐ मुक्त्यै नमः स्वाहा
२७९. ॐ क्षौं ॐ पति-व्रतायै नमः स्वाहा
२८०. ॐ क्षौं ॐ सर्वेश्वर्यै नमः स्वाहा
२८१. ॐ क्षौं ॐ सर्व-मात्रे नमः स्वाहा
२८२. ॐ क्षौं ॐ सर्वाण्यै नमः स्वाहा

२८३. ॐ क्षौं ॐ हर-वल्लभायै नमः स्वाहा
२८४. ॐ क्षौं ॐ सर्वज्ञायै नमः स्वाहा
२८५. ॐ क्षौं ॐ सिद्धिदायै नमः स्वाहा
२८६. ॐ क्षौं ॐ सिद्धायै नमः स्वाहा
२८७. ॐ क्षौं ॐ भाव्यायै नमः स्वाहा
२८८. ॐ क्षौं ॐ भव्यायै नमः स्वाहा
२८९. ॐ क्षौं ॐ भयापहायै नमः स्वाहा
२९०. ॐ क्षौं ॐ कत्र्यै नमः स्वाहा
२९१. ॐ क्षौं ॐ हत्र्यै नमः स्वाहा
२९२. ॐ क्षौं ॐ पालयित्र्यै नमः स्वाहा
२९३. ॐ क्षौं ॐ शर्वर्यै नमः स्वाहा
२९४. ॐ क्षौं ॐ तामस्यै नमः स्वाहा
२९५. ॐ क्षौं ॐ दयायै नमः स्वाहा
२९६. ॐ क्षौं ॐ तमिस्त्रायै नमः स्वाहा
२९७. ॐ क्षौं ॐ यामिनीस्थायै नमः स्वाहा
२९८. ॐ क्षौं ॐ स्थिरायै नमः स्वाहा
२९९. ॐ क्षौं ॐ धीरायै नमः स्वाहा
३००. ॐ क्षौं ॐ तपस्त्वन्यै नमः स्वाहा
३०१. ॐ क्षौं ॐ चार्वग्न्यै नमः स्वाहा
३०२. ॐ क्षौं ॐ चञ्चलायै नमः स्वाहा
३०३. ॐ क्षौं ॐ लोल-जिह्वायै नमः स्वाहा
३०४. ॐ क्षौं ॐ चारु-चरित्रिण्यै नमः स्वाहा

३०५. ॐ क्षौं ॐ त्रपायै नमः स्वाहा
३०६. ॐ क्षौं ॐ त्रपा-वत्यै नमः स्वाहा
३०७. ॐ क्षौं ॐ लज्जायै नमः स्वाहा
३०८. ॐ क्षौं ॐ निर्लज्जायै नमः स्वाहा
३०९. ॐ क्षौं ॐ ह्रिये नमः स्वाहा
३१०. ॐ क्षौं ॐ रजो-वत्यै नमः स्वाहा
३११. ॐ क्षौं ॐ सत्त्व-वत्यै नमः स्वाहा
३१२. ॐ क्षौं ॐ धर्म-निष्ठायै नमः स्वाहा
३१३. ॐ क्षौं ॐ श्रेष्ठायै नमः स्वाहा
३१४. ॐ क्षौं ॐ निष्ठुर-वादिन्यै नमः स्वाहा
३१५. ॐ क्षौं ॐ गरिष्ठायै नमः स्वाहा
३१६. ॐ क्षौं ॐ दुष्ट-संहत्यै नमः स्वाहा
३१७. ॐ क्षौं ॐ विशिष्ठायै नमः स्वाहा
३१८. ॐ क्षौं ॐ श्रेयस्यै नमः स्वाहा
३१९. ॐ क्षौं ॐ घृणायै नमः स्वाहा
३२०. ॐ क्षौं ॐ भीमायै नमः स्वाहा
३२१. ॐ क्षौं ॐ भयानकायै नमः स्वाहा
३२२. ॐ क्षौं ॐ भीम-नादिन्यै नमः स्वाहा
३२३. ॐ क्षौं ॐ भिये नमः स्वाहा
३२४. ॐ क्षौं ॐ प्रभा-वत्यै नमः स्वाहा
३२५. ॐ क्षौं ॐ वागीश्वर्यै नमः स्वाहा
३२६. ॐ क्षौं ॐ श्रिये नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना { 79 }

३२७. ॐ क्षौं ॐ यमुनायै नमः स्वाहा
३२८. ॐ क्षौं ॐ यज्ञ-कर्त्र्यै नमः स्वाहा
३२९. ॐ क्षौं ॐ यजुः-प्रियायै नमः स्वाहा
३३०. ॐ क्षौं ॐ ऋक्-सामार्थ्य-निलयायै नमः स्वाहा
३३१. ॐ क्षौं ॐ रागिण्यै नमः स्वाहा
३३२. ॐ क्षौं ॐ शोभन-स्वरायै नमः स्वाहा
३३३. ॐ क्षौं ॐ कल-कण्ठ्यै नमः स्वाहा
३३४. ॐ क्षौं ॐ कम्बु-कण्ठ्यै नमः स्वाहा
३३५. ॐ क्षौं ॐ वेणु-वीणा-परायणायै नमः स्वाहा
३३६. ॐ क्षौं ॐ वशिन्यै नमः स्वाहा
३३७. ॐ क्षौं ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा
३३८. ॐ क्षौं ॐ स्वच्छायै नमः स्वाहा
३३९. ॐ क्षौं ॐ धात्र्यै नमः स्वाहा
३४०. ॐ क्षौं ॐ त्रि-जगदीश्वर्यै नमः स्वाहा
३४१. ॐ क्षौं ॐ मधुमत्यै नमः स्वाहा
३४२. ॐ क्षौं ॐ कुण्डलिन्यै नमः स्वाहा
३४३. ॐ क्षौं ॐ ऋद्धूर्यै नमः स्वाहा
३४४. ॐ क्षौं ॐ सिद्धूर्यै नमः स्वाहा
३४५. ॐ क्षौं ॐ शुचि-स्मितायै नमः स्वाहा
३४६. ॐ क्षौं ॐ रम्भायै नमः स्वाहा
३४७. ॐ क्षौं ॐ उर्वश्यै नमः स्वाहा
३४८. ॐ क्षौं ॐ रत्यै नमः स्वाहा

३४९. ॐ क्षौं ॐ रामायै नमः स्वाहा
३५०. ॐ क्षौं ॐ राहिण्यै नमः स्वाहा
३५१. ॐ क्षौं ॐ रेवत्यै नमः स्वाहा
३५२. ॐ क्षौं ॐ मधायै नमः स्वाहा
३५३. ॐ क्षौं ॐ शंखिन्यै नमः स्वाहा
३५४. ॐ क्षौं ॐ चक्रिण्यै नमः स्वाहा
३५५. ॐ क्षौं ॐ कृष्णायै नमः स्वाहा
३५६. ॐ क्षौं ॐ गदिन्यै नमः स्वाहा
३५७. ॐ क्षौं ॐ पद्मिन्यै नमः स्वाहा
३५८. ॐ क्षौं ॐ शूलिन्यै नमः स्वाहा
३५९. ॐ क्षौं ॐ परिघास्त्रायै नमः स्वाहा
३६०. ॐ क्षौं ॐ पाशिन्यै नमः स्वाहा
३६१. ॐ क्षौं ॐ शांग-पाणिन्यै नमः स्वाहा
३६२. ॐ क्षौं ॐ पिनाक-धारिण्यै नमः स्वाहा
३६३. ॐ क्षौं ॐ धूम्रायै नमः स्वाहा
३६४. ॐ क्षौं ॐ सुरभ्यै नमः स्वाहा
३६५. ॐ क्षौं ॐ वन-मालिन्यै नमः स्वाहा
३६६. ॐ क्षौं ॐ रथिन्यै नमः स्वाहा
३६७. ॐ क्षौं ॐ समर-प्रीतायै नमः स्वाहा
३६८. ॐ क्षौं ॐ वेगिन्यै नमः स्वाहा
३६९. ॐ क्षौं ॐ रण-पण्डितायै नमः स्वाहा
३७०. ॐ क्षौं ॐ जटिन्यै नमः स्वाहा

३७१. ॐ क्षौं ॐ वज्रिण्यै नमः स्वाहा
३७२. ॐ क्षौं ॐ नीलायै नमः स्वाहा
३७३. ॐ क्षौं ॐ लावण्याम्बुधि-चन्द्रिकायै नमः स्वाहा
३७४. ॐ क्षौं ॐ बलि-प्रियायै नमः स्वाहा
३७५. ॐ क्षौं ॐ महा-पूज्यायै नमः स्वाहा
३७६. ॐ क्षौं ॐ पूर्णायै नमः स्वाहा
३७७. ॐ क्षौं ॐ दैत्येन्द्र-मन्थिन्यै नमः स्वाहा
३७८. ॐ क्षौं ॐ महिषासुर-संहन्त्र्यै नमः स्वाहा
३७९. ॐ क्षौं ॐ वासिन्यै नमः स्वाहा
३८०. ॐ क्षौं ॐ रक्त-दन्तिकायै नमः स्वाहा
३८१. ॐ क्षौं ॐ रक्तपायै नमः स्वाहा
३८२. ॐ क्षौं ॐ रुधिराक्तांगयै नमः स्वाहा
३८३. ॐ क्षौं ॐ रक्त-खर्पर-हस्तिन्यै नमः स्वाहा
३८४. ॐ क्षौं ॐ रक्त-प्रियायै नमः स्वाहा
३८५. ॐ क्षौं ॐ मास-रुचिरासवासक्त-मानसायै नमः स्वाहा
३८६. ॐ क्षौं ॐ गलच्छोणित-मुण्डालि-कण्ठ-माला-
विभूषणायै नमः स्वाहा
३८७. ॐ क्षौं ॐ शवासनायै नमः स्वाहा
३८८. ॐ क्षौं ॐ चितान्तःस्थायै नमः स्वाहा
३८९. ॐ क्षौं ॐ माहेश्यै नमः स्वाहा
३९०. ॐ क्षौं ॐ वृष-वाहिन्यै नमः स्वाहा
३९१. ॐ क्षौं ॐ व्याघ्र-त्वगाम्बरायै नमः स्वाहा

३९२. ॐ क्षौं ॐ चीर-चेलिन्यै नमः स्वाहा
३९३. ॐ क्षौं ॐ सिंह-वाहिन्यै नमः स्वाहा
३९४. ॐ क्षौं ॐ वाम-देव्यै नमः स्वाहा
३९५. ॐ क्षौं ॐ महा-देव्यै नमः स्वाहा
३९६. ॐ क्षौं ॐ गौर्यै नमः स्वाहा
३९७. ॐ क्षौं ॐ सर्वज्ञ-भाविन्यै नमः स्वाहा
३९८. ॐ क्षौं ॐ बालिकायै नमः स्वाहा
३९९. ॐ क्षौं ॐ तरुण्यै नमः स्वाहा
४००. ॐ क्षौं ॐ वृद्धायै नमः स्वाहा
४०१. ॐ क्षौं ॐ वृद्ध-मात्रे नमः स्वाहा
४०२. ॐ क्षौं ॐ जरातुरायै नमः स्वाहा
४०३. ॐ क्षौं ॐ सु-भ्रुवे नमः स्वाहा
४०४. ॐ क्षौं ॐ विलासिन्यै नमः स्वाहा
४०५. ॐ क्षौं ॐ ब्रह्म-वादिन्यै नमः स्वाहा
४०६. ॐ क्षौं ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा
४०७. ॐ क्षौं ॐ मही नमः स्वाहा
४०८. ॐ क्षौं ॐ स्वजावत्यै नमः स्वाहा
४०९. ॐ क्षौं ॐ चित्र-लेखायै नमः स्वाहा
४१०. ॐ क्षौं ॐ लोपा-मुद्रायै नमः स्वाहा
४११. ॐ क्षौं ॐ सुरेश्वर्यै नमः स्वाहा
४१२. ॐ क्षौं ॐ अमोघायै नमः स्वाहा
४१३. ॐ क्षौं ॐ अरुन्धत्यै नमः स्वाहा

४१४. ॐ क्षौं ॐ तीक्ष्णायै नमः स्वाहा
४१५. ॐ क्षौं ॐ भोग-वत्यनुवादिन्यै नमः स्वाहा
४१६. ॐ क्षौं ॐ मन्दाकिन्यै नमः स्वाहा
४१७. ॐ क्षौं ॐ मन्द-हासायै नमः स्वाहा
४१८. ॐ क्षौं ॐ ज्वाला-मुख्यसुरान्तकायै नमः स्वाहा
४१९. ॐ क्षौं ॐ मानदायै नमः स्वाहा
४२०. ॐ क्षौं ॐ मानिन्यै नमः स्वाहा
४२१. ॐ क्षौं ॐ मान्यायै नमः स्वाहा
४२२. ॐ क्षौं ॐ माननीयायै नमः स्वाहा
४२३. ॐ क्षौं ॐ मदोद्धतायै नमः स्वाहा
४२४. ॐ क्षौं ॐ मदिरायै नमः स्वाहा
४२५. ॐ क्षौं ॐ मदिरोन्मादायै नमः स्वाहा
४२६. ॐ क्षौं ॐ मेध्यायै नमः स्वाहा
४२७. ॐ क्षौं ॐ नव्यायै नमः स्वाहा
४२८. ॐ क्षौं ॐ प्रसादिन्यै नमः स्वाहा
४२९. ॐ क्षौं ॐ सु-मध्यानन्त-गुणिन्यै नमः स्वाहा
४३०. ॐ क्षौं ॐ सर्व-लोकोत्तमोत्तमायै नमः स्वाहा
४३१. ॐ क्षौं ॐ जयदायै नमः स्वाहा
४३२. ॐ क्षौं ॐ जित्वरायै नमः स्वाहा
४३३. ॐ क्षौं ॐ जेत्र्यै नमः स्वाहा
४३४. ॐ क्षौं ॐ जय-श्री-जय-शालिन्यै नमः स्वाहा
४३५. ॐ क्षौं ॐ सुखदायै नमः स्वाहा

४३६. ॐ क्षौं ॐ शुभदायै नमः स्वाहा
४३७. ॐ क्षौं ॐ सत्यायै नमः स्वाहा
४३८. ॐ क्षौं ॐ सभा-संक्षोभ-कारिण्यै नमः स्वाहा
४३९. ॐ क्षौं ॐ शिव-दूत्यै नमः स्वाहा
४४०. ॐ क्षौं ॐ भूति-मत्यै नमः स्वाहा
४४१. ॐ क्षौं ॐ विभूत्यै नमः स्वाहा
४४२. ॐ क्षौं ॐ भीषणाननायै नमः स्वाहा
४४३. ॐ क्षौं ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा
४४४. ॐ क्षौं ॐ कुलजायै नमः स्वाहा
४४५. ॐ क्षौं ॐ कुन्त्यै नमः स्वाहा
४४६. ॐ क्षौं ॐ कुल-स्त्रियै नमः स्वाहा
४४७. ॐ क्षौं ॐ कुल-पालिकायै नमः स्वाहा
४४८. ॐ क्षौं ॐ कीर्तिर्यशस्विन्यै नमः स्वाहा
४४९. ॐ क्षौं ॐ भूषायै नमः स्वाहा
४५०. ॐ क्षौं ॐ भूष्यायै नमः स्वाहा
४५१. ॐ क्षौं ॐ भूत-पति-प्रियायै नमः स्वाहा
४५२. ॐ क्षौं ॐ सगुणायै नमः स्वाहा
४५३. ॐ क्षौं ॐ निर्गुणायै नमः स्वाहा
४५४. ॐ क्षौं ॐ धृष्टायै नमः स्वाहा
४५५. ॐ क्षौं ॐ निष्ठायै नमः स्वाहा
४५६. ॐ क्षौं ॐ काष्ठायै नमः स्वाहा
४५७. ॐ क्षौं ॐ प्रतिष्ठितायै नमः स्वाहा

श्री कामारुद्धा-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना { 85 }

४५८. ॐ क्षौं ॐ धनिष्ठायै नमः स्वाहा
४५९. ॐ क्षौं ॐ धनदायै नमः स्वाहा
४६०. ॐ क्षौं ॐ धन्यायै नमः स्वाहा
४६१. ॐ क्षौं ॐ वसुधायै नमः स्वाहा
४६२. ॐ क्षौं ॐ स्व-प्रकाशिन्यै नमः स्वाहा
४६३. ॐ क्षौं ॐ उव्यै नमः स्वाहा
४६४. ॐ क्षौं ॐ गुव्यै नमः स्वाहा
४६५. ॐ क्षौं ॐ गुरु-श्रेष्ठायै नमः स्वाहा
४६६. ॐ क्षौं ॐ स-गुणायै नमः स्वाहा
४६७. ॐ क्षौं ॐ त्रि-गुणात्मिकायै नमः स्वाहा
४६८. ॐ क्षौं ॐ महा-कुलीनायै नमः स्वाहा
४६९. ॐ क्षौं ॐ निष्कामायै नमः स्वाहा
४७०. ॐ क्षौं ॐ सकामायै नमः स्वाहा
४७१. ॐ क्षौं ॐ काम-जीवनायै नमः स्वाहा
४७२. ॐ क्षौं ॐ काम-देव-कलायै नमः स्वाहा
४७३. ॐ क्षौं ॐ रामाभिरामायै नमः स्वाहा
४७४. ॐ क्षौं ॐ शिव-नर्तक्यै नमः स्वाहा
४७५. ॐ क्षौं ॐ चिन्तामणिः कल्प-लतायै नमः स्वाहा
४७६. ॐ क्षौं ॐ जाग्रत्यै नमः स्वाहा
४७७. ॐ क्षौं ॐ दीन-वत्सलायै नमः स्वाहा
४७८. ॐ क्षौं ॐ कार्त्तिक्यै नमः स्वाहा
४७९. ॐ क्षौं ॐ कृत्तिकायै नमः स्वाहा

४८०. ॐ क्षौं ॐ कृत्यायै नमः स्वाहा
४८१. ॐ क्षौं ॐ अयोध्यायै नमः स्वाहा
४८२. ॐ क्षौं ॐ विषमायै नमः स्वाहा
४८३. ॐ क्षौं ॐ समायै नमः स्वाहा
४८४. ॐ क्षौं ॐ सुपन्नायै नमः स्वाहा
४८५. ॐ क्षौं ॐ मन्त्रिण्यै नमः स्वाहा
४८६. ॐ क्षौं ॐ घूर्णायै नमः स्वाहा
४८७. ॐ क्षौं ॐ हलादिन्यै नमः स्वाहा
४८८. ॐ क्षौं ॐ क्लेश-नाशिन्यै नमः स्वाहा
४८९. ॐ क्षौं ॐ त्रैलोक्य-जनन्यै नमः स्वाहा
४९०. ॐ क्षौं ॐ हृष्टायै नमः स्वाहा
४९१. ॐ क्षौं ॐ निर्मासायै नमः स्वाहा
४९२. ॐ क्षौं ॐ मनो-रूपिण्यै नमः स्वाहा
४९३. ॐ क्षौं ॐ तडाग-निम्न-जठरायै नमः स्वाहा
४९४. ॐ क्षौं ॐ शुष्क-मांसास्थि-मालिन्यै नमः स्वाहा
४९५. ॐ क्षौं ॐ अवन्त्यै नमः स्वाहा
४९६. ॐ क्षौं ॐ मथुरायै नमः स्वाहा
४९७. ॐ क्षौं ॐ मायायै नमः स्वाहा
४९८. ॐ क्षौं ॐ त्रैलोक्य-पावनीश्वर्यै नमः स्वाहा
४९९. ॐ क्षौं ॐ व्यक्ताव्यक्तानेक-मूर्त्यै नमः स्वाहा
५००. ॐ क्षौं ॐ शर्वर्यै नमः स्वाहा
५०१. ॐ क्षौं ॐ भीम-नादिन्यै नमः स्वाहा

५०२. ॐ क्षौं ॐ क्षेमंकर्यै नमः स्वाहा
५०३. ॐ क्षौं ॐ शंकर्यै नमः स्वाहा
५०४. ॐ क्षौं ॐ सर्व-सम्मोह-कारिण्यै नमः स्वाहा
५०५. ॐ क्षौं ॐ ऊर्ध्व-तेजस्विन्यै नमः स्वाहा
५०६. ॐ क्षौं ॐ किलनायै नमः स्वाहा
५०७. ॐ क्षौं ॐ महा-तेजस्विन्यै नमः स्वाहा
५०८. ॐ क्षौं ॐ अद्वैतायै नमः स्वाहा
५०९. ॐ क्षौं ॐ भोगिन्यै नमः स्वाहा
५१०. ॐ क्षौं ॐ पूज्यायै नमः स्वाहा
५११. ॐ क्षौं ॐ युवत्यै नमः स्वाहा
५१२. ॐ क्षौं ॐ सर्व-मंगलायै नमः स्वाहा
५१३. ॐ क्षौं ॐ सर्व-प्रियंकर्यै नमः स्वाहा
५१४. ॐ क्षौं ॐ भोग्यायै नमः स्वाहा
५१५. ॐ क्षौं ॐ धरण्यै नमः स्वाहा
५१६. ॐ क्षौं ॐ पिशिताशनायै नमः स्वाहा
५१७. ॐ क्षौं ॐ भयंकर्यै नमः स्वाहा
५१८. ॐ क्षौं ॐ पापहरायै नमः स्वाहा
५१९. ॐ क्षौं ॐ निष्कलंकायै नमः स्वाहा
५२०. ॐ क्षौं ॐ वशंकर्यै नमः स्वाहा
५२१. ॐ क्षौं ॐ आशायै नमः स्वाहा
५२२. ॐ क्षौं ॐ तृष्णायै नमः स्वाहा
५२३. ॐ क्षौं ॐ चन्द्र-कलायै नमः स्वाहा

५२४. ॐ क्षौं ॐ निद्रिकायै नमः स्वाहा
५२५. ॐ क्षौं ॐ वायु-वेगिन्यै नमः स्वाहा
५२६. ॐ क्षौं ॐ सहस्र-सूर्य-संकाशायै नमः स्वाहा
५२७. ॐ क्षौं ॐ चन्द्र-कोटि-सम-प्रभायै नमः स्वाहा
५२८. ॐ क्षौं ॐ वह्नि-मण्डल-मध्यस्थायै नमः स्वाहा
५२९. ॐ क्षौं ॐ सर्व-तत्त्व-प्रतिष्ठितायै नमः स्वाहा
५३०. ॐ क्षौं ॐ सर्वाचार-वत्यै नमः स्वाहा
५३१. ॐ क्षौं ॐ सर्व-देव-कन्याधिदेवतायै नमः स्वाहा
५३२. ॐ क्षौं ॐ दक्ष-कन्यायै नमः स्वाहा
५३३. ॐ क्षौं ॐ दक्ष-यज्ञ-नाशिन्यै नमः स्वाहा
५३४. ॐ क्षौं ॐ दुर्ग-तारिण्यै नमः स्वाहा
५३५. ॐ क्षौं ॐ इन्द्रियै नमः स्वाहा
५३६. ॐ क्षौं ॐ पूज्यायै नमः स्वाहा
५३७. ॐ क्षौं ॐ विभीः भूत्यै नमः स्वाहा
५३८. ॐ क्षौं ॐ सत्कीर्तिः ब्रह्म-रूपिण्यै नमः स्वाहा
५३९. ॐ क्षौं ॐ राम्भोरुशचतुरायै नमः स्वाहा
५४०. ॐ क्षौं ॐ राकायै नमः स्वाहा
५४१. ॐ क्षौं ॐ जयन्त्यै नमः स्वाहा
५४२. ॐ क्षौं ॐ करुणायै नमः स्वाहा
५४३. ॐ क्षौं ॐ कुहुः मनस्त्विन्यै नमः स्वाहा
५४४. ॐ क्षौं ॐ देव-मात्रे नमः स्वाहा
५४५. ॐ क्षौं ॐ यशस्यायै नमः स्वाहा

५४६. ॐ क्षौं ॐ ब्रह्म-चारिण्यै नमः स्वाहा
५४७. ॐ क्षौं ॐ ऋद्धिदायै नमः स्वाहा
५४८. ॐ क्षौं ॐ वृद्धिदायै नमः स्वाहा
५४९. ॐ क्षौं ॐ वृद्धिः सर्वाद्यायै नमः स्वाहा
५५०. ॐ क्षौं ॐ सर्व-दायिन्यै नमः स्वाहा
५५१. ॐ क्षौं ॐ आधार-रूपिण्यै नमः स्वाहा
५५२. ॐ क्षौं ॐ ध्येयायै नमः स्वाहा
५५३. ॐ क्षौं ॐ मूलाधार-निवासिन्यै नमः स्वाहा
५५४. ॐ क्षौं ॐ आज्ञायै नमः स्वाहा
५५५. ॐ क्षौं ॐ प्रज्ञा-पूर्ण-मनश्चन्द्र-मुख्यानुकूलिन्यै नमः स्वाहा
५५६. ॐ क्षौं ॐ वावदूकायै नमः स्वाहा
५५७. ॐ क्षौं ॐ निम्न-नाभ्यै नमः स्वाहा
५५८. ॐ क्षौं ॐ सत्यायै नमः स्वाहा
५५९. ॐ क्षौं ॐ सन्ध्यायै नमः स्वाहा
५६०. ॐ क्षौं ॐ दृढ़-व्रतायै नमः स्वाहा
५६१. ॐ क्षौं ॐ आन्वीक्षिक्यै नमः स्वाहा
५६२. ॐ क्षौं ॐ दण्ड-नीतिस्वर्यै नमः स्वाहा
५६३. ॐ क्षौं ॐ त्रि-दिव-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
५६४. ॐ क्षौं ॐ ज्वलिन्यै नमः स्वाहा
५६५. ॐ क्षौं ॐ ज्वालिन्यै नमः स्वाहा
५६६. ॐ क्षौं ॐ शैल-तनयायै नमः स्वाहा

५६७. ॐ क्षीं ॐ विन्ध्य-वासिन्यै नमः स्वाहा
५६८. ॐ क्षीं ॐ अमेयायै नमः स्वाहा
५६९. ॐ क्षीं ॐ खेचर्यै नमः स्वाहा
५७०. ॐ क्षीं ॐ धीर्यायै नमः स्वाहा
५७१. ॐ क्षीं ॐ तुरीयायै नमः स्वाहा
५७२. ॐ क्षीं ॐ विमलातुरायै नमः स्वाहा
५७३. ॐ क्षीं ॐ प्रगल्भायै नमः स्वाहा
५७४. ॐ क्षीं ॐ वारुणीच्छायायै नमः स्वाहा
५७५. ॐ क्षीं ॐ शशिन्यै नमः स्वाहा
५७६. ॐ क्षीं ॐ विस्फुलिंगिन्यै नमः स्वाहा
५७७. ॐ क्षीं ॐ भुक्त्यै नमः स्वाहा
५७८. ॐ क्षीं ॐ सिद्ध्यै नमः स्वाहा
५७९. ॐ क्षीं ॐ सदा-प्राप्त्यै नमः स्वाहा
५८०. ॐ क्षीं ॐ प्राकाम्यायै नमः स्वाहा
५८१. ॐ क्षीं ॐ महिमायै नमः स्वाहा
५८२. ॐ क्षीं ॐ अणिमायै नमः स्वाहा
५८३. ॐ क्षीं ॐ इच्छा-सिद्धिः विसिद्धायै नमः स्वाहा
५८४. ॐ क्षीं ॐ वशित्वोर्ध्वं-निवासिन्यै नमः स्वाहा
५८५. ॐ क्षीं ॐ लघिमायै नमः स्वाहा
५८६. ॐ क्षीं ॐ गायत्र्यै नमः स्वाहा
५८७. ॐ क्षीं ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा
५८८. ॐ क्षीं ॐ भुवनेश्वर्यै नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना (91)

५८०. ॐ क्षौं ॐ मनोहरायै नमः स्वाहा
५९०. ॐ क्षौं ॐ चितायै नमः स्वाहा
५९१. ॐ क्षौं ॐ दिव्यायै नमः स्वाहा
५९२. ॐ क्षौं ॐ देव्युदारायै नमः स्वाहा
५९३. ॐ क्षौं ॐ मनोरमायै नमः स्वाहा
५९४. ॐ क्षौं ॐ पिंगलायै नमः स्वाहा
५९५. ॐ क्षौं ॐ कपिलायै नमः स्वाहा
५९६. ॐ क्षौं ॐ जिह्वा-रसज्ञायै नमः स्वाहा
५९७. ॐ क्षौं ॐ रसिकायै नमः स्वाहा
५९८. ॐ क्षौं ॐ रसायै नमः स्वाहा
५९९. ॐ क्षौं ॐ सुषुम्नायै नमः स्वाहा
६००. ॐ क्षौं ॐ इडायै नमः स्वाहा
६०१. ॐ क्षौं ॐ भोग-वत्यै नमः स्वाहा
६०२. ॐ क्षौं ॐ गान्धायै नमः स्वाहा
६०३. ॐ क्षौं ॐ नरकान्तकायै नमः स्वाहा
६०४. ॐ क्षौं ॐ पाञ्चाल्यै नमः स्वाहा
६०५. ॐ क्षौं ॐ रुक्मिण्यै नमः स्वाहा
६०६. ॐ क्षौं ॐ राधाऽऽराध्यायै नमः स्वाहा
६०७. ॐ क्षौं ॐ भीमाधि-राधिकायै नमः स्वाहा
६०८. ॐ क्षौं ॐ अमृतायै नमः स्वाहा
६०९. ॐ क्षौं ॐ तुलस्यै नमः स्वाहा
६१०. ॐ क्षौं ॐ वृन्दायै नमः स्वाहा

६११. ॐ क्षीं ॐ कैटभ्यै नमः स्वाहा
६१२. ॐ क्षीं ॐ कपटेश्वर्यै नमः स्वाहा
६१३. ॐ क्षीं ॐ उग्र-चण्डेश्वर्यै नमः स्वाहा
६१४. ॐ क्षीं ॐ वीरायै नमः स्वाहा
६१५. ॐ क्षीं ॐ जनन्यै नमः स्वाहा
६१६. ॐ क्षीं ॐ वीर-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
६१७. ॐ क्षीं ॐ उग्र-तारायै नमः स्वाहा
६१८. ॐ क्षीं ॐ यशोदाख्यायै नमः स्वाहा
६१९. ॐ क्षीं ॐ देववर्यै नमः स्वाहा
६२०. ॐ क्षीं ॐ देव-मानितायै नमः स्वाहा
६२१. ॐ क्षीं ॐ निरञ्जनायै नमः स्वाहा
६२२. ॐ क्षीं ॐ चित्र-देव्यै नमः स्वाहा
६२३. ॐ क्षीं ॐ क्रोधिन्यै नमः स्वाहा
६२४. ॐ क्षीं ॐ कुल-दीपिकायै नमः स्वाहा
६२५. ॐ क्षीं ॐ कुल-वागीश्वर्यै नमः स्वाहा
६२६. ॐ क्षीं ॐ वाण्यै नमः स्वाहा
६२७. ॐ क्षीं ॐ मातृकायै नमः स्वाहा
६२८. ॐ क्षीं ॐ द्राविण्यै नमः स्वाहा
६२९. ॐ क्षीं ॐ द्रवायै नमः स्वाहा
६३०. ॐ क्षीं ॐ योगेश्वर्यै नमः स्वाहा
६३१. ॐ क्षीं ॐ महा-मायै नमः स्वाहा
६३२. ॐ क्षीं ॐ भामर्यै नमः स्वाहा

६३३. ॐ क्षौं ॐ विन्दु-रूपिण्यै नमः स्वाहा
६३४. ॐ क्षौं ॐ दूत्यै नमः स्वाहा
६३५. ॐ क्षौं ॐ प्राणोश्वर्यै नमः स्वाहा
६३६. ॐ क्षौं ॐ गुप्तायै नमः स्वाहा
६३७. ॐ क्षौं ॐ बहुलायै नमः स्वाहा
६३८. ॐ क्षौं ॐ चामरी-प्रभायै नमः स्वाहा
६३९. ॐ क्षौं ॐ कुब्जिकायै नमः स्वाहा
६४०. ॐ क्षौं ॐ ज्ञानिन्यै नमः स्वाहा
६४१. ॐ क्षौं ॐ ज्येष्ठायै नमः स्वाहा
६४२. ॐ क्षौं ॐ भुशुण्डयै नमः स्वाहा
६४३. ॐ क्षौं ॐ प्रकटा-तिथ्यै नमः स्वाहा
६४४. ॐ क्षौं ॐ द्रविण्यै नमः स्वाहा
६४५. ॐ क्षौं ॐ गोपिन्यै नमः स्वाहा
६४६. ॐ क्षौं ॐ मायायै नमः स्वाहा
६४७. ॐ क्षौं ॐ काम-बीजेश्वर्यै नमः स्वाहा
६४८. ॐ क्षौं ॐ क्रियायै नमः स्वाहा
६४९. ॐ क्षौं ॐ शाम्भव्यै नमः स्वाहा
६५०. ॐ क्षौं ॐ केकरायै नमः स्वाहा
६५१. ॐ क्षौं ॐ मेनायै नमः स्वाहा
६५२. ॐ क्षौं ॐ मूष्लास्त्रायै नमः स्वाहा
६५३. ॐ क्षौं ॐ तिलोत्तमायै नमः स्वाहा
६५४. ॐ क्षौं ॐ अमेय-विक्रमायै नमः स्वाहा

६५५. ॐ क्षौं ॐ कूरायै नमः स्वाहा
६५६. ॐ क्षौं ॐ सम्पत्-शालायै नमः स्वाहा
६५७. ॐ क्षौं ॐ त्रि-लोचनायै नमः स्वाहा
६५८. ॐ क्षौं ॐ सुस्थ्यै नमः स्वाहा
६५९. ॐ क्षौं ॐ हव्य-वहायै नमः स्वाहा
६६०. ॐ क्षौं ॐ प्रीतिरुध्मायै नमः स्वाहा
६६१. ॐ क्षौं ॐ धूप्राचिरंगदायै नमः स्वाहा
६६२. ॐ क्षौं ॐ तपिन्यै नमः स्वाहा
६६३. ॐ क्षौं ॐ तापिन्यै नमः स्वाहा
६६४. ॐ क्षौं ॐ विश्वायै नमः स्वाहा
६६५. ॐ क्षौं ॐ भोगदायै नमः स्वाहा
६६६. ॐ क्षौं ॐ धारिण्यै नमः स्वाहा
६६७. ॐ क्षौं ॐ धरायै नमः स्वाहा
६६८. ॐ क्षौं ॐ त्रिखण्डायै नमः स्वाहा
६६९. ॐ क्षौं ॐ बोधिन्यै नमः स्वाहा
६७०. ॐ क्षौं ॐ वश्यायै नमः स्वाहा
६७१. ॐ क्षौं ॐ सकलायै नमः स्वाहा
६७२. ॐ क्षौं ॐ शब्द-रूपिण्यै नमः स्वाहा
६७३. ॐ क्षौं ॐ बीज-रूपायै नमः स्वाहा
६७४. ॐ क्षौं ॐ महा-मुद्रायै नमः स्वाहा
६७५. ॐ क्षौं ॐ योगिन्यै नमः स्वाहा
६७६. ॐ क्षौं ॐ योनि-रूपिण्यै नमः स्वाहा

६७७. ॐ क्षौं ॐ अनंग-कुसुमानंग-मेखलानंग-रूपिण्यै नमः
स्वाहा

६७८. ॐ क्षौं ॐ वज्रेश्वर्यै नमः स्वाहा

६७९. ॐ क्षौं ॐ जयिन्यै नमः स्वाहा

६८०. ॐ क्षौं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकर्यै नमः स्वाहा

६८१. ॐ क्षौं ॐ षडंग-युवत्यै नमः स्वाहा

६८२. ॐ क्षौं ॐ योग-युक्तायै नमः स्वाहा

६८३. ॐ क्षौं ॐ ज्वालांशु-मालिन्यै नमः स्वाहा

६८४. ॐ क्षौं ॐ दुराशायायै नमः स्वाहा

६८५. ॐ क्षौं ॐ दुराधारायै नमः स्वाहा

६८६. ॐ क्षौं ॐ दुर्जयायै नमः स्वाहा

६८७. ॐ क्षौं ॐ दुर्ग-रूपिण्यै नमः स्वाहा

६८८. ॐ क्षौं ॐ दुरन्तायै नमः स्वाहा

६८९. ॐ क्षौं ॐ दुष्कृति-हरायै नमः स्वाहा

६९०. ॐ क्षौं ॐ दुर्ध्येयायै नमः स्वाहा

६९१. ॐ क्षौं ॐ दुरतिक्रमायै नमः स्वाहा

६९२. ॐ क्षौं ॐ हंसेश्वर्यै नमः स्वाहा

६९३. ॐ क्षौं ॐ त्रिकोणस्थायै नमः स्वाहा

६९४. ॐ क्षौं ॐ शाकम्भर्यनु-कम्पिन्यै नमः स्वाहा

६९५. ॐ क्षौं ॐ त्रिकोण-निलयायै नमः स्वाहा

६९६. ॐ क्षौं ॐ नित्यायै नमः स्वाहा

६९७. ॐ क्षौं ॐ परमामृत-रज्जितायै नमः स्वाहा

६९८. ॐ क्षौं ॐ महा-विद्योश्वर्यै नमः स्वाहा
६९९. ॐ क्षौं ॐ श्वेतायै नमः स्वाहा
७००. ॐ क्षौं ॐ भेरुण्डायै नमः स्वाहा
७०१. ॐ क्षौं ॐ कुल-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
७०२. ॐ क्षौं ॐ त्वरितायै नमः स्वाहा
७०३. ॐ क्षौं ॐ भवत्-संसक्तायै नमः स्वाहा
७०४. ॐ क्षौं ॐ भवित्-वश्यायै नमः स्वाहा
७०५. ॐ क्षौं ॐ सनातन्यै नमः स्वाहा
७०६. ॐ क्षौं ॐ भवतानन्द-मर्यै नमः स्वाहा
७०७. ॐ क्षौं ॐ भवित्-भाविकायै नमः स्वाहा
७०८. ॐ क्षौं ॐ भवत्-शंकर्यै नमः स्वाहा
७०९. ॐ क्षौं ॐ सर्व-सौन्दर्य-निलयायै नमः स्वाहा
७१०. ॐ क्षौं ॐ सर्व-सौभाग्य-शालिन्यै नमः स्वाहा
७११. ॐ क्षौं ॐ सर्व-सौभाग्य-भवनायै नमः स्वाहा
७१२. ॐ क्षौं ॐ सर्व-सौख्य-निरूपिण्यै नमः स्वाहा
७१३. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-पूजन-रतायै नमः स्वाहा
७१४. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-ब्रत-चारिण्यै नमः स्वाहा
७१५. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-भवित्-सुखिन्यै नमः स्वाहा
७१६. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा
७१७. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-पूजक-प्रीतायै नमः स्वाहा
७१८. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-प्रीतिदा-प्रियायै नमः स्वाहा
७१९. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-सेवका-संगायै नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम च अर्चन साधना (97)

७२०. ॐ क्षौं ॐ कुमारी-सेवकालयै नमः स्वाहा
७२१. ॐ क्षौं ॐ आनन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७२२. ॐ क्षौं ॐ बालायै नमः स्वाहा
७२३. ॐ क्षौं ॐ भैरव्यै नमः स्वाहा
७२४. ॐ क्षौं ॐ बटुक-भैरव्यै नमः स्वाहा
७२५. ॐ क्षौं ॐ शमशान-भैरव्यै नमः स्वाहा
७२६. ॐ क्षौं ॐ काल-भैरव्यै नमः स्वाहा
७२७. ॐ क्षौं ॐ पुर-भैरव्यै नमः स्वाहा
७२८. ॐ क्षौं ॐ महा-भैरव-पत्न्यै नमः स्वाहा
७२९. ॐ क्षौं ॐ परमानन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३०. ॐ क्षौं ॐ सुधानन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३१. ॐ क्षौं ॐ उन्मादानन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३२. ॐ क्षौं ॐ मुक्तानन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३३. ॐ क्षौं ॐ तरुण-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३४. ॐ क्षौं ॐ ज्ञानानन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३५. ॐ क्षौं ॐ अमृतानन्द-भैरव्यै नमः स्वाहा
७३६. ॐ क्षौं ॐ महा-भयंकर्यै नमः स्वाहा
७३७. ॐ क्षौं ॐ तीव्रायै नमः स्वाहा
७३८. ॐ क्षौं ॐ तीव्र-वेगायै नमः स्वाहा
७३९. ॐ क्षौं ॐ तपस्विन्यै नमः स्वाहा
७४०. ॐ क्षौं ॐ त्रिपुरायै नमः स्वाहा
७४१. ॐ क्षौं ॐ परमेशान्यै नमः स्वाहा

७४२. ॐ क्षौं ॐ सुन्दर्यै नमः स्वाहा
७४३. ॐ क्षौं ॐ पुर-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
७४४. ॐ क्षौं ॐ त्रिपुरेश्यै नमः स्वाहा
७४५. ॐ क्षौं ॐ पञ्च-वश्यै नमः स्वाहा
७४६. ॐ क्षौं ॐ पञ्चम्यै नमः स्वाहा
७४७. ॐ क्षौं ॐ पुर-वासिन्यै नमः स्वाहा
७४८. ॐ क्षौं ॐ महा-सप्त-वश्यै नमः स्वाहा
७४९. ॐ क्षौं ॐ षोडश्यै नमः स्वाहा
७५०. ॐ क्षौं ॐ त्रिपुरेश्वर्यै नमः स्वाहा
७५१. ॐ क्षौं ॐ महांकुश-स्वरूपायै नमः स्वाहा
७५२. ॐ क्षौं ॐ महा-चक्रेश्वर्यै नमः स्वाहा
७५३. ॐ क्षौं ॐ नव-चक्रेश्वर्यै नमः स्वाहा
७५४. ॐ क्षौं ॐ चक्रेश्वर्यै नमः स्वाहा
७५५. ॐ क्षौं ॐ त्रिपुर-मालिन्यै नमः स्वाहा
७५६. ॐ क्षौं ॐ राज-राजेश्वर्यै नमः स्वाहा
७५७. ॐ क्षौं ॐ धीरायै नमः स्वाहा
७५८. ॐ क्षौं ॐ महा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
७५९. ॐ क्षौं ॐ सिन्दूर-पूर-रुचिरायै नमः स्वाहा
७६०. ॐ क्षौं ॐ श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
७६१. ॐ क्षौं ॐ सर्वाग-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
७६२. ॐ क्षौं ॐ रक्तायै नमः स्वाहा
७६३. ॐ क्षौं ॐ रक्त-वस्त्रोत्तरीयिण्यै नमः स्वाहा

७६४. ॐ क्षीं ॐ जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त-चन्दन-
धारिण्यै नमः स्वाहा
७६५. ॐ क्षीं ॐ जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त-चन्दन-
रूप-धृक्यै नमः स्वाहा
७६६. ॐ क्षीं ॐ चामरी-बाल-कुटिल-निर्मल-श्याम-
केशिण्यै नमः स्वाहा
७६७. ॐ क्षीं ॐ वज्ञ-मौकितक-रत्नाढ्य-किरीट-
मुकुटोज्ज्वलायै नमः स्वाहा
७६८. ॐ क्षीं ॐ रत्न-कुण्डल-संसक्त-स्फुरद्-गण्ड-
मनोरमायै नमः स्वाहा
७६९. ॐ क्षीं ॐ कुञ्जरेश्वर-कुम्भोत्थ-मुक्ता-रञ्जित-
नासिकायै नमः स्वाहा
७७०. ॐ क्षीं ॐ मुक्ता-विदुम्-माणिक्य-हाराढ्य-
स्तन-मण्डलायै नमः स्वाहा
७७१. ॐ क्षीं ॐ सूर्य-कान्तेन्दु-कान्ताढ्य-स्पर्शाश्म-
कण्ठ-भूषणायै नमः स्वाहा
७७२. ॐ क्षीं ॐ वीज-पूर-स्फुरद्-वीज-दन्त-पंकित-
रनुज्ञमायै नमः स्वाहा
७७३. ॐ क्षीं ॐ काम-कोदण्डका-भुग्न-भू-कटाक्ष-
प्रवणिण्यै नमः स्वाहा
७७४. ॐ क्षीं ॐ मातंग-कुम्भ-वक्षोजा-लसत्-कोक-
नदेश्वणायै नमः स्वाहा
७७५. ॐ क्षीं ॐ मनोज्ञ-शाष्कुली-कर्णायै नमः स्वाहा

७७६. ॐ क्षौं ॐ हंसी-गति-विडम्बिन्यै नमः स्वाहा
७७७. ॐ क्षौं ॐ पद्म-रागांगद-ज्योतिर्दोशचतुष्क- प्रकाशिन्यै
नमः स्वाहा
७७८. ॐ क्षौं ॐ नाना-मणि-परिस्फूर्जच्छुद्ध-काञ्चन-
कंकणायै नमः स्वाहा
७७९. ॐ क्षौं ॐ नागेन्द्र-दन्त-निर्माण-वलयाकित- पाणिन्यै
नमः स्वाहा
७८०. ॐ क्षौं ॐ अंगुरीयक-चित्रांगद्यै नमः स्वाहा
७८१. ॐ क्षौं ॐ विचित्र-क्षुद्र-घण्टकायै नमः स्वाहा
७८२. ॐ क्षौं ॐ पट्टाम्बर-परीधानायै नमः स्वाहा
७८३. ॐ क्षौं ॐ कल-मञ्जीर-शिङ्जिन्यै नमः स्वाहा
७८४. ॐ क्षौं ॐ कर्पूरागरु-कस्तूरी-कुंकुम-द्रव- लेपितायै
नमः स्वाहा
७८५. ॐ क्षौं ॐ विचित्र-रत्न-पृथिवी-कल्प-शाखि-
तल-स्थितायै नमः स्वाहा
७८६. ॐ क्षौं ॐ रत्न-द्वीप-स्फुरद्-रक्त-सिंहासन-
विलासिन्यै नमः स्वाहा
७८७. ॐ क्षौं ॐ षट्-चक्र-भेदन-कर्यै नमः स्वाहा
७८८. ॐ क्षौं ॐ परमानन्द-रूपिण्यै नमः स्वाहा
७८९. ॐ क्षौं ॐ सहस्र-दल-पद्मानतश्चन्द्र-मण्डल- वर्त्तिन्यै
नमः स्वाहा
७९०. ॐ क्षौं ॐ ब्रह्म-रूप-शिव-क्रोड-नाना-सुख-
विलासिन्यै नमः स्वाहा

७९१. ॐ क्षौं ॐ हर-विष्णु-विरिज्जीन्द्र-ग्रह-नायक-
सेवितायै नमः स्वाहा
७९२. ॐ क्षौं ॐ शिवायै नमः स्वाहा
७९३. ॐ क्षौं ॐ शैवायै नमः स्वाहा
७९४. ॐ क्षौं ॐ रुद्राण्यै नमः स्वाहा
७९५. ॐ क्षौं ॐ शिव-वादिन्यै नमः स्वाहा
७९६. ॐ क्षौं ॐ मातंगिन्यै नमः स्वाहा
७९७. ॐ क्षौं ॐ श्रीमत्यै नमः स्वाहा
७९८. ॐ क्षौं ॐ आनन्द-मेखलायै नमः स्वाहा
७९९. ॐ क्षौं ॐ डाकिन्यै नमः स्वाहा
८००. ॐ क्षौं ॐ योगिन्यै नमः स्वाहा
८०१. ॐ क्षौं ॐ उपयोगिन्यै नमः स्वाहा
८०२. ॐ क्षौं ॐ माहेश्वर्यै नमः स्वाहा
८०३. ॐ क्षौं ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा
८०४. ॐ क्षौं ॐ भ्रामर्यै नमः स्वाहा
८०५. ॐ क्षौं ॐ शिव-रूपिण्यै नमः स्वाहा
८०६. ॐ क्षौं ॐ अलम्बुषायै नमः स्वाहा
८०७. ॐ क्षौं ॐ वेग-वत्यै नमः स्वाहा
८०८. ॐ क्षौं ॐ क्रोध-रूपायै नमः स्वाहा
८०९. ॐ क्षौं ॐ सु-मेखलायै नमः स्वाहा
८१०. ॐ क्षौं ॐ गान्धार्यै नमः स्वाहा
८११. ॐ क्षौं ॐ हस्ति-जिह्वायै नमः स्वाहा

८१२. ॐ क्षौं ॐ इडायै नमः स्वाहा
८१३. ॐ क्षौं ॐ शुभंकर्यै नमः स्वाहा
८१४. ॐ क्षौं ॐ पिंगलायै नमः स्वाहा
८१५. ॐ क्षौं ॐ ब्रह्म-सूत्रै नमः स्वाहा
८१६. ॐ क्षौं ॐ सुषुप्त्यायै नमः स्वाहा
८१७. ॐ क्षौं ॐ गथिन्यै नमः स्वाहा
८१८. ॐ क्षौं ॐ आत्म-योन्यै नमः स्वाहा
८१९. ॐ क्षौं ॐ ब्रह्म-योन्यै नमः स्वाहा
८२०. ॐ क्षौं ॐ जगद्-योन्यै नमः स्वाहा
८२१. ॐ क्षौं ॐ अयोनिजायै नमः स्वाहा
८२२. ॐ क्षौं ॐ भग-रूपायै नमः स्वाहा
८२३. ॐ क्षौं ॐ भग-स्थात्रै नमः स्वाहा
८२४. ॐ क्षौं ॐ भगिन्यै नमः स्वाहा
८२५. ॐ क्षौं ॐ भग-रूपिण्यै नमः स्वाहा
८२६. ॐ क्षौं ॐ भगात्मिकायै नमः स्वाहा
८२७. ॐ क्षौं ॐ भगाधार-रूपिण्यै नमः स्वाहा
८२८. ॐ क्षौं ॐ भग-मालिन्यै नमः स्वाहा
८२९. ॐ क्षौं ॐ लिंगाख्यायै नमः स्वाहा
८३०. ॐ क्षौं ॐ लिंगेश्यै नमः स्वाहा
८३१. ॐ क्षौं ॐ त्रिपुरा-भैरव्यै नमः स्वाहा
८३२. ॐ क्षौं ॐ लिंग-गीत्यै नमः स्वाहा
८३३. ॐ क्षौं ॐ सुगीत्यै नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना (103)

८३४. ॐ क्षौं ॐ लिंगस्थायै नमः स्वाहा
८३५. ॐ क्षौं ॐ लिंग-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा
८३६. ॐ क्षौं ॐ लिंग-मानायै नमः स्वाहा
८३७. ॐ क्षौं ॐ लिंग-भवायै नमः स्वाहा
८३८. ॐ क्षौं ॐ लिंगालिंगायै नमः स्वाहा
८३९. ॐ क्षौं ॐ पार्वत्यै नमः स्वाहा
८४०. ॐ क्षौं ॐ भगवत्यै नमः स्वाहा
८४१. ॐ क्षौं ॐ कौशिक्यै नमः स्वाहा
८४२. ॐ क्षौं ॐ प्रेमायै नमः स्वाहा
८४३. ॐ क्षौं ॐ प्रियम्बदायै नमः स्वाहा
८४४. ॐ क्षौं ॐ गृथ-रूपायै नमः स्वाहा
८४५. ॐ क्षौं ॐ शिवा-रूपायै नमः स्वाहा
८४६. ॐ क्षौं ॐ चक्रिण्यै नमः स्वाहा
८४७. ॐ क्षौं ॐ चक्र-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा
८४८. ॐ क्षौं ॐ लिंगाभिधायिन्यै नमः स्वाहा
८४९. ॐ क्षौं ॐ लिंग-प्रियायै नमः स्वाहा
८५०. ॐ क्षौं ॐ लिंग-निवासिन्यै नमः स्वाहा
८५१. ॐ क्षौं ॐ लिंगस्थायै नमः स्वाहा
८५२. ॐ क्षौं ॐ लिंगन्यै नमः स्वाहा
८५३. ॐ क्षौं ॐ लिंग-रूपिण्यै नमः स्वाहा
८५४. ॐ क्षौं ॐ लिंग-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
८५५. ॐ क्षौं ॐ लिंग-गीतिर्महा-प्रीतायै नमः स्वाहा

८५६. ॐ क्षौं ॐ भग-गीतिर्महा-सुखायै नमः स्वाहा
८५७. ॐ क्षौं ॐ लिंग-नाम-सदानन्दायै नमः स्वाहा
८५८. ॐ क्षौं ॐ भग-नाम-सदा-रत्यै नमः स्वाहा
८५९. ॐ क्षौं ॐ लिंग-माला-कण्ठ-भूषायै नमः स्वाहा
८६०. ॐ क्षौं ॐ भग-माला-विभूषणायै नमः स्वाहा
८६१. ॐ क्षौं ॐ भग-लिंगामृत-प्रीतायै नमः स्वाहा
८६२. ॐ क्षौं ॐ भग-लिंगामृतात्मिकायै नमः स्वाहा
८६३. ॐ क्षौं ॐ भग-लिंगार्चन-प्रीतायै नमः स्वाहा
८६४. ॐ क्षौं ॐ भग-लिंग-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा
८६५. ॐ क्षौं ॐ भग-लिंग-स्वरूपायै नमः स्वाहा
८६६. ॐ क्षौं ॐ भग-लिंग-सुखावहायै नमः स्वाहा
८६७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-प्रीतायै नमः स्वाहा
८६८. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमार्चितायै नमः स्वाहा
८६९. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-प्राणायै नमः स्वाहा
८७०. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमोत्थितायै नमः स्वाहा
८७१. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-स्नातायै नमः स्वाहा
८७२. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-तर्पितायै नमः स्वाहा
८७३. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-घटितायै नमः स्वाहा
८७४. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-धारिण्यै नमः स्वाहा
८७५. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-तिलकायै नमः स्वाहा
८७६. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-चर्चितायै नमः स्वाहा

८७५. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-निरतायै नमः स्वाहा
८७६. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-ग्रहायै नमः स्वाहा
८७७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-यज्ञांगायै नमः स्वाहा
८७८. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमात्मिकायै नमः स्वाहा
८७९. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-निचितायै नमः स्वाहा
८८०. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमादान-लालसोमत्त- मानसायै नमः स्वाहा
८८१. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-प्रियायै नमः स्वाहा
८८२. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमादान-लालसोमत्त- मानसायै नमः स्वाहा
८८३. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमानन्द-लहरी-स्निग- देहिन्यै नमः स्वाहा
८८४. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमाधारायै नमः स्वाहा
८८५. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमा-कलायै नमः स्वाहा
८८६. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-निलयायै नमः स्वाहा
८८७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-वासिन्यै नमः स्वाहा
८८८. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-स्निगधायै नमः स्वाहा
८८९. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमात्मिकायै नमः स्वाहा
८९०. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-कारिण्यै नमः स्वाहा
८९१. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-पाणिकायै नमः स्वाहा
८९२. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-ध्यानायै नमः स्वाहा
८९३. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-प्रभायै नमः स्वाहा
८९४. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-ज्ञानायै नमः स्वाहा
८९५. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्ट-भोगिन्यै नमः स्वाहा

८९७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमोल्लासायै नमः स्वाहा
८९८. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्प-वर्षिण्यै नमः स्वाहा
८९९. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमोत्सायै नमः स्वाहा
९००. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्प-रूपिण्यै नमः स्वाहा
९०१. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमोन्मादायै नमः स्वाहा
९०२. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्प-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
९०३. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमाराध्यायै नमः स्वाहा
९०४. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुमोद्भवायै नमः स्वाहा
९०५. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-कुसुम-व्यग्रायै नमः स्वाहा
९०६. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पुष्प-पूर्णितायै नमः स्वाहा
९०७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पूजक-प्रज्ञायै नमः स्वाहा
९०८. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-होत्-मातृकायै नमः स्वाहा
९०९. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-दातृ-रक्षित्र्यै नमः स्वाहा
९१०. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-रक्त-तारिकायै नमः स्वाहा
९११. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पूजक-ग्रस्तायै नमः स्वाहा
९१२. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-पूजक-प्रियायै नमः स्वाहा
९१३. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-वन्दकाधारायै नमः स्वाहा
९१४. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-निन्दकान्तकायै नमः स्वाहा
९१५. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-प्रद-सर्वस्वायै नमः स्वाहा
९१६. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-प्रद-पुत्रिण्यै नमः स्वाहा
९१७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-प्रद-सप्तरेयै नमः स्वाहा
९१८. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भू-प्रद-शरीरिण्यै नमः स्वाहा

११९. ॐ क्षौं ॐ सर्व-कालोद्भव-प्रीतायै नमः स्वाहा
१२०. ॐ क्षौं ॐ सर्व-कालोद्भवात्मिकायै नमः स्वाहा
१२१. ॐ क्षौं ॐ सर्व-कालोद्भवोद्भावायै नमः स्वाहा
१२२. ॐ क्षौं ॐ सर्व-कालोद्भवोद्भवायै नमः स्वाहा
१२३. ॐ क्षौं ॐ कुण्ड-पुष्प-सदा-प्रीत्यै नमः स्वाहा
१२४. ॐ क्षौं ॐ गोल-पुष्प-सदा-रत्यै नमः स्वाहा
१२५. ॐ क्षौं ॐ कुण्ड-गोलोद्भव-प्राणायै नमः स्वाहा
१२६. ॐ क्षौं ॐ कुण्ड-गोलोद्भवात्मिकायै नमः स्वाहा
१२७. ॐ क्षौं ॐ स्वयम्भुवायै नमः स्वाहा
१२८. ॐ क्षौं ॐ शिवायै नमः स्वाहा
१२९. ॐ क्षौं ॐ धात्र्यै नमः स्वाहा
१३०. ॐ क्षौं ॐ पावन्यै नमः स्वाहा
१३१. ॐ क्षौं ॐ लोक-पावन्यै नमः स्वाहा
१३२. ॐ क्षौं ॐ कीर्त्यै नमः स्वाहा
१३३. ॐ क्षौं ॐ यशस्विन्यै नमः स्वाहा
१३४. ॐ क्षौं ॐ मेधायै नमः स्वाहा
१३५. ॐ क्षौं ॐ विमेधायै नमः स्वाहा
१३६. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
१३७. ॐ क्षौं ॐ अश्विनी-कृत्तिका-पुष्पा-तैजस्कायै नमः स्वाहा
१३८. ॐ क्षौं ॐ चन्द्र-मण्डलायै नमः स्वाहा
१३९. ॐ क्षौं ॐ सूक्ष्मायै नमः स्वाहा

१४०. ॐ क्षीं ॐ असूक्ष्मायै नमः स्वाहा
१४१. ॐ क्षीं ॐ बलाकायै नमः स्वाहा
१४२. ॐ क्षीं ॐ वरदायै नमः स्वाहा
१४३. ॐ क्षीं ॐ भय-नाशिन्यै नमः स्वाहा
१४४. ॐ क्षीं ॐ वरदाऽभयदायै नमः स्वाहा
१४५. ॐ क्षीं ॐ मुक्ति-बन्ध-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
१४६. ॐ क्षीं ॐ कामुकायै नमः स्वाहा
१४७. ॐ क्षीं ॐ कामदायै नमः स्वाहा
१४८. ॐ क्षीं ॐ कान्तायै नमः स्वाहा
१४९. ॐ क्षीं ॐ कामाख्यायै नमः स्वाहा
१५०. ॐ क्षीं ॐ कुल-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
१५१. ॐ क्षीं ॐ दुःखदायै नमः स्वाहा
१५२. ॐ क्षीं ॐ सुखदायै नमः स्वाहा
१५३. ॐ क्षीं ॐ मोक्षायै नमः स्वाहा
१५४. ॐ क्षीं ॐ मोक्षदार्थ-प्रकाशिन्यै नमः स्वाहा
१५५. ॐ क्षीं ॐ दुष्टायै नमः स्वाहा
१५६. ॐ क्षीं ॐ दुष्ट-मत्यै नमः स्वाहा
१५७. ॐ क्षीं ॐ सर्व-कार्य-विनाशिन्यै नमः स्वाहा
१५८. ॐ क्षीं ॐ शुक्राधारायै नमः स्वाहा
१५९. ॐ क्षीं ॐ शुक्र-रूपायै नमः स्वाहा
१६०. ॐ क्षीं ॐ शुक्र-सिन्धु-निवासिन्यै नमः स्वाहा
१६१. ॐ क्षीं ॐ शुक्रालयायै नमः स्वाहा

श्री कामाख्या-मन्त्र युक्त श्री कालिका-सहस्रनाम-होम व अर्चन साधना (109)

१६२. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-भोगायै नमः स्वाहा
१६३. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-पूजा-सदा-रत्यै नमः स्वाहा
१६४. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-पूज्यायै नमः स्वाहा
१६५. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-होम-सन्तुष्टायै नमः स्वाहा
१६६. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-वत्सलायै नमः स्वाहा
१६७. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-मूर्त्यै नमः स्वाहा
१६८. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-देहायै नमः स्वाहा
१६९. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-पूजक-पुत्रिण्यै नमः स्वाहा
१७०. ॐ क्षौं ॐ शुक्रस्थायै नमः स्वाहा
१७१. ॐ क्षौं ॐ शुक्रिण्यै नमः स्वाहा
१७२. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-संस्पृहायै नमः स्वाहा
१७३. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-सुन्दर्यै नमः स्वाहा
१७४. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-स्नातायै नमः स्वाहा
१७५. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-कर्यै नमः स्वाहा
१७६. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-सेव्यायै नमः स्वाहा
१७७. ॐ क्षौं ॐ अति-शुक्रिण्यै नमः स्वाहा
१७८. ॐ क्षौं ॐ महा-शुक्रायै नमः स्वाहा
१७९. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-भवायै नमः स्वाहा
१८०. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-दृष्टि-विधायिन्यै नमः स्वाहा
१८१. ॐ क्षौं ॐ शुक्राभिधेयायै नमः स्वाहा
१८२. ॐ क्षौं ॐ शुक्राहार्यै नमः स्वाहा
१८३. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-वन्दक-वन्दितायै नमः स्वाहा

१८४. ॐ क्षौं ॐ शुक्रानन्द-कर्यै नमः स्वाहा
१८५. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-सदानन्दाभिधायिकायै नमः स्वाहा
१८६. ॐ क्षौं ॐ शुक्रोत्सवायै नमः स्वाहा
१८७. ॐ क्षौं ॐ सदा-शुक्र-पूर्णायै नमः स्वाहा
१८८. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-मनोरमायै नमः स्वाहा
१८९. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-पूजक-सर्वस्वायै नमः
स्वाहा
१९०. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-निन्दक-नाशिन्यै नमः
स्वाहा
१९१. ॐ क्षौं ॐ शुक्रात्मिकायै नमः स्वाहा
१९२. ॐ क्षौं ॐ शुक्र-सम्पत्यै नमः स्वाहा
१९३. ॐ क्षौं ॐ शुक्राकर्षण-कारिण्यै नमः
स्वाहा
१९४. ॐ क्षौं ॐ शारदायै नमः स्वाहा
१९५. ॐ क्षौं ॐ साधक-प्राणायै नमः स्वाहा
१९६. ॐ क्षौं ॐ साधकासक्त-मानसायै नमः स्वाहा
१९७. ॐ क्षौं ॐ साधकोत्तम-सर्वस्वायै नमः स्वाहा
१९८. ॐ क्षौं ॐ साधकाभक्त-रक्तपायै नमः स्वाहा
१९९. ॐ क्षौं ॐ साधकानन्द-सन्तोषायै नमः स्वाहा
२०००. ॐ क्षौं ॐ साधकानन्द-कारिण्यै नमः स्वाहा
२००१. ॐ क्षौं ॐ आत्म-विद्यायै नमः स्वाहा
२००२. ॐ क्षौं ॐ ब्रह्म-विद्यायै नमः स्वाहा
२००३. ॐ क्षौं ॐ पर-ब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा

१००४. ॐ क्षीं ॐ त्रिकूटस्थायै नमः स्वाहा
 १००५. ॐ क्षीं ॐ पञ्च-कूटायै नमः स्वाहा
 १००६. ॐ क्षीं ॐ सर्व-कूट-शरीरिण्यै नमः स्वाहा
 १००७. ॐ क्षीं ॐ सर्व-वर्ण-मय्यै नमः स्वाहा
 १००८. ॐ क्षीं ॐ वर्ण-जप-माला-विद्यायिन्यै नमः
 स्वाहा

पूर्णाहुति एवं विसर्जन

उक्त नामावली द्वारा 1008 आहुतियां देने के बाद 'क्रीं बौधट्' से पूर्णाहुति— ताम्बूल, सुपाड़ी, अक्षत और घृत से दें। तब 'श्री कामाख्ये! पूजिताऽसि प्रसीद क्षमस्व' कहकर अग्नि में जल डालकर संहार मुद्रा से तेजो-रूप देवता को अपने में वापस ले जायें। फिर अग्नि का विसर्जन इस मन्त्र से करें— 'ॐ भो भो वह्नि-महा-शक्ते! सर्व-कर्म-प्रसाधक! कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सानिध्यं कुरु सादरम्॥ ॐ अग्ने! पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व।' फिर भस्म से तिलक मूल-मन्त्र अथवा कामाख्यै नमः कहकर लगायें।

५

अध्याय 7

कामाख्या चालीसा व आरती

दोहा

सुमिरन कामाख्या करूँ, सकल सिद्धि की खानि ।
 होइ प्रसन्न सत करहु माँ, जो मैं कहौं बखानि ॥
 जै जै कामाख्या महारानी।
 दात्री सब सुख सिद्धि भवानी॥
 कामरूप है वास तुम्हारो।
 जहाँ ते मन नहिं टरत है टारो॥
 ऊँचे गिरि पर करहूँ निवासा।
 पुरवहु सदा भगत मन आसा॥
 ऋद्धि सिद्धि तुरतै मिलि जाई।
 जो जन ध्यान धरै मनलाई॥
 जो देवी का दर्शन चाहे।
 हृदय बीच याही अवगाहे॥

प्रेम सहित पंडित बुलवावे।
शुभ मुहूर्त निश्चय विचरावे॥
अपने गुरु से आज्ञा लेकर।
यात्रा विधान करे निश्चय धर॥
पूजन गौरि गणेश करावे।
नान्दीमुख भी श्राद्ध जिमावे॥
शुक्र को बाँयें व पाढे कर।
गुरु अरु शुक्र उचित रहने पर॥
जब सब ग्रह होवें अनुकूला।
गुरु पितु मातु आदि सब हूला॥
नौ द्वाह्यण बुलवाय जिमावे।
आशीर्वाद जब उनसे पावे॥
सबहिं प्रकार शकुन शुभ होई।
यात्रा तबहिं करे सुख होई॥
जो चह सिद्धि करन कछु भाई।
मन्त्र लेइ देवी कहैं जाई॥
आदर पूर्वक गुरु बुलावे।
मन्त्र लेन हित दिन ठहरावे॥
शुभ मुहूर्त में दीक्षा लेवे।
प्रसन्न होई दक्षिणा देवै॥
ॐ कार नमः करे उच्चारण।
मातृका न्यास करे सिर धारण॥

षडंग न्यास करे सो भाई।
 माँ कामाक्षा धर उर लाई॥
 देवी मन्त्र करे मन सुमिरन।
 सन्मुख मुद्रा करे प्रदर्शन॥
 जिससे होई प्रसन्न भवानी।
 मन चाहत वर देवे आनी॥
 जबहिं भगत दीक्षित होइ जाई।
 दान देय ऋत्विज कहै जाई॥
 विप्रबंधु भोजन करवावे।
 विप्र नारि कन्या जिमवावे॥
 दीन अनाथ दरिद्र बुलावे।
 धन की कृपणता नहीं दिखावे॥
 एहि विधि समझ कृतारथ होवे।
 गुरु मंत्र नित जप कर सोवे॥
 देवी चरण का बने पुजारी।
 एहि ते धरम न है कोई भारी॥
 सकल ऋद्धि-सिद्धि मिल जावे।
 जो देवी का ध्यान लगावे॥
 तू ही दुर्गा तू ही काली।
 माँग में सोहे मातु के लाली॥
 वाक् सरस्वती विद्या गौरी।
 मातु के सोहैं सिर पर मौरी॥

कामाख्या चालीसा व आरती (115)

क्षुधा, दुरत्यया, निद्रा तृष्णा।
तन का रंग है मातु का कृष्णा॥
कामधेनु सुभगा और सुन्दरी।
मातु अँगुलिया में है मुंदरी॥
कालिरात्रि वेदगर्भा धीश्वरि।
कंठमाल माता ने ले धरि॥
तृष्णा सती एक वीरा अक्षरा।
देह तजी जनु रही नश्वरा॥
स्वरा महा श्री चण्डी।
मातु न जाना जो रहे पाखंडी॥
महामारी भारती आर्या।
शिवजी की ओ रहीं भार्या॥
पद्मा, कमला, लक्ष्मी, शिवा।
तेज मातु तन जैसे दिवा॥
उमा, जयी, द्वाही भाषा।
पुरवहिं भगतन की अभिलाषा॥
रजस्वला जब रूप दिखावे।
देवता सकल पर्वतहिं जावें॥
रूप गौरि धरि करहि निवासा।
जब लग होइ न तेज प्रकाशा॥
एहि ते सिद्ध पीठ कहलाइ।
जउन चहै जन सो होइ जाइ॥

जो जन यह चालीसा गावे।
सब सुख भोग देवि पद पावे॥
होहिं प्रसन्न महेश भवानी।
कृपा करहु निज-जन अस बानी॥

दोहा

कहें गोपाल सुमिर मन, कामाख्या सुख खानि ।
जग हित माँ प्रगटत भई, सके न कोऊ खानि ॥

५५

॥ कामाक्षायाष्टक ॥

एक समय यज्ञ दक्ष कियो तब न्योत सबै जग के सुर
डारो।

ब्रह्म सभा बिच माख लग्य तेहि कारण शंकर को तजि
डारो।

रोके रुके नहिं दक्ष सुता, बुझाय बहु विधि शंकर
हारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥१॥
संग सती गण भेज दिये, त्रिपुरारि हिये मँह नेक विचारो।
राखे नहीं संग नीक अहैं जो रुके तो कहैं नहिं तन तजि
डारो।

जाय रुकी जब तात गृहे तब काहु न आदर बैन उचारो।
नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥२॥

मातु से आदर पाय मिली भगिनी सब व्यंग मुस्काय
उचारो।

तात न पूछ्यो बात कछू यह भेद सती ने नहीं विचारो।

जाय के यज्ञ में भाग लख्यो पर शंकर भाग कतहुँ
न निहारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥३॥

तनक्रोध बढ़यो मनबोध गयो, अपमान भले सहि जाय
हजारो।

जाति निरादर होई जहाँ तहाँ जीवन धारन को
धिक्कारो।

देह हमार है दक्ष के अंश से जीवन ताकि सो मैं तजि
डारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट
निवारो॥४॥

अस कहि लाग समाधि लगाय के बैठि भई निश्चय उर
धारो।

प्रान अपान को नाभि मिलय उदानहिं वायु कपाल
निकारो।

जोग की आग लगी अब ही जरि छार भयो छन में तन
सारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥५॥

हाहाकार सुन्यो गण शंभु तो जग विघ्वंस सबै करि
डारो।

जग्य विध्वंसि देखि मुनि भृगु मन्त्र रक्षक से सब यज्ञ
सम्हारो।

वीरभद्र करि कोप गये और दक्ष को दंड कठिन दै
डारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥६॥

दुखकारन सतीशव कांधे पे डार के विचरत है शिवजगत
मंडारो।

काज रुक्यो तब देव गये और श्रीपति के ढिंग जाय
पुकारो।

विष्णु ने काटि किये शव खांड गिर्यो जो जहाँ तहूँ
सिद्धि बिठारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥७॥

योनि गिर्यो कामाख्या थल सों, बन्यो अतिसिद्धि न
जाय संभारो।

वास करें सुर तीन दिना जब मासिक धर्म में देवि
निहारो।

कहत गोपाल सो सिद्धि है पीठ जो माँगत है मिल जात
सो सारो।

नाम तेरो बड़ है जग में करुणा करके मम कष्ट निवारो॥८॥

दोहा

लाल होई खल तीन दिन, जब देवि रजस्वला होय।

मज्जन कर नर भव तरहिं, जो ब्रह्म हत्यारा होय॥९॥

कामाख्या तीरथ सलिल, अहै सुधा सम जान।
 कह गोपाल सेवन करै, खान, पान, स्नान॥२॥
 भक्ति सहित पढ़िहै सदा, जो अष्टक को मूल।
 तिनकी धोर विपत्ति हित, शरण तुम्हारि त्रिशूल॥३॥
 कामाख्या जगदम्बिके, रक्षहु सब परिवार।
 भक्त 'योगेश्वर' पर कृपा करि, देहु सबहिं सुख डार॥४॥

॥ कामाक्षा माँ की आरती ॥

आरती कामाक्षा देवी की।
 जगत् उधारक सुर सेवी की॥ आरती
 गावत वेद पुरान कहानी।
 योनिरूप तुम हो महारानी॥
 सुर ब्रह्मादिक आदि बखानी।
 लहे दरस सब सुख लेवी की॥ आरती
 दक्ष सुता जगदम्ब भवानी।
 सदा शंभु अर्धंग विराजिनी।
 सकल जगत् को तारन करनी।
 जै हो मातु सिद्धि देवी की॥ आरती
 तीन नयन कर डमरू विराजे।
 टीको गोरोचन को साजे।
 तीनों लोक रूप से लाजे।
 जै हो मातु! लोक सेवी की॥ आरती

रक्त पुष्य कंठन वनमाला।
 केहरि बाहन खंग विशाला।
 मातु करे भक्तन प्रतिमाला।
 सकल असुर जीवन लेवी की॥ आरती
 कहैं गोपाल मातु बलिहारी।
 जाने नहिं महिमा त्रिपुरारी।
 सब सत होय जो कहो विचारी।
 जै जै सबहिं करत देवी की॥ आरती

प्रदक्षिणा—

नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
 नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्त वत्सले॥

दण्डवत् प्रणाम्—

नमः सर्वाहितार्थायै जगदाधार हेतवे।
 साष्टांगोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः॥

वर-याचना—

पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मंगले।
 अन्यांश्च सर्व कामांश्च देहि देवि नमोऽतुते॥

क्षमा प्रार्थना—

ॐ विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदिच्छित्।
 पूर्ण भवतु तत्सर्व त्वत्प्रसादात् महेश्वरीम्॥

देवी विसर्जन-

गच्छ देवि महामाया कल्याणं कुरु सर्वदा।
यथाशक्ति कृता पूजा भक्त्या कमललोचने॥
गच्छन्तु देवताः सर्वे दत्त्वा में वरभीप्सितम्।
त्वम् गच्छ परमेशानि सुख सर्वत्र गणैः सह॥

शान्ति मन्त्र— विसर्जन करने के उपरान्त पूजित देवों को दाहिने हाथ से स्पर्श करके थोड़ा खिसका दें, फिर निम्नाकृत शान्ति मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं श्व शान्तिः पृथिवि शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्ति सर्वं श्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!! सर्वारिष्टा सुशान्तिर्भवतु!!

इसके उपरान्त भगवती को अपने हृदय-कमल में स्थापित होने हेतु प्रार्थना करें और निम्नलिखित प्रार्थना करें—

प्रार्थना—

आयुर्देहि यशोदेहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रम् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

इसके बाद—

अनया पूजया महामाया श्री कामाक्षा प्रियतां न मम। माँ
कामाक्षा! मेरे द्वारा की गयी पूजा को स्वीकार करते हुए मुझ
पर प्रसन्न हों।

५

अध्याय ८

कुमारी-पूजन

कुमारी-पूजन का महत्व

जिस प्रकार प्रयाग में मुण्डन तथा काशी में दण्डी-भोजन कराने का विधान है, उसी प्रकार कामाख्या धाम में कुमारी-पूजन एक आवश्यक कृत्य है। यहां कुमारी-पूजन करने से सभी देवी-देवताओं की पूजा करने का फल प्राप्त होता है। सम्पूर्ण मनोयोग, श्रद्धा तथा भक्तिभाव से कुमारी-पूजन करने से साधक को पुत्र, पौत्र, धन, भूमि, विद्या, अचल सम्पत्ति आदि का निश्चय ही लाभ होता है और सर्वाभीष्ट की सिद्धि होती है। यह प्रयोग स्वानुभूत है।

'कुब्जिका तन्त्र' में भी कहा गया है कि जो मनुष्य कुमारी को अन्न, जल तथा वस्त्र देता है, उसका अन्न पर्वत के समान तथा जल समुद्र के समान असीम हो जाता है। वस्त्र देने से वह खरबों वर्षों तक शिवलोक में निवास करता है। जो कुमारी को पूजोपकरण देता है, उससे सन्तुष्ट होकर देवता उसके पुत्र रूप में उत्पन्न होते हैं।

'योगिनी-तन्त्र' के पूर्वखण्ड के सत्रहवें पटल में भी कहा गया है कि, हे सुन्दरि! मैं कुमारी-पूजन का फल सहस्र कोटि जिहाओं

और शतकोटि मुखों से भी कहने में असमर्थ हूं।

‘यामल’ में भी कुमारी-पूजन के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि, जिस देश में कुमारी-पूजन होता है, वह देश पृथ्वी पर पवित्र स्थान हो जाता है। उस स्थान के चारों ओर पांच कोश तक समस्त भू-भाग पुण्यतम हो जाता है।

‘कुमारी-तन्त्रम्’ के अनुसार, “महापवीं पर विशेष रूप से महानवमी में कुमारी की पूजा करनी चाहिए।”

कुमारी-भेद

‘रुद्रयामल’ के उत्तर खण्ड के छठे पटल में वर्ष-भेद से कुमारी-भेद का वर्णन करते हुए कहा गया है कि— ‘एक वर्ष की कुमारी ‘सन्ध्या’ और दो वर्ष की कन्या ‘सरस्वती’ कहलाती है। तीन वर्ष की कन्या ‘त्रिधामूर्ति’ और चार वर्ष की ‘कालिका’ कहलाती है। पांच वर्ष की ‘सुभगा’ और छः वर्ष की ‘उमा’ कहलाती है। सात वर्ष की ‘भिलिनी’ और आठ वर्ष की कन्या साक्षात् ‘कुञ्जिका’ कहलाती है। नौ वर्ष की ‘कालसन्दर्भा’ तथा दश वर्ष की ‘अपराजिता’ कहलाती है। ग्यारह वर्ष की ‘रुद्राणी’ तथा बारह वर्ष की ‘मेरवी’ कही जाती है। तेरह वर्ष की ‘महालक्ष्मी’ और चौदह वर्ष की ‘पीठनायिका’ कहलाती है। पन्द्रह वर्ष की ‘क्षेत्रज्ञा’ तथा सोलह वर्ष की कन्या ‘अस्त्रिका’ कहलाती है। इस प्रकार क्रम से संग्रह करके, जब तक उनमें पुण्य (मासिक धर्म) उत्पन्न न हो, तब तक प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा (शुक्ल पक्ष) तक वृद्धि भेद से पूजा करें।’ (वृद्धि-भेद अर्थात् प्रथम दिन एक, दूसरे दिन दो, इसी प्रकार प्रत्येक दिन एक कन्या की वृद्धि।)

‘विश्वसार तन्त्र’ के अनुसार, “हे वरानने! वह कुमारी आठ वर्ष में ‘गौरी’ हो जाती है। वही नव वर्ष में ‘रोहिणी’ तथा दश वर्ष में

‘कन्यका’ कहलाती है। इसके बाद वह ‘महामाया’ हो जाती है और वही ‘रजस्वला’ कहलाती है। बारह वर्ष से बीस वर्ष तक उसे सब तन्त्रों में सुकुमारी कहा गया है जो पापाण धातुओं के तेजोरूप में स्थित है। हे देवि! समस्त जीव-जन्तुओं में यही स्थिति है। इससे अधिक क्या कहा जा सकता है। जहां पर ‘महामाया’ नहीं है, वहां कुछ भी नहीं है।”

‘कुद्बिजका-तन्त्र’ के सप्तम पटल में विशेष रूप से कथन किया गया है कि— ‘पांच वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक की कन्या, हे देवि! अपने रूप को प्रकाशित करने वाली ‘कुमारी’ कहलाती है। छः वर्ष से लेकर नव वर्ष तक की कन्या, हे महेशानि! साधक की अभीष्ट सिद्धि के लिए उपयुक्त होती है। आठ वर्ष से लेकर तेरह वर्ष तक की अवस्था वाली कन्या ‘कुलजा’ कहलाती है और उसमें ही देवी की पूजा करनी चाहिए। दश वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक की अवस्था वाली ‘युवती’ कहलाती है। उसे देवता के समान समझना चाहिए।’

‘यामल’ के अनुसार, “दूसरे वर्ष से ऊपर कन्या जब तक आठ वर्ष की हो तब तक उस सुन्दर मोहिनी कन्या की जप और पूजा करनी चाहिए।”

कुमारियों का वर्ण-भेद

‘रुद्रयामल’ के उत्तर खण्ड के सप्तम पटल में कुमारियों का वर्ण-भेद इस प्रकार कहा गया है— नटी की कन्या, हीन जाति की कन्या, कापालिक की कन्या, धोवी की कन्या, नाई की कन्या, गोपालक की कन्या, ब्राह्मण की कन्या, शूद्र की कन्या, वैश्य की कन्या, वैद्य की कन्या, और चाण्डाल की कन्या, चाहे जिस किसी भी आश्रम में स्थित हो, और सुहृद-वर्ग की कन्या— इनमें से किसी भी

कन्या को पूजा हेतु प्रयत्नपूर्वक लायें।

‘योगिनी तन्त्र’ के अनुसार, “इसलिए सब जातियों में उत्पन्न कन्याओं की पूजा करनी चाहिए। हे शिव! कुमारी-पूजन में जाति-भेद नहीं करना चाहिए। हे महेशानि! जाति-भेद करने से साधक नरक में जाता है। शंका में पड़ा हुआ मन्त्र-साधक निश्चित रूप से पातकी होता है। इसलिए देवी-बुद्धि से कुमारी का पूजन करना चाहिए। कुमारी समस्त विद्या-स्वरूपा है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे देवि! यदि भाग्य से वेश्या-कुल में उत्पन्न कोई कुमारी सर्वस्व देकर भी मिल जाये तो साधक को यत्नपूर्वक स्वर्ण, रौप्य (चांदी) आदि देकर प्रसन्न होकर उसकी पूजा करनी चाहिए। तब साधक को महासिद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय नहीं है।

कुमारी-दान-क्रम-फल

‘कुमारी तन्त्रम्’ के परिशिष्ट में कथन किया गया है कि— “कन्या का स्वयं विवाह कराना चाहिए। जो पुण्यकाल में कन्या का विवाह करता है उसका ब्रह्महत्या का पाप नष्ट हो जाता है। उसको भोग, मोक्ष सब प्राप्त होता है। उसे सौभाग्य और सारी सम्पत्तियां प्राप्त होती हैं। वह रुद्रलोक में त्रिनेत्र शिव के रूप में नित्य निवास करता है। जो कन्या का विवाह करता है, वह करोड़ों तीर्थों और हजारों अश्वमेधों का फल प्राप्त करता है। बालू के समुद्र में जितने बालू के कण हैं, उतने वर्षों तक अपने प्रत्येक कुल का उद्धार करके रुद्रलोक में शोभा पाता है। तत्तदिष्ट देवता की प्रसन्नता के लिए बुद्धिमान साधक, हे भैरव! कन्यादान करके मुक्ति प्राप्त करता है। तत्तज्जाति की कन्याओं को उस बुद्धि से कन्या में शिवरूपत्व की भावना करके साधक विवाहनीय कन्या में सर्वांगसुन्दर, तेजोमय

यशस्वी, काल भैरवरूपी, पूर्ण शिव का ध्यान करके वटुकेश महादेव से वर माँगे।"

बारह पंखुड़ियों वाले कमल पर बैठी बालास्त्र, त्रैलोक्यसुन्दरी, वरवर्णिनी, नाना अलंकारों से सुशोभित, भद्र विद्याओं को प्रकाशित करने वाली, चारुहासिनी, महानन्दहृदया, शुभदा, शुभा, पूर्ण चन्द्रमुखी का ध्यान करके जिस कुलकुमारी को दान देना हो, उसे लाकर मन्त्र से प्रदान करें।

अथ कुमारी-पूजा प्रयोग

पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति निमन्त्र्य प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कुर्यात्। केशान् परिष्कृत्य ललाटे सिन्दूरं नयनयोः कञ्जलं सर्वांगे चन्दनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य ताम्बूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वाऽमुकफल-प्राप्तये ऽमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये। इति संकल्प्य न्यासान् कुर्यात्।

अर्थ— पूजा वाले दिन से पूर्व दिन गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि के द्वारा मूल मन्त्र से 'भगवति कुमारी पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थय' इस प्रकार निमन्त्रण देकर प्रातः बुलाकर उसकी प्रदक्षिणा करके उद्वर्तन आदि से स्नान कराकर शरीर पर तेल की मालिश करें। उसके केश धोकर, ललाट में सिन्दूर, आंखों में काजल तथा शरीर के समस्त अंगों में चन्दन लगाकर वस्त्र तथा अलंकारों से आभूषित करके, उसके पैर धोकर उसे अष्टदल पीठ पर बैठाकर ताम्बूल से मुख शुद्ध करके, देशकाल का स्मरण करके अपने

मनोभिलापित फल की प्राप्ति हेतु “अमुक फल प्राप्तये-अमुक-
कर्मण्य-कामाख्या देव्या: प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये”
संकल्प लें तथा निम्नानुसार न्यास करें—

हृदयादिषडंगन्यास— ॐ क्लां कुलकुमारिके हृदयाय
नमः॥१॥ ॐ क्लां कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा॥२॥ ॐ क्लूं
कुलकुमारिके शिखायै वषट्॥३॥ ॐ क्लैं कुलकुमारिके
कवचाय हुम्॥४॥ ॐ क्लां कुलकुमारिके नेत्रवत्याय वौषट्॥५॥
ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्॥६॥

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें—

ध्यान

ॐ शंखकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहाम्भोज हावभावविराजिताम्।
बालसूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम्।
नानालंकारनप्रांगीम्भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ।
चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम्॥
रक्तवस्त्रां वरोदयुक्तां सिन्दूरतिलकान्विताम्।
निष्कलंकं सुधाधामवदनकमलोज्ज्वलाम्॥
स्वर्णादिमणिमाणिक्यभूषणैर्भूषितां पराम्।
नानारत्नादिनिर्माणसिंहासनोपरिस्थिताम् ॥
हास्यवक्त्रां पद्मरागमणिकान्तिमनुत्तमाम्।
पीनोतुंगकुचां कृष्णा श्रुतिमूलगतेक्षणाम्॥

कटाक्षैश्च महासम्पददायिनीं परमेश्वरीम्।
 सर्वांगसुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्॥
 डाकिनीयोगिनीविद्याधरीभिः परिशोभिताम्।
 कामिनीभिर्युतां नानागन्धाद्यैः परिगन्धिताम्॥
 ताम्बूलादिकराभिश्च नायिकाभिर्विराजिताम्।
 सप्तस्तसिद्धवर्गाणां प्रणतानां प्रतीक्षणाम्॥
 त्रिनेत्रां सम्मोहकरां पुष्पचापेषु विभृतीम्।
 भगलिंगसमाख्यानं किनरीभ्योऽपि शृण्वतीम्॥
 वाणीलक्ष्मीसुधावाक्यप्रतिवाक्यमहोत्सुकाम् ।
 अशेषगुणसम्पन्नां करुणासागरां शिवाम्॥

उपरोक्तानुसार ध्यान करके अपने शिर पर हाथ रखकर मानसोपचार से पूजा करके गन्ध आदि से इस प्रकार पूजा करें—

“ऐं हीं क्लीं सन्ध्यायै कुमार्यै नमः” इसी प्रकार पूर्व बीज मन्त्रों का उच्चारण करके “सरस्वत्यै कुमार्यै नमः” इत्यादि वर्ष के क्रम (जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है) से चतुर्थ्यन्त नाम से आसन आदि योइशोपचारों से इस प्रकार पूजन करें— ऐं हीं क्लीं कुलकुमारिकायै नमः। जलं समर्पयामि। इसी मन्त्र को बोलते हुए ‘जलं’ के स्थान पर पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, अनुलेपनं, अक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं आदि को रखकर समर्पित करें।

इसके उपरान्त पठंगों की पूजा करें। इसका क्रम इस प्रकार है—

दाहिने हाथ से कुमारी के हृदय को स्पर्श करके यह भावना करें कि— “यह महातेजोमय और शुक्ल वर्ण है।” फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

“ऐं हीं कलीं कुलकुमारिके हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि।”

इसके बाद उसके शिर पर हाथ रखकर भावना करें कि— “शिर शुक्लवर्ण और सर्वमय है।” फिर मन्त्र बोलें—

“ऐं हीं कलीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा। शिरः श्री पादुकां पूजयामि।”

इसके बाद उसकी शिखा पर हाथ रखकर भावना करें कि— “शिखा नीलांजन के समान है।” फिर मन्त्र बोलें—

“ऐं हीं कलीं कुलकुमारिके शिखायै वषट्। शिखा श्री पादुकां पूजयामि।”

इसके उपरान्त कवच बनाकर भावना करें कि— “कवच प्रथम अरुण के समान तेजयुक्त है।” फिर मन्त्र बोलें—

“ऐं हीं कलीं कुलकुमारिके कवचाय हुं। कवच श्री पादुकां पूजयामि।”

इसके बाद उसके तीनों नेत्रों (तीसरा नेत्र ललाट के मध्य में) में यह भावना करें कि— “नेत्रत्रय सर्वबीजमय, महाप्रभ, रक्तवर्ण करोड़ों जवापुष्पों के समान उज्ज्वल हैं।” फिर मन्त्रोच्चारण करें—

“ऐं हीं कलीं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्री पादुकां पूजयामि।”

इसके बाद clockwise तीन चुटकियां बजाकर दायें हाथ की प्रथम व द्वितीय (तर्जनी व मध्यमा) अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार ताली बजायें तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें— “ऐं हीं कलीं कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।”

कन्या-पूजन— इस प्रकार घडंगों की पूजा करके पोडश नामों

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 130 }

से घोड़श वार इस प्रकार पूजा करें—

ॐ ऐं सन्ध्यायै नमः॥१॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः॥२॥ ॐ ऐं स्त्रिमूर्त्यै नमः॥३॥ ॐ ऐं कालिकायै नमः॥४॥ ॐ ऐं सुभगायै नमः॥५॥ ॐ ऐं उमायै नमः॥६॥ ॐ ऐं मालिन्यै नमः॥७॥ ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः॥८॥ ॐ ऐं कालसंकर्षिण्यै नमः॥९॥ ॐ ऐं अपराजितायै नमः॥१०॥ ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः॥१०१॥ ॐ ऐं भैरव्यै नमः॥१२॥ ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः॥१३॥ ॐ ऐं कामाख्यै नमः॥१४॥ ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः॥१५॥ ॐ ऐं चर्चिकायै नमः॥१६॥

इस प्रकार पूजा करके नव नामों से इस प्रकार पूजा करें—

ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः॥१॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः॥२॥ ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः॥३॥ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः॥४॥ ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः॥५॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः॥६॥ ॐ ह्रीं शांकर्यै नमः॥७॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः॥८॥ ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः॥९॥

इति नामभिः सम्पूज्य “ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।” इति पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा तत्रांगे स्वेष्टदेवीमावाह्य सम्पूज्य प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत्।

इस प्रकार नामों से पूजा करके ‘ऐं ह्रीं कलीं कुलकुमारिकायै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि’ बोलकर तीन पुष्पांजलि देकर उसके अंग में अपनी इष्टदेवी का आवाहन करके पूजा तथा प्रदक्षिणा करने के बाद इस प्रकार प्रणाम करें—

प्रणाम

ॐ जगत्पूज्ये जगद्गुन्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
 पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥१॥
 त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
 त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥२॥
 कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
 कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥३॥
 अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ।
 शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥४॥
 कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम्।
 कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥५॥
 चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्।
 प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥६॥
 सुखानन्दकर्णीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
 सर्वभूतात्मिका देवीं शांकरीं पूजयाम्यहम्॥७॥
 दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
 पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गे नमाम्यहम्॥८॥
 सुन्दरीं स्वर्णवर्णभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
 सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥९॥

इस प्रकार प्रणाम करके उसके कुण्डविल में सपरिवार बाल
 भैरव का आवाहन करके “ॐ कुलकुमारिके सपरिवार बाल
 भैरवाय नमः” बोलकर गंध-पुष्पों द्वारा पूजन करें।

इसके उपरान्त “ऐं हीं श्रीं कलीं हूं हसौः कुल कुमारिकायै नमः स्वाहा।” बोलकर कामाख्या-मूल मन्त्र का यथाशक्ति जप करें और फिर प्राणायाम करके भगवती को जप समर्पित करें। तदोपरान्त स्तोत्र, कवच आदि का पाठ करके साष्टांग प्रणाम करके दक्षिणा प्रदान करें। मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख है। जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणों को भोजन कराने का विधान है।

अन्त में मैं यही कहूंगा कि जो व्यक्ति ‘पशुभाव’ में, ‘वीरभाव’ में अथवा ‘दिव्यभाव’ में स्थित होकर विधि-विधान से कुमारी-पूजन करता है, उसे महासुख प्राप्त होता है। तीनों ही ‘भावों’ में कुमारी-पूजन जैसा दिव्य कर्म करने से उत्तम फल प्राप्त होता है। दिव्यभाव में स्थित होकर जो साधक कुमारी-पूजन करता है या कुमारियों को भोजन कराता है, उसे तन्त्र-मन्त्र का साक्षात् फल मिलता है। यही सिद्धि का मूल रहस्य है। कन्या समस्त सिद्धियों का रूप है। कन्या सम्पूर्ण और परम तप है। होम, मन्त्र, पूजा, नित्यक्रिया, कौलिकों का सत्कार तथा विभिन्न फलों को प्रदान करने वाले बड़े-बड़े धर्म कुमारी-पूजन के बिना व्यर्थ हैं। कुमारी-पूजन से साधक इन सभी कर्मों का फल प्राप्त कर लेता है।

‘कुमारी-तन्त्रम्’ में कुमारी-पूजा का महात्म्य बताते हुए कहा गया है कि—

कुमारी-पूजा से वीर करोड़ गुना फल प्राप्त करता है। यदि कुल-पण्डित फूलों से भरी अंजलि कुमारी को देता है तो स्वर्णमय करोड़ों मेरु पर्वतों के समान कुमारी को दान देने का फल तत्काल प्राप्त कर लेता है। जिसने एक कुमारी को भोजन करा दिया, उसने त्रैलोक्य को भोजन करा दिया। समस्त कर्मों के फल की प्राप्ति के

लिए मनुष्य कुमारी-पूजन करे। पार्वतीजी कहती हैं कि, आत्मा के ध्यान में लगा हुआ आनन्दपूर्वक शुद्ध भक्ति के साथ प्रतिदिन जो व्यक्ति मेरी पूजा करता है कुमारियों का पूजन और भोजन उसके वश में है। उसके लिए सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का तेज अपने सभी भावों से प्रकाशित होता है। कुमारी के पूजन से, उससे बातचीत करने से, उसे भोजन कराने से, उसका शुभकार्य करने से मेरी प्रसन्नता होती है। कुमारी में साक्षात् देवता गुप्त रूप से स्थित हैं। समस्त लोकों द्वारा पूजित, कामिनीवदक, महाबलवान् पुत्र बालभैरवदेव की पूजा के विविध द्रव्यों से कुमारी देवपूजिता हैं। कुमारी देवता कही गयी हैं। वह समस्त संसार की जगदीश्वरी हैं। समस्त लोकों की पूजा के लिए कुमारी को लाकर उसमें गुप्त रूप से निवास करने वाली महादेवी सन्तुष्टहासिनी सुरेश्वरी देवी की पूजा सदा भोजनादि से करनी चाहिए। शिवभक्त, विष्णुभक्त, समस्त नायक तथा अन्य देवों से सरस्वती रूपी कुमारी पूजी जाती हैं। वह समस्त लोकों में पूजी जाती हैं, इसलिए बुद्धिमानों का कर्तव्य है कि वे उसकी पूजा करें। मनुष्य कुमारी-पूजा से पुत्रों को और लक्ष्मी को प्राप्त करता है। कुमारी की पूजा से मनुष्य धन पाता है और भूमि पाता है। कुमारी की पूजा से मनुष्य को धन और बलवती विद्या की प्राप्ति होती है। कुमारी-पूजन से महाविद्या तथा सभी देव प्रसन्न होते हैं इसमें संशय नहीं है। कुमारी-पूजन से कालभैरव, ब्रह्मा, वेदज्ञानी, ब्राह्मण, रुद्र, देववर्ग, ब्रह्मरूपी वैष्णव, द्विमुज अवतार, मन्त्रों से सुशोभित वैष्णव, अन्य दिक्षाल, चराचर गुरु तथा तथा नाना विद्याश्रित कृटशाली सभी दानव और उपसर्गस्थित जो-जो लोग हैं वे सब प्रसन्न हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है। जबकि शुद्धरूप में स्वयं इससे प्रसन्न हो जाती हूं। तब अन्य लोक में रहने वाले देवताओं की तो बात ही क्या है? कुमारी का

पूजन करके मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है। इससे शीघ्र ही सबको पुण्यफल देने वाली भारी क्रान्ति होती है। मूल मन्त्र के लिखने से क्षण में ही दश हजार गुना पुण्यफल मनुष्य को प्राप्त होता है। मन्त्र को सम्पूर्ण करके जप करने से मनुष्य सभी सिद्धियों का स्वामी हो जाता है।

५

॥ कुमारी-स्तोत्र॥

इस स्तोत्र की महत्ता बताते हुए कहा गया है कि जो साधक इसका पाठ करता है वह कविता और वाणी का स्वामी हो जाता है। वीरभाव परायण होकर वह महासिद्धियों का स्वामी हो जाता है। वह सर्वत्र विजय प्राप्त करता है। उस पर समस्त सिद्धियां प्रसन्न हो जाती हैं तथा दिक्षाल तुष्ट हो जाते हैं। वह इस संसार में धनवान्, पुत्रवान् तथा राजा होता है। महाविद्या के चरण कमलों को वह निश्चित रूप से देखता है अर्थात् उसकी इष्टदेवी के उसे साक्षात् दर्शन होते हैं।

देवेन्द्रादय इन्दुकोटिकिरणां वाराणसीवासिनीं विद्यां
वाग्भवकामिनीं त्रिनयनां सूक्ष्मत्रियागामिनीम्। चण्डो-
द्वेगनिकृन्तनीं त्रिजगतां धात्रीं कुमारीं वरां मूलाम्बोरुह- वासिनीं
शशिमुखीं सम्पूजयन्ति श्रियम्॥१॥ भाव्यां देवगणैः
शिवेन्द्रयतिभि-मौक्षार्थिभिर्बालिकां सन्ध्यां नित्यगुणोदयां
द्विजगण-श्रेष्ठोदयांशारुहाम्। शुक्लाभां परमेश्वरीं शुभकरीं
भद्रां विशालानां गायत्रीं गणमातरं दिनपतिं कृष्णां च वृद्धां
भजे॥२॥ बालां बालकपूजितां गुणयुतां विद्यावतां मोक्षदां
धात्रीं शुक्लसरस्वतीं नरवरां वाग्वादिनीं चण्डिकाम्।
स्वाधिष्ठानहरप्रियां प्रियकरीं वेदान्तविद्याप्रदां नित्यं मोक्षहिताय
योगवपुषां चैतन्यरूपां भजे॥३॥ नानारत्नसमूहनिर्मितगृहे पूज्यां

सुरैर्बालिकां वन्दे नन्दनकानने मनसि सिद्धान्तैकबीजानने।
 अर्थं देहि निरर्थकाय वपुषे हित्या कुमारीं कलां महां
 मातृकुमारिके च त्रिविधा मूर्त्या च तेजोमयी॥४॥
 हालाहालकरालिकां कुलपथोल्लासैः कराब्जोद्धरां
 नासामोदकरालिनीं हि भजतां कामातिरिक्तप्रदाम्। बालोऽहं
 बटुकेश्वरस्य चरणाम्भोजाश्रितोऽहं सदा हि त्वां बालकुमारिके
 शिरसि शुक्लाम्भोरुहे सम्भजे॥५॥ सूर्याहादबलाकिनीं
 कलिमहापापादिर्दत्तांपापहां तेजोगां भुवि सूर्यगां भयहरां
 तेजोमयीं कालिकाम्। वन्दे हृत्कमले सदा रविदले बालेन्द्रविद्यां
 सर्तीं साक्षात्सिद्धिकरों कुमारि विमले त्वामाद्यरूपेश्वरीम्॥६॥
 नित्यं श्रीकमलामिनीं कुलवतीं कौलामुनामभिकां
 नानायोगविलासिनीं सुरमणीं नित्यां तपस्यान्विताम्।
 वेदान्तार्थविशेषदेशवसनभाषाविशेषस्थितां वन्दे पर्वतराजतनयां
 कालप्रिये त्वामहम्॥७॥ कौमारीं कुलमालिनीं
 रिपुगणक्षोभाग्निसन्दायिनीं रक्ताभानयनां शुभां परममार्गां
 मुक्तिसंज्ञाप्रदाम्। भार्या भोगवतीं पतिं त्रिभुवनेष्वामोदञ्चाननां
 पञ्चास्यप्रियकामिनीं भयहरां सर्वादिहारां भजे॥८॥ चन्द्रास्यां
 चरणद्वयां भुजमहा-शोभाविनोदीं नदीं मोहादिक्षयकारिणीं
 वरकरां श्रीकुञ्जिकां सुन्दरीम्। ये नित्यं परिपूजयन्ति सहसा
 राजेन्द्रचूड़ामणिं सम्पत्तिं धनमायुषं त्रिजगतां व्याप्तेश्वरत्वं
 जगुः॥९॥ योगीशं भुवनेश्वरं प्रियकरं श्रीकालसन्दर्भया
 शोभासागरगामिनं सुरतरुं वाञ्छाफलोद्दीपनम्। लोकानाम-
 घनाशनाय शिवया श्रीसंज्ञया विद्यया धर्मप्राणसदैवतं प्रणमतां
 कल्पद्रुमं भावये॥१०॥ विद्यान्तापराजितां मदनगामामोदमत्ताननां
 हृत्पद्म-स्थितपादुकां कुलकलां कात्यायनीं भैरवीम्। ये

ये पुण्यधियो भजन्ति परमानन्दाव्यधमध्ये मुदा सर्वाच्छादित-
 तेजसाऽभयकरीं मोक्षाय सत्कीर्तये॥११॥ रुद्राणीं प्रणमामि
 पद्मवदनां कोट्यकर्तेजोमयीं नानालंकृतभूषणां कुलभुजामा-
 नन्दसन्दायिनीम्। श्री मायां कमलान्वितां हृदिगतां सन्तान-
 बीजक्रियां वन्दे वारभवरूपिणीं बुद्धवधू हृकार-
 बीजोदभवाम्॥१२॥ नमामि वरभैरवीं क्षितितलाघकालानलां
 मृणालकुसुमारुणां भुवनदोष-संशोधिनीम्। जगद्भयहरां परां
 हरति या च योगेश्वरी ममापदमहर्निंशं सकलभोगदां
 तामहम्॥१३॥ साप्नाज्यं प्रददाति या भगवती विद्या महालक्षणा
 साक्षादष्टसमृद्धिदा भुवि महालक्ष्मीः कुलक्षोभहा। स्वाधि-
 ष्ठानसुपंकजे विवसितां विष्मोरनन्तश्रियं वन्दे राजपदप्रदां
 शुभकरीं कौलेश्वरीं सर्वदा॥१४॥ पीठानामधिपाधिपामसुरहां
 विद्यां शुभां नायिकां सर्वालंकरणान्वितां त्रिजगतां क्षोभापहां
 वारुणीम्। वन्दे पीठगनायिकां त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां
 सर्वेषां हितकारिणीं जयवतामानन्दरूपेश्वरीम्॥१५॥ क्षेत्रज्ञां
 मदविहूलां कुलवतीं सिद्धप्रियां प्रेयसीं शास्त्रोः श्रीबटुकेश्वरस्य
 महतामानन्द - सञ्चारिणीम्। साक्षादात्मपरीदगमां निजमनः
 क्षोभापहां शाकिनीं वाक्यार्थप्रकटामहं रजतभां वन्दे
 महाभैरवीम्॥१६॥ सुपूर्णविधुवन्मुखीं कमलमध्यसम्भाविनीं
 शिरोदशशते दलेऽमृतमहाव्यधधाराधराम्। प्रणामफलदायिनीं
 सकल- राजवश्यां गुणां नमामि परमाम्बिकां विषयपाश-
 संहारिणीम्॥१७॥ साक्षादहं त्रिभुवनेऽमृतपूर्णदेहां सन्ध्यादि-
 देविकललः कुलपणिडतेन्द्राम्। तनो भजे सुरवरे वरकालिके
 त्वां सिद्धानले प्रतिदिनं प्रणमामि भक्त्या। भक्तिं धनं जयपदं
 यदि देहि दास्यं तस्मिन्महा-मधुमतीलघुगेहभाव्याम्॥१८॥

॥ फलश्रुति॥

एतत्सोत्रप्रसादेन कवितावाक्यतिर्भवेत्।
 महासिद्धीश्वरो दिव्यो वीरभावपरायणः॥१९॥
 सर्वत्र जयमाज्ञोति स हि स्याद्वरवल्लभः।
 वाचामीशो भवेत्क्षिप्रं कामरूपी भवेनरः॥२०॥
 पशुरेव महावीरो दिव्यो भवति निश्चितम्।
 क्रमशोप्यष्टसिद्धिः स्याद्वाग्मी भवति निश्चितम्॥२१॥
 सर्वविद्याः प्रसीदन्ति तुष्टास्सर्वदिगीश्वराः।
 बह्दिः शीतलतां याति जलस्तम्भं स कारयेत्॥२२॥
 धनवान्युत्रवानाजा इहलोके भवेनरः।
 स सञ्चरति वैकुण्ठे कैलासे शिवसनिधौ॥२३॥
 मुक्त एव महादेव यो नित्यं सर्वदा पठेत्।
 महाविद्यापदाभ्योजं स हि पश्यति निश्चितम्॥२४॥

५६

॥ कुमारी-कवच॥

इस कवच की महत्ता बताते हुए कहा गया है कि यह तीनों लोकों
 में साधक का मंगल करने वाला और पापों का नाश करने वाला है।
 इसके पठन और धारण करने से साधक महासिद्ध हो जाता है।
 देवाधिदेव इन्द्र, बृहस्पति, अग्नि, धर्मराज, वरुण, वायु, कुमार, गणेश,
 कुबेर, शिव के प्रिय सभी देव, दिक्पाल आदि तथा अनेकों राजा भी

कुमारी-पूजन { 139 }

इस कवच के पाठ से धनी हो गये। इसका पाठ करने वाला साधक भुक्ति, मुक्ति, तुष्टि, पुष्टि, राजलक्ष्मी तथा उत्तम सम्पत्ति प्राप्त करता है। दिन में, रात में नित्य कुमारी की पूजा करनी चाहिए। भोजपत्र पर लिखकर जो साधक इस कवच को धारण करता है, उसके मनोभिलापित सभी कार्य पूर्ण होते हैं।

॥ पूर्व पीठिका॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि कुमारीकवचं शुभम्।
त्रैलोक्यमंगलं नाम महापातकनाशनम्॥१॥
पठनाद्वारणाल्लोका महासिद्धाः प्रभाकरः।
शक्रो देवाधिपः श्रीमान्देवगुरुबृहस्पतिः॥२॥
सम्यक्तेजोमयो वह्निर्धर्मराजो भवानकः।
वरुणो देवपूज्यो हि जलानामधिपस्वयम्॥३॥
सर्वहर्ता महावायुः कुमारः कुञ्जरेश्वरः।
धनाधिपः प्रियशशम्भोस्सर्वे देवा दिगीश्वराः॥४॥
स एकः प्रभुरेकात्मा सर्वेशो निर्मलोदयः।
एतत्कवचपाठेन सर्वे भूपा धनाधिपः॥५॥

॥ कवच॥

प्रणवो मे शिरः पातु माया सन्ध्यात्मिका सती।
ललाटोध्वं महामाया पातु मे श्रीसरस्वती॥६॥

कामाख्या बटुकेशानी त्रिमूर्तिर्भालमेव तु।
 चामुण्डा बीजरूपा च वदनं कालिका मम॥७॥
 पातु मां सूर्यगा नित्यं तथा नेत्रद्वय मम।
 कर्णयुग्मं कामबीजस्वरूपामा तपस्त्वनी॥८॥
 रसनाग्र तथा पातु वाग्देवी मालिनी मम।
 तमावस्था कामरूपा दन्ताग्र कुञ्जिका मम॥९॥
 देवी प्राणरूपा सा पातु नित्यं शिरो मम।
 ओष्ठाधरौ शक्तिबीजत्मिका स्वाहास्वरूपिणी॥१०॥
 गलदेश महारौद्री पातु मे चापराजिता।
 क्षीं बीजं मे सदा कण्ठं रुद्राणी स्वाहयान्विता॥११॥
 हृदयं षोडशी विद्या पातु षोडशमुखरा।
 द्वौ बाहू पातु सर्वत्र महालक्ष्मीः प्रधानिका॥१२॥
 सर्वमन्त्रस्वरूपा मे चोदरं पीठनायिका।
 पाश्वर्युग्मं तथा पातु हृददेवी वाघवात्मिका॥१३॥
 कैशोरी कटिदेशं मे मायाबीजस्वरूपिणी।
 जंघायुग्मं जयन्ती मे योगिनी कुल्लुकावृता॥१४॥
 सर्वागमम्बिका देवी पातु मन्त्रार्थगामिनी।
 केशाग्रं कमला देवी नासाग्रं नरमोहिनी॥१५॥
 चुबुकं चण्डिका देवी कुमारी पातु मे सदा।
 हृदयं ललिता देवी पृष्ठं पर्वतवासिनी॥१६॥
 त्रिशक्तिः षोडशी देवी लिंगं गुह्यं सदावतु।
 शमशाने चाम्बिका देवी गंगा गर्भे च भैरवी॥१७॥

शून्यागारं पञ्चमुद्रा मन्त्रयन्त्रप्रकाशिनी।
 चतुर्थ्ये सदा पातु मामेव बज्जधारिणी॥१८॥
 शवासनगता चण्डा मुण्डमालाविभूषिता।
 पातु मामेव लिंगे च ईश्वरी शक्तिरूपिणी॥१९॥
 वने पातु महाबाला महारण्ये रणप्रिया।
 महाजले तडागे च शत्रुमध्ये सरस्वती॥२०॥
 महाकाशपथै पृथ्वी पातु मां शीतला सदा।
 रणमध्ये राजलक्ष्मीः कुमारी कुलकामिनी॥२१॥
 अद्द्वनारीश्वरी पातु मम पादतलं मही।
 नवलक्ष्ममहाविद्या कुमारीरूपधारिणी॥२२॥
 कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला।
 पातु मां वरदा वाणी बहुकेश्वरकामिनी॥२३॥
 इति ते कथितं नाथ कवचं परमाद्भुतम्।
 कुमार्याः कुलदायिन्याः पञ्चतत्त्वार्थपारगम्॥२४॥

॥ फल-श्रुति॥

यो जपेत्पञ्चतत्त्वेन स्वोत्रेण कवचेन च।
 आकाशगामिनी सिद्धिर्भवेत्तस्य न संशयः॥२५॥
 बज्जदेहो भवेत्क्षिप्रं कवचस्य प्रसादतः।
 सर्वसिद्धीश्वरो योगी ज्ञानी भवति यः पठेत्॥२६॥

विवादे व्यवहारे च संग्रामे कुलमण्डले।
 महापथे शमशाने च योगसिद्धयुद्भवेषु च॥२७॥
 पठित्वा फलमाजोति सत्यंसत्यं कुलेश्वरा।
 वशीकरणमेतद्धि सर्वत्र जयदं शुभम्॥२८॥
 पुण्यद्वाती पठेनित्यं यतिः श्रीमान्भवेद्ध्रुवम्।
 सिद्धविद्याकुमारी च ददाति सिद्धिमुत्तमाम्॥२९॥
 पठेद्यः शृणुयाद्वापि स भवेत्कल्पपादपः।
 भवितं मुक्तिं तुष्टिपुष्टी राजलक्ष्मीं सुसम्पदम्॥३०॥
 प्राप्नोति साधकश्रेष्ठो धारयित्वा भवेन्जयी।
 असाध्यं साधयेद्विद्वान्यथित्वा कवचं शुभम्॥३१॥
 कुलीनानां महासौख्यं धर्मार्थकाममोक्षदम्।
 योगिनां दिवसे नित्यं कुमारीं पूजयेन्निशि॥३२॥
 उपचारविशेषेण त्रैलोक्यं वशमानयेत्।
 पललेनाशनेनापि मत्येन मुद्रया सह॥३३॥
 नानाभक्ष्येण भोज्येन गन्धद्रव्येण साधकः।
 माल्येन स्वर्णरजतालंकारेण सुचेलकैः॥३४॥
 पूजयित्वा जपित्वा च तर्पयित्वा वराननाम्।
 यज्ञदानतपस्याभिः प्रयोगेण महेश्वरा॥३५॥
 सतुत्वा कुमारीकवचं यः पठेदेव भावतः।
 तस्य सिद्धिर्भवेत्क्षिप्रं राजराजेश्वरो भवेत्॥३६॥
 वाञ्छाफलमवाजोति यद्यन्मनसि वर्तते।
 भूर्जपत्रे लिखित्वा यः कवचं धारयेद्यदि॥३७॥

शनिमंगलवारे च नवम्यामष्टमीदिने।
 चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कृष्णपक्षे विशेषतः॥३८॥
 लिखित्वा धारयेद्विद्वानुजराभिमुखो भवेत्।
 महापातकयुक्तोपि मुक्तः स्यात्सर्वं पातकैः॥३९॥
 योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वकल्याणमालभेत्।
 बहुपुत्रान्विता कान्ता सर्वसम्पत्तिसंयुक्ता॥४०॥
 तथैव पुरुषश्रेष्ठो दक्षिणे धारयेद्भुजे।
 इहैव दिव्यदेहः स्यात्पञ्चाननसमप्रभः॥४१॥
 शिवलोके परं याति वायुवेगो निरामयः।
 सूर्यमण्डलमाभेद्य परं मोक्षमवाप्नुयात्॥४२॥
 लोकानामतिसौख्यदं भयहरं श्रीपादभक्तिप्रदं मोक्षार्थं
 कवचं शुभं प्रपठतामानन्दसिन्धूद्भवम्।
 पन्थानं कलिकालधोरकलुषध्वंसैकहेतुं जयं ये लोकाः
 प्रपठन्ति धर्ममतुलं मोक्षं ब्रजन्ति क्षणात्॥४३॥

(रुद्रयामल उत्तरतन्त्र)

भावार्थ फल-श्रुति- हे नाथ! मैंने यह कुलदायिनी कुमारी पञ्च- तत्वार्थपारग परम अद्भुत कवच आपको बताया। जो मनुष्य पञ्चतत्व के स्तोत्र और कवच के साथ जप करता है, उसे आकाश में उड़ने की सिद्धि प्राप्त होती है। इसमें कोई संशय नहीं है। कवच के प्रसाद से वह वज्रदेह हो जाता है। जो इसका पाठ करता है, वह सर्वसिद्धियों का स्वामी, योगी और ज्ञानी हो जाता है। विवाद में, व्यवहार में, संग्राम में, कुलमंडल में, महापथ में, शमशान में, योगसिद्धियों के उद्भव में फल प्राप्त करता है। हे कुलेश्वर! मैं यह सत्य कहती

हूं। यह वशीकरण है, और सर्वत्र जय प्रदान करने वाला है। पुण्य व्रत करता हुआ जो इन्द्रियविजयी इसका नित्य पाठ करता है, वह निश्चय ही लक्ष्मीवान् होता है। सिद्धविद्या कुमारी उत्तम सिद्धि को देती है। जो साधक इसे पढ़ता या सुनता है वह कल्पवृक्ष हो जाता है। वह भुक्ति, मुक्ति, तुष्टि, पुष्टि, राजलक्ष्मी तथा उत्तम सम्पत्ति प्राप्त करता है और जो इसे धारण करता है, वह विजयी हो जाता है। इस शुभ कवच को पढ़कर बुद्धिमान् साधक असाध्य कार्यों को भी सिद्ध कर लेता है। कुलीन योगियों को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष देने वाला महासुख प्राप्त होता है। दिन में, रात में नित्य कुमारी की पूजा करनी चाहिए। विशेष उपचार से साधक तीनों लोकों को वश में कर सकता है। साधक यदि मांस, मछली के साथ नाना प्रकार के भक्ष्य, भोज्य और गन्ध द्रव्य, माला, सोने-चांदी के अलंकार तथा वस्त्रों के साथ कुमारी का पूजन तथा तर्पण करके यज्ञ, दान तथा तपस्यापूर्वक स्तुति करके कुमारी कवच को भाव सहित पढ़ता है तो उसे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वह राजराजेश्वर बन जाता है। भोजपत्र पर लिखकर जो साधक कवच को धारण करता है, उसके मन में जो इच्छा है वह सब पूर्ण हो जाती है। शनिवार, मंगलवार, नवमी, अष्टमी के दिन, चतुर्दशी, पूर्णिमा विशेष रूप से कृष्ण पक्ष में भोजपत्र पर लिखकर उत्तराभिमुख होकर जो विद्वान् साधक धारण करता है वह महापातकी हो तो भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है। स्त्री वायं हाथ में धारण करके समस्त कल्याणों को प्राप्त करती है। वह बहुत पुत्रों वाली तथा समस्त सम्पत्तियों से युक्त होती है। उसी प्रकार पुरुष भी दाहिने हाथ में धारण करे तो वह इसी संसार में दिव्य देह वाला रोग रहित होकर ब्रह्मा के समान हो जाता है।

अत्यन्त सुख देने वाला, भय का हरण करने वाला, श्री देवी के

कुमारी-पूजन { 145 }

चरणों में भक्ति प्रदान करने वाला, मोक्ष के लिए समुद्र से उत्पन्न कलिकाल में घोर पाप के नाश का कारण स्वरूप इस शुभ कवच का जप और पाठ जो करते हैं वे ही असीम धर्म और मोक्ष को क्षण-मात्र में प्राप्त होते हैं।

५

अध्याय ९

योनि-स्तोत्रम्

(१)

योनि-स्तोत्र एवं कवच आदि का पाठ करने से पूर्व उत्तम साधक को योनि का ध्यान करना चाहिए। कामाख्या पीठ में भगवती पार्वती का योनि मण्डल गिरा था। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती की देह को विभिन्न भागों में बांट दिया। योनि मण्डल कामरूप पर्वतों पर गिरा और वहाँ की संरचना ही बदल गयी। आसाम की यह पीठ विश्व की सर्वाधिक जाग्रत एवं तांत्रोक्त शक्ति पीठ है। समस्त देवता यहाँ वास करते हैं। यहाँ पर महामाया पूर्ण चैतन्य और जाग्रत है एवं यहाँ पर वास्तविक 'श्री साधना' सम्पन्न होती है, यहाँ पर तांत्रिक तन्त्र सीखता है, यहाँ पर साधक सिद्धि प्राप्त करता है और यहाँ पर भक्त महामाया के दर्शन प्राप्त करता है।

इसी संदर्भ में महादेव एक स्थान पर भगवती पार्वती से कहते हैं—

महाविद्यामुपास्यैव यदि योनिं न पूजयेत्।
पुरश्चर्या शतेनापि तस्य मन्त्रो न सिद्धयेत्॥

अर्थात् महाविद्या के उपासक यदि योनिपीठ की पूजा ना करें तो सौ पुरश्चरण करने पर भी मन्त्र सिद्ध नहीं होता ।

अतः योनि-स्तोत्र का पाठ करने से पूर्व साधक को योनि का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए—

॥ योनि-ध्यान ॥

अतिसुललितगात्रां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां,
जितजलदसुकान्तिं पट्टवस्त्रप्रकाशाम्।
अभयवरकराद्यां रत्नभूषातिभव्यां,
सुरतरुतलपीठ रत्नसिंहासनस्थाम्॥१॥
हरिहरविधिवन्द्यां बुद्धिशुद्धिस्वरूपां,
मदनरससमाकृतां कामिनीं कामदात्रीम्।
निखिलजनविलासोद्दामरूपां भवानीं,
कलिकलुषनिहन्त्रीं योनिरूपां भजामि॥२॥

अर्थात् हे योनि ! आप अत्यन्त मनोहर देह वाली, हास्यमुखी, तीन नेत्रों वाली, रेशमी वस्त्रों द्वारा शोभायमान हैं । अपने हाथों में आप अभयमुद्रा धारण किये हुए रत्नाभरणों से सुसज्जित हैं । आप कल्पतरु के नीचे रलों से बने सिंहासन पर विराजित हैं । आप शुद्धबुद्धि-स्वरूपिणी ब्रह्मा एवं विष्णु द्वारा भी वन्दनीय हैं । आप साधक की सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली हैं । समस्त साधकों के विलास हेतु आप उद्दाम-स्वरूपा हैं । आप कलिकाल के समस्त पापों का नाश करने वाली हैं । ऐसी योनि-स्वरूपा भगवती भवानी का मैं भजन करता हूँ ।

(निर्देश— उपर्युक्तानुसार योनि का ध्यान करके पूजन करें और योनि-पीठ पर “हसौः” मन्त्र का कम से कम 108 (एक सौ

आठ) बार जप करें। जप का समर्पण भगवती को करके ही स्तोत्र या कवच आदि का पाठ करना चाहिए।)

॥ स्तोत्र ॥

श्रीदेव्युवाच—

भगवान् सर्वधर्मज्ञं कुलशास्त्रार्थपारग।
सर्वं मे कथितं नाथं न त्वेकं परमेश्वर॥१॥
श्रीयोनेः स्तवराजं हि तथा कवचमुत्तमम्।
श्रोतुमिच्छामि सर्वज्ञं यदि तेऽस्ति कृपा मयि॥२॥
सारभूतं महादेवं निगमान्तर्गतं हर।
यदि न कथ्यते देवं प्राणत्यागं करोम्यहम्॥३॥
दिवानिशि महाभागं ममाश्रुः पतितं भवेत्।
अतस्तद् देवदेवेशं कथ्यतां मे दयानिधे॥४॥

श्रीमहादेव उवाच—

शृणु पार्वति वक्ष्यामि देहत्यागं कथं कुरु।
अत्यन्तगोपनीयं हि निगमे कथितं पुरा॥५॥
ब्रह्माविष्णुग्रहादीनां न मया कथितं पुरा।
अकथ्यं परमेशानि इदानीं किं करोमि ते॥६॥
तव स्नेहेन बद्धोऽहं कथयामि तवं प्रिये।
मातद्दर्देवि महाभागे यदि कस्मै प्रकाशयते।
शपथं कुरु मे दुर्गे यदि त्वं मतिप्रिया स्मृता॥७॥

ब्रह्मा यदि चतुर्वक्त्रैः पञ्चवक्त्रैः सदाशिवः।
 वर्णितुं स्तवराजञ्च न शब्दोति कदाचन।
 सम्यग् वक्तुं न शब्दोमि संक्षेपात् कथयामि ते॥८॥

भावार्थ- माँ पार्वती ने भगवान् शिव से कहा— हे भगवन् ! आप समस्त धर्मों के ज्ञाता एवं सभी शास्त्रों में निपुण हैं । अतः आप सभी तत्वों का वर्णन मुझसे करने की कृपा करें । आपके अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं है । यदि आपकी कृपा मुझ पर है तो मैं योनिस्तोत्र तथा उत्तम योनि-कवच सुनने के लिए अधीर हूं, कृपया आप उन्हें मुझसे कहें ।

हे महादेव ! निगम-आगम ग्रन्थों में जो सारभूत तत्व हों, उनका वर्णन करें । यदि उनका कथन आप मुझसे नहीं करेंगे तो मैं अपने प्राणों का त्याग कर दूँगी । हे महाभाग ! मेरे नेत्रों से निरन्तर अश्रु बहते रहते हैं । अतः हे दयानिधे ! आप उन सभी विषयों से मुझे अवगत करायें । (१-४)

तब भगवान् शिव ने कहा— हे पार्वति ! तुम शरीर का त्याग क्यों करना चाहती हो । सभी शास्त्रों में यह विषय अतीव गोपनीय है । पूर्वकाल में ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों ने भी इस विषय में कुछ नहीं कहा है । हे परमेश्वरि ! यह तत्व अकथनीय है तब मैं किस प्रकार कह सकता हूं । (५-६)

हे प्रिये ! मैं तुम्हारे स्नेहपाश से बंधा हूं अतः मैं तुमसे कहता हूं । परन्तु हे दुर्गे ! तुम शपथ लो कि इस विषय को किसी के सामने प्रकट नहीं करोगी । इस स्तवराज का कथन करने में चतुर्मुख ब्रह्मा तथा पंचमुख मैं (शिव) स्वयं भी पूर्णतः असमर्थ हूं । पूर्णरूप से इसका कथन तो मैं नहीं कर सकता लेकिन संक्षेप में मैं इसका कथन कर

रहा हूँ।

(इसके उपरान्त साधक हाथ में जल लेकर निमांकित विनियोग पढ़ें फिर जल भूमि पर छोड़ दें।)

विनियोग— ॐ अस्य श्री योनि-स्तवराजस्य कुलाचार्य ऋषिः, कौलिक छन्दः, श्री योनिरूपा दशविद्यात्मिका देवता सर्वं साधने विनियोगः।

इसके बाद साधक निमांकित स्तोत्र का पाठ करें—

ॐ योनिरूपे महामाये सर्वसम्पत्प्रदे शुभे।
कृपया सिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥१॥
सर्वस्वरूपे सर्वेषो सर्वशक्तिं समन्विते।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि जगन्मयि॥२॥
महाघोरे महाकालि! कुलाचारप्रिये सदा।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥३॥
घोरदंष्ट्रे चोग्रतारे सर्वशत्रुविनाशिणि॥
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥४॥
योनिरूपा महाविद्ये सर्वदा मोक्षदायिनी।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥५॥
जगद्ग्रात्रि महाविद्ये जगदुद्धारकारिणि।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥६॥
जगद्ग्रात्रि महामाये योनिरूपे सनातनि।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥७॥
जय देवि जगन्मातः सृष्टि-स्थित्यन्तकारिणी।
कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥८॥

सिद्धिदात्रि महामाये सर्वसिद्धिप्रदायिनि।
 कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥१॥
 महालक्ष्मि महादेवि महामोक्षप्रदायिनि।
 कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥२॥
 गौरी लक्ष्मीश्च मातंगी दुर्गा च नवचण्डिका।
 बगलामुखी भुवनेशी भैरवी च तथा प्रिये।
 छिनमस्ता महाकाली च योनिरूपा सनातनी।
 कृपया सर्वसिद्धिं मे देहि देवि! जगन्मयि॥३॥
 काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी।
 नायिका विप्रचित्ताद्या अन्या या नायिका स्मृताः।
 वसनित योनिमाश्रित्य ताभ्योऽपीह नमो नमः॥४॥
 अणिमाद्यष्टसिद्धिश्च वसत्यस्याः समीपतः।
 नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु योगमोक्ष - प्रदायिनि॥५॥
 सर्वशक्तिमये देवि सर्वकल्पनाशिनि।
 हे योने! हरि विघ्नं मे सर्वसिद्धिं प्रयच्छ मे॥६॥
 आधारभूते सर्वेषां पूजकानां प्रियम्बदे।
 स्वर्गपाताल वासिन्यै योनये च नमो नमः॥७॥
 विष्णुसिद्धिप्रदे देवि शिवसिद्धि प्रदायिनि।
 ब्रह्मसिद्धिप्रदे देवि रामचन्द्रस्य सिद्धिये।
 शक्रादीनाज्व सर्वेषां सिद्धिदायै नमो नमः॥८॥

॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं देवि सर्वसिद्धिं प्रदायकम्।
 स्तोत्रं योनेमहेशानि प्रकाशयामि ते प्रिये॥
 सर्वसिद्धिप्रदं स्तोत्रं यः पठेत् कौलिकः प्रिये।
 लिखित्वा पुस्तके देवि रक्तद्रव्यैश्च सुन्दरि॥
 तस्यासाध्यानि कर्माणि वश्यादीनि कुलेश्वरि।
 नास्ति नास्ति पुनर्नास्ति नास्त्येव भुवनत्रये।
 यः पठेत् प्रातरुत्थाय गाणपत्यं लभेन्नरः।
 रात्रौ कान्तासमायोगे यः पठेत् साधकोत्तमः।
 स्तवेनानेन संस्तुत्य साधकः किं न साधयेत्।
 सालंकतां स्वकान्ताऽच्च लीलाहावविभूषिताम्।
 रक्तवस्त्र-परीधानां कृत्वा सम्पूर्ण्य साधकः।
 भोजयित्वा ततो देवि स्वयं भुञ्जीत तत्परः।
 मत्स्यमांसादिकान् भुक्त्वा क्रोडे कृत्वा स्वयोषितम्।
 रात्रौ यदि जपेन्मन्त्रं सा दुर्गा स सदाशिवः।
 भवत्येव न सन्देहो मम वक्त्राद्विनिर्गतम्॥
 येन दत्तं मयि स्तोत्रं स एव मद् गुरुः स्मृतेः।
 तस्यैव यदि भक्तिः स्यात् स भवेष्जगदीश्वरः॥
 नमोऽस्तु स्तवराजाय नमः स्तवप्रकाशिने।
 यत्रास्ते स्तवराजोऽयं तत्रास्ते श्रीसदाशिवः॥

(इति शक्तिकागमसर्वस्ये हरपार्वतीसंवादे श्रीयोनिस्तवराजः समाप्तः।)

भावार्थ— हे देवि! आप योनिरूपा, महामाया तथा सर्वसम्पत्ति

प्रदायिनि और शुभा हैं, कृपया आप मुझे सर्वसिद्धियां प्रदान करें। आप सर्वस्वरूपिणी, सर्वेश्वरी तथा समस्त शक्तियों से पूर्ण हैं। हे जगन्माते! कृपया आप मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करें। (१-२)

हे जगन्मयि! आप महाभयंकर, महाकालीस्वरूपा हैं। कौलाचारी साधक आपको सदैव ही प्रिय हैं। अतः आप मुझे कृपा करके समस्त सिद्धियां प्रदान करें। आपकी दन्तावलि बहुत ही तीक्ष्ण है तथा आप घोर शत्रुओं का विनाश करने वाली हैं। कृपया आप मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करें। (३-४)

हे देवि! आप योनिरूपा महाविद्या हैं। अपने भक्तों को आप सदा ही मोक्ष प्रदान कराती हैं अतः आप मुझे भी सिद्धि प्रदान करने की कृपा करें। आप ही संसार को धारण करने वाली, जगत् का उद्धार करने वाली महाविद्या स्वरूपा हैं। अतः आप मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करने की कृपा करें। (५-६)

हे देवि! आप जगत् को धारण करने वाली, महामाया, योनिस्वरूपा तथा शाश्वतरूपिणी हैं। कृपया मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करें। हे जगन्माते! आपकी जय हो। आप ही इस सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने वाली हैं। कृपया आप मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करें। (७-८)

हे देवि! आप ही सिद्धिदात्री, महामाया तथा समस्त सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं। हे जगन्माते! कृपया आप मुझे सभी सिद्धियां प्रदान करें। आप ही महालक्ष्मी, महादेवी तथा महामोक्ष प्रदान करने वाली हैं इसलिए कृपा करके मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करें। (९-१०)

हे देवि! आप ही गौरी, लक्ष्मी, मातंगी, दुर्गा तथा नवचण्डी हैं।

आप ही बगलामुखी, भुवनेशी तथा मैरवी हैं। आप शाश्वत स्वरूपिणी, योनिरूपा, काली तथा छिन्नमस्ता के नाम से भी जगत् में प्रसिद्ध हैं। अतः कृपया मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करें। आप ही काली, कपालिनी, कुल्ला तथा कुरुकुल्ला हैं। आप ही आद्या विप्रचित्ता नायिका हैं। आप ही योनि के मध्य में स्थित हैं अतः मैं आपको प्रणाम करता हूं। (११-१२)

आपके निकट अष्टसिद्धियां (अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्य, प्राकाम्य, ईशित्व एवं वशित्व) निवास करती हैं। आप ही योग और मोक्ष की प्रदाता हैं अतः मैं आपको प्रणाम करता हूं। हे देवि! आप सर्वशक्ति-सम्पन्ना हैं, सभी प्रकार के पापों का नाश करने वाली हैं। अतः हे योनि! मेरे समस्त विष्णों का नाश करके मुझे समस्त सिद्धियां प्रदान करने की कृपा करें। (१३-१४)

हे देवि! आप सम्पूर्ण सृष्टि की एकमात्र आधारभूता हैं, साधकों को अति प्रिय हैं। आप स्वर्ग, पाताल आदि सभी स्थानों पर निवास करती हैं। हे योने! आपको वारम्बार नमस्कार है। भगवान विष्णु और शिव को भी आपने ही सिद्धि प्रदान की है। सृष्टि के कारक ब्रह्मा तथा श्रीराम को भी आपने ही सिद्धि प्रदान की है। इन्द्र आदि समस्त देवताओं को भी सिद्धि प्रदान करने वाली आप ही हैं, अतः मैं आपको प्रणाम करता हूं। (१५-१६)

॥ फलश्रुति ॥

हे देवि! यह सर्वसिद्धि प्रदान करने वाला स्तोत्र मैं तुम्हारे स्नेह के कारण प्रकाशित कर रहा हूं। जो कौलाचारी साधक इस स्तोत्र का पाठ करता है अथवा लाल रंग के चन्दन आदि से पुस्तक के रूप में लेखन करता है उसे सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। इस

स्तोत्र के समान तीनों लोकों में कुछ भी नहीं है। जो साधक प्रातः काल में इस स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करता है, वह गणपति के समान हो जाता है।

जो साधक रात्रि में रमणी के साथ संभोग-काल में इसका पाठ करता है, वही श्रेष्ठ साधक कहलाता है। ऐसी उत्तम साधना करके कौन सी वस्तु वह प्राप्त नहीं कर सकता है? अपनी पली को गहनों, वस्त्रों से अलंकृत करके तथा स्वयं रक्त-वस्त्र धारण करके पूजन के उपरान्त भोज्य पदार्थ अर्पित करके स्वयं भी भोजन करना चाहिए। मद्य-मांस आदि पदार्थों को खाकर अपनी पली की गोद का आश्रय ग्रहण करना चाहिए।

जो साधक रात्रि काल में इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह महादेव के समान हो जाता है। मेरे मुख से निकले ये शब्द कभी भी असत्य नहीं हो सकते। ऐसे स्तवराज को मैं प्रणाम करता हूँ। जिस स्थान में यह योनि-स्तवराज विद्यमान रहता है, उस स्थान में सदैव शिव का निवास रहता है।

(इति शक्तिकागम-सर्वस्वे हरगीरी-संचादे श्री योनि-स्तवराजः सम्पूर्णम् ।)

योनि-स्तोत्रम्

(२)

प्रस्तुत स्तोत्र “निगमकल्पद्रुम तन्त्र” से उद्धृत है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि योनि-प्रदेश में सभी शक्तियों का निवास है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की यह प्राण स्वरूपा है। यह समस्त देवों द्वारा स्तुत्य, पूजित एवं सम्पूर्ण जगत् की उत्पन्नकर्त्ता है तथा समस्त पापों का नाश करने वाली सम्पूर्ण तीर्थस्थान स्वरूपा है। कोई भी तीर्थाटन, तर्पण,

पुरश्चरण आदि किये बिना ही, केवल योनिपूजन मात्र से ही साधक
मोक्ष का अधिकारी बन जाता है।

महादेव उवाच—

शृणु देवि सुर-श्रेष्ठे सुरासुर - नमस्कृते।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि स्तोत्रं हि सर्वदुर्लभम्।
यस्याव वोधनाद् देहे देही ब्रह्ममयो भवेत्॥१॥

श्रीपार्वत्युवाच—

शृणु देव सुरश्रेष्ठ सर्व - बीजस्य सम्मतम्।
न वक्तव्यं कदाचित् पाखण्डे नास्तिके नरे॥२॥
ममैव प्राण - सर्वस्वं लतास्तोत्रं दिगम्बर।
अस्य प्रपठनाद् देव जीवमुक्तोऽपि जायते॥३॥
ॐ भग-रूपा जगन्माता सृष्टि-स्थिति-लयान्विता।
दशविद्या - स्वरूपात्मा योनिर्मा पातु सर्वदा॥४॥
कोण-त्रय-युता देवि स्तुति-निदा-विवर्जिता।
जगदानन्द - सम्भूता योनिर्मा पातु सर्वदा॥५॥
रक्त-रूपा जगन्माता योनिमध्ये सदा स्थिता।
ब्रह्म-विष्णु-शिव-प्राणा योनिर्मा पातु सर्वदा॥६॥
कार्त्रिकी - कुन्तलं रूपं योन्युपरि सुशोभितम्।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदा योनिः योनिर्मा पातु सर्वदा॥७॥
वीर्यरूपा शैलपुत्री मध्यस्थाने विराजिता।
ब्रह्म-विष्णु-शिव श्रेष्ठा योनिर्मा पातु सर्वदा॥८॥

योनिमध्ये महाकाली छिद्ररूपा सुशोभना।
सुखदा मदनागारा योनिर्मा पातु सर्वदा॥१॥
काल्यादि-योगिनी देवी योनिकोणेषु संस्थिता।
मनोहरा दुःख लभ्या योनिर्मा पातु सर्वदा॥२॥
सदाशिवो मेरु - रूपो योनिमध्ये वसेत् सदा।
कैवल्यदा काममुक्ता योनिर्मा पातु सर्वदा॥३॥
सर्व - देव स्तुता योनिः सर्व-देव-प्रपूजिता।
सर्व - प्रसवकर्त्री त्वं योनिर्मा पातु सर्वदा॥४॥
सर्व-तीर्थ-मयी योनिः सर्व-पाप-प्रणाशिनी।
सर्वगेहे स्थिता योनिः योनिर्मा पातु सर्वदा॥५॥
मुक्तिदा धनदा देवी सुखदा कीर्तिदा तथा।
आरोग्यदा बीर - रता पञ्च-तत्त्व-युता सदा॥६॥
योनिस्तोत्रमिदं प्रोक्तं यः पठेत् योनि-सन्निधौ।
शक्तिरूपा महादेवी तस्य गेहे सदा स्थिता॥७॥
तीर्थ पर्यटनं नास्ति नास्ति पूजादि-तर्पणम्।
पुरश्चरणं नास्त्येव तस्य मुक्तिरखण्डिता॥८॥
केवलं मैथुनेनैव शिव-तुल्यो न संशयः।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं मम वाक्यं वृथ नहि॥९॥
यदि मिथ्या मया प्रोक्ता तव हत्या-सुपातकी।
कृताञ्जलि-पुटो भूत्वा पठेत् स्तोत्रं दिगम्बर!॥१०॥
सर्वतीर्थेषु यत् पुण्यं लभते च स साधकः।
काल्यादि-दश विद्याश्च गंगादि-तीर्थ-कोटयः।
योनि-दर्शन-मात्रेण सर्वाः साक्षान् संशय॥११॥

कुल-सम्भव-पूजायामादौ चान्ते पठेदिदम्।
 अन्यथा पूजनाददेव रमणं मरणं भवेत्॥२०॥
 एकसन्ध्यां त्रिसन्ध्यां वा पठेत् स्तोत्रमनन्यधीः।
 निशायां सम्मुखे-शक्त्याः स शिवो नात्र संशयः॥२१॥

(इति निगमकल्पद्मे योनिस्तोत्रं समाप्तम् ।)

भावार्थ- महादेव बोले— हे देवि! सुर-असुरों द्वारा नमस्कृत इस दुर्लभ स्तोत्र का तुम श्रवण करो। इसकी अवधारणा करने से जीव ब्रह्ममय हो जाता है। (१)

तब पार्वती जी बोली— हे देव! यह सभी वीजों का सार है। पाखण्डियों और नास्तिकों से इसे कभी नहीं कहना चाहिए। यह मेरे प्राणों का सर्वस्व है। इसका पाठ करने से जीव आवागमन से छूट जाता है। (२-३)

इस सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं संहार करने वाली जगन्माता भग स्वरूपिणी है। यह योनि ही दशविद्या-स्वरूपा है। अतः यह योनि सदैव मेरी रक्षा रक्षा करे। हे देवि! यह त्रिकोणात्मिका योनि स्तुति और निंदा से रहित है। जगत के समस्त सुखों का मूलभूत कारण इस योनि से सदैव ही मेरा रक्षण होता रहे। (४-५)

योनि के मध्य में जगज्जननी रक्त के रूप में सदा ही स्थित रहती है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की प्राण-स्वरूपा योनि से सदैव ही मेरी रक्षा हो। जिस योनि के ऊपर कुन्तल रूप (वालों के रूप में) में कार्तिकी विराजित हैं, जो योनि भुक्ति-भुक्ति प्रदान करने वाली हैं, वह सदैव ही मेरी रक्षा करें। (६-७)

योनि के मध्य भाग में वीर्य रूपिणी शैलपुत्री देवी (नवदुर्गा का प्रथम स्वरूप) विराजित हैं। जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के प्राणों का

आधार है, वह योनि सदा ही मेरी रक्षा करे। योनि के मध्य स्थान में छिद्ररूपिणी महाकाली का निवास है जो मदनगृह की सुखदायिनी है। ऐसी योनि के द्वारा मेरी सदैव रक्षा होती रहे। (८-९)

योनि के कोण में काली, योगिनी आदि देवियों का निवास है; ऐसी दुख हरने वाली योनि से सदा ही मेरी रक्षा हो। योनि के मध्य में सदाशिव सदैव ही मेरु के रूप में अवस्थित रहते हैं। ऐसी काममुक्ता कैवल्य पद प्रदान करने वाली योनि के द्वारा सदैव ही मेरी रक्षा होती रहे। (१०-११)

जो योनि सभी देवों द्वारा स्तुत्य, आराधित तथा इस सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति करने वाली है, उससे मेरा रक्षण होता रहे। ऐसी योनि जो समस्त तीर्थ-स्थानों के समान है, समस्त पापों का नाश करने वाली है और जो समस्त प्राणियों में अवस्थित है, उसके द्वारा सदैव ही मेरी रक्षा होती रहे। (१२-१३)

वह देवी (योनि) मुक्तिप्रदाता, धनप्रदाता, सुख देने वाली, कीर्ति प्रदान करने वाली तथा आरोग्य प्रदान करने वाली के रूप में सदैव ही पंचतत्वों से युक्त रहती है। जो साधक योनिपीठ के सम्मुख होकर इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके घर में सदा ही शक्तिरूपा महादेवी का निवास रहता है। (१४-१५)

तीर्थ का भ्रमण, तर्पण, पुरश्चरण आदि किये बिना ही एक योनिपूजक मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। केवल संभोग मात्र से ही वह शिव के समान हो जाता है। यह बात एकदम सत्य है। मेरा कहा हुआ यह वचन कभी व्यर्थ नहीं हो सकता। (१६-१७)

यदि मेरा कथन मिथ्या हो जाये तो वह तुम्हारी हव्या के समान है। कृतांजलि देकर नग्नावस्था में इस स्तोत्र का पाठ करना उचित है।

सभी तीर्थों का दर्शन, गंगा-स्नान तथा समस्त दशों विद्याओं का पूजन आदि करके साधक को जो फल प्राप्त होता है, वह वही फल केवल योनि दर्शन से ही प्राप्त कर लेता है। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं करना चाहिए। (१८-१९)

सबसे पहले कुलाचार के अनुसार पूजन करके साधक को स्तोत्र-पाठ करना चाहिए अन्यथा मैथुन करने से निश्चय ही मृत्यु होती है। जो योग्य साधक दिन में एक बार अथवा तीनों संध्याओं में पाठ करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार रात्रि में भी पाठ करता है वह शिव-सदृश हो जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिए।

(निगमकल्पद्म तन्त्रान्तर्गत योनिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।)



॥ योनि-कवचम् ॥

यह 'योनि-कवच' अतीव गुह्यतम अर्थात् बहुत ही गुप्त है, जिसका वर्णन भगवान शिव ने माँ पार्वती से किया है। इस कवच का पाठ करने वाले साधक के सर्वांगों की पूर्ण सुरक्षा होती है और उसे समस्त सिद्धियां सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। जो साधक इस कवच का पाठ तीनों संध्याओं में करता है, उसे राजभय कभी व्याप्त नहीं करता। वह सभा में श्रेष्ठ वक्ता तथा राजगृह में राजा के समान आदरणीय हो जाता है। उसे सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। कवच के साथ मातृकाक्षर सम्मिलित करके पाठ करने से अनेक सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है।

देव्युवाच—

भगवन् श्रोतुमिच्छामि कवचं परमाद्भुतम्।
इदानीं देवदेवेश कवचं सर्वसिद्धिदम्॥१॥

महादेव उवाच—

शृणु पार्वति! वक्ष्यामि अतिगुह्यतमं प्रिये।
यस्मै कस्मै न दातव्यं दातव्यं निष्फलं भवेत्॥१॥

कवचपाठ से पूर्व साधक को हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को बोलते हुए हाथ का जल भूमि पर छोड़ देना चाहिए।

विनियोग— अस्य श्रीयोनिकवचस्य गुपत्रहृषिः कुलटाच्छन्दः
राजविष्णोत्पातविनाशे विनियोगः।

॥ कवच ॥

हीं योनिर्मे सदा पातु स्वाहा विष्णविनाशिनी।
शत्रुनाशात्मिका योनिः सदा मां रक्ष सागरे॥१॥
ब्रह्मात्मिका महायोनिः सर्वान् प्ररक्षतु।
राजद्वारे महाघोरे क्रीं योनिः सर्वदाऽवतु॥२॥
हुमात्मिका सदा देवी योनिरूपा जगन्मयी।
सर्वांगं रक्ष मां नित्यं सभायां राजवेशमनि॥३॥
वेदात्मिका सदा योनिर्वेदरूपा सरस्वती।
कीर्ति श्रीं कान्तिमारोग्यं पुत्रपौत्रादिकं तथा॥४॥
रक्ष रक्ष महायोने सर्वसिद्धिप्रदायिनी।
राजयोगात्मिका योनिः सर्वत्र मां सदाऽवतु॥५॥

॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं देवि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेनित्यं राजोपद्रवनाशकृत्॥६॥
सभायां वाकृपतिश्चैव राजवेशमनि राजवत्।
सर्वत्र जयमाणोति कवचस्य जपेन हि॥७॥

श्रीयोन्याः संगमे देवीं पठेदेनमनन्यधीः।
 स एव सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा॥८॥
 मातृकाक्षरसप्पुटं कृत्वा यदि पठेन्नरः।
 भुड्कते च विपुलान् भोगान् दुर्गया सह मोदते॥९॥
 इति गुह्यतमं देवि सर्वधर्मोत्तमोत्तमम्।
 भूर्जे वा ताङ्गपत्रे वा लिखित्वा धारयेद् यदि॥१०॥
 हरिचन्दनमिश्रेण रोचना - कुड्कुमेन च।
 शिखायामथवा कण्ठे सोऽपीश्वरो न संशयः॥११॥
 शरत् - काले महाष्टम्यां नवम्यां कुलसुन्दरि।
 पूजाकाले पठेदेनं जयी नित्यं न संशयः॥१२॥

(इति शक्तिकागमसर्वस्ये हरगौरीसंवादे श्रीयोनिकवचं समाप्तम् ।)

भावार्थ- देवी (पार्वती) ने कहा— हे भगवन्! परम अद्भुत सर्वसिद्धि प्रदान करने वाले योनि-कवच को मैं आपसे सुनना चाहती हूं। इसलिए इसे आप मुझसे कहें। (१)

शिवजी बोले— हे प्रिय पार्वति! इस अति गोपनीय योनि-कवच को मैं तुमसे कहता हूं। इसे हर किसी व्यक्ति को बताना नहीं चाहिए। यदि कोई ऐसा करता है तो उसके सभी कर्म व्यर्थ हो जाते हैं। (१)

(विनियोग— इस योनि-कवच के ऋषि ‘गुप्त’, छन्द ‘कुलटा’ तथा राज्य की ओर से होने वाले विघ्नों के विनाश के लिए मैं यह विनियोग कर रहा हूं।)

॥ कवच-पाठ ॥

विज्ञों का नाश करने वाली 'स्वाहा' तथा 'हीं' योनि सदा ही मेरी रक्षा करे। शत्रु-विनाशिनी योनि से 'भवसागर' में मेरी रक्षा हो। ब्रह्मात्मिकारूपिणी महायोनि से सभी प्रकार की रक्षा हो। राजदरबार में 'क्रीं' योनि सदा ही रक्षा करे। (१-२)

योनिरूपा 'हुम्' अक्षरात्मिका योनि के द्वारा मेरे सर्वांगों की तथा राजद्वार में मेरी रक्षा हो। वेदात्मिका योनि जो सरस्त्वतीरूपा है, उसके द्वारा मेरी कीर्ति, कान्ति, आरोग्य तथा पुत्र-पौत्र आदि की रक्षा सदैव होती रहे। (३-४)

सर्वसिद्धि प्रदाता महायोनि द्वारा मेरी रक्षा हो, राजयोग कारक योनि द्वारा सभी स्थानों में सदैव ही मेरी रक्षा होती रहे। हे देवि! समस्त प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाले इस कवच का वर्णन मैंने आपसे किया है। ऐसा साधक जो इस कवच का तीनों संध्याओं में पाठ करता है, उसके राजा (अधिकारी अथवा मंत्री) द्वारा उत्पन्न सभी प्रकार के विज्ञों का शमन हो जाता है। (५-६)

इस कवच का पाठ करने वाले साधक का सभा (संगोष्ठी) अथवा राजगृह में राजा के समान आदर होता है। इसका पाठ करने वाला सभी स्थानों में विजयी होता है। श्रीयोनि संगम में पाठ करने वाला उत्तम साधक समस्त सिद्धियां प्राप्त करता है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिए। (७-८)

यदि कोई साधक योनिकवच के साथ मातृकाक्षर लगाकर पाठ करता है तो वह अनेक प्रकार के भौतिक सुखों को भोगता है। हे देवि! समस्त धर्मों में सर्वोत्तम इस गुप्ततम कवच को मैंने आपसे कहा है। इस कवच को भोजपत्र अथवा ताङ्गपत्र पर पीले चन्दन अथवा रोली

(कुंकुम) से लिखकर जो व्यक्ति अपने कंठ अथवा शिखा में धारण करता है, वह निश्चय ही ईश्वरतुल्य हो जाता है। (९-१०-११)

शरत्काल (आश्विन मास) में, महाअष्टमी या महानवमी तिथि में जो साधक पूजन करने के बाद इसका पाठ करता है, उसे प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिए। (१२)

(इति शक्तिकागमसर्वस्वे हरगौरीसंवादे श्रीयोनिकवचं समाप्तम् ।)

ॐ

॥ कुण्डलिनीस्तोत्रम् ॥

श्रीशिव उवाच—

ॐ तडिल्कोटि प्रभदीप्ति - चंद्रकोटि सुशीतलाम् सार्द्ध-
त्रिवलयाकार - स्वयम्भूलिंगवेष्टिताम् ॥१॥

उत्थापयेन्महादेवीं महारक्तां मनोन्मनीम्।
श्वासोच्छासादुदगच्छन्तीं द्वादशांगुलरूपिणीम् ॥२॥

योगिनीं खेचरीं वायुरूपां मूलाम्बुजस्थिताम्।
चातुर्वर्णस्वरूपां तां वकारादि - समस्तकाम् ॥३॥

कोटि कोटि - सहस्रार्क - किरणोञ्जलमोहिनीम्।
महासूक्ष्मपथप्रान्त - रान्तरान्तर - गामिनीम् ॥४॥

त्रैलोक्यरक्षितां वाक्य - देवताशब्दरूपिणीम्।
महाबुद्धिप्रदां देवीं सहस्रदलगामिनीम् ॥५॥

महासूक्ष्मपथे तेजोमयीं सत्यस्वरूपिणीम्।
कालरूपां ब्रह्मरूपां सर्वत्र सर्वविन्मयीम् ॥६॥

जन्मोद्घारिणी रक्षिणीह तरुणी वेदादिबीजादिना नित्यं
चेतसि भाव्यते भुवि कदा मद्वाक्यसंचारिणी।

मां पातु प्रियदा सदा सविपदं संख्यातय श्रीधरे धात्री त्वं
स्वयमादिदेववनिता दीनातिदीनं परम् ॥७॥

रक्ताभाषृत चन्द्रिका लिपिमयी सर्पाकृतिर्निर्दिता जग्रद्-
धर्म-समाश्रिता भगवती त्वं स्वांशलोकाश्रया।

मांसोद्गन्धक-दोषजालजडितं वेदादिकार्यान्वितं संपाल्या-
मल-कोटिचन्द्रकिरणे नित्यं शरीरं कुरु॥८॥

सिध्यर्थी निजदोषवित् खलगति-व्याधीयते विद्यमा
कुण्डला कुलमार्गयुक्तनगरी सायाह्नमाज्ञाश्रया।

यद्येवं भजति प्रभात समये मध्याह्नकालेऽथवा नित्यं यः
कुलकुण्डली-निजपदाम्भोजं स सिद्धो भवेत्॥९॥

यो वाकाशचतुर्दर्दलेऽतिविमले वाञ्छाफलोन्मूलके नित्यं
सम्प्रति नित्यदेशघटिता संकेतिता भाविता।

विद्या कुन्तलमालिनी स्वजननी सारक्रिया भाव्येत्, यै-स्तैः
सिद्धकुलोद्भवैः प्रणतिभिः कीर्त्या परं शम्भूभिः॥१०॥

वाचा शंकरमोहिनी त्रिवलयाच्छायापटोद्गामिनी
संसारादि-महासुखप्रहननी नेत्रस्थिता योगिनी।

सर्वाग्रन्थविनोदिनी सुभुजगा सूक्ष्मातिसूक्ष्मा परा ब्रह्म-
ज्ञानविनोदिनी कुलकुठाराघातिनी भाव्यते॥११॥

वन्दे श्रीकुलकुण्डलीं त्रिवलिभिः साद्दं स्वयम्भूप्रियां
प्रवेष्टयासुर-सारचित्तचपला वाला वला निष्फला।

या देवी परिभाति वेदवदना सम्भावना भावना तामिष्टां
शिरसि स्वयम्भुवनितां सम्भावयामि क्रियाम्॥१२॥

वाणी कोटिमृदंगनादनदना निःश्रेणिकोटिध्वनिः प्राणेशी
रसधाम-मूलक मलोल्लासैकपूर्णानिना।

आषाढ़ोद्भवमेघराजनियुतध्वान्तान्तरस्थायिनी माता सा
परिपातु सूक्ष्मपथगे मां योगिनं शंकरु॥१३॥

त्वामाश्रित्य नराद्रजन्ति सहसा वैकुण्ठकैलासयोरानन्दैक
विलासिनीं शशिपदानन्दाननाकारिणीम्।

मातः श्रीकुलकुण्डलि प्रियकले काले कुलोद्दीपने भूतस्थां
प्रणमामि रुद्रवनितां मामुद्धरत्वं पथ्य॥१४॥

कुण्डलीशक्तिमार्गस्थं स्तोत्राष्टकं महाफलम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय स योगी भवति ध्रुवम्॥१५॥
क्षणादेव हि पाठेन कविनाथो भवेदिह।
परत्र कुण्डलीयोगाद् ब्रह्मलीनो भवेन्महान्॥१६॥
इति ते कथितं नाथ कुण्डलीकोमलस्तवम्।
एतत्स्तोत्रं प्रसादेन देवेषु गीष्यतिर्गुरुः॥१७॥
सर्वे देवाः सिद्धियुक्ता अस्याः स्तोत्रप्रसादतः।
द्वापराद्वचिरंजीवी ब्रह्मा सर्वसुरेश्वः॥१८॥
त्वञ्चापि मम सनिध्ये स्थितो भगवतीपतिः।
मां बिद्धि परमां शक्तिं स्थूलसूक्ष्मस्वरूपिणीम्॥१९॥
सर्वप्रकाशकरणीं विन्यपर्वतवासिनीम्।
हिमालयसुता सिद्धां सिद्धमन्त्रस्वरूपिणीम्॥२०॥
वेदान्तशक्तितन्त्रस्थां कुलतन्त्रार्थगामिनीम्।
रुद्रयामलमध्यस्थां स्थितिस्थायकं भावनाम्॥२१॥
पञ्चमुद्रास्वरूपाज्ञां शक्तियामलमलिनीम्।
रत्नमालावलाकाद्यां चन्द्रसूर्यप्रकाशिनीम्॥२२॥
सर्वभूतमहाबुद्धीदायिनीं दानवापहाम्।
स्थित्युत्पत्तिलयकरीं करुणासागरस्थिताम्॥२३॥

महामोहनिवासाद्यां दामोदरशरीरगाम्।
 छत्रचामररत्नाद्यांमहाशलकरां पराम्॥२४॥
 ज्ञानदां बुद्धिदां विद्यां रत्नमालाकलापदाम्।
 सर्वतेजः स्वरूपां मामनन्त कोटि विग्रहाम्॥२५॥
 दरिद्र धनदां लक्ष्मीं नारायणमनोरमाम्।
 सदा भावय शम्भो त्वं योगनायकपण्डित॥२६॥
 (इति श्रीरुद्रव्यामले उत्तरखण्डे कुण्डलिनीस्तोत्रं समाप्तम् ।)

ॐ

अध्याय 10

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान

1. अक्षरी मन्त्र— त्रीं त्रीं त्रीं।

विनियोग— ॐ अस्य मन्त्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री कामाख्या देवता, सर्वार्थं सिद्धर्थं जपे विनियोगः।

विनियोग करने के उपरान्त न्यास आदि करें—

षडंगन्यास— त्रां हृदयाय नमः। त्रीं शिरसे स्वाहा। त्रूं शिखायै वषट्। त्रैं कवचाय हुम्। त्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। त्रः अस्त्राय फट्।

करन्यास— त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। त्रीं तर्जनीभ्यां नमः। त्रूं मध्यमाभ्यां नमः। त्रैं अनामिकाभ्यां नमः। त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। त्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

इसके उपरान्त भगवती कामाख्या का ध्यान निम्नवत् करें—

॥ ध्यान ॥

रक्तवस्त्रां वरोद्युक्तां सिंदूर तिलकान्विता, निष्कलंका सुधाधाम वदन कमलोज्ज्वलाम्।

स्वर्णादिमणि माणिक्य भूषणैर्भूषितां परा, नानारत्नादि
निर्माण सिंहासनोपरि स्थिताम्॥

हास्यवक्रां पद्मरागमणि कांतिमनुत्तमा, पीनोन्तुंगकुचा
कृष्णां श्रुतिमूल गतेक्षणाम्।

कटाक्षैश्च महासम्पददायिनीं हरमोहिनीं, सर्वांगसुन्दरी
नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्।

डाकिनी योगिनी विद्याधरीभिः परिशोभितां,
कामिनीभिर्युतां नानागन्धाढ्यैः परिगन्धताम्।

ताम्बूलादि कराभिश्च नायिकाभिर्विराजितां, समस्तसिद्ध
वर्गाणां प्रणतां च प्रतीक्षणाम्॥

त्रिनेत्रां मोहनकरीं पुष्प चापेषु विभ्रतीं, भगलिंग समाख्यानां
किनरीभ्योऽपि नृत्यताम्।

वाणी लक्ष्मी सुधावाक्य प्रतिवाक्य समुत्सकाम्, अशेषगुण
सम्पन्नां करुणासागरां शिवाम्॥

उपर्युक्तानुसार ध्यान करके देवी के मन्त्र का एक लाख की
संख्या में जप करें। तदोपरान्त धी, शक्कर, शहद तथा खीर से दश
हजार मन्त्रों से हवन करें। फिर चन्दन मिश्रित स्वच्छ जल से एक
हजार मन्त्रों से तर्पण करके उत्तम गंधादि द्रव्यों से एक सौ बार
मार्जन करें। फिर म्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा
आदि प्रदान कर अपने माता-पिता से आशीर्वाद प्राप्त करके स्वगुरु
को यथायोग्य दक्षिणा आदि भेंट करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

2. द्विविंशत्यक्षर मन्त्र— त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये
प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं स्वाहा।

विनियोग— ॐ अस्य मन्त्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, श्री कामाख्या देवता, सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

विनियोग करने के उपरान्त न्यास आदि करें—

षडंगन्यास— त्रां हृदयाय नमः। त्रीं शिरसे स्वाहा। त्रूं
शिखायै वषट्। त्रैं कवचाय हुम्। त्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। त्रः
अस्त्राय फट्।

करन्यास— त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। त्रीं तर्जनीभ्यां नमः। त्रूं
मध्यमाभ्यां नमः। त्रैं अनामिकाभ्यां नमः। त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां
नमः। त्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

इसके उपरान्त भगवती कामाख्या का ध्यान निम्नवत् करें—

॥ ध्यान ॥

अतिसुललितवेशां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां, जित जलदसुकान्ति
पट्टवक्त्रां प्रकाशाम्।

अभयवर कराढ्यां रत्नभूषामि भव्यां, सुरतरुतलपीठे
रत्नसिंहासनस्थाम्॥

हरिहरविधि वंद्यां शुद्धबुद्धि स्वरूपाम्, मदनशर संयुक्तां
कामिनीं कामदात्रीम्।

निखिलजन विलासां कामरूपां भवानीं कत्रिकलुपा निहन्त्रीं
योनिरूपा स्मरामि॥

(इस मन्त्र में तारा बीज 'त्रीं' तथा वधू बीज 'स्त्री' का प्रयोग
हुआ है, जिस कारण यह शीघ्र ही सिद्धि प्रदान करने वाला है। मन्त्र
के आरम्भ में प्रणव 'ॐ' लगाने से यह विद्या धर्म, अर्थ, काम तथा
मोक्ष प्रदान करने वाली हो जाती है।)

उपर्युक्तानुसार ध्यान करके इस मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करें। जप का दशांश हवन धी, शक्कर, शहद तथा खीर से करें। फिर रक्त चन्दन मिश्रित जल से तर्पण करके उत्तम गंधादि मिश्रित जल से मार्जन, अभिषेक करें। तर्पण करते समय मन्त्र के अन्त में ‘तर्पयामि’ तथा मार्जन के समय ‘मार्जयामि’ लगाकर मन्त्र का उच्चारण करें। तदोपरान्त ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथोचित् दक्षिणा आदि प्रदान करें। माता-पिता तथा गुरुदेव का आशीर्वाद लें।

यन्त्रार्चन ‘कामकलाकालि’ के समान करना चाहिए। यन्त्र के मध्य त्रिकोण में ‘ब्री’ लिखें। यन्त्र में देवी की उपस्थिति की भावना करके घोड़शदल की भावना करते हुए उसमें 16 देवियों का पूजन निम्नवत् करें—

ॐ अनन्दायै नमः, ॐ धनदायै नमः, ॐ सुखदायै नमः, ॐ जयदायै नमः, ॐ रसदायै नमः, ॐ मोहदायै नमः, ॐ ऋद्धिदायै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः, ॐ वृद्धिदायै नमः, ॐ शुद्धिदायै नमः। ॐ भुक्तिदायै नमः। ॐ मुक्तिदायै नमः। ॐ मोक्षदायै नमः, ॐ शुभ्रायै नमः, ॐ ज्ञानदायै नमः। ॐ कान्तिदायै नमः।

भगवती के दाहिने ‘लक्ष्मी’ तथा बायीं ओर ‘सरस्वती’ देवी का पूजन करें। घट्कोण में पूर्वादि क्रम में डाकिनी, शाकिनी, काकिनी, राकिनी, हाकिनी तथा लाकिनी योगनियों का पूजन करें। अन्य देवताओं का अर्चन कामकलाकालि के यन्त्र में होने वाली पूजा के समान करें।

भगवती कामाख्या की पूजा में पंचमकार साधना प्रमुख मानी

जाती है और महामुद्रा-पीठ होने के कारण यहां 'योनि-पूजन' का विशेष महत्व है। इसीलिए कहा गया है कि—

“महाप्रीतिकरी पूजा योनिचक्रे कुलेश्वरि॥

योनिपूजा महापूजा तत्समा नास्ति सिद्धिदा॥ (3/53)

शक्ति-पूजन के विषय में कहा गया है कि—

स्वयम्भू कुसुमेनैव तिलकं परिकल्प्य च।

तूलिकायां महादेवि कुलशक्तिं समाविशेत्॥

कर्पूरितमुखः साधकश्चुम्बयेन्मुदा।

तस्याधरं यथा भृंगो नीरज व्याकुलः प्रिये॥

दन्तक्षति वितानां च परमं तत्र कारयेत्।

आलिंगयेन्मदोन्मत्तः सुदृढं कुचमर्दनम्॥

नखाधातैर्नितम्बे च रमयेद् रतिपण्डितः।

पुनः पुनश्चुम्बनं च योनौ कुर्यात् कुलेश्वरि॥

शुक्रन्तु स्तंभयेत् वीरो योनौ लिंगं प्रवेशयेत्।

आधातैस्तोषयेत्तांतु सन्धानं भेदतः प्रिये॥

ततो लिंगे स्थिते यौनो आज्ञां तस्याः प्रगृह्ण च।

अष्टोन्तरशतं मन्त्रं जपेद् होमादि कांक्षया॥

(कामाख्या तन्त्रम् 4/22-27)

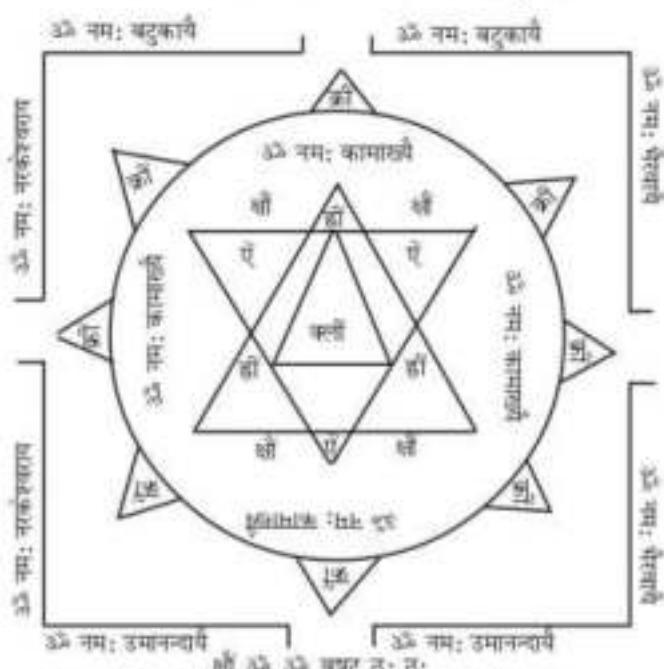
॥ प्रयोग ॥

1. स्वमूत्र को अपने बायें हाथ में लेकर 'भैरवी' का तर्पण करने से शत्रु का उच्चाटन व मारण सिद्ध होता है।
2. स्वमूत्र को 'हूं' बीज से अभिमन्त्रित करके भैरवी का तर्पण

करें तथा शत्रु का नाम लेकर अमुकं दह-दह का उच्चारण करके मूत्र को स्वयं पी जायें। महापीठ पर, दशों दिशाओं में तथा अपने मुख पर छिड़ककर नग्नावस्था में इधर-उधर घूमते हुए जप करने से शत्रुनाश होता है। रक्त, मूत्र और वीर्य से धृणा करने वाले साधक का स्वयं नाश हो जाता है। अतः इनसे धृणा न करें।

3. स्वमूत्र को भैरव मन्त्र 'हम्म' से शुद्ध करके सिद्ध साधक यदि शत्रु का नाम लेकर फेंक दे तो शत्रु पागल हो जाता है।
4. मिट्टी का एक पात्र लेकर उसमें साध्य व्यक्ति (शत्रु) का नाम लिखकर उसे 'यं' बीज से पुटित करके उस पर स्वमूत्र छिड़के और 'ह्रीं' बीज एवं मूल मन्त्र का 108 बार जप करे तो शत्रु पागल हो जाता है।

॥ श्री कामाख्या यन्त्रम् ॥



॥ तान्त्रिक पद्धति ॥

॥ विशिष्ट शाक्त साधकों हेतु श्री कामाख्या-पूजन-विधान ॥

भगवती कामाख्या साधक की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली महाशक्ति हैं। यदि उनका पूजन आदि उचित विधि-विधान से सम्पन्न किया जाये तो कोई कारण नहीं कि साधक को जीवन में किसी भी प्रकार की अपूर्णता प्रतीत हो। इसी संदर्भ में यहां शाक्त सम्प्रदाय के विशिष्ट साधकों हेतु अति गोपनीय पूजन-विधान का उल्लेख किया जा रहा है। परन्तु इस विधान को केवल दीक्षित शिष्य ही करने के पात्र हैं क्योंकि कामाख्या महाविद्या कुल परम्परा के अंतर्गत आती है। कुल परम्परा के अभाव में न तो व्यक्ति इस पूजा-विधान को करने के लिए पात्र होता है और न ही उसे यह विद्या फल प्रदान करती है। इसलिए आवश्यक है कि अपने गुरुदेव से दीक्षा लेकर एवं तत्व ज्ञान को जानकार ही यह पूजन-विधि अपनायें।

विधान— साधक रात्रिकाल में दस बजे के करीब स्नानादि करके तथा स्वच्छ लाल वस्त्र धारण करके अपने पूजा कक्ष में प्रवेश करके आसन ग्रहण करें। आचमन, धूप-दीप आदि करके श्री कामाख्या के चित्र तथा यन्त्र को प्रणाम करके भगवती का कवच-पाठ करें।

॥ कवच ॥

ॐ कामाख्याकवचस्य मुनिर्बृहस्पतिः स्मृतः।
देवी कामेश्वरी तस्य अनुष्टुप्छन्द इष्यते॥

विनियोगः सर्वसिद्धौ तज्च शृणवन्तु देवताः।
 शिरः कामेश्वरी देवी कामाख्या चक्षुषी मम॥
 शारदा कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं तथा।
 कण्ठे पातु महामाया हृदि कामेश्वरी पुनः॥
 कामाख्या जठरे पातु शारदा पातु नाभितः।
 त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु महामाया तु मेहने॥
 गुदे कामेश्वरी पातु कामाख्योरुद्धये तु माम्।
 जानुनीः शारदा पातु त्रिपुरा पातु जंघयोः॥
 महामाया पादयुगे नित्यं रक्षतु कामदा।
 केशे कोटेश्वरी पातु नासायां पातु दीर्घिका॥
 (शुभगा) दन्तसंधाते मातड़ग्यवतु चांगयोः।
 बाह्नोर्मा ललिता पातु पाण्योस्तु वनवासिनी॥
 विन्ध्यवासिन्यड़गुलीषु श्रीकामा नखकोटिषु।
 रोमकूपेषु सर्वेषु गुप्तकामा सदावतु॥
 पादांगुलिपार्थिभागे पातु मां भुवनेश्वरी।
 जिह्वायां पातु मां सेतुः कः कण्ठाभ्यन्तरेऽवतु॥
 पातु नश्चान्तरे वक्षः ईः पातु जठरान्तरे।
 सामिन्दुः पातु मां वस्तौ विन्दुविर्वद्धन्तरेऽवतु॥
 ककारस्त्वचि मां पातु रकारोऽस्थिषु सर्वदा।
 लकारः सर्वनाडिषु ईकारः सर्वसन्धिषु॥
 चन्द्रःस्नायुषु मां पातु विन्दुर्मञ्जासु सन्ततम्।
 पूर्वस्यां दिशि चाग्नेयां दक्षिणे नैऋति तथा॥

वारुणे चैव वायव्यां कौवेरे हरमन्दिरे।
 अकाराद्यास्तु वैष्णवा अष्टौ वर्णास्तु मन्त्रगाः॥
 पान्तु तिष्ठन्तु सततं समुद्भवविवृद्धये।
 ऊर्ध्वाधः पातु सततं मान्तु सेतुद्वयं सदा॥
 नवाक्षराणि मन्त्रेषु शारदा मन्त्रगोचरे।
 नवस्वरास्तु मां नित्यं नासादिषु समन्ततः॥
 वातपित्तकफेभ्यस्तु त्रिपुरायास्तु त्र्यक्षरम्।
 नित्यं रक्षतु भूतेभ्यः पिशाचेभ्यस्तथैव च॥
 तत् सेतु सततं पाता क्रव्यादभ्यो मानिवारकौ।
 नमः कामेश्वरी देवीं महामायां जगन्मयीम्।
 या भूत्वा प्रकृतिर्नित्यं तनोति जगदायतम्॥
 कामाख्यामक्षमालाभयवरदकरां सिद्धसूत्रैकहस्तां
 श्वेतप्रेतोपरिस्थां मणिकनकयुतां कुंकमापीत-
 वर्णाम्।

ज्ञानध्यानप्रतिष्ठामतिशयविनयां ब्रह्मशक्रादिवन्दा
 मग्नौ विन्दुन्तमन्त्रप्रियतमविषयां नौमि विद्ध्यैरति-
 स्थाम्॥

मध्ये मध्यस्य भागे सततविनिमिता भावहारावली
 या

लीला लोकस्य कोष्ठे सकलगुणयुता व्यक्त-
 रूपैकनप्रा।

विद्या विद्यैकशान्ता शमनशमकरी क्षेमकर्त्री वरास्या

नित्यं पायात् पवित्रप्रणववरकरा कामपूर्वेश्वरी नः॥

इति ह(रे:) कवचं तनुकेस्थितं शमयति व्यतिक्रम्य शिवे
यदि।

इह गृहाण यतस्व विमोक्षणे सहित एष विधिः सह
चामरैः॥

इतीन्दं कवचं यस्तु कामाख्यायाः पठेद् बुधः।

सुकृतं तु महादेवी तनु व्रजति नित्यदा॥

नाधिव्याधिभयं तस्य न क्रव्यादभ्यो भयं तथा।

नागिनतो नापि तोयेभ्यो न रिपुभ्यो न राजतः॥

दीर्घायुर्बहुभोगी च पुत्रपौत्रसमन्वितः।

आवर्त्यन् शतं देवी मन्दिरे मोदते परे॥

यथा तथा भवेद् बद्धः संग्रामेऽन्यत्र वा बुधः।

तत्क्षणादेव मुक्तः स्यात् स्मरणात् कवचस्य तु॥

कवच-पाठ के उपरान्त मृत्युंजय मन्त्र पढ़ते हुए भस्म अपने
ललाट पर लगायें। स्मरण रखें कि दोपहर से पूर्व भस्म लगाना हो तो
जल से गीला करके लगाना चाहिए। रात्रि में भस्म सूखा ही लगाया
जाता है। भस्म (त्रिपुण्ड) तर्जनी, मध्यमा और अनामिका उंगलियों से
लगाया जाता है। अंगूठे और कनिष्ठिका उंगली का प्रयोग इसमें नहीं
करते। त्रिपुण्ड की तीनों रेखायें ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान
नीचे से ऊपर की ओर होती हैं।

‘त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योमुक्षीय मामृतात्॥’

इसके उपरान्त त्रिपुण्ड के मध्य में तीनों रेखाओं को स्पर्श करती हुई रोली की लाल विन्दि लगायें। यह विन्दि या टीका देवी स्वरूप होता है। इसके उपरान्त रुद्राक्ष माला धारण करके आचमन करें, यथा—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आत्मतत्त्वाय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवतत्त्वाय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वाय स्वाहा।

इसके बाद मूल मन्त्र से शिखा-बंधन करके तीन बार प्राणायाम करें। फिर हाथ में जल लेकर तीन बार शिर पर छिड़कें और वायें पैर से तीन बार भूमि पर आधात करते हुए “ॐ श्लीं पशु हुं फट्” का उच्चारण करें। फिर तीन बार ‘अमृत मालिन्यै स्वाहा’ बोलते हुए अपने ऊपर जल छिड़कें। दोनों हाथ जोड़कर ‘कामाख्या स्तोत्र’ का पाठ करें—

॥ स्तोत्र ॥

जय कामेशि चामुण्डे जय भूतापहारिणि।

जय सर्वगते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

विश्वमूर्ते शुभे शुद्धे विरूपाक्षि त्रिलोचने।

भीमरूपे शिवे विद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

मालाजये जये जम्भे भूताक्षि क्षुभितेऽक्षये।

महामाये महेशानि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

भीमाक्षि भीषणे देवि सर्वभूतक्षयंकरि।

कालि विकरालि च कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान { 181 }

कालि करालविक्रान्ते कामेश्वरि हरप्रिये।
 सर्वशास्त्रसारभूते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 कामरूपप्रदीपे च नीलकूटनिवासिनि।
 निशुम्भशुम्भमथनि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 कामाख्ये कामरूपस्थे कामेश्वरि हरप्रिये।
 कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 वपानाद्य (महा)वक्त्रे (तथा)त्रिभुवनेश्वरि।
 महिषासुरवधे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 छागतुष्टे महाभीमे कामाख्ये सुरवन्दिते।
 जय कामप्रदे तुष्टे कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 भ्रष्टराज्यो यदा राजा नवम्यां नियतः शुचिः।
 अष्टम्याज्य चतुर्दर्श्यामुपवासी नरोत्तमः॥
 संवत्सरेण लभते राज्यं निष्कंटकं पुनः।
 य इदं शृणुयाद् भक्त्या तव देवि समुद्भवम्॥
 सर्वपापविनिर्मुक्तः परं निर्वाणमृच्छति।

श्रीकामरूपेश्वरि भास्करप्रभे प्रकाशिताम्भोज-
 निभायतानने।

सुरारिक्षःस्तुतिपातनोत्सुके त्रयीमये देवनुते नमामि॥
 सितासिते रक्तपिण्डगविग्रहे रूपाणि यस्याः प्रति-
 भान्ति तानि।

विकाररूपा च विकल्पितानि, शुभाशुभानामपि तां
 नमामि॥

कामरूपसमुद्भूते कामपीठावतंसके।
 विश्वाधारे महामाये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 अव्यक्तविग्रहे शान्ते सन्तते कामरूपिणि।
 कालगम्ये परे शान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 या सुषुम्नान्तरालस्था चिन्त्यते ज्योतियपिणी।
 प्रणतोऽस्मि परां वीरां कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 दंष्ट्राकरालवदने मुण्डमालोपशोभिते।
 सर्वतः सर्वगे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 चामुण्डे च महाकालि कालि कपालहारिणि।
 पाशहस्ते दण्डहस्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
 चामुण्डे कुलमालास्ये तीक्ष्णदंष्ट्रे महाबले।
 शब्दयानस्थिते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते॥

स्तोत्र-पाठ के उपरान्त ग्यारह बार “ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यायै स्वाहा” मन्त्र का उच्चारण करें। इसके बाद गुरु-पादुका-पूजन करें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हस्त्यें ह स क्ष म ल व र यूं स्हस्त्यें स ह क्ष म ल व र यीं हंसः सोऽहं हसौ स्हौ स्वरूपनिरूपण हेतवे स्व गुरवे श्री योगेश्वरानन्द नाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हस्त्यें ह स क्ष म ल व र यूं स्हस्त्यें स ह क्ष म ल व र यीं हंसः सोऽहं हसौ स्हौ स्वच्छ प्रकाश विमर्श हेतवे श्री परमगुरवे नमः श्री परमगुरु श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं हीं क्लीं हस्त्रे ह स क्ष म ल व र यूं स्हस्त्रे स
ह क्ष म ल व र यीं हंसः सोऽहं हसौ स्हौ स्वात्माराम
पञ्जरविलीन तेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवे नमः श्रीपरमेष्ठि गुरु
श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परमगुरवे धीमहि।

तनो गुरुः प्रचोदयात्।

इसके बाद अर्ध्य प्रदान करें— “शिवचैतन्यमयाय श्री गुरवे
इदं अर्ध्यं स्वाहा।” पुनः आचमन करके प्रणव आदि मूल मन्त्र
बीज से घड़गन्यास करके गुरु का ध्यान करते हुए यथाशक्ति गायत्री
मन्त्र का जप करके गुरु को निवेदित करें—

गुह्याति-गुह्य-गोष्ठा त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु श्रीनाथ त्वत्प्रसादान्महेश्वरः॥

इसके बाद घुटनों के बल बैठकर निम्नाकित मन्त्रों से अर्ध्य
प्रदान करें। अर्ध्य के लिए जल पात्र में पुष्प, गन्ध, अक्षत् जल के
साथ मिला लें।

ॐ भूः भुवः स्वः ॐ कामाक्षयै चामुण्डायै विद्महे,
भगवत्यै धीमहि, तनो गौरी प्रचोदयात्।

एकदन्ताय विद्महे, चक्रतुण्डाय धीमहि, तनो दन्ती
प्रचोदयात्।

ॐ दसमहाविद्यायै विद्महे, शिव अधिष्ठात्र्यै च धीमहि,
तनो दसमहाविद्या प्रचोदयात्।

ॐ कृष्णाकायाम्बिकाय विद्महे, पार्वती रूपाय च धीमहि,
तनो कालिका प्रचोदयात्।

ॐ पंचवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तनो शिवः
प्रचोदयात्।

ॐ पक्षि शाल्वाय विद्महे, वज्रतुण्डाय धीमहि, तनो
शरभः प्रचोदयात्।

ॐ ज्ञानप्रदाय विद्महे त्रिदेवस्वरूपाय च धीमहि तनो
गुरुः प्रचोदयात्।

ॐ आदिपुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तनो रुद्रः
प्रचोदयात्।

ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि तनो सूर्यः
प्रचोदयात्।

ॐ आपदुद्धारणाय विद्महे बटुकेश्वराय धीमहि तनो
बीरः प्रचोदयात्।

इसके उपरान्त “अनेन तर्पणाख्येन कर्मणा श्री कामाख्या
प्रीयताम्” बोलते हुए जल का विसर्जन करें।

इसके बाद पुनः पूजा कक्ष के द्वार पर आकर “ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
द्वाराधिष्ठित गणेशादि देवताभ्यो नमः” बोलकर द्वार-पूजन
करें, द्वार-देवता से मानसिक अनुमति प्राप्त करके दाहिने पैर से पूजा
कक्ष में प्रवेश करें तथा निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः।

सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इससे पीली सरसों को अभिमन्त्रित करके पूजा कक्ष में चारों

ओर विखेर दें। तदोपरान्त नैऋत्यकोण में— ‘वास्तु पुरुषाय नमः’ से पूजन करें। ईशानकोण में त्रिकोण बनाकर थोड़े अक्षत् रखकर उस पर दीप की स्थापना करके “ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तवर्ण द्वादश शक्तिसहिताय दीपनाथाय नमः” बोलकर पूजन करें तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

भो दीप देवी-रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिःस्यात् तावत्वं सुस्थिरोभव॥

तदोपरान्त गंधाक्षत् से पीठ-पूजन करते हुए घण्टा वादन करें तथा ‘ॐ जय छ्वनि मन्त्र मातः स्वाहा’ बोलकर देवी-पूजन हेतु भैरव जी से मानसिक आज्ञा प्राप्त करें—

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥

इसके बाद शिखा-बन्धन करें— “ॐ मणिधारिणि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा” मन्त्र का उच्चारण करें। फिर भगवती के बायें तेल तथा दायें धी का दीपक प्रज्ज्वलित करें, दीप पूजन करें— “ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तवर्ण द्वादश शक्तिसहिताय दीपनाथाय नमः।” हाथ जोड़कर मन्त्र पढ़ते हुए प्रार्थना करें—

भो दीप देवी-रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिःस्यात् तावत्वं सुस्थिरोभव॥

इस प्रकार निवेदन करके अंगूठा व तर्जनी उंगली को मिलाकर ‘अस्त्र मन्त्र’ से दिग्बन्धन करें—

“ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्” बोलते हुए अपने चारों ओर अग्नि-पुंज (वृत्ताकार) की भावना करें। इसके उपरान्त भगवती

के पूजन एवं मन्त्र-जप हेतु हाथ में जल व रक्त पुण्य लेकर संकल्प लें—

हरिः ॐ तत्सत् श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपराङ्में श्री श्वेत वाराहकल्पे जम्मूद्धीपे भरतखण्डे आर्यावर्तेंक देशान्तर्गते श्री मद्विष्णुप्रजापति क्षेत्रे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे अमुक क्षेत्रे (यथा प्रयाग क्षेत्रे, विंध्य क्षेत्रे, काष्ठ क्षेत्रे इत्यादि) अमुक नाम संवत्सरे मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे श्रुतिस्मृति- पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुक शर्माहं (ब्राह्मण शर्मा कहें क्षत्रिय वर्मा और वैश्य गुप्त कहें) सकलदुरितोपशमनं सर्वापच्छान्ति पूर्वक अमुक (यदि कोई मनोरथ हो) मनोरथ सिद्ध्यर्थं यथासंपादित सामिग्र्या श्री कामाख्यादेवी पूजनं करिष्ये॥

संकल्प करके दोनों हाथ अपने हृदय पर रखकर भगवती का ध्यान करें—

॥ ध्यान ॥

रविशशियुतकर्णा कुंकुमापीतवर्णा,
मणिकनकविचित्रा लोलजिह्वा त्रिनेत्रा।
अभयवरदहस्ता साक्षसूत्रप्रहस्ता,
प्रणतसुरनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
अरुण-कमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था,
नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान (187)

शबहृदि पृथुतुंगा स्वांघि, युग्मा मनोज्ञा,
 शिशुरविसमवस्त्रा सर्वकामेश्वरी सा।
 विपुलविभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी,
 दलितकरकदन्ता सामिचन्द्रावनभा।
 मनसिज-दृशदिस्था योनिमुद्रालसन्ती।
 पवनगगनसक्तां संश्रुतस्थानभागा॥
 चिन्त्या चैवं दीप्यदग्निप्रकाशा,
 धर्मार्थाद्यैः साधकैर्वाञ्छितार्थः॥
 अतिसुललित वेशां हास्य वक्त्रां त्रिनेत्राम्।
 जित जलद सुकान्ति पटटवस्त्र प्रकाशाम्॥
 अभय वर कराढयां रत्न भूषति भव्याम्।
 सुर तरुतल पीठे रत्न सिंहासनस्थाम्॥
 हरि हर विधि वन्द्यां बुद्धि वृद्धिं स्वरूपाम्।
 मदनशर समाक्तां कामिनीं काम दात्रीम्॥
 निखिल जन विलासोल्लास रूपां भवानीम्।
 कलिकलुष निहन्त्रीं योनि रूपां भजामि॥

इसके बाद अपने हृदय पर दाहिना हाथ रखकर उसमें भगवती कामाख्या की प्राण-प्रतिष्ठा निम्नांकित मन्त्रों से करें—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोऽहं हंसः
मम प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोऽहं हंसः
मम जीव इह जीवः स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोऽहं हंसः
मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

फिर “ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यायै स्वाहा” मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें।

तदोपरान्त भगवती कामाख्या का मानसोपचार पूजन करें, यथा—

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मकं पुष्टं
समर्पयामि। यं वाच्यात्मकं धूपं समर्पयामि। रं ब्रह्मात्मकं दीपं
समर्पयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। सं सर्वात्मकं
ताम्बूलं समर्पयामि।

इसके बाद भूतशुद्धि करें—

भूतशुद्धि— इस प्रक्रिया में पंचभूतों से बने अपने शरीर के विशेष स्थानों पर पंच महाभूतों की क्रम से शुद्धि की जाती है। मनुष्य के पैरों से लेकर जानू तक का स्थान पृथ्वी तत्व का स्थान है। जानू से नाभि तक का स्थान जल तत्व का स्थान है। नाभि से हृदय तक का स्थान अग्नि तत्व का स्थान होता है। हृदय से लेकर दोनों भौंहों के मध्य तक का स्थान वायु तत्व का स्थान होता है और भूमध्य से ब्रह्मरन्ध्र (कपाल) तक का स्थान आकाश तत्व का स्थान होता है।

इस प्रकार पंचतत्वों का शरीर में ध्यान करके उनका एक-दूसरे में प्रविलाप करें। परब्रह्म की दिव्य चेतना शक्ति मूलाधार चक्र में सर्पिणी रूप में शिवलिंग के साढ़े तीन घेरे में लिपटी हुई है। इस कुण्डलिनी में स्व इष्ट भगवती कामाख्या का ध्यान करते हुए उसे जाग्रत करके सुपुम्ना मार्ग से ले जाते हुए ब्रह्मरन्ध्र में स्थित परब्रह्म

से मिलायें तथा 'ॐ हंसः सोऽहं' मन्त्र का स्मरण करते हुए हृदयकमल से जीव तत्व को उठाकर ब्रह्मरंध्र में परब्रह्म के साथ संयोजन करके जीव को ब्रह्ममय बनायें। इसके उपरान्त पंचतत्वों का एक-दूसरे में प्रविलापन करें। पृथ्वी तत्व की जल तत्व में लय की भावना करें ॐ भुवं जले प्रविलापयामि, जल की अग्नि में ॐ जलं अग्नौ, अग्नि की वायु में अग्निं वायौ, वायु की आकाश में वायुं आकाशे, आकाश की अहंकार में आकाशं अहंकारे, अहंकार का महत्तत्व में अहंकारं महत्तत्वे, महत्तत्व का प्रकृति में महत्तत्वं प्रकृतौ, प्रकृति का आत्मा में प्रकृतिं आत्मनि का प्रविलाप करके भावना करें कि आत्मा शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप है जो मैं हो गया हूँ। (जो साधक भूतशुद्धि का पूर्ण विधान न कर सकें उन्हें 'ॐ हौं' मन्त्र का 108 बार जप कर लेना चाहिए, इससे भी शरीर-शुद्धि होती है।)

इसके उपरान्त स्वशरीर में स्थित पाप पुरुष का चिन्तन करके उसका दहन करें। वाम नासिका (वायें स्वर) से यं बीज का उच्चारण करते हुए 16 बार पूरक करें, रं बीज से 64 बार कुम्भक करें अर्थात् भीतर सांस रोककर 64 बार रं का जप करें। फिर यं बीज का 32 बार उच्चारण करते हुए दाहिने स्वर से रेचक करें अर्थात् श्वांस छोड़ें।

इस प्रक्रिया में कल्पना की जाती है कि हमारी वायीं कोख में अंगुष्ठ की नाप वाला भयंकर काले रंग का मदिरापान किये पाप पुरुष स्थित है, जिसे वायु बीज यं से 16 बार पूरक करके उसका शोषण करते हैं। रं बीज के द्वारा कुम्भक से उसे भस्म करते हैं। पुनः यं बीज से रेचक करते हुए उसकी जली हुई राख को दाहिनी नासिका से बाहर निकाल देते हैं। इस बीच वायीं नासिका को अंगूठे और

अनामिका उंगली को मिलाकर बन्द कर लेते हैं।

इसके बाद वं अमृत बीज को सोलह बार जपकर ललाट में स्थित चन्द्रमा की अमृत वृष्टि की भावना करते हैं और यह मानते हैं कि उस अमृत वृष्टि से यह भस्मीभूत शरीर पुनः पवित्र हो गया है। फिर पृथ्वी बीज लं का 16 बार जप करके देह के पुनः सुदृढ़ होने की भावना करते हैं। तदोपरान्त सोऽहं का 64 बार उच्चारण करके परमात्मा से युक्त जीवात्मा और भगवती कामाख्या स्वरूपा कुण्डलिनी को सुषुम्ना मार्ग से ले जाकर हृदय कमल में जीवात्मा को और मूलाधार चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को स्थापित करते हैं। यह 'आरोह-अवरोह' क्रम कहलाता है।

इस प्रकार भूत-शुद्धि करके अपने हृदय कमल के दश दल में अपने इष्ट देवता अर्थात् देवी कामाख्या की प्राण-प्रतिष्ठा करें।

इसके उपरान्त 'अन्तर्मातृका' न्यास करें—

विनियोग— अस्य श्री अन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा त्रह्षिः
गायत्री छन्दः श्री मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि,
स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं मातृकान्यासे विनियोगः।

फिर करन्यास आदि करें—

करन्यास—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं कं खं गं धं डं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इं चं छं जं झं जं ईं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उं टं ठं डं छं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः करतल
करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं कं खं गं घं डं आं हृदयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इं चं छं जं झं अं ईं शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उं टं ठं डं फं णं ऊं शिखायै वषट्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः अस्त्राय

फट्।

चक्रन्यास-

॥ ध्यान ॥

आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे,

द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दश-दले द्वादशाद्वें चतुष्के।

बासान्ते बालमध्ये डं फ-क ठ सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम्,

हं क्षं तत्त्वार्थयुक्त, सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।

कण्ठे विशुद्धिचक्रे- अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लूं एं
ऐं ओं औं अं अः।

हृदये अनाहतचक्रे- कं खं गं घं डं चं छं जं झं अं टं ठं।

नाभौ मणिपूरे- डं फं णं तं थं दं धं नं पं फं।

स्वाधिष्ठाने- बं भं मं यं रं लं।

मूलाधारे- वं शं षं सं।

फिर भूमध्ये आङ्गाचक्र में हं क्षं।

॥ बहिर्मातृकान्यास ॥

विनियोग— ॐ अस्य श्री बहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः
गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः
शक्तयः अव्यक्तं कीलकं न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—

ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः पुखे।
सरस्वती देवतायै नमः हृदि।
हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये।
स्वरेभ्य शक्तिभ्यो नमः पादयोः।
अव्यक्त कीलकाय नमः नाभौ।
श्री कामाख्या पूजांगत्वेन देवभावाप्तये
बहिर्मातृका न्यासे विनियोगाय नमः अंजलौ।

करन्यास—

ॐ एं ह्रीं क्लीं अं कं खं गं घं डं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ एं ह्रीं क्लीं इं चं छं जं झं ऊं ईं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ एं ह्रीं क्लीं उं टं ठं डं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ एं ह्रीं क्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ एं ह्रीं क्लीं ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां
नमः।

ॐ एं हीं कलीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः करतल
करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास-

ॐ एं हीं कलीं अं कं खं गं घं डं आं हृदयाय नमः।

ॐ एं हीं कलीं इं चं छं जं झं जं ई शिरसे स्वाहा।

ॐ एं हीं कलीं उं टं ठं डं छं णं ऊं शिखायै वषट्।

ॐ एं हीं कलीं एं तं थं वं धं नं ऐं कवचाय हुं।

ॐ एं हीं कलीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ एं हीं कलीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः अस्त्राय
फट्।

॥ ध्यानम् ॥

अद्वौन्मुक्तशशांककोटिसदृशीमापीनतुंगस्तनीम्।

चन्द्राधार्धाकितशेखरां मधुदलैरालोलनेत्रत्रयाम्॥

विभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैः।

आद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं बागीश्वरीमाश्रये॥

ॐ एं हीं कलीं अं नमः शिरसि।

(मध्यमा + अनामिका उंगलियों से)

ॐ एं हीं कलीं आं नमः मुखे।

(तर्जनी + मध्यमा + अनामिका)

ॐ एं हीं कलीं इं नमः दक्षनेत्रे। (अंगूठा + अनामिका)

ॐ एं हीं कलीं ईं नमः वामनेत्रे। (अंगूठा + अनामिका)

ॐ एं हीं कलीं उं नमः दक्षकर्णो। (अंगूठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं नमः वामकर्णै। (अंगूठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऋं नमः दक्षनासापुटे। (अंगूठा + कनिष्ठा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऋं नमः वामनासापुटे। (अंगूठा + कनिष्ठा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं नमः दक्षगण्डे।

(तर्जनी + मध्यमा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं नमः वामगण्डे।

(तर्जनी + मध्यमा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एं नमः ऊष्वोष्टे। (मध्यमा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं नमः अधरोष्टे। (मध्यमा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। (अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औं नमः अधोदन्तपंक्तौ। (अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं नमः मुखवृत्ते। (अनामिका + मध्यमा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अः नमः कण्ठे। (अनामिका + मध्यमा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कं नमः दक्षिण बाहुमूले।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं खं नमः दक्षकूर्पे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गं नमः दक्षिण मणिबन्धे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं घं नमः दक्षांगुलिमूले।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं डं नमः दक्षांगुलिपद्मे।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चं नमः वामबाहूमूले।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं छं नमः वामकूर्परे।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जं नमः वाममणिबन्धे।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं झं नमः वामांगुलिमूले।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं झं नमः वामांगुल्यग्रे।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं टं नमः दक्षपादमूले।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ठं नमः दक्षजानुनि।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं डं नमः दक्षगुल्फे।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ढं नमः दक्षपादांगुलिमूले।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)
- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं णं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे।
 (मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तं नमः वामपादमूले।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं थं नमः वामजानुनि।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दं नमः वामगुल्फे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं थं नमः वामपादांगुलिमूले।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नं नमः वामपादांगुल्यग्रे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पं नमः दक्षपाशवे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फं नमः वामपाशवे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बं नमः पृष्ठे।

(मध्यमा + कनिष्ठा + अनामिका)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भं नमः नाभौ।

(अंगूठा + कनिष्ठा + अनामिका + मध्यमा)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मं नमः जठरे। (पांचों के योग से)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यं नमः हृदये। (पांचों के योग से)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रं नमः दक्षांसे। (पांचों के योग से)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लं नमः ककुदि। (पांचों के योग से)

ॐ एं ह्रीं क्लीं वं नमः वामांसे। (पांचों के योग से)

ॐ एं ह्रीं क्लीं शं नमः हृदयादिदक्षकरान्तम्।

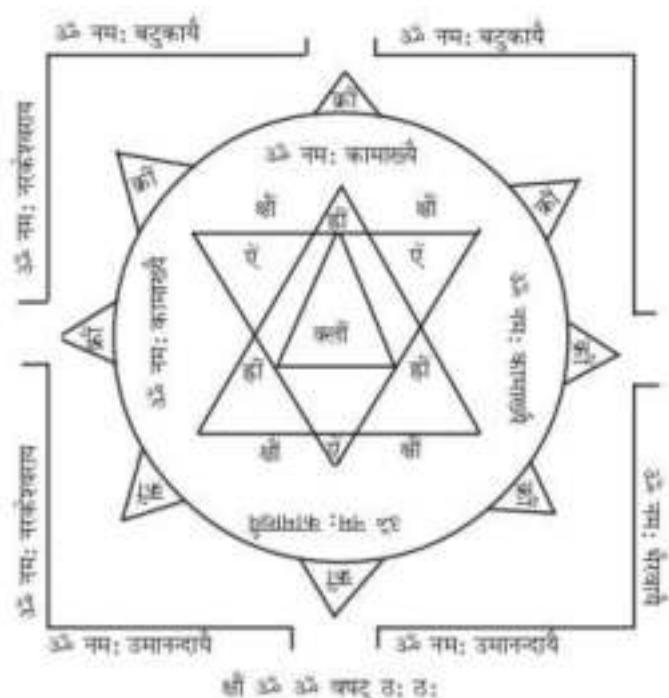
ॐ एं ह्रीं क्लीं षं नमः हृदयादिवामकरान्तम्।

ॐ एं ह्रीं क्लीं सं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्।

ॐ एं ह्रीं क्लीं हं नमः हृदयादिवामपादान्तम्।

ॐ एं ह्रीं क्लीं लं नमः मस्तकादिपादान्तम्।

ॐ एं ह्रीं क्लीं क्षं नमः पादादिशिरोन्तम्।



यन्त्र स्थापना एवं पीठ पूजा

उपर्युक्तानुसार पहले यन्त्र की रचना करें, फिर बिन्दु के नीचे योगपीठ की कल्पना कर गन्धाक्षत से योगपीठ पूजा करें—

ॐ एं ह्रीं क्लीं मण्डूकाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं कालाग्नि रुद्राय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं मूल प्रकृत्ये नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं आधार शक्तयै नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं वराहाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं कूर्माय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं अनन्ताय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं पृथिव्यै नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं सुधाम्बुधये नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं सुवर्णद्वीपाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं कल्पवनाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं मणि गेहाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं रत्नवेदिकाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं चिन्तामणि मण्डपाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं शमशानाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं धर्मज्ञान वैराग्यैश्वर्येभ्यो नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं अधर्मज्ञाना वैराग्यैश्वर्येभ्यो नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं रं बह्विमण्डलाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं अं अर्कमण्डलाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं सों सोममण्डलाय नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं तं तत्मसे नमः।
 ॐ एं ह्रीं क्लीं रं रजसे नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सं सत्त्वाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा सहस्र दल कमलाय
नमः।

प्रकृति मय पत्रेभ्यो नमः। विकृति मय केसरेभ्यो नमः।

पञ्चाशाद बीज भूषित कर्णिकायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं छूं लूं लूं एं एं ओं
औं अं अं अं: कं खं गं घं ङुं चं छं जं झं बं टं ठं डं ढं णं तं
थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं श्री
कामाख्या योनि पीठाय नमः।

पीठों का इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त मन में भावना
करनी चाहिए कि यन्त्र इन्हीं पीठों के ऊपर स्थित है।

सामान्याधर्य- इसके बाद अपनी बायीं और वृत्त पट्कोण
चतुरस्र का मण्डल बनाकर पट्कोणों में पूर्वादि क्रम से पूजा करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे
स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै वघट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
कवचाय हुं। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
अस्त्राय फट्।

इसके पश्चात् गन्धाक्षत से ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगवती कामाख्यै
सामान्याधर्य मण्डलाय नमः से मण्डल की पूजा कर उसमें रं वह्नि
मण्डलाय दश कलात्मने नमः से पूजन करें फिर मण्डल के ऊपर
आधार स्थापित कर उसमें अं अर्क मण्डलाय द्वादश कलात्मने
नमः से पूजा कर उसके ऊपर शंख (पात्र) स्थापित करें। फिर शंख
को विलोम मातृका पढ़ते हुए जल से पूर्ण करें और उसमें सों सोम
मण्डलाय घोडश कलात्मने नमः से पूजा कर सूर्य मण्डल से

अंकुश मुद्रा द्वारा निम्न मन्त्र से उसमें तीर्थों का आवाहन करें—

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सामान्यार्थ के जल के शुद्ध होने की भावना करें।

कलश स्थापना— सामान्यार्थ के बायीं ओर त्रिकोण पट्टकोण वृत्त चतुरस्र का मण्डल बनायें, पट्टकोणों में पूर्व पड़ंग पूजा करें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्री कामाख्यै कलश मण्डलाय नमः से मण्डल की पूजा कर उस पर आधार स्थापित करें। तब आधार में रं वह्नि मण्डलाय दश कलात्मने नमः से पूजा करें फिर 'फट्' मन्त्र से कलश को धोकर आधार पर स्थापित करें। फिर कलश में अं अर्क मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः से पूजा कर अंगुष्ठ और अनामिका मिलाकर मूल मन्त्र युक्त विलोम मातृका को पढ़ते हुए उसे सुरा से भरें फिर सों सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः से उसमें सोम मण्डल की पूजा कर निम्न क्रम से द्रव्य शुद्धि करें।

तीन बार निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करें— ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रां रीं रूं रैं रौं रः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय शुक्र शापं मोचय मोचय ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरा देव्यै वौषट्।

दस बार ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा का जप करें।

तीन बार आनन्द भैरवी मन्त्र का जप करें—

ॐ आनन्देश्वराय विद्महे सुरा देव्यै धीमहि तन्मोऽर्धनारीश्वरः प्रचोदयात्।

निम्न वेद मन्त्र का तीन बार जप करें—

ॐ हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्ष सद्गोता
वेदीषदतिथिरुरोणसत्।

नृषद्वर सद्ग्रहत सद्व्योम सदब्जा गोजा ग्रहतजा अद्रिजा
ग्रहतं बृहत्।

पहले द्रव्य के मध्य में आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी का
ध्यान करें—

ॐ सूर्यकोटि प्रतीकाशं चन्द्रकोटि सुशीतलम्।
अष्टादश भुजं देवं पञ्च वक्त्रं त्रिलोचनम्॥
अमृतार्णव मध्यस्थं ब्रह्म पदमोपरि स्थितम्।
वृषारूढं नील कण्ठं सर्वाभरण भूषितम्॥
कपाल खट्कांग धरं घण्टा डमरू वादिनम्।
याशांकुश धरं देवं गदा मुशल धारिणम्॥
खडग-खेटक पट्टीशं मुद्गर शूल दण्ड धृक्।
विचित्र खेटकं मुण्डं वरदाभय धारिणम्॥
लोहितं देव देवेशं भावयामि पुनः पुनः।
भावयामि सुधादेवीं चन्द्र कोटि युत प्रभाम्।
हिम कुन्देन्दु धवला पञ्च वक्त्रां त्रिलोचनाम्॥
अष्टादश भुजैर्युक्तां सर्वानन्द करोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देव देवस्य सम्मुखीम्॥
अब इन दोनों का निम्न मन्त्रों से वहीं पूजन करें—
हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय वौषट्।
सहक्षमलवरयीं आनन्द भैरवी सुरा देवी पादुकाभ्यो नमः।
तदनन्तर द्रव्य के मध्य में यन्त्र की कल्पना करें और उसके

मध्य में हं क्षं का ध्यान करें और यह समझें कि द्रव्य अमृत मय हो गया है।

निम्न मन्त्रों से द्रव्य का पूजन करें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूर्यमण्डल सम्भूते वरुणालय सम्भवे।

अमाबीज मये देवि शुक्र शापाद्विमुच्यताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्द मयं यदि।

तन सत्येन देवेशि ब्रह्म हत्यां विहन्यतु॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एकमेव परब्रह्म स्थूल सूक्ष्म मयं ध्रुवं।

कचोद्भवां ब्रह्म हत्यां तेन ते नाशयाप्यहम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पवमानः परानन्दः पवमानः परो रसः।

पवमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाप्यहम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृष्ण शाप विनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्म शापतः।

विमुक्ता रुद्र शापेन पवित्रा भव साप्ततम्॥

इसके बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा मन्त्र का तीन बार जप करते हुए द्रव्य के ऊपर धेनु-योनि-मत्स्य मुद्रायें दिखायें फिर कुम्भं पूर्णं यह कहकर उसको सुधामय ध्यान कर तत्त्व मुद्रा से उसे आच्छादित करें।

मीनादि शोधन— तदनन्तर मीन शुद्धि करें, पहले निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृतावतारो हरिणा कलिना पीडितं जगत्।

बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च॥

भवानी परितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत् प्रभुः।

फिर ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा मन्त्र का तीन बार जप

करता हुआ भीन के ऊपर धेनु-योनि-मत्स्य मुद्रायें दिखायें इसके बाद निम्न वेद मन्त्र पढ़ें—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥

[नोट— पूजन में निरन्तर धेनु, योनि, मत्स्य मुद्रा का प्रयोग होता है, इसलिए यहाँ इनके लक्षणों का उल्लेख किया जा रहा है, यथा—

1. **योनि मुद्रा**— दोनों मध्यमाओं के नीचे से बायीं तर्जनी के ऊपर दाहिनी अनामिका और दायीं तर्जनी पर बायीं अनामिका उंगली रखकर दोनों तर्जनियों से बांधकर दोनों मध्यमाओं के सिरे ऊपर मिलाकर रखें। दोनों अंगूठों को कनिष्ठिकाओं के मूल पर रखें। यही योनि मुद्रा कहलाती है।
2. **मत्स्य मुद्रा**— दाहिने करपृष्ठ पर बायीं हथेली रखकर दोनों अंगूठों को हिलाने से मत्स्य मुद्रा बनती है।
3. **धेनु मुद्रा**— इस मुद्रा को सुरभि मुद्रा भी कहा जाता है। दोनों हाथों की उंगलियाँ आपस में गूंथकर, बायें हाथ की तर्जनी से दाहिने हाथ की मध्यमा, मध्यमा से तर्जनी, अनामिका से कनिष्ठिका और कनिष्ठा से अनामिका मिलायें। अंगूठों को तर्जनियों से मिला दें। इस प्रकार गाय के चार थन बनाना ही धेनु मुद्रा कहलाती है।]

मृत्युंजय मन्त्र बोलने के उपरान्त निम्नांकित मन्त्र पढ़ें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं छागलादि गवांतादि कृत रूपाय वै नमः।

बल्यर्थ देव देव्योश्च पवित्री भव साम्प्रतम्॥

फिर ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा मन्त्र का तीन बार जप

करते हुए यन्त्र के ऊपर धेनु-योनि-मत्स्य मुद्रायें दिखायें तब निम्न वेद मन्त्र से यन्त्र को अभिमन्त्रित करें—

ॐ प्रतद्विष्णु स्तुवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गरिष्ठाः।

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भवनानि विश्वाः॥

अब मुद्रा का शोधन करें पहले निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यन्त्रार्चनकाले यानि यानीह सिद्धये।

वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह साम्प्रतम्॥

फिर ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्ये स्वाहा मन्त्र का तीन बार जप करते हुए यन्त्र के ऊपर धेनु-योनि-मत्स्य मुद्रायें दिखायें तब निम्न वेद मन्त्र से मुद्रा (अन्न से बनी वस्तुयें— रोटी, दाल, चावल आदि) अभिमन्त्रित करें—

ॐ तद्विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवदीव चक्षुराततम्।

तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते।

विष्णोर्यत् परमं पदम्॥

अब साधक पात्र स्थापन करें पहले श्रीपात्र की स्थापना कर लें।

श्रीपात्र स्थापना— अपने और यन्त्रराज के बीच में त्रिकोण षट्कोण वृत्त चतुरस्त्र का मण्डल बनायें। चतुरस्त्र के पूर्व कोण से वामावर्त के क्रम से पीठों का गन्धाक्षत से पूजन करें—

पूर्णगिरि पीठाय नमः। उद्ढीयान पीठाय नमः।

कामरूप पीठाय नमः। जालन्धर पीठाय नमः।

फिर षट्कोण के छः कोनों में पूर्ववत् गन्धाक्षत से पूजन करें—

ॐ हृच्छकत्यै नमः। ॐ शिरः शक्त्यै नमः। ॐ शिखा
शक्त्यै नमः। ॐ कवच शक्त्यै नमः। ॐ नेत्र शक्त्यै नमः।
ॐ अस्त्र शक्त्यै नमः।

फिर ॐ ऐं हीं कलीं कामाख्यै स्वाहा मन्त्र के तीन खण्ड
कर एक-एक खण्ड से त्रिकोण के एक-एक कोण का पूर्वादि क्रम से
पूजन करें।

अब त्रिकोण के मध्य में ॐ आधार शक्त्यै नमः से आधार
शक्ति का पूजन करें इसके बाद त्रिकोण के ऊपर आधार स्थापित
करें नमः मन्त्र से उस सामान्यार्थ का जल छोड़ें फिर उस पर पूर्वादि
क्रम से मण्डलाकार रूप में अग्नि की दस कलाओं का और उसके
बीच में अग्नि मण्डल का पूजन करें—

यं धूमार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं
ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिगिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं
सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं
कव्यवाहायै नमः।

मध्ये— रं बहिं मण्डलाय दश कलात्मने नमः।

तदनन्तर पात्र को फट् मन्त्र से जल से धोकर आधार पर
स्थापित करें। फिर पात्र के ऊपर पूर्वादि क्रम से मण्डलाकार रूप में
सूर्य की बारह कलाओं का और मध्य सूर्य मण्डल का पूजन
करें—

ॐ ऐं हीं कलीं कं भं तपिन्यै नमः।

ॐ ऐं हीं कलीं खं बं तापिन्यै नमः।

ॐ ऐं हीं कलीं गं फं धूमायै नमः।

ॐ ऐं हीं कलीं घं पं मरीच्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं डं नं ज्वालिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चं धं रुच्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं छं दं सुषुम्णायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं जं थं भोगदायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं झं तं विश्वायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं जं णं बोधिन्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं टं ढं धारिण्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं ठं डं क्षमायै नमः।

मध्ये— अं अर्कमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः।

अब पात्र की तलहटी में त्रिकोण वृत्त घटकोण लिखें या उसकी भावना करें। फिर अपने मूल मन्त्र ॐ ऐं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा से उस मण्डल का पूजन करें—

वं क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं वं फं पं नं धं दं
थं तं णं ढं डं ठं जं झं जं छं चं झं गं खं कं अः अं औं
ओं ऐं एं लं लूं ऋं ऋं ऊं ऊं ऊं ईं इं आं अं ॐ ऐं ह्रीं कलीं
कामाख्यै स्वाहा यह मन्त्र पढ़ते हुए त्रिकोण को कलश के अमृत
से भरें। फिर उसका एक भाग सामान्यार्थ्य के जल से भरें। फिर
उसमें सुगन्ध आदि द्रव्य छोड़ें। तब उस पर (पात्र के द्रव्य के ऊपर)
चन्द्रमा की सोलह कलाओं का मण्डलाकार रूप में तथा मध्य में
चन्द्रमण्डल का पूर्ववत् पूजन करें—

अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं
तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ऋं
शशिन्यै नमः, लूं चन्द्रिकायै नमः, लूं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै
नमः, ऐं श्रीयै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अंगदायै नमः, अं

पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः।

मध्ये— ॐ सोम मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः।

इसके बाद द्रव्य के मध्य में अ कथ आदि त्रिकोण की भावना द्वारा रचना करें फिर त्रिकोण के तीनों कोणों में ॐ ऐं हीं बल्ली कामाख्यै स्वाहा मन्त्र के तीन खण्ड कर प्रत्येक खण्ड से एक-एक कोण का पूजन करें—

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि द्रव्येऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इस मन्त्र से चन्द्रमण्डल से तीर्थों का द्रव्य में आवाहन करें फिर द्रव्य से आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी का ध्यान द्वारा आवाहन कर उनका उनके मन्त्रों से पूजन करें—

**ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरवाय वषट् गन्धं
समर्पयामि, पुष्टं समर्पयामि, धूपं समर्पयामि, दीपं समर्पयामि,
नैवेद्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि।**

**स ह क्ष म ल व र यीं आनन्दभैरव्यै वौषट् गन्धं
समर्पयामि, पुष्टं समर्पयामि, धूपं समर्पयामि, दीपं समर्पयामि,
नैवेद्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि।**

इसके बाद द्रव्य के किनारे पूर्वादि क्रम से पंच रत्नों का गन्धाक्षत से पूजन करें—

**पूर्वे— ग्लूं गगनरत्नाय नमः। उत्तरे— ष्लूं पातालरत्नाय
नमः। दक्षिणे— स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः। पश्चिमे— म्लूं मर्त्यरत्नाय
नमः। मध्ये— न्लूं नागरत्नाय नमः।**

इसके बाद पात्र का हुं से अवगुण्ठन मुद्रा (अंगूठा व तर्जनी सीधे रखकर शेष अंगुलियां भीतर की ओर मोड़कर मुढ़ठी जैसी बना लें)

द्वारा अवगुण्ठन करें, द्रव्य धेनु मुद्रा बनाकर उसे अमृतमय करें, योनि मुद्रा दिखाकर उसे नमस्कार करें। फिर हसौः नमः से गन्धाक्षत द्वारा द्रव्य का पूजन करें। फिर शंख मुद्रा बनाकर दिखायें, इसके बाद पठंग मन्त्रों से उसका सरलीकरण करें—

(शंख मुद्रा— बायें हाथ के अंगूठे को दाहिनी मुठ्ठी में रखें। दायीं मुठ्ठी ऊर्ध्व मुख रखकर उसके अंगूठे को फैलायें। बायें हाथ की सभी उंगलियों को परस्पर सटाकर फैला दें। फिर बायें हाथ की फैली उंगलियों को दाहिनी ओर घुमाकर दाहिने हाथ के अंगूठे का स्पर्श करने से शंख मुद्रा बनती है।)

हृच्छक्त्यै नमः। शिरः शक्त्यै नमः। शिखा शक्त्यै नमः।
कवच शक्त्यै नमः। नेत्र शक्त्यै नमः। अस्त्र शक्त्यै नमः।

फिर पात्र के ऊपर मत्स्य मुद्रा बनायें और ॐ ऐं हीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा मन्त्र का दस बार जप कर पात्र की देवी रूप में भावना करें।

भैरवादि तर्पण— इसके बाद साधक तत्त्व मुद्रा (अंगूठा + अनामिका) से शुद्धि खंड लेकर श्रीपात्र के द्रव्य से अपने हृदय में आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी का तीन-तीन बार तर्पण करें—

हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय वौषट् तर्पयामि नमः।

सहक्षमलवरयीं आनन्द भैरव्यै वौषट् तर्पयामि नमः।

इसके बाद गुरु पात्र के अमृत से गुरु चतुष्टय का तर्पण करें—

ॐ गुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ परमगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ परापरगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ परमेष्ठि गुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इसके बाद इष्टदेवता का श्रीपात्र के द्रव्य से तर्पण करें—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा सायुधां सवाहनां सपरिवारां
कामेश्वर सहितां श्री कामाख्या तर्पयामि नमः।

तत्त्व शोधन- भोगपात्र का अमृत हाथों में लेकर हाथों को शुद्ध करें, दाहिने हाथ की हथेली में वृत्त के सहित त्रिकोण बनायें उसके तीनों कोणों में और बीच में शुद्धि के छोटे-छोटे खंड रखें। फिर

ॐ ऐं ह्रीं कलीं शिव-शक्ति सदा शिवेश्वर विद्या कलात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लूं लूं एं एं ओं औं अं अः ऐं (ॐ ऐं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा) आत्मतत्त्वेन स्थूल देहं शोधयामि स्वाहा।

यह पढ़कर आगे के कोने का शुद्धि खण्ड बायें हाथ की मध्यमा अनामिका अंगुष्ठ से उठाकर खा जायें इसके बाद—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं माया कला विद्या राग काल नियति पुरुषात्मने कं खं गं घं डं चं छं जं झं जं टं ठं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं कलीं (ॐ ऐं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा) विद्यातत्त्वेन सूक्ष्म देहं शोधयामि स्वाहा।

यह पढ़कर वाम कोण का शुद्धि खंड पूर्ववत् उठाकर खा जायें फिर—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं प्रकृत्यहंकार बुद्धि मनः श्रोत्रत्वक् चक्षुर्जिह्वा ध्राणवाक् पाणि पाद पायूपस्थ शब्द स्पर्श रूप रस गन्धाकाशवाक्यग्नि सलिल भूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सौः (ॐ ऐं ह्रीं कलीं कामाख्यै स्वाहा) शिवतत्त्वेन पर देहं शोधयामि स्वाहा।

यह पढ़कर दक्ष कोण का शुद्धि खंड पूर्ववत् उठाकर खा जायें

फिर—

ॐ ऐं हीं कलीं शिवशक्ति सदा शिवेश्वर विद्या कलात्मने
माया कला विद्या राग काल नियति पुरुषात्मने प्रकृत्यहंकार
बुद्धिमनः श्रोत्रत्वक् चक्षुर्जिह्वा घ्राणवाक् पाणि पाद
पायूपस्थशब्द स्पर्श रूप रस गन्धाकाश वाय्वग्नि सलिल
भूम्यात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लूं लूं एं ऐं ओं औं अं अः
कं खं गं घं डं चं छं जं झं अं टं ठं ढं णं तं थं दं धं नं
पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सौः (ॐ ऐं हीं
कलीं कामाख्यै स्वाहा) सर्वं तत्त्वेन तत्त्वं जयान्वितं जीवात्मानं
शोधयामि स्वाहा।

यह पढ़कर बीच का शुद्धि खंड खा जायें।

इष्टदेवता का आवाहनादि— पूर्वोक्त योगपीठ पर स्थापित
यन्त्रराज के त्रिकोण के विन्दु में इष्टदेवता का आवाहन करें—

ॐ ऐं हीं कलीं श्री कामेश्वर सहित कामाख्या इहागच्छ
इहागच्छ, इहतिष्ठ इहतिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह
सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व मम सर्वोपचार पूजां गृहाण
गृहाण।

इस प्रकार भगवती कामाख्या का आवाहन करके मन्त्रराज में
इष्टदेवता की उपस्थिति की भावना करें। तदोपरान्त निम्नांकित मन्त्र
से प्राण-प्रतिष्ठा करें—

ॐ आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर
सहित श्रीकामाख्या देवतायाः प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर
सहित श्रीकामाख्या देवतायाः जीव इह स्थित।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर
सहित श्रीकामाख्या देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर
सहित श्रीकामाख्या देवतायाः वाङ्मनस्त्वकृचक्षु श्रोत घ्राण
प्राण पदानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

फिर देवता के आस-पास आठों दिशाओं में तथा ऊपर और नीचे
दस बार चुटकियां बजाकर दिग्बन्धन करें। तब बायें हाथ की तर्जनी
से देवता के चारों ओर धेरा बनाकर उसे अवगुणित करें। फिर देवता
के घड़ंगों का पूजन करें—

ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ कवचाय हुं।
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्।

इस प्रकार पूजन कर देवता का कला युक्त सकलीकरण करें।
फिर देवता के ऊपर दोनों हाथों को एक में मिलाकर उन्हें फैलाये हुए
यह भावना करें कि उन हाथों के बीच से देवता के ऊपर सामान्यार्थ्य
का जल बरस सा रहा है। इस प्रकार भावना से देवता को स्नान
कराकर परमीकरण करें। फिर देवता के ऊपर धेनु मुद्रा दिखाकर यह
भावना करें कि यह अमृत रूप हो गया है। फिर देवता को योनि मुद्रा
से नमस्कार करें। तब खड़ग, पद्म, कलश आदि मुद्रायें देवता के
सामने बनाकर दिखायें।

अब देवता का दशोपचारों से पूजन करें—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या पाद्यं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर देवता
के पैरों पर सामान्यार्थ्य का जल लेकर उसमें चन्दन फूल छोड़कर
पाद्य प्रदान करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या अर्थं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर
सामान्यार्थ का जल लेकर पूर्ववत् देवता के हाथ में अर्थं प्रदान करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या आचमनीयं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर
सामान्यार्थ का जल लेकर भावना द्वारा देवता के मुख में प्रदान करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या मधुपक्षं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर
देवता के मुख में अर्पित करने की भावना करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या आचमनीयं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर
सामान्यार्थ के जल से आचमन करायें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या गन्धं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर देवता
के ललाट में चन्दन का लेप करने की भावना करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या अक्षतान् परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर देवता
के ऊपर अक्षत् चढ़ायें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या पुष्टं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर देवता
को पुष्ट, माला और बिल्वपत्र आदि अर्पित करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या नैवेद्यं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर थाली
में भोज्य पदार्थ, आसव और जल सहित सजाकर देवता को नैवेद्य

प्रदान करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या आचमनीयं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर
देवता को आचमन प्रदान करें।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा श्रीकामेश्वर सहित
श्रीकामाख्या ताम्बूलं परिकल्पयामि नमः। यह मन्त्र पढ़कर
देवता को ताम्बूल प्रदान करें।

आवरण पूजन— भगवती कामाख्या के पूजन में सबसे गोपनीय
एवं महत्वपूर्ण भाग उसके आवरण पूजन का है। महायोनि स्वरूप
भगवती कामाख्या के आवरण में जो-जो शक्तियां आती हैं उनका
क्रमबद्ध पूजन नीचे वर्णित किया जा रहा है।

प्रथम आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राजराजेश्वरी शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रुद्र भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्मशान भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिपुर भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आनन्द भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिकुटा (त्रिजटा) श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिपुटा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिपुर सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिपुरेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिपुरमालिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिपुरानन्दिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं त्रिपुरातनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

द्वितीय आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं छिनमस्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं महाविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं एकजटेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं परा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं तारा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयदुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शूलिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हरिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिखण्डिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वज्रप्रस्तारिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

तृतीय आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अश्वारूढा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महिषासुरमर्दिनी श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नवदुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीदुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भगविलना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नीलसरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धगन्धर्वसेविता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वसिद्धिकरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उग्रतारा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भद्रकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चतुर्थ आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षेमंकरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महामाया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनिरुद्ध सरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातंगी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अन्नपूर्णा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राजराजेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

पंचम आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उग्रचण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रचण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डोग्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डनायिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चण्डवती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चण्डरूपा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं अतिचण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

षष्ठम् आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं उग्रदंष्ट्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं सुदंष्ट्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं महादंष्ट्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं कपालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं भीमनेत्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं विशालाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं मंगला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं विजया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं जया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

सप्तम आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं मंगला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं नन्दिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं भद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं कान्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं यशस्विनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं पुष्टि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं मेधा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं शिवा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं धात्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं शोभावती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं जया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं धृति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं श्रीनन्दा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं सुनन्दा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं नन्दपूजिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

अष्टम आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं कलीं विजया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं मंगला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं भद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं धृति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं शान्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं शिवा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं क्षमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं सिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं तुष्टि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं उमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं पुष्टि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं शृद्धा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं रति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीप्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कान्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यशा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बुद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

नवम आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चक्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयावती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयन्ती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपराजिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अजिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मानवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं श्वेता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं कलीं अदिति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं आदि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं माया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं कलीं महामाया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं क्षोभिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं लोभिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं कमला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं विमला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं गौरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं कलीं शरणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं अम्बुधिसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं दुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ऐं ह्रीं कलीं क्रिया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अरुन्धती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं घण्टाहस्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कपालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

दशम आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रौद्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मायूरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रिनेत्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपराजिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरुपा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुरुपा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विग्रहात्मिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चर्चिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरपूजिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

एकादश आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैवस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कार्त्तिकी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कौशिकी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवदूती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुण्डमाला विभूषित चामुण्डा श्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः।

द्वादश आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं यम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं निर्वहति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं वरुण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं पवन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं कुबेर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं ईशान श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं ब्रह्मा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं अनन्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

त्र्योदश आवरण-

ॐ ऐं ह्रीं कलीं असितांग भैरव श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं रुरुभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चण्डभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं कलीं क्रोधभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उन्मत्तभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कपालीभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भीषणभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं संहारभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

चतुर्दश आवरण—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं डाकिनीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं राकिनीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लाकिनीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काकिनीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यक्षिणीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं देवीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मातृपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊर्ध्वमुखीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अधोमुखीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालमुखीपुत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः।

इस प्रकार आवरण पूजा करने के उपरान्त गन्ध, धूप, पुष्प,
दीप आदि उपचारों सहित महानैवेद्य भगवती के समक्ष आधार पर
रखकर पूर्ववत् पूजन करें और धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करके
अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा बोलकर विशेष अर्घ्य प्रदान करते हुए
अग्रांकित मन्त्र का उच्चारण करें—

हेमपात्र-गतं दिव्यं परमानं सुसंस्कृतम्।

पंचधा षड्सोपेतं गृहाण परमेश्वरि॥

नैवेद्य समर्पण करते हुए पंचमुद्राओं का प्रदर्शन करें—

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय
स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।

इसके उपरान्त भगवती से ग्रार्थना करें—

ब्रह्मशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्तात्।

दिव्याकल्पैर्लिलितरमणी वीञ्यमाना सखीभिः॥

नर्मक्रीडा प्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्।

भुड़क्तेपात्रे कनकखिते षड्सान् लोकधात्री॥

इसके उपरान्त 108 बार मूल मन्त्र का जप करें। फिर जल
प्रदान करें। कुछ देर बाद अमृता-पिधानमसि स्वाहा बोलकर पुनः

जल प्रदान करें—

प्रथमखण्डेन— ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आत्मतत्त्वव्यापिनी
श्रीकामाख्यै तृप्तयतु।

द्वितीयखण्डेन— ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्यातत्त्वव्यापिनी
श्रीकामाख्यै तृप्तयतु।

तृतीयखण्डेन— ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिवतत्त्वव्यापिनी
श्रीकामाख्यै तृप्तयतु।

समग्रमूलेन— ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीकामाख्यै
तृप्तयतु।

इसके बाद हाथ धोने के लिए, मुख प्रक्षालन हेतु जल प्रदान
करके ताम्बूल दें। छत्र, चामर, व्यंजन आदि राजोपचार मूल मन्त्र से
अर्पण करें। देववन्दन, आत्मवन्दन आदि करके हाथ धो लें। आरती
करके पुष्पांजलि प्रदान करते हुए क्षमा-याचना करके हवन करें।

॥ होम ॥

सर्वप्रथम पूजांग होम के लिए संकल्प लें। संकल्प करते हुए^१
मास, तिथि, गौत्र आदि बोलकर अथेत्यादि श्रीकामाख्या-पूजांगत्वेन
विहित-हवनं कुर्वे बोलें और कुण्ड स्थण्डिल का ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
श्रीकामाख्यै स्वाहा से सम्प्रोक्षण करें। मूल मन्त्र से ही अग्नि-स्थापन
कर अग्नये नमः बोलकर गन्धाक्षत् से पूजन करें। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
कामाख्यै स्वाहा मन्त्र बोलते हुए लकड़ियां रखें, अग्नि प्रज्ज्वलित
करके अग्नि का ध्यान करें—

अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान (229)

इसके उपरान्त हाथ में पुष्पांजलि लेकर “ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
श्रीकामाख्यै स्वाहा” बोलकर अग्नि चैतन्य करें। गन्ध-पुष्पादि से
पूजन करके मूल मन्त्र से यथा-शक्ति आहुतियां अग्नि में प्रदान करें।
इसके बाद पुनः देवी का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें, उनके स्वस्थान
को प्रस्थान करने की भावना करें। पुनः अग्नि-पूजन करके भस्म को
ललाट आदि स्थानों पर लगायें। तदोपरान्त अग्नि का विसर्जन
अधोलिखित मन्त्र से करें—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।

यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥

गच्छ त्वं भगवन्नाने स्वस्थानं कुण्डमध्यतः।

हव्यमादाय, देवेभ्यः शीघ्रं देहि, प्रसीद मे॥

इसके उपरान्त ईशान, वायु, नैऋत्य तथा अग्निकोण में क्रमशः
बटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल एवं गणपति को बलि प्रदान करें—

ईशान (बटुक भैरव)—

एहि एहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र
च्चालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं
गृहण गृहण स्वाहा, बटुकाय एष बलिर्न मम।

वायव्य (योगिनी)— “यां योगिनीभ्यो नमः” बोलकर^{३०}
योगिनी-पूजन करें तथा सामान्य अर्घ्य लेकर उन्हें बलि प्रदान करके,
अर्घ्य प्रदान करें—

ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मांडतो वा, दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वा, तले वा, सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा॥

क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन,
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः॥
सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा, योगिनीभ्यः एष बलिन् मम।

नैऋत्य (क्षेत्रपाल)– “क्षां क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपाल बलि
मण्डलाय नमः, क्षेत्रपाल बलिदव्याय नमः” बोलकर उनका
गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें, फिर उन्हें बलि देकर सामान्य अर्घ्य प्रदान
करें। बलि के समय यह मन्त्र पढ़ें—

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहण गृहण
स्वाहा, क्षेत्रपालाय एष बलिन् मम।

आग्नेय (गणपति)– “गं गणपतये नमः, गणपति बलि
मण्डलाय नमः” बोलकर गन्ध-पुष्पादि से गणपति पूजन करके
निम्नांकित मन्त्र पढ़कर उन्हें बलि प्रदान करें तथा हाथ में लिया
सामान्य अर्घ्य उन्हें प्रदान करें—

“ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः, गणपतये वरवरद सर्वजनं मे
वशमानय इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहा, गणपतये एष बलिन्
मम।”

उत्तर (सर्वभूत)– इसके उपरान्त उत्तर दिशा में पूर्ववत् मण्डल
बनाकर सब देवों का पूजन करें। आधार की स्थापना कर उस पर
बलि रखकर निम्नांकित मन्त्र बोलकर बलि प्रदान करें—

“हीं सर्वविघ्नकृदभ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।”

उपर्युक्तानुसार बलि प्रदान करने के उपरान्त हाथ-पैर धोकर
भगवती को “योनि मुद्रा” से प्रणाम करें। आरती करके देवी कामाख्या
को मन्त्र-पुष्पांजलि देकर प्रदक्षिणा करें। देवी की स्तुति करें—

समस्तमुनियक्ष-किंपुरुष-सिद्ध-विद्याधर-महासुर-
सुराप्सरोगणमुखैः गणैः सेविते।

निवृत्ततिलकाम्बरप्रकृतिशांतिविद्याकला-कलापमधुराकृते
कलित एष पुष्पाभ्जलिः।

तदोपरान्त सुवासिनी, बटुक तथा कुमारियों का विधिपूर्वक पूजन
कर उन्हें तृप्त करें तथा उनका विसर्जन करके मूल मन्त्र का 108 बार
जप करें और भगवती को निवेदित कर दें—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मल्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि॥

इसके बाद सामान्य अर्घ्य पात्र लेकर भगवती के ऊपर तीन बार
घुमाकर यह मन्त्र पढ़ें—

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया।

तत् सर्वं भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं परम्॥

उक्त मन्त्र पढ़कर “इतः पूर्वं मां मदीयञ्च श्री कामाख्यै
देवतायै समर्पयामि नमः” कहें तथा वचा हुआ सामान्य अर्घ्य
अपने सिर पर रखें। तदोपरान्त उस जल को सभी पर छिड़कें। देवी
के ऊपर घुमाकर एक पुष्प लेकर “संहार मुद्रा” का प्रदर्शन कर पुष्प
को सूंघें तथा देवी को स्वहृदय में स्थापित करके उनका मानसिक
पूजन करें। हाथ में अर्घ्य पात्र लेकर सिर पर रखें और अधोलिखित
मन्त्र बोलकर प्रार्थना करें—

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।

त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु॥

इस प्रकार प्रार्थना करके उस द्रव्य को अन्य पात्र में भरकर

विशेषार्थ पात्र में पुष्प एवं अक्षत् डालकर देवता के समक्ष रखकर उच्छिष्ट बलि प्रदान करें—

गदात्रिशूलडमरूपाशहस्तम् त्रिलोचनम्।

कृष्णाभं भैरवं देवं ध्यायेदुच्छिष्टभैरवम्॥

फिर— ‘ॐ उच्छिष्ट-भैरव एहि-एहि बलिं गृहण-गृहण हुं फट् स्वाहा’ बोलकर बलि गृहण करने हेतु निवेदन करें। फिर उस बलि को उठाकर पूजागृह से अन्यत्र स्थान पर एक चतुरख मण्डल बनाकर वहां बटुक वाहन (काला कुत्ता) को बुलाकर बलि प्रदान करते हुए— “बटुकवाहन इमां पूजां बलि च गृहण गृहण स्वाहा” का उच्चारण करें। जल प्रदान करें तथा अपने हाथ-पैर धोकर घर में प्रवेश करें, आसन पर बैठकर, आचमन करके शान्ति स्तोत्र का पाठ करें।

फिर उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करके निर्माल्य तथा उच्छिष्ट नैवेद्य सहित उन्हें बलि प्रदान करें—

“ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालिनि मातंगी सर्वजन वशंकरि इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।”

इस प्रकार बलि प्रदान करके हाथ-पैर धो लें। फिर अमृत पात्र लेकर कुछ अमृत स्वयं गृहण करें तथा अन्य साधकों को भी प्रदान करें। साथ ही प्रार्थना भी करें—

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।

शिवशासनतः। शिवशासनतः।

इसके बाद भगवती पर पूजा-वर्धनी का जल छोड़ते हुए उच्चारण करें—

अनेन यथाज्ञानेन यथासम्भावितोपचारद्रव्यैः श्रीकामाख्या
सपर्याख्येन कर्मणा भगवती श्रीकामाख्या प्रीयताम्। ॐ तत्
सत्।

फिर प्रसाद व चरणामृत गृहण करें और सुखपूर्वक निजी कार्य
हेतु तत्पर हों।

जो साधक इस प्रकार भगवती कामाख्या का जप व पूजनादि
करता है। उसकी साधना अवश्य ही सफल होती है। वह सभी पापों
व दोषों से मुक्त होकर समस्त अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त करता है तथा
अन्त में आवागमन से मुक्त होकर देवी के लोक में निवास करता है।
उसके यन्त्र-मन्त्र सिद्ध होकर उसके तथा जग के कल्याणकारक
बनते हैं। लेकिन स्मरण रखें कि इस विधि-विद्यान को
सम्पन्न करने से पूर्व साधक का योग्य गुरु से दीक्षित होना
आवश्यक है क्योंकि यह पद्धति पूर्णतः बाममार्गीय है।

५

“कामाख्या-मूल मन्त्र”

क्षौं ॐ वषट् ठः ठः।

भगवती कामाख्या का यही जप मन्त्र है और इसी मन्त्र के अन्त
में ‘स्वाहा’ जोड़कर हवन करने का विधान है। इस मन्त्र के विभिन्न
प्रयोग हैं, यथा—

1. शनिवार के दिन पीपल वृक्ष के नीचे सौ बार इस मूल मन्त्र का
जप करने से समस्त प्रकार के रोग, अभिचारिक कर्मों का
प्रभाव, महान भय तथा सभी प्रकार की बाधाओं एवं कष्टों का
नाश होता है।

2. आकाशीय विजली गिरने पर अथवा भूकम्प आदि की आशंका होने पर एक सप्ताह तक उपर्युक्त मन्त्र से जंगली बेंत की समिधा से होम करने पर राज्य में सुख-शान्ति रहती है। यदि किसी ढेले (कंकर, पत्थर) को उपर्युक्त मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके जिस भी दिशा में फेंका जाये, उस तरफ अग्निभय, तूफानभय तथा शत्रुभय कभी उत्पन्न नहीं होता है। इस मन्त्र को निरन्तर मन ही मन जपने से कारागार में निरुद्ध कैदी भी मुक्त हो जाता है।
3. प्रेत-बाधा निवारण हेतु मन्त्र—
**ॐ क्षौं क्षौं ह्रीं ह्रीं अमुकस्य प्रेतबाधां शान्तय शान्तय
कुरु कुरु स्वाहा क्षौं ॐ। कामाख्या! तव दासः नमस्तुभ्यं
नमस्तुभ्यं॥**
- विधान— इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए सर्वप्रथम 108 बार शमी की लकड़ी की समिधा से उपर्युक्त मन्त्र से होम करें। फिर भूत-प्रेत आदि से पीड़ित व्यक्ति यदि इस हवन की भस्म को खा ले अथवा माथे पर तिलक कर ले तो वह “सभी प्रकार की बाधाओं से मुक्त होकर सुखी हो जाता है।”
4. उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए यदि कोई व्यक्ति कुशा से स्पर्श करते हुए झाड़ा दे तो भूत-प्रेत, विषकृत उपद्रव शान्त हो जाते हैं। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पीने से भी भूत-प्रेत-पिशाचादि से पीड़ित व्यक्ति अविलम्ब मुक्त हो जाता है।
5. लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए मूल मन्त्र से लाल कमल से होम करना चाहिए।

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान (235)

6. जूही के ताजे फूल तथा साठी के चावलों से मूल मन्त्र से होम करने पर प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होती है। बेल वृक्ष की लकड़ी की समिधा में विल्व फल (बेल पत्थर) के टुकड़ों, पत्तों तथा पुष्पों को मिलाकर होम करने से भी “महालक्ष्मी की प्राप्ति” होती है।
7. विल्व वृक्ष की जड़ के टुकड़े, खीर तथा धी मिलाकर मूल मन्त्र से होम करने से “अनन्त लक्ष्मी” की प्राप्ति होती है।
8. विल्व वृक्ष की जड़ के टुकड़े, खीर एवं धी मिलाकर एक सप्ताह तक सौ-सौ बार होम करने से निश्चय ही प्रचुर मात्रा में लक्ष्मी प्राप्त होती है। धान का लावा, त्रिमधु के साथ मिलाकर मूल मन्त्र से होम करने पर दिव्य कन्या उत्पन्न होती है। इसी प्रकार वर की कामना करने वाली कन्या इसी मन्त्र से त्रिमधु और धान का लावा से होम करे तो उसे मनोवाञ्छित वर की प्राप्ति होती है।
9. लाल कमल के पुष्पों से मूल मन्त्र से होम करने से एक सप्ताह में ही स्वर्ण की प्राप्ति होती है। देवी के मन्त्र का उच्चारण करके सूर्य का तर्पण करने से मनुष्य को जल में छिपा हुआ स्वर्ण भी प्राप्त होता है। अन्न का होम करने से ‘अन्न’ तथा धान का हवन करने से मनुष्य ‘धन-धान्य’ का स्वामी हो जाता है।
10. खीर बनाकर होम करने से और उसे सूर्यदेव को अर्पण करके क्रतुस्नाता स्त्री को भोजन कराने से व्यक्ति को श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति होती है। इसके लिए मन्त्र है— क्षौं ॐ ॐ ठः ठः।
11. गीली तथा एक अंकुरित सामग्री का हवन आयु में वृद्धि करता है।

12. क्षीरी वृक्षों के अग्रभाग युक्त समिधाओं से, त्रिमधु (दूध, धी, दही) से, आर्द्र समिधाओं तथा धान्यों से होम करने (सौ आहुतियां) से व्यक्ति 'स्वर्ण' तथा 'दीर्घ आयु' प्राप्त करता है।
13. जन्म-कुण्डली में अल्पायु योग तथा अकाल मृत्यु योग होने पर दूर्वा, दुग्ध, शहद तथा धी से सौ-सौ आहुतियां एक सप्ताह तक प्रतिदिन देने से अकाल मृत्यु मिट जाती है तथा अल्पायु योग दीर्घायु में बदल जाता है।
14. अपमृत्यु (असामयिक मृत्यु) के नाश के लिए व्यक्ति को शमी वृक्ष की समिधा, अन्न, क्षीर तथा धी की सामग्री से एक सप्ताह तक प्रतिदिन सौ-सौ आहुतियों से होम करना चाहिए। बट की समिधा से खीर का हवन एक सप्ताह तक प्रतिदिन करने से भी अपमृत्यु योग मिट जाता है।
15. नवरात्रि में प्रतिपदा से अष्टमी तक देवी कामाख्या का मन्त्र जप करने से व्यक्ति को सर्वत्र विजय प्राप्त होती है।
16. बिल्व वृक्ष के नीचे जप करने से नौ माह में व्यक्ति को राज्य की प्राप्ति होती है। बिल्व वृक्ष की जड़, फल तथा पत्तों से होम करना चाहिए।
17. मन्दार (अकर्क) की समिधा से होम करने पर सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती है।
18. शहद के साथ नमक का हवन करने से वाञ्छित व्यक्ति को वश में किया जा सकता है।
19. आयु-आरोग्य-लक्ष्मी-पुत्र तथा यश की कामना करने वाले व्यक्ति को चार महीने तक मूल मन्त्र का जप करना चाहिए।

20. वन में कुटी बनाकर वहाँ निवास करते हुए तीन हजार की संख्या में प्रतिदिन एक मास तक जप करने से मनुष्य महापातक से भी मुक्त हो जाता है।
21. “ॐ नमो नमो कामरूपवासिनी सर्वलोक वश्यकरी स्वाहा।” इस मन्त्र से 108 बार चन्दन की लकड़ी से हवन करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस हवन की भस्म से मन्त्र पढ़ते हुए जिसके ऊपर भी भी गिरायेंगे वह वश में हो जाता है। वन में हिंसक पशु पर भी यह प्रयोग सफल होता है।
22. “ॐ नमः ह्रीं क्लीं सर्वार्थं साधिन्यै कामाक्ष्यै स्वाहा।” इस मन्त्र से एक हजार पुण्यों का हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर मन्त्र पढ़ते हुए जिससे भी आंखें मिलेंगी वह वशीभूत हो जायेगा। कोर्ट, कचहरी अथवा अदि आकारीगण से काम लेने के लिए यह एक उत्तम और सफल प्रयोग है।

अन्य शाबर-मन्त्र

गर्भ-स्थापना हेतु-

“ॐ नमो कामरू कामाक्षा देवी जल बांधू जलबाई बांधू बांधि देत जल के तीर, पांचों कूत कलवा बांधू, बांधू हनुमत वीर। सहदेव की धनुआ और अर्जुन का बाण, रावण रण को थाम ले नहीं तो हनुमन्त की आन, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।”

किसी कुमारी कन्या से सूत कतवाकर, सूत को स्त्री के सिर से पैर तक नाप लें और उपर्युक्त मन्त्र से उस धागे को अभिमन्त्रित करके उस स्त्री को पहनाना चाहिए, जिसे गर्भ ना ठहरता हो। अपने

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 238 }

इष्ट देवता का पूजन अर्चन करके सवा सेर रोट का भोग लगाना चाहिए।

सुख-शान्ति हेतु-

“ॐ नमः कामाक्षायै हीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।”

इस मन्त्र का किसी शुभ दिन में 108 बार जप करके ग्यारह मन्त्रों से आहुतियां दें। फिर नित्य-प्रति एक बार जप करने से सभी प्रकार की सुख-शान्ति प्राप्त होती है।

अक्षय धन-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना-

हे माँ लक्ष्मी, शरण हम तुम्हारी।

पूरण करो अब माता कामना हमारी॥

धन की अधिष्ठात्री, जीवन-सुख-दात्री।

सुनो-सुनो अम्बे! सत्-गुरु की पुकार।

शम्भु की पुकार, माँ कामाक्षा की पुकार॥

तुम्हें विष्णु की आन, अब मत करो मान।

आशा लगाकर हम देते हैं दीप-दान॥

मन्त्र— ॐ नमः विष्णु-प्रियायै, ॐ नमः कामाक्षायै। हीं हीं हीं, क्रीं क्रीं क्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि— ‘दीपावली’ की सन्ध्या को पांच मिट्टी के दीपकों में गाय का धीं डालकर रुई की बत्ती जलायें। ‘लक्ष्मी जी’ को ‘दीप-दान’ करें और ‘माँ कामाक्षा का ध्यान’ कर उक्त प्रार्थना करें। मन्त्र का 108 बार जप करें। ‘दीपक’ सारी रात जलाएं रखें और स्वयं भी जगता रहे। नींद आने लगे, तो ‘मन्त्र’ का जप करें। प्रातःकाल दीपों

के बुझ जाने पर उन्हें नये वस्त्र में बांधकर 'तिजोरी' या 'बक्से' में रखें। इससे श्रीलक्ष्मी जी का उसमें वास हो जायेगा और धन-प्राप्ति होगी। प्रतिदिन सन्ध्या समय 'दीप' जलायें और पांच बार उक्त मन्त्र का जप करें।

बल-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना—

शंकर-सुवन अञ्जनी-पूत बल-पति हनुमान।

दया करो राम - भक्त वीर बलवान्॥

बल दो, बना दो काया बज्ज के समान।

तुम्हें राम की आन, तुम्हें सीता की आन॥

रहो सदा दाहिने, सत्-गुरु की है पुकार।

दोहाई श्री कामाक्षा की, महिमा है अपार॥

मन्त्र—ॐ श्रीमहा-वीराय नमः, ॐ श्रीकामाक्षायै नमः।
ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि—मंगलवार को प्रातःकाल स्नान कर ब्रत रखें। काठ की गदा सामने रखकर, आसन पर पूर्व की ओर मुँह कर बैठें और उक्त प्रार्थना कर 108 बार मन्त्र जपें। फिर प्रतिदिन स्नान कर कम-से-कम एक बार उक्त मन्त्र अवश्य जपें। तब 'व्यायाम' करें। इससे विशेष रूप से बल की प्राप्ति होगी।

विद्या-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना-

बन्दे श्रीसरस्वती, विद्या की स्वामिनी।

विनय सुनो दया-मयि, बुद्धि - ज्ञान - दायिनी॥

दया करो-दया करो, दे दो मुझे विद्या-दान।

तुम महान् सत्-गुरु खान, कामाक्षा का रख लो मान॥

मन्त्र- ॐ विद्या-बुद्धि-दायिनी, सर्व-कला-स्वामिनी।

श्रीं श्रीं सरस्वती-देव्यै नमः। ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि- शनिवार को स्नान कर किसी एकान्त कमरे में शान्त-चित्त बैठें। फिर श्रीसरस्वती देवी का ध्यान कर उक्त प्रार्थना कर 108 बार मन्त्र जपें तथा सरस्वती देवी की विधिवत् पूजा करें। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बाद में किसी पुस्तक को पढ़ने के पहले 7 बार मन्त्र जपें। इससे जो पढ़ेंगे, कण्ठस्थ हो जायेगा।

विद्या-स्मरण मन्त्र

मन्त्र- ॐ नमः सरस्वत्यै ह्रीं श्रीं हुं। ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि- शनिवार को स्नान कर 'शनि-देव' की पूजा करें। फिर उक्त मन्त्र का 108 बार जप करें। इसके बाद ब्राह्मी बूटी और गोल मिर्च का चूर्ण 5 ग्राम एक गिलास जल में घोले और 7 बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पियें। इससे कुछ ही दिनों में 'स्मरण-शक्ति' बढ़ जायेगी।

नौकरी-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना—

हे कामाक्षा! हे शिव-शक्ति! करते हैं हम भक्ति।
सुन लो भक्त की पुकार, बेड़ा है मँझधार॥
चलाकर पतवार, लगा दो मां! पार।
तुम्हें शंकर की आन, सत्-गुरु का कहना मान॥
सहारा दे दो मां, हम हो रहे बेकार।
निराशा का अन्धकार, दूर है किनार॥
दया - दृष्टि फेरो आव्वे! बेड़ा करो पार।
दोहाई है, दोहाई है, तुम्हारे चरणों में माई!
दोहाई कामरूप दानी की, दोहाई हाड़ी दासी की॥

प्रथम मन्त्र— नमः कामाक्षा ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि— शनिवार को ‘शनि देव’ की पूजा कर उक्त प्रार्थना कर मन्त्र 108 बार जपें। इसके बाद गो-माता को गुड़ खिलाकर गाय के गोबर का उपला बनायें। उसे दिन भर सुखायें और रात को जलायें। जब तक वह उपला जलता रहे, तब तक उक्त मन्त्र पढ़ते रहें। उपला जब जलकर भस्म हो जाए, तब उसे उठाकर मिट्टी के नये पात्र में रख दें। बाद में जब नौकरी, व्यापार या किसी कार्य के लिए यात्रा करनी हो, तो इस भस्म में से एक चुटकी लेकर, उसे उक्त मन्त्र से 7 बार अभिमन्त्रित कर, ललाट पर तिलक लगायें। इससे कार्य व यात्रा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

द्वितीय मन्त्र— ॐ नमः भगवती पद्मावती, ऋद्धि-
सिद्धि-दायिनी, दुःख-दारिद्र्य-हारिणी श्रीं श्रीं ॐ नमः

नमः कामाक्षायै नमः हीं हीं फट् स्वाहा॥

विधि— शनिवार को ‘शनि देव’ की पूजा कर उक्त मन्त्र का 1008 बार जप करें। फिर नौकरी के लिए यात्रा करने के पहले सात बार उक्त मन्त्र का जप करें और चलते समय गो-माता को गुड़ खिलाकर आगे बढ़ें, तो निश्चित रूप में नौकरी की प्राप्ति होगी।

महा-लक्ष्मी मन्त्र

मन्त्र— ॐ कमल-दल-निवासिनी, सदा सुहागिनी मां! चंचल स्थिरां, हीं हीं ॐ नमः कामाक्षायै, हीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि— शनिवार की आधी रात से उक्त मन्त्र का 108 बार जप प्रारम्भ करें। फिर लगातार 22 दिनों तक प्रतिदिन आधी रात को 108 बार उक्त मन्त्र का जप करें। 23वें दिन प्रातःकाल स्नान कर उक्त मन्त्र बोलते हुए 108 ‘आहुतियाँ’ दें। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बाद में नित्य सोने के पूर्व 22 बार मन्त्र जपें। इससे घर में लक्ष्मी जी का निवास होगा और नित्य धन-वृद्धि होगी।

अनायास धन-प्राप्ति मन्त्र

यक्ष का भण्डार, कुबेर का भण्डार। रल से भरा हुआ, जहां हो गड़ा हुआ। दोहाई कामाक्षा की, दिखा दो वह स्थान। तुम्हें शंकर की आन, सत्-गुरु का कहना मान। तुम्हारी महिमा महान, आज है उसकी पहचान। तुम्हें शिव की कसम, सती धर्म की कसम।

मन्त्र— ॐ नमः कामाक्षायै हीं हीं क्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि— उक्त मन्त्र का जप शनिवार से प्रारम्भ करें। 22 दिनों तक प्रतिदिन 108 बार जप करें। तेइसबैं दिन पूजा समाप्त होने पर घर से बाहर निकलें और जो आदमी सबसे पहले दिखाई दे, उसे आदर से ले आयें तथा उसकी इच्छानुसार उसे भोजन करायें। रात को सोते समय कामाक्षा देवी का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 7 बार जप करें। ऐसा नित्य करें। 22 दिन के अन्दर स्वप्न में अपार धन का भण्डार दिखाई देगा। फिर रात के समय उस स्थान पर पहुंचकर वहाँ की भिट्टी खोदकर धन ले आयें। [लेकिन स्मरण रखें कि वर्तमान में ऐसा करना अपराध की श्रेणी में आता है।]

विघ्न-विनाशन मन्त्र

मन्त्र— ॐ गं गणपतये नमः। ॐ सर्व-विघ्न-विनाशिनी कामाक्षायै नमः स्वाहा। ॐ गं गां गिं गीं ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि— घर में श्रीगणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर उक्त मन्त्र का 108 बार नित्य जप करें और गणेश जी की पूजा करें। इससे सभी प्रकार के विघ्न-बाधायें दूर होंगी, नित्य मंगल होगा।

आय बढ़ाने का मन्त्र

मन्त्र— विष्णु-प्रिया लक्ष्मी! शिव-प्रिया सती से प्रगट हुई कामाक्षा भगवती! आदि-शक्ति युगल-मूर्ति महिमा अपार दोनों की प्रीति अमर जाने संसार। दोहाई कामाक्षा की, दोहाई दोहाई। आय बढ़ा, व्यय घटा, दया कर माई! ॐ नमः विष्णु-प्रियायै, ॐ नमः शिव-प्रियायै। ॐ नमः कामाक्षायै, ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा॥

श्री कामाक्ष्या-रहस्यम् (244)

विधि- किसी शुभ दिन को प्रातः स्नान करके इस मन्त्र को 108 बार जपकर, ग्यारह बार गाय के धी से होम में आहृति प्रदान करें। फिर इस मन्त्र का नित्यप्रति 7 बार जप करने से आय में वृद्धि होती है।

सिद्ध-वशीकरण मन्त्र

मन्त्र- बारा राखौं, बरैनी, मुंह म राखौं कालिका। चण्डी म राखौं मोहिनी, भुजा म राखौं जोहनी। आगू म राखौं सिलेमान, पाछे म राखौं जमादार। जांधे म राखौं लोहा के झार, पिण्डरी म राखौं सोखन वीर। उल्टन काया, पुल्टन वीर, हांक देत हनुमन्ता छुटे। राजा राम के परे दोहाई, हनमान के पीड़ा चौकी। कीर करे बीट बिरा करे, मोहिनी-जोहिनी सातों बहिनी। मोह देबे जोह देबे, चलत म परिहारिन मोहों। मोहों बन के हाथी, बत्तीस मन्दिर के दरबार मोहों। हांक परे भिरहा मोहिनी के जाय, चेत सम्हार के। सत् गुरु साहेब॥

विधि- इस मन्त्र को किसी शुभ समय में जपकर 108 बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। मन्त्र जप से पूर्व एक नारियल, 2 नींवू, अगरबत्ती, सिन्दूर तथा गुड़ को अर्पण करें। बाद में मन्त्र का प्रयोग कोर्ट, कचहरी, बाद-विवाद, मुकदमा, आपसी कलह, शत्रु-वशीकरण, नौकरी, इन्टरव्यू तथा उच्चाधिकारियों से सम्पर्क करते समय करें। यदि आपके विरुद्ध कोई मुकदमा चल रहा हो तो इस मन्त्र को पढ़ते हुए इस प्रकार अदालत में जायें कि मन्त्र की समाप्ति ठीक जज के सामने, शत्रु के सामने अथवा अधिकारियों के सामने हो। इससे फैसला आपके ही पक्ष में होगा।

शूकर-दन्त-वशीकरण मन्त्र

मन्त्र— ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं वाराह-दन्ताय भैरवाय नमः।

विधि— ‘शूकर-दन्त’ को अपने सामने रखकर उक्त मन्त्र का होली, दीपावली, दशहरा आदि में 108 बार जप करें। फिर इसकी ‘तावीज’ बनाकर गले में पहन लें। ‘तावीज’ धारण करने वाले पर जादू-टोना, भूत-प्रेत का प्रभाव नहीं होगा। लोगों का ‘वशीकरण’ होगा। मुकदमे में विजय-प्राप्ति होगी। रोगी ठीक होने लगेगा। चिन्तायें दूर होंगी और शत्रु परास्त होंगे। व्यापार में वृद्धि होगी।

वशीकरण टोटका

शनिवार के दिन यदि किसी की मृत्यु हो और उसी दिन उसका शमशान में दाह-कर्म किया जाए, तो एक मिट्टी की हांडी में खिचड़ी बनाकर शमशान-भूमि में ले जायें। जिस स्थान में मुर्दा जलाया जाए, वहां पर उस खिचड़ी को जमीन में बिखेर दें। दूर बैठ जायें और जब शव-यात्रा के लोग लौटकर चले जायें तथा बिखरी खिचड़ी को कौवे खाने लगें, तब हंडिया में जो कुछ खिचड़ी बच जाय, उस हंडिया को उठाकर चल दें। पीछे न देखें, पूरी क्रिया सम्पन्न होने तक मौन रहें। मार्ग में जो भी नीम का वृक्ष मिले, उसी के तने पर हांडी को दे मारें। इससे हांडी के कुछ चावल जमीन पर गिर जायेंगे, कुछ चावल नीम के तने पर चिपक जायेंगे। सावधानीपूर्वक दोनों चावलों को एकत्रित कर लें। चिपके चावलों को अलग बांधें और जमीन पर गिरे चावलों को अलग बांधें। दोनों पोटलियों को गुगल की धूनी

देकर, जहां सुविधा हो, एकान्त में गाड़ दें। गाड़े हुए स्थान पर निशान लगा दें तथा शनिवार को उस स्थान पर भोग चढ़ायें। भोग में एक बताशा, गुगल, मट्ट चढ़ायें। ऐसा ७ शनिवार करें। जब सात शनिवार पूरे हो जायें, तब भूमि खोदकर उन चावलों को निकाल लें और घर आ जाएं तथा उन्हें सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब कभी 'वशीकरण' का कार्य हो, तब नीम से चिपके हुए चावलों में से दो-चार चावल साध्य के शरीर पर फेंकें। कार्य पूरा होने के बाद यदि आपको उस व्यक्ति की आवश्यकता न हो, तो जमीन पर गिरे हुए चावलों में से दो-चार चावल उसको किसी भी वस्तु के माध्यम से खिलायें। इससे वह आपसे कौवे की तरह मुंह फेर लेगा अर्थात् आपसे दूर हो जायेगा।

उक्त टोटका विना मन्त्र का 'वशीकरण' है, परन्तु इसकी क्रिया उग्र व कठिन है। इससे 'वशीकरण' अचूक होता है। साधकगण अपनी शरीर-रक्षा का विधान करने के बाद ही सावधानीपूर्वक साहस के साथ इसका प्रयोग करें।

(१) ॐ नमो काला भैरव! काली रात, काला आया आधी रात। चले कतार बांधि तू बावन बीर! पर-नारी सों राखे सीर। छाती धरि के बाको लावे। सोती होय, जगाय लावे। बैठी होय, उठाय लावे। सत्य-नाम आदेश गुरु का।

विधि- यदि 'रविवार' को 'होली' या 'दिवाली' हो, तो रात्रि में लाल एरण्ड का छोटा-सा पौधा बायें हाथ से एक झटके में उखाड़कर ले आयें। एक दिन पहले शनिवार को उसको लाने के लिए निमन्त्रण भी दें और उसको पीसकर रुई की बत्ती में लपेट लें। 'तेल के दीपक'

कामारुचा-मन्त्र एवं पूजन विधान (247)

में इसी बत्ती को जलायें तथा एक कोरी सराई इसकी लौं के ऊपर किसी आधार पर रखें। उक्त मन्त्र का 7 माला जप करें। 'वशीकरण'-प्रयोग के समय सराई वाले काजल को अंगुली पर लेकर उक्त मन्त्र से 21 बार अभिमन्त्रित करके, साध्या के वस्त्र या शरीर पर युक्तिपूर्वक लगायें।

(2) ॐ नमो काला कलवा! काली रात! निस की पुतली, मांझी रात। काला कलवा! घाट-बाट सूती को जगाई लाव, बैठी को उठाइ लाव, बेगी घरघ्या लाव। मोहिनी-जोहिनी! चल राजा की ठाउ, अमुकी के तन में चटपटी लगाव, जी पाले तोड़। जो कोई खाइ हमारी इलायची। कभी न छोड़ हमारा साथ। घर को तजे, बाहर को तजे, और कने जाय, तो छाती फाट तुरन्त मर जाय। सत्य नाम आदेश गुरु का। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ईश्वर महादेव की वाचा, वाचा टरे, तो कुम्भी नरक में पड़े॥

विधि- उक्त मन्त्र का 21 दिनों तक नित्य 108 बार जप करें। प्रयोग करते समय 'अमुकी' के स्थान पर साध्या का नाम लें और 21 बार 2 इलायचियों को अभिमन्त्रित कर खिलायें।

पैंतीस अक्षरी मन्त्र (सर्वसिद्धि)

प्रस्तुत "पैंतीस अक्षरी मन्त्र" पंजाबी भाषा में है। इस मन्त्र का प्रभाव बहुत ही अद्भुत है। यद्यपि यह मन्त्र माँ कामाख्या से सम्बन्धित नहीं है लेकिन मैं इस मन्त्र का प्रस्तुतीकरण साधकों के लाभार्थ कर रहा हूं। इस मन्त्र के सम्बन्ध में मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि इसका प्रभाव अचूक है और साधक को निश्चित रूप से इसका सकारात्मक परिणाम मिलता है।

ॐ एक ओंकार श्रीसत्-गुरु प्रसाद ॐ

ओंकार सर्व - प्रकाशी।
आतम शुद्ध करे अविनाशी॥
ईश जीव में भेद न मानो।
साद चोर सब ब्रह्म पिछानो॥
हस्ती चींटी तृण लो आदम।
एक अखण्डत बसे अनादम॥

ॐ आ ई सा हा

कारण करण अकर्ता कहिए।
भान प्रकाश जगत ज्यूं लहिए॥
खान - पान कछु रूप न रेखां।
विर्विकार अद्वैत अभेखम्॥
गीत गाम सब देश देशन्तर।
सत करतार सर्व के अन्तर॥
घन की न्याई सदा अखण्डत।
ज्ञान बोध परमात्म पण्डत॥

का खा गा घा डा

चाप ड्यान कर जहां विराजे।
छाया द्वैत सकल उठि भाजे॥
जाग्रत स्वप्न सखोपत तुरीया।
आतम भूपति की यहि पुरिया॥

झुणत्कार आहत घनधोरं।
त्रकुटी भीतर अति छवि जोरम्॥
आहत योगी आ रस - माता।
सोऽहं शब्द अमी - रस - दाता॥

चा छा जा झा जा
टारनभ्रम अघन की सेना।
सत्-गुरु मुकुति पदारथ देना॥
ठाकत दुगदा निरमल करणं।
डार सुधा मुख आपदा हरणम्॥
ढावत द्वैत हन्हेरी मन की।
णासत् गुरु भ्रमता सब मन की॥

टा ठा डा ढा णा
तारन, गुरु बिना नहीं कोई।
सत सिमरत साध बात परोई॥
थान अद्वैत तभी जाई परसे।
मन-वचन-करम गुरु-पद दरसे॥
दारिद्र रोग मिटे सब तन का।
गुरु करुणा कर होवे मुक्ता॥
धन गुरुदेव मुकुति के दाते।
ना - ना - नेत वेद जस गाते॥

ता था दा धा ना
पार ब्रह्म सम्माह समाना।
साद सिद्धान्त कियो विख्याना॥

श्री कामाख्या-रहस्यम् (250)

फांसी कटी द्वात गुरु पूरे।
 तब वाजे सबद अनाहत धन्तूरे॥
 वाणी ब्रह्म साथ भये मेल्ला।
 भंग अद्वैत सदा ऊ अकेल्ला॥
 मान - अपमान दोऊ जर गए।
 जोऊ थे सोऊ फुन भये॥

पा फा बा भा मा

या किरिया को सोऊ पिछाना।
 अद्वैत अखण्ड आपको माना॥
 रम रह्या सबमें पुरुष अलेख।
 आद अपार अनाद अभेखम्॥
 डा डा मिति आत्म दरसाना।
 प्रकट के ज्ञान जो तब माना॥
 लवलीन भये आदम पद ऐसे।
 ज्यूं जल जले भेद कहु कैसे॥
 वासुदेव बिन और न कोऊ।
 नानक ॐ सोऽहं आत्म सोऽहम्॥

या रा ला वा डा

ॐ ह्रीं श्रीं कलीं लृं श्री-सुन्दरी-बालायै नमः॥

॥ फल-श्रुति ॥

पूरब मुख कर करे जा पाठ।
 एक सौ दस औ ऊपर आठ॥

पूत लक्ष्मी आपे आवे।
 गुरु का वचन न मिथ्या जावे॥
 दक्षिन मुख घर पाठ जो करै।
 शत्रु ताको तच्छिन मरै॥
 पच्छिम मुख पाठ करे जो कोई॥
 ताके बस नर - नारी होइ॥
 उत्तर दिसा सिद्धि को पावे।
 ताके वचन सिद्ध होइ जावे॥
 बारा रोज पाठ करे जोई॥
 जो कोई काज होवे सिद्धि सोई॥
 जाके गरभ - पात होइ जाई॥
 मन्त्रित कर जल - पान कराई॥
 एक मास ऐसी विधि करे।
 जनमे पुत्र फेर नहि मरे॥
 अठराहे दाराऊ पावा।
 गुरु - कृपा ते काल रखावा॥
 पति बस कीन्हा चाहे नार।
 गुरु की सेवा माहि अधार॥
 मन्त्र पढ़ के करे आहुती।
 नित्य - प्रति करे मन्त्र की रुती॥

॥३० तत्सत् ब्रह्मणे नमः॥

विशेष- ‘फल-श्रुति’ का पाठ ‘जप’ के अन्त में एक बार करें।

‘फल-श्रुति’ के अनुसार नित्य 108 वार पूर्व की ओर मुंह कर इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी एवं पुत्रादि की प्राप्ति होती है। दक्षिण की ओर मुंह कर जपने से शत्रुओं का नाश होता है। पश्चिम की ओर जप करने से नर-नारी वशीभूत होते हैं। उत्तर की ओर मुंह कर जप करने से वाणी सिद्ध हो जाती है। 12 दिन लगातार पाठ करने से कार्य-सिद्धि होती है। जिस किसी को गर्भ-पात होता हो, उसे इससे अभिमन्त्रित जल को एक मास पिलाने से पुत्र की प्राप्ति होती है। विशेष लाभ के लिए मन्त्र के जप के साथ-साथ नित्य हवन करें।

प्रश्न का उत्तर पाने का मन्त्र

मन्त्र— ॐ बं काली, दोनों हाथ बजावे ताली, बचन न मेरा जावे खाली। ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली। जहाँ का हाल चाहो, वहाँ का हाल बताऊँ-बताऊँ-बताऊँ॥

विधि— (1) 11 शनिवार को एक मिट्टी के वर्तन में दूध और जल डालकर रखें तथा 11 माला जप करें।

(2) त्रिकोण आसन बनाकर 21 दिन तक प्रतिदिन 21 माला जप करें। इसके बाद व्यक्ति जो प्रश्न करे, उसका उत्तर मिलेगा।

अधोर काली मन्त्र

मन्त्र— ॐ गांव के पच्छिम पीपर के गाछ, ताहि चढ़ि काली करे हाँक। नगन में पूजै चक्र, महा-मांस भखै। आपन जियावे, पराया खाय। ऐनैकर दीठ, ओने कर पीठ। बाये चारों काली। सत्य छोड़ असत्य भाखै, असिया कोट नरक में परड़। सत्य प्रत्यक्ष।

विधि- चार मुख का दीपक, गेहूं के पिसान (आटे) की रोटी, सिन्दूर, काजल, चौटी, टिकुली, डिविया, 11 लाल चूड़ी, मांस, मध्य, मछली, कंधी-छोटा शीशा, पञ्चमेवा, बगा-दही, पूरी-गुड़, गुलगुला, लाल फूल की माला, लाल धुंधुची, गुग्गुल, कपूर, धूपबत्ती, गोल चौका, अबीर— यह सभी सामान सामने रखकर 21 दिन रात्रि में उक्त मन्त्र का यथा-सम्भव जप करें। एक बार हविष्यान्न भोजन करें। मंगलवार अमावस्या की रात्रि से जप का प्रारम्भ करें, तो 21वें दिन आकाशवाणी के द्वारा कार्य-सिद्धि की सूचना मिलेगी। जप रात्रि में 8 बजे से प्रातः 4 बजे तक करें।

औघड़-सिद्धि का मन्त्र

मन्त्र- आङ् देश से चला अघोरी हाथ लिए मुरदे की झोली। खड़ा होय बुलाय लाव, सोता होय जगाय लाव। तुझे गुरु अपने की दुहाई, बाबा मनसाराम की॥

विधि- अर्द्धरात्रि में 40 दिनों तक प्रतिदिन 121 बार उक्त मन्त्र का जप एकान्त में करें। पास में सामने गांजा, मध्य, सफेद फूल की माला, इत्र का फोहा, दही-बड़ा, सादा बड़ा, दालमोठ, सेवड़ा, नमकीन एवं पांच प्रकार की मिठाई रखें। लोहबान की धूनी दें। अघोरी स्वयं आयेगा और साधक जो कहेगा, उसे करेगा। अथवा साधक उससे वचन ले ले कि मैं जब आपको बुलाऊंगा, आप आइयेगा। अघोरी से काम लेने से पूर्व उसे एक मिट्टी के पुरवे/सकोरे में मध्य छढ़ायें।

शत्रुनाशक भैरव मन्त्र

मन्त्र— ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव! हुक्म हो हाजिर रहे, मेरा कहा करे। आन बांधु, बान बांधु। दसो सुर, नौ नाड़ी, बहत्तर कोठा बांधु। फूल म भेजूं, फूल म जाय। कोठे जी पड़े रहे। थर-थर कापे, हल-हल हिले। मेरा भेजा भैरव सवा घड़ी, सवा पहर 'अमुक' शत्रु को बाबला न करे, तो माता काली की सैख्या पर पग धरे। वाचा छोड़ कुवाचा करे, तो धोबी के नांद, चमार के कुण्ड म पड़े। महादेव की जटा टूट भूमि पर पड़े। माता पारबती के चीर पर चोट पड़े। मेरा हुक्म है अमुक शत्रु को मार प्राणों का हरण न करे, तो दोहाई है काली माता की, कामरू कामाख्या की।

विधान— उपर्युक्त मन्त्र हरियाली अमावस्या, मौनी अमावस्या, दीपावली, चन्द्रग्रहण अथवा सूर्यग्रहण पर 108 बार जपने से सिद्ध होता है।

सामग्री— 2 लौंग, सावुत पान, सुपारी, नींबू, कपूर, धूप या लोहबान, सिन्दूर, बतासे, मद्य, लोहे का एक त्रिशूल।

जप-विधान— पूर्व में बताये गये तिथि अथवा समय पर श्मशान भूमि में नग्न होकर मन्त्र का 108 की संख्या में जप करें। सबसे पहले श्मशान भैरव की पूजा लौंग, पान व सुपारी से करें। लोहे के त्रिशूल पर सात विन्दी सिन्दूर की लगायें। फिर इसमें भैरव की प्राण-प्रतिष्ठा करके बताशा, मद्य तथा नींबू से पूजन करें। लोहबान की धूप देकर कपूर से आरती करें। इसके बाद मन्त्र का जप करें।

प्रयोग-विधान— शत्रु के बायें पैर के नीचे की मिट्टी तथा

श्मशान की मिट्टी लेकर मिलायें। फिर सभी अंगों से युक्त शत्रु की मृति बनाकर उसकी छाती पर सिन्दूर से शत्रु का नाम लिखें। मध्य और नींव का भोग लगायें। फिर 22 (बाईस) बार मन्त्र का जप करके त्रिशूल को शत्रु की मृति की छाती में गाढ़ दें। इस प्रयोग को करने से शत्रु का नाश होगा।

असाध्य रोग-निवारक मन्त्र

मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं काली कंकाली
महाकाली-खपरवाली अमुकस्य अमुकं व्याधि नाशय-नाशय
शमनय स्वाहा॥

विधि— पहले उक्त मन्त्र का 12,500 जप कर मन्त्र को सिद्ध करें। फिर आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करें। उदाहरणार्थ कभी ऐसा प्रतीत हो कि रोगी मरणोन्मुख है और औषधियां काम नहीं दे रही हैं तथा बचने का कोई उपाय नहीं है, तब इस मन्त्र का प्रयोग करें। रोगी को तीन दिन तक 108 मन्त्र-जप से अभिमन्त्रित जल से झाड़ें। इससे असाध्य-से-असाध्य रोग में भी शान्ति प्राप्ति होती है। ‘अमुकस्य’ के स्थान में रोगी का नाम और ‘अमुक’ के स्थान पर ‘रोग’ या ‘व्याधि’ का नाम लेकर जल को अभिमन्त्रित करना चाहिए।

रुठी हुई स्त्री का वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—मोहिनी माता, भूत पिता, भूत सिर बेताल। उड़ ऐं काली ‘नागिन’ को जा लाग। ऐसी जा के लाग कि ‘नागिन’ को लग जावै हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख, न लेटे सुख, न सोते सुख। सिन्दूर चढ़ाऊं मंगलवार,
कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख,

काया तड़प-तड़प मर जाये। चलो मन्त्र, फुरो वाचा। दिखाओ
रे शब्द! अपने गुरु के इल्म का तमाशा॥

विधि- मन्त्र में ‘नागिन’ शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम जोड़ें। शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से 8 दिन पहले साधना प्रारम्भ करें। एक शान्त-एकान्त कमरे में रात्रि में 10 बजे शुद्ध वस्त्र धारण कर कम्बल के आसन पर बैठें। अपने पास जल से भरा एक पात्र रखें तथा ‘दीपक’ व धूपबत्ती आदि से कमरे को सुवासित कर मन्त्र का ‘जप’ करें। ‘जप’ के समय अपना मुंह स्त्री के रहने के स्थान की ओर रखें। एकाग्र होकर घड़ी देखकर ठीक दो घटे तक ‘जप’ करें। जिस समय मन्त्र का ‘जप’ करें, उस समय स्त्री का स्मरण करते रहें। स्त्री का चित्र हो, तो कार्य अधिक सुगमता से होगा। साथ ही, मन्त्र को कण्ठस्थ कर जपने से ध्यान केन्द्रित होगा। इस प्रयोग में मन्त्र-जप की गिनती आवश्यक नहीं है। उत्साहपूर्वक पूर्ण संकल्प के साथ ‘जप’ करें।

भाग्योदय हेतु अनुभूत मन्त्र

मन्त्र- ॐ गं नमः।

विधि- भगवान् गणेश की मूर्ति या चित्र सामने रखकर 15 दिनों तक नित्य 51 माला ‘जप’ करें। ‘जप’ के पूर्व भगवान् गणेश की पूजा करें। ‘जप’ के बीच में उठें नहीं। ‘जप’ श्रद्धा से और पूर्ण व्यवस्थित होकर करें। कम बोलें और कम भोजन करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। अच्छे लोगों के सत्संग में रहें। इससे ‘भाग्योदय’ होता है। नौकरी, विवाह आदि कार्य सरलता से सम्पन्न होते हैं। भगवान् गणेश को पका हुआ केला प्रिय है। ‘नैवेद्य’ में उसे अर्पित करना चाहिए।

शरीर की कान्ति बढ़ाने का मन्त्र

मन्त्र— ॐ ह्रीं कलीं श्रीं कंकाली काली मधुमत्ता मातंगी
मद-विहूली मन-मोहिनी मकर-घ्वजे स्वाहा॥

विधि— पहले उक्त मन्त्र को 108 बार 'जप' कर जल को
अभिमन्त्रित करें। फिर उस जल से मन्त्र का स्मरण करते हुए स्नान
करें। इससे शरीर की कान्ति, तेज और ओजस बढ़ता है।

सांसारिक कठिनाइयों को दूर करने का मन्त्र

मन्त्र— ॐ ह्रीं ह्रीं चामुण्डायै नमः।

विधि— उक्त मन्त्र का 51 दिनों तक नित्य 1 हजार 'जप'
करें। अनुष्ठान के समय खाने-पीने की वस्तुओं में से किसी भी एक
प्रिय वस्तु को छोड़कर भोजन करें। इससे शीघ्र लाभ होता है।

श्री भैरव-जञ्जीरा मन्त्र

मन्त्र— ॐ गुरु जी! काला भैरूँ कपिला केश, काना
मदरा भगवाँ भेष। मार-मार काली-पुत्र! बारह कोष की मार।
भूतां हात कलेजी खूँहा गेडिया, जहाँ जाऊँ भैरूँ साथ। बारह
कोष की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोष की सिद्धि ल्यावो।
सूती होय तो जगाय ल्यावो, बैठा होय तो उठाय ल्यावो।
अनन्त केसर की भारी ल्यावो, गौरा-पार्वती की बिछिया
ल्यावो। गेल्याँ की रस्तान मोह, कूवे की पणिहारी मोह।
दुकान बैठा बाणिया मोह, घर बैठी बणियानी मोह। राजा
की रजवाड़ मोह, महिला बैठी रानी मोह। डाकिनी को,
शाकिनी को, भूतिनी को, पलीतनी को, ओपरी को, पराई

को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धवका कूँ, पलीया कूँ, चौड कूँ, चौगट कूँ, काचा कूँ, कलवा कूँ, भूत कूँ, पलीत कूँ, जिन कूँ, राक्षस कूँ, बैरियों से बरी कर दे। नजरा जड़ दे ताला। इत्ता भैरव नहीं करे, तो पिता महा-देव की जटा तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती की चीर फाड़ लंगोट करे। चल डाकिनी-शाकिनी, चौड़ू मैला बाकरा, देस्यु मद की धार। भरी सभा में द्यूँ आने में कहा लगाई बार। खण्डर में खाय, मसान में लोटे। ऐसे काला भैरूँ की कुण पूजा मेंटे। राजा मेंटे राज से जाय। प्रजा मेंटे दूध-पूत से जाय। जोगी मेंटे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि— उक्त मन्त्र का अनुष्ठान शनि या रात्रि से प्रारम्भ करें। पत्थर का तीन कोने वाला एक टुकड़ा लेकर उसको अपने सामने स्थापित करें। उसके ऊपर तेल व सिन्दूर का लेपन करें। पान और नारियल भेंट में चढ़ायें। नित्य सरसों के तेल का ‘दीपक’ जलायें। अखण्ड दीपक रखें तो उत्तम। नित्य 21 बार उक्त मन्त्र का जप करें। ऐसा 21 या 41 दिनों तक करें। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। जप के बाद प्रतिदिन छार, छबीला, कपूर, केशर और लौंग की आहुति दें। बांकला-बाटी का भोग दें। पान-सुपारी भी दें। जब भैरव जी दर्शन दें, तो भयभीत न होयें। भक्ति-भाव से उन्हें प्रणाम कर मांस-मद्य की बलि देनी चाहिए। यदि मांस-मद्य की बलि देना संभव न हो, तो उड़द के बने पकोड़े, बेसन के लड्डू तथा गुड़ मिला हुआ दूध अर्पित करें। इस मन्त्र द्वारा मन्त्र में वर्णित सभी कार्य पूरे होते हैं।

भैरव-कृपा मन्त्र

मन्त्र— ॐ काली, कंकाली, महाकाली के पुत्र कंकाल-भैरव! हुक्मे हाजिर रहे। मेरा भेजा काल करै, मेरा भेजा रक्षा करै। आन बाँधूँ, बान बाँधूँ। चलते फूल में जाए, कोठे जी पड़ै। थर-थर काँपै, हल-हल हलै। गिरि-गिरि परै, उठ-उठ भर्ग, बक-बक बकै। मेरा भेजा सवा घडी, सवा पहर, सवा दिन, सवा मास, सवा बरस को बावला न करै, तो माता काली की शैया पै पग धरै। वाचा चूकै, तो उमा सूखै। वाचा छोड़, कुवाचा करै, धोबी की नाद चमार के कूण्ड में परै। मेरा भेजा बावला न करै, तो रुद्र के नेत्र के आग की ज्वाला कठै। सिर की लटा टूट भूमि में गिरै, माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े। बिना हुकुम नहीं मारना, हो काली के पुत्र कंकाल-भैरव! फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु को!

विधि— ‘काल-रात्रि’ या ‘सूर्य-ग्रहण’ की रात्रि में सिद्ध करें। त्रि-खूंटा चौका लगाकर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठें तथा एक सहस्र जप करें। बाद में लाल कनेर के पुष्प, रक्त-सिन्दूर, लौंग का जोड़ और चौ-मुखा दीपक जलाकर 100 आहुतियों से हवन करें। यदि भयंकर-रूप में भैरव जी आयें, तो उनसे डरें नहीं और उनको लाल पुष्पों की माला पहनायें तथा लड्डू रखें। ऐसा करने से भैरव जी प्रसन्न होते हैं और वर मांगने के लिए कहेंगे। ऐसे समय में साधक को उनसे उनकी कृपा-प्राप्ति का वर मांगना चाहिए। भैरव जी की कृपा से साधक की सभी अभिलाषायें पूर्ण होती हैं। भैरव-साधना में अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए, साथ ही साधना का अहंकार भी नहीं करना चाहिए।

श्रीभैरव-सिद्धि मन्त्र

मन्त्र— ॐ नमो काला-गोरा क्षेत्रपाल! धामं हाथं कान्ति,
जीवन हाथ कृपाल। ॐ गन्ती सूरज थम्भ प्रातः-सायं रथभं
जलतो विसार शर थम्भ। कुसी चाल, पाषाण चाल, शिला
चाल हो चाली, न चले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिए।
चोखा मन्त्र, ऐसा कुनी अब नार हसही।

विधि— उक्त मन्त्र का एक लाख जप तथा दशांश होम करने
से मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्रावस्था में यथा-विधि
पूजन इत्यादि कर यथा-शक्ति जप करना चाहिए। जप के बाद निम्न
मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव जी को नमस्कार करना चाहिए।
यथा— हीं हीं नमः। इस प्रकार साधना करने से भैरव जी सिद्ध होते
हैं और साधक की सभी अभिलाषायें पूर्ण होती हैं।

श्रीभैरव-चेटक मन्त्र

मन्त्र— ॐ नमो भैरवाय स्वाहा।

विधि— उक्त नवाक्षर मन्त्र का कुल 40 हजार जप करके
गो-धूल से दशांश हवन करें। 18 दिनों तक इस तरह हवन करने से
भैरव जी प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा से सभी मनोकामनायें पूर्ण
होती हैं।

भैरव जी की चौकी मूकने का मन्त्र

मन्त्र— चेत सूना ज्ञान, औंधी खोपड़ी मरघटियां मसान,
बाँध दे बाबा भैरों की आन।

विधि- उक्त चौकी मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर एक घेरा खींचें, तो किसी भी प्रकार का डर नहीं रहता। स्व-रक्षा और दूसरों द्वारा किए गये अभिचार कर्म के लिए यह उपयोगी मन्त्र है।

शत्रु-विनाशक मन्त्र

मन्त्र- मन मना गुरु रतना, छपक देव हरताल, जगर-बगर तेंदुआ होय, बिजली चमके कोई घरी, कोई समय के बेर में। कोई हंसा ला हर बन्दन दे। जय चण्डी माता।

विधि- चिता की राख, हरताल और सरसों से 108 बार उक्त मन्त्र जपते हुए 'हवन' करें तथा एक मुर्गे की 'बलि' दें। 'हवन' की राख शत्रु के सिर पर डालने से उसका नाश होगा।

टोना लगाने का मन्त्र

मन्त्र- “काली-काली महाकाली, आधी रात के आबे काली, जिहाँ पठाँवों तिहाँ जाबे। जाय के काय खाबे, मूँड फोर गुदी ला खाबे, छाती फोर करेजा ल खाबे, नैन फोर पुतरी ल खाबे, जाँघ टोर कनिहा ला खाबे, मरूआ टोर बहियाँ ल खाबे, नाक फोर नकडेरा ला खाबे। जा फलाने/फलानी के छाती म चप जा।

विधान- हरियाली अमावस्या या दीपावली को उक्त मन्त्र को 108 बार जप कर सिद्ध करें। फिर प्रयोग के समय उक्त मन्त्र को काले उड़द या नींवू पर तीन बार पढ़कर शत्रु के घर में फेंकें।

टोना फूंकने का मन्त्र

मन्त्र— “हक नाम भाखों, तो पक नाम पड़े मिट्टी। पक नाम भाखों, तो टोना नाम पड़े मिट्टी॥”

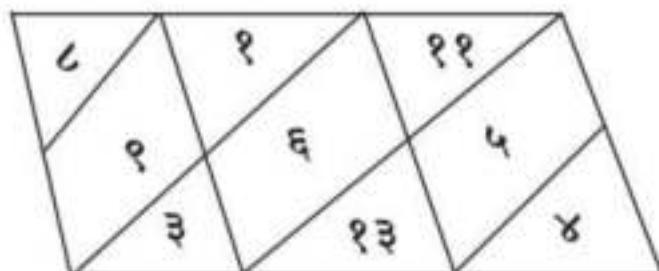
विधान— यदि किसी व्यक्ति पर टोना लगा हो तो उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर पीड़ित व्यक्ति को फूंक मारें।

सर्वसौख्य प्रदायक मन्त्र

मन्त्र— “ॐ वलीं नमः॥”

विधान— सर्वप्रथम दस हजार मन्त्र सात दिनों तक जप कर सिद्ध कर लें। फिर 108 मन्त्र प्रतिदिन जप करें। साधना शुक्रवार से शुरू करें। इस प्रयोग को करने से धन-धान्य की वृद्धि, सुख, शान्ति तथा सम्मान प्राप्त होता है।

इष्ट ग्रह कुमार बीसा यन्त्र



प्रथम प्रयोग— इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर जिस ग्रह से पीड़ा या संकट हो उस ग्रह का नाम लिख लें और पृथ्वी में गाढ़कर उसके ऊपर उस ग्रह के मन्त्र से हवन करके नमस्कार कर दें। इस तरह से कुपित ग्रह शान्त होते हैं।

दूसरा प्रयोग— पीपल के पत्ते पर बने इस यन्त्र के ऊपर चोरी

गई वस्तु का नाम लिखकर धी, दीप, धूप के सम्मुख रखकर पूजन करके 'हुँ' इस मन्त्र की 40 माला का जाप प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में करके इस यन्त्र का बहते जल (नदी) में विसर्जन कर दें तो चोरी गई या खोई हुई वस्तु मिल जाती है।

तीसरा प्रयोग— ताम्रपत्र या भोजपत्र पर ये यन्त्र बनाकर (ताम्रपत्र या भोजपत्र के अभाव में किसी अच्छे कागज पर बना लें) शीशे में मढ़ा लें और उसको घर में रखें। धी, दीप, धूप से पूजन करें तो सौभाग्य की वृद्धि होकर सभी प्रकार के संकटों से छुटकारा मिल जाता है। भोजपत्र पर लिखकर अपने पास रखने से सदा विजय होती है और वह व्यक्ति सभी का प्रिय बन जाता है।

स्त्री मोहन यन्त्र

५५	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	९
४	६	६१	६४

इस यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर स्त्री के दूध से लिखकर भुजा पर बांध लेने से स्त्री स्वयं आकर क्षमा मांगती है अथवा विमोहित होकर आती है। यही इस यन्त्र का विशेष प्रभाव है।

अमोघ बीसा यन्त्र

७	४	६	३
१	८	२	९

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर तावीज बना लें, बालक के गले में बांधने से नजर लगना, भूत-प्रेत वाधा व अन्य किसी प्रकार का रोग भय नहीं रहता।

कला के क्षेत्र में प्रवेश हेतु कामाख्या यन्त्र



ऐसे व्यक्ति, जो कलाकार बनना चाहते हैं, रंगमंच अथवा सिनेमा जगत् में जाना चाहते हैं या अपनी सन्तान को इस क्षेत्र में भेजना चाहते हैं तथा उनकी सफलता के इच्छुक हों, उन्हें इस यन्त्र

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान (265)

का विधिवत् निर्माण करके पूजन आदि करके धारण करना या करवाना चाहिए।

निर्माण-विधि- उपर्युक्त यन्त्र को अखण्डित भोजपत्र पर गोरोचन की स्थाही से लिखना चाहिए। लेखनी बनाने के लिए कनेर वृक्ष की लकड़ी का प्रयोग करें। नवरात्र में भगवती कामाख्या की प्रतिमा या चित्र की स्थापना सुन्दर लाल वस्त्र पर करें। कामाख्या यन्त्र के नीचे उक्त यन्त्र को भी रखें। यन्त्र के नीचे अपना नाम तथा उद्देश्य भी अंकित करना चाहिए। फिर निम्नांकित मन्त्र से सम्पुटित “दुर्गा सप्तशती” का पाठ स्वयं करें अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करायें। इस प्रकार उक्त यन्त्र सिद्ध हो जायेगा। सिद्ध होने के उपरान्त यन्त्र को चांदी अथवा सोने के ताबीज में रखकर गले या बाजू में धारण करें। भगवती की कृपा से उत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

सम्पुट-मन्त्र-

“विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥”

मस्तिष्क वृद्धि यन्त्र

४८	११	२	८
७	१	२८	८७
१०	८५	४१	१
४	६	८६	८०

यह यन्त्र माल क्रंगनी के रस से शुक्ल पक्ष की चौदस को लिखकर भुजा पर बांध लें तो बुद्धि अवश्य बढ़ेगी।

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

७स ४४ब ७०००
१०००११७०४७६०३०४
५ ॥ ७४८३ ::-७

इस यन्त्र को पत्थर पर लिखकर उस पत्थर को चूल्हे के नीचे गाड़ दें। सात दिन तक गड़ा रहने दें फिर जिसे वश में करना हो उसका तथा उसकी माता का नाम लिखकर दुबारा गाड़ दें तो वाचा खाली नहीं जायेगी।

पुरुष वशीकरण यन्त्र

६३	१	२	८
८	३	६९	३७
३९	३४	९	९
४	६	३५	३८

इस उपर्युक्त यन्त्र को प्याज के रस से रोटी पर लिख लें और रोटी को स्त्री जिस पुरुष को खिलायेगी वह वश में हो जायेगा।

बिक्री बढ़ाने का यन्त्र

७३	८९	२	७
७६	३	७७	६६
७१	७४	८	१
४	७५	५	६४

इस यन्त्र को दीपावली के दिन लिखकर दुकान के सामने रखें तो बिक्री अधिक होगी। फिर यन्त्र को बार-बार दुकान या व्यापार के स्थान पर रख सकते हैं लेकिन सर्वप्रथम दीपावली के दिन बनावें और प्रयोग करें इससे यन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

रोने वाले बच्चे के गले में बांधने का यन्त्र

३५	६	६३	४
६४	४१	४३	४१
४२	१५	४८	४५
४२	४३	४२	६४

यदि बच्चा रोता बहुत हो और रात-दिन चैन न लेने देता हो, बच्चे को गहरी नींद न आती हो तो ये यन्त्र लिखकर बच्चे के गले

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 268 }

में डाल दें, बच्चे का रोना बन्द हो जायेगा। यन्त्र को तांबे के ताबीज में रखकर गले में लटकाना अच्छा होगा अन्यथा यन्त्र के खराब हो जाने का डर है।

बच्चे की निद्रा के समय भय दूर भगाने का यन्त्र

२१	३२	३५	२२
३५	३३	२८	२३
२४	५७	३०	२७
३०	३६	३२	२६

जो बच्चा या बड़ा सोते समय डर से चिल्लाता हो या घबराकर बैठ जाये या सोते समय वह किसी और बाधा से दुःखित हो तो इस यन्त्र को लिखकर तांबे की ताबीज में रखकर भुजा पर बांधें।

व्यापार में लाभ होने का यन्त्र

५०	५७	२	७
६	३	५२	५२
५६	५१	८	५१
४	५	५२	५५

यह यन्त्र भोजपत्र पर बनाना है।

विधि- केसर की स्याही में बहती नदी का जल डालकर चमेली की कलम से शुक्रवार को 700 यन्त्र भोजपत्र पर लिखकर आटे की गोली बनाकर उसमें मिला दें और उन आटे की गोलियों को मछलियों को खिलायें। यही यन्त्र दुकान पर भी लिख लें। व्यापार में दिन प्रतिदिन लाभ होगा।

स्त्री-वशीकरण यन्त्र

जो कोई मनुष्य इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर अपनी दाहिनी भुजा में बांध ले तो औरत उससे प्रसन्न रहेगी तथा उस स्त्री का ध्यान इधर-उधर नहीं भटकेगा। वह स्त्री उस पुरुष के वश में हो जायेगी।

२२	३५	३४	२९
३३	२८	२३	३४
२७	३०	३७	१४
३६	३५	२६	२१

सर्वकामना सिद्धि यन्त्र



उपर्युक्त यन्त्र का निर्माण किसी शुभ शुक्रवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्थाही बनाकर सोने अथवा चांदी की कलम से करना चाहिए। फिर नवरात्र में उक्त यन्त्र का पूजन करके निर्माकित मन्त्र का 11000 (ग्यारह हजार) की संख्या में जप करके तांबे के तादीज में रखकर धारण करना चाहिए। यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली है। यह किसी भी स्थिति में प्रभावहीन नहीं होता। कोई भी इच्छित कार्य, व्यापार वृद्धि, आजीविका प्राप्ति, ऐश्वर्य प्राप्ति, विपत्ति तथा समस्त प्रकार की वाधा-निवारण हेतु यह कवच अद्भुत प्रभाव रखता है। यह धारण करने के उपरान्त धूप, दीप सदैव दिखाते रहना चाहिए। जन्म और मृत्यु सूतक में कवच को उतारकर रख लेना चाहिए। निवृत्ति के बाद स्नान आदि करके पुनः धारण कर लेना

कामाख्या-मन्त्र एवं पूजन विधान (271)

चाहिए। अपना नाम तथा इच्छित कार्य भी यन्त्र में लिख देना चाहिए।

मन्त्र— “ॐ ह्रीं कर्णीं कामाक्ष्यै नमः।”

लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र



किसी भी नवरात्रि में उपर्युक्त यन्त्र को भोजपत्र, स्वर्ण अथवा रजत पत्र पर बनाना चाहिए। यदि भोजपत्र पर बनायें तो गोरोचन की स्याही से कनेर की कलम से लिखना चाहिए। फिर किसी भी एक नवरात्रि में लक्ष्मी सूक्त अथवा श्री सूक्त का यथासम्भव पाठ व होम करें। इसके उपरान्त यन्त्र यदि भोजपत्र पर बनाया गया है तो उसे स्वर्ण अथवा चांदी के ताबीज में रखकर गले में अथवा हाथ में धारण करें। यदि स्वर्ण अथवा चांदी में बनाया गया है तो उसका नित्य पूजन आदि करें।

इस प्रकार यन्त्र-पूजन, पाठ आदि करने से श्री वृद्धि होती है। साधक सभी प्रकार के ऐश्वर्य का भोग करता है। यन्त्र को गंगाजल, दूध, शहद तथा फलों के रस आदि से भी स्नान कराया जा सकता है। पात्र के रूप में शंख बहुत ही उत्तम होता है, अतः उसमें जलादि लेकर यन्त्र को स्नान करा सकते हैं। यदि “श्री सूक्त” का पाठ करते हैं तो

“पुरुष सूक्त” का पाठ भी साधक को करना चाहिए।

स्त्री-वशीकरण कामाख्या यन्त्र



इस यन्त्र का निर्माण किसी ऐसे शुक्रवार के दिन करना उत्तम होता है, जब हस्त नक्षत्र पड़ता हो। यन्त्र-निर्माण के लिए हरे रंग की स्याही से जंगली कबूतर की टांग से बनी कलम से भोजपत्र का प्रयोग करना चाहिए। फिर भगवती कामाख्या के यन्त्र अथवा चित्र के समक्ष इस यन्त्र को रखकर कामाख्या-पूजन, मन्त्र-जप आदि करें। इस विधि से यह यन्त्र सिद्ध हो जायेगा। सिद्ध होने के उपरान्त उक्त यन्त्र को मोड़कर अपने पास रख लें। जैसे ही अवसर मिले, इस यन्त्र को खोलकर वाँछित स्त्री को दिखायें। यन्त्र को देखते वह स्त्री कामातुर होकर निश्चय ही साधक की ओर आकर्षित हो जायेगी। यन्त्र के मध्य में उस स्त्री का नाम भी लिखें। (जीव-हत्या किसी भी दशा में उचित नहीं है।)

पुरुष-वशीकरण कामाख्या यन्त्र



जिस बृहस्पतिवार में पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन भोजपत्र पर गोरोचन की स्याही से उक्त यन्त्र का निर्माण करें। कलम के लिए मुर्गे की टांग का प्रयोग करें। यन्त्र बनाकर भगवती के चित्र, मूर्ति अथवा कामाक्षा यन्त्र के नीचे रख दें। फिर विधिवत् माँ कामाख्या का पूजन करें। निश्चय ही सफलता मिलेगी। यह यन्त्र पति को आकर्षित व वशीभूत करने के लिए बहुत ही उत्तम है।

सौभाग्योदय यन्त्र

जीवन में कई बार ऐसे व्यक्ति भी मिल जाते हैं जो व्यापार या नौकरी के लिए भरपूर प्रयत्न करते हैं फिर भी सफलता नहीं मिलती, ज्योतिषी कुण्डली देखकर बता देते हैं कि इस व्यक्ति के भाग्य में बहुत धन है लेकिन प्रत्यक्ष में वह कुछ विशेष नहीं होता अर्थात् भाग्य में लिखा है फिर भी दरिद्रता में ही जीवन-यापन चलता रहता है। ऐसे

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 274 }

व्यक्ति के लिए यह यन्त्र विशेष रूप से फलदायी है। इस यन्त्र का काम सौभाग्य जाग्रत् करना है।

८	९	३
२	७	११
१०	४	६

प्रयोग विधि- भोजपत्र पर लिखकर दाहिने हाथ में धारण करने से सौभाग्य खुलेगा। धी और सिन्दूर से व्यापार स्थल आदि पर लिखें और नित्य धूप दीप से पूजन करें।

ॐ

श्री कामाख्या-तन्त्रम् (सार्व)

१. प्रथमः पटलः

श्री कामाख्या-माहात्म्य

श्री देव्युवाच—

भगवन् सर्वधर्मज्ञं सर्वविद्याधिपं प्रभो।
सर्वदानन्दहृदयं सर्वागमप्रकाशक॥१॥
श्रुतानि सर्वतत्त्वाणि यामलानि च भूरिशः।
विद्यास्ताः सकला देव सफलास्त्वत्प्रसादतः॥२॥
सारात् सारतरं तन्त्रं किं जानासि वद प्रभो।
अतीवेदं रहःस्थानं तेन मे शुश्रुषा सदा॥३॥

श्री देवी ने कहा— हे भगवन्! हे प्रभो! हे सभी धर्मों के ज्ञाता और सभी विद्याओं के स्वामी! हे सदा आनन्द हृदय! हे सभी आगम शास्त्रों के प्रकाशक! मैंने सब तन्त्रों और यामलों को अनेकों बार सुना है। हे देव! आपकी कृपा से सभी विद्यायें सफल हैं। अर्थात् आपकी ही कृपा से सभी विद्यायें फलदायिनी हैं। हे प्रभो! श्रेष्ठ से श्रेष्ठ तन्त्र जिसे आप जानते हों वह भी मुझे बतलाइये। इस अत्यन्त ही गोपनीय ज्ञान को सुनने की मेरी इच्छा रहती है।

श्री शिव उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मदीये प्राणवल्लभे।
योनिरूपा महाविद्या कामाख्या वरदायिनी॥४॥

वरदानन्ददा नित्या महाविभववद्धिनी।
 सर्वेषां जननी सापि सर्वेषां तारिणी मता॥५॥
 रमणी चैव सर्वेषां स्थूला सूक्ष्मा शुभा सदा।
 तस्यास्तन्त्रं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय॥६॥
 निखिलासु च विद्यासु यासु सिद्ध्यन्ति साधकाः।
 यत्र कुत्रापि केनापि कामाख्या फलदायिनी॥७॥
 कामाख्या सिद्धिदा तेषां सर्वविद्यास्वरूपिणी।
 कामाख्याविमुखा लोका निन्दिता भुवनत्रये॥८॥

श्री शिव बोले— हे देवि! हे प्राणवल्लभे! सुनो! बताता हूँ।
 वरदायिनी महामाया कामाख्या महाविद्या हैं जो योनिरूपा, वरदा,
 आनन्ददा, नित्या तथा महान ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली हैं। वह सबकी
 जननी और सबकी तारिणी भी कही गयी हैं। वे सदैव स्थूल और सूक्ष्म
 और सबके लिए शुभ हैं। मैं उनके तन्त्र का वर्णन करूँगा। अत्यन्त
 सावधान होकर सुनो। सम्पूर्ण विश्व में जितने प्रकार की विद्याओं की
 साधना द्वारा साधकगण सिद्धि प्राप्त करते हैं, उन सभी विद्याओं में
 कामाख्या फल प्रदान करने वाली हैं। साधकों के लिए कामाख्या ही
 सर्वविद्यास्वरूपिणी और सिद्धि प्रदायिनी हैं। जो व्यक्ति कामाख्या से
 विमुख अर्थात् उनके प्रति उदासीन रहता है, उसकी तीनों लोकों में
 निन्दा होती है।

विना कामात्मिकां कापि न दात्री सिद्धिसम्पदाम्।
 कामाख्यैव सदा धर्मः कामाख्या चार्थ एव च॥९॥
 कामाख्या कामसम्पत्तिः कामाख्या मोक्ष एव च।
 निर्वाणं सैव देवेशि सैव सायुज्यमीरिता॥१०॥

सालोक्यं सहरूपञ्च कामाख्या परमा गतिः।
सेविता देवि ब्रह्माद्यैश्चन्द्रेण विष्णुना तथा॥११॥

केवल कामात्मिका अर्थात् कामाख्या के अतिरिक्त अन्य कोई भी शक्ति कहीं भी सिद्धिरूपी सम्पदा प्रदान करने में समर्थ नहीं है। कामाख्या ही धर्म और अर्थस्वरूपा है। कामाख्या ही काम और मोक्ष है। हे देवि! वही निर्वाण और वही सायुज्य मुकित है। कामाख्या ही ब्रह्मा आदि, चन्द्रमा और विष्णु द्वारा सेवित है।

शिवता ब्रह्मता देवि! विष्णुता चन्द्रताऽपि च।
देवत्वं सर्वदेवानां निश्चितं कामरूपिणी॥१२॥
सर्वासामपि विद्यानां लौकिकं वाक्यमेव च।
कामाख्याया महादेव्याः स्वरूपं सर्वमेव हि॥१३॥
पश्य पश्य प्रिये सर्वं चिन्तयित्वा हृदि स्वयम्।
कामाख्यां न विना किञ्चिद् विद्यते भुवनत्रये॥१४॥
लक्षकोटिमहाविद्यास्तन्नादौ परिकीर्तिताः।
सारात्सारतरं देवि सर्वेषां षोडशी मता॥१५॥
तस्यापि कारणं देवि कालिका जगदम्बिका।
चन्द्रकान्तिर्यथा देवि जायते लीयते पुनः॥१६॥
स्थावराणि चराणि च नित्यानित्यानि यानि च।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं विना तां नैव जायते॥१७॥

हे देवि! कामाख्या ही शिव का शिवत्व, ब्रह्मा का ब्रह्मत्व, विष्णु का विष्णुत्व तथा चन्द्रमा का चन्द्रत्व है। यही कामरूपिणी सभी देवों का देवत्व है। सभी विद्याओं का लौकिक वाक्य है। सभी महादेवी कामाख्या का ही स्वरूप हैं। हे प्रिये! हृदय में कामाख्या का ध्यान

करके स्वयं का चिन्तन करो। अर्थात् कामाख्या के बिना तीनों लोकों में कुछ भी नहीं है। तन्व आदि में एक लाख करोड़ महाविद्यायें बतायी गयी हैं। हे देवि! उनके सार तत्व के रूप में पोडशी बतायी गयी है। हे देवि! उसका कारण भी जगदम्बा काली हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा की कान्ति प्रकट होती है, फिर लुप्त हो जाती है। उसी प्रकार स्थावर और जंगम तथा नित्य और अनित्य— जो कुछ भी है, वह सब कामाख्या के बिना उत्पन्न नहीं होता। यह कथन सत्य है, सत्य है और बार-बार सत्य है।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे प्रथमः पटलः)



2. द्वितीयः पटलः

मन्त्रोद्धार

श्री शिव उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि शृणु देवि परात् परम्।
 यज् ज्ञात्वा जायते सिद्धिर्देवानामपि दुर्लभाम्॥१॥
 मन्त्रस्यास्य प्रभावेण मोहयेदखिलं जगत्।
 ब्रह्मादीन् मोहयेद् देवि बालकं जननी यथा॥२॥
 देवदानवगन्धर्वकिन्नरादीन् सुरेश्वरि।
 मोहयेत् क्षणमात्रेण प्रजाश्च नृपतिर्यथा॥३॥
 मन्त्रस्य पुरतो देवि राजानः सचिवादयः।
 अन्ये च मानवाः सर्वे मेषादिजन्तवो यथा॥४॥
 मोहयेन्नगरं राज्ञः सहस्त्यश्वरथादिकम्।
 उर्वश्याद्यास्तु स्वर्वेश्या राजपत्न्यादिकाः क्षणात्॥५॥

श्री शिव ने कहा— हे देवि! मैं श्रेष्ठतम् मन्त्रोद्धार को कहूंगा, जिसे जानकर देवताओं द्वारा भी दुर्लभ सिद्धि को प्राप्त किया जाता है। जिस प्रकार बालक को माता मोहित कर लेती है या प्रजा को राजा मोहित कर लेता है, उसी प्रकार हे सुरेश्वरि! कामाख्या साधक भी देवता, दानव, गन्धर्व, किन्नर आदि को क्षणभर में वशीभूत कर लेता है। इस मन्त्र के सामने हे देवि! राजा, मन्त्री तथा अन्य सभी व्यक्ति उसी प्रकार वशीभूत हो जाते हैं जैसे बलि के प्रयोजन हेतु लायी गयी भेड़। साधक हाथी, घोड़ा, रथ आदि से युक्त समस्त नगर, उर्वशी

आदि स्वर्ग की अप्सराओं तथा राजपत्नी आदि को क्षणभर में मुग्ध कर लेता है।

स्तम्भनं मोहनं देवि क्षोभणं जृम्भणं तथा।
द्रावणं त्रासनञ्चैव विद्वेषोच्चाटनं तथा॥६॥
आकर्षणञ्च नारीणां विशेषेण महेश्वरि।
वशीकरणमन्यानि साधयेत् साधकोत्तमः॥७॥
अग्निः स्तम्भति वायुश्च सूर्यो वारिसमूहकः।
कटाक्षेणैव सर्वाणि साधकस्य न चान्यथा॥८॥
जगञ्जयति मन्त्रज्ञः कामदेवो यथा जयी।
तस्यासाध्यं त्रिभुवने न किञ्चित् प्राणवल्लभे॥९॥

हे देवि! स्तम्भन, मोहन, क्षोभण, जृम्भण, द्रावण, त्रासन, विद्वेषण, उच्चाटन और विशेषकर स्त्रियों का आकर्षण, वशीकरण और अन्य साध्यों को श्रेष्ठ साधक सिद्ध कर लेता है। ऐसा साधक कटाक्ष मात्र से अग्नि, सूर्य, वायु और समुद्र— सभी को स्तम्भित कर देता है, इसमें सन्देह नहीं है। हे प्राणवल्लभ! इस मन्त्र का साधक कामदेव के समान सम्पूर्ण जगत् को जीत लेता है। तीनों भुवन में उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं होता है।

मन्त्रस्वरूपवर्णनम्

जृम्भणान्तं त्यक्तपाशं यात्रावारणरोहकम्।
वामकर्णयुतं देवि नादबिन्दुयुतं पुनः॥१०॥
एतत् त्रिगुणीकृत्य कल्पवृक्षमनुं जपेत्।
एकं वापि द्वयं वापि त्रयं वा जपेत् सुधीः॥११॥

कामाख्यासाधनं कार्यं सर्वविद्यामु साधकैः।

अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात् विघ्नस्तेषां पदे पदे॥१२॥

मन्त्र का स्वरूप—‘जृम्भणान्त’ = ‘त’, ‘त्यक्तपाश’ = ‘अ’ से रहित, ‘यात्रावरण’ = ‘र’ से युक्त, ‘वामकर्ण’ = ‘ई’, ‘नाद बिन्दु’ = अर्थात् ‘त्री’—इस बीज को तीन गुना करें यथा, ‘त्रीं त्रीं त्रीं’। कल्पवृक्ष के समान इस मन्त्र का जप करना चाहिए। बुद्धिमान साधक एक माला, दो माला, तीन माला अथवा एक हजार बार या एक लाख जप करें। सभी विद्याओं के साधकों को इस कामाख्या मन्त्र (त्रीं त्रीं त्रीं) की साधना करनी चाहिए अन्यथा सिद्धि नहीं होगी और पग-पग पर उनको विज्ञों का सामना करना पड़ेगा।

किं शाक्ता वैष्णवाः किं वा किं सौरा गाणपत्यकाः।

महामायाव्रताः सर्वे तैलयन्त्रे वृषा इव॥१३॥

अथास्याः साधनं देवि शाक्तानामेव सुन्दरि।

नात्र चक्रविशुद्धिस्तु कालादिशोधनं न च॥१४॥

कृते च नरकं याति सर्वं तस्य विनश्यति।

क्लेशशून्यं परं देवि साधनं द्रुतबोधकम्॥१५॥

शाक्त, वैष्णव, सौर और गाणपत्य—कोई भी हो, सभी देवी-देवताओं के उपासक महामाया द्वारा उसी प्रकार नियन्त्रित रहते हैं जैसे तैल यन्त्र में वृष। (अर्थात् जिस प्रकार विना वैल के तेल का कोलहू नहीं चल सकता उसी प्रकार विना कामाख्या-साधना के शाक्त आदि साधक सफल नहीं हो सकते)। हे देवि! कामाख्या मन्त्र की साधना शाक्तों के लिए आवश्यक है। इसकी साधना में न तो चक्रशुद्धि की आवश्यकता होती है और न ही काल आदि के शोधन की। जो इस

मन्त्र के सम्बन्ध में शोधन आदि का विचार करता है वह नरक में
जाता है और उसका सब कुछ नष्ट को जाता है। हे देवि! इस मन्त्र
की साधना में कोई कष्ट नहीं होता और इसके द्वारा शीघ्र ही सिद्धि
प्राप्त हो जाती है अर्थात् यह क्लेशशून्य और द्रुत ज्ञानदायिका है।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे द्वितीयः पटलः)



3. तृतीयः पटलः

काली-तारा-मन्त्रदान में विचार-निषेध

श्री देव्युवाच—

कालीतारामन्त्रदाने चक्रचिन्तां करोति: यः।

का गतिस्तस्य देवेश निस्तारो विद्यते न वा॥१॥

श्री देवी ने कहा— हे देवेश ! काली और तारा के मन्त्रदान में जो चक्र-विचार करता है उसकी क्या गति होती है ? उसके उद्धार का कोई उपाय है या नहीं ?

श्री शिव उवाच—

वयमग्निश्च कालोऽपि या या माता महेश्वरि।

किं ब्रूमो देवदेवेशि कालिकातारिणीमनुम्॥२॥

अज्ञानात् यदि वा मोहात् कालीतारामनौ प्रिये।

कृते चक्रादिगणने शुनीविष्टाकृमिर्भवेत्॥३॥

कल्पान्ते च महादेवि निस्तारो विद्यते न च।

तस्याः पूजां प्रवक्ष्यामि त्रैलोक्यसाधनप्रदाम्॥४॥

हठाद्धठाच्च देवेशि या या सिद्धिश्च जायते।

प्राप्यते तत्क्षणेनैव नात्र कार्या विचारणा॥५॥

श्री शिव ने कहा— हे महेश्वरि ! हम (अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश), अग्नि और काल या जो-जो मातायें (शक्तियाँ) हैं कालिका

और तारा के मन्त्रों की महिमा कैसे कहें। हे प्रिये! अज्ञान या मोहवश यदि कोई काली अथवा तारा के मन्त्रों के विषय में चक्रादि की गणना करने लगता है वह कुतिया के मल (विष्ठा) में कीड़े का जन्म पाता है और हे महादेवि! कल्प के अन्त में भी उसे मोक्ष प्राप्ति नहीं होती। अब मैं इन देवी (कामाख्या) की पूजा विधि कहूंगा जो ब्रैलोक्य को सिद्धि देने वाली है। जो-जो सिद्धियां हठपूर्वक घोर साधना करने से प्राप्त होती हैं, वे इस पूजा से क्षणभर में मिल जाती हैं, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।

यन्त्रनिर्माण-ध्यानवर्णनम्

सिन्दूरमण्डलं कृत्वा त्रिकोणञ्च समालिखेत्।
 निजबीजानि तमध्ये योजयेत् साधकोत्तमः॥६॥
 चतुरम्बं लिखेद् देवि ततो वज्ञाष्टकं प्रिये।
 अष्टदिक्षु यजेत्ताज्च न्यासजालं विधाय च॥७॥
 अक्षोध्यश्च ऋषिः प्रोक्तः छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम्।
 कामाख्या देवता सर्वसिद्धये विनियोजिता॥८॥
 करांगन्यासकादीनि निजबीजेन कारयेत्।
 षड्दीर्घभाजां ध्यायेत् कामाख्याभीष्टदायिनीम्॥९॥
 रक्तवस्त्रां वरोदयुक्तां सिन्दूरतिलकान्विताम्।
 निष्कलंकं सुधाधामवदनकमलोज्ज्वलाम्॥१०॥
 स्वर्णादिमणिमाणिक्यभूषणैर्भूषितां पराम्।
 नानारत्नादिनिर्माणसिंहासनोपरिस्थिताम् ॥११॥

हास्यवक्रां पद्मरागमणिकान्तिमनुत्तमाम्।
 पीनोन्तुंगकुचां कृष्णां श्रुतिमूलगतेक्षणाम्॥१२॥
 कटाक्षैश्च महासम्पद्दायिनीं परमेश्वरीम्।
 सर्वांगसुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्॥१३॥
 डाकिनीयोगिनीविद्याधरीभिः परिशोभिताम्।
 कामिनीभिर्युतां नानागन्धाद्यैः परिगन्धिताम्॥१४॥
 ताम्बूलादिकराभिश्च नायिकाभिर्विराजिताम्।
 समस्तसिद्धवर्गाणां प्रणतानां प्रतीक्षणाम्॥१५॥
 त्रिनेत्रां सम्मोहकरां पुष्पचापेषु विभ्रतीम्।
 भगलिंगसमाख्यानं किनरीभ्योऽपि शृणवतीम्॥१६॥
 वाणीलक्ष्मीसुधावाक्यप्रतिवाक्यमहोत्सुकाम् ।
 अशेषगुणसम्पन्नां करुणासागरां शिवाम्॥१७॥

यन्त्र-निर्माण एवं कामाख्या-ध्यान— सिन्दूर से वृत बनाकर उसके बीच में त्रिकोण बनायें (ॐ)। उस त्रिभुज के बीच में अपना बीज ‘त्री’ लिखें। फिर वृत के बाहर चतुर्भुज बनायें (ॐ)। चतुर्भुज बनाकर उसके बाहर आठ वज्रों को अंकित करें। तदोपरान्त न्यासादि करके आठों दिशाओं में काली की पूजा करें। इस मन्त्र के ऋषि अक्षोभ्य, छन्द अनुष्टुप और देवता कामाख्या है तथा सर्वसिद्धि के लिए विनियोग है। (ॐ अस्य श्री कामाख्या मन्त्रस्य, अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, कामाख्या देवता सर्व सिद्धये विनियोगः)। स्व बीज (त्री) में दीर्घ स्वर (त्रां त्रीं त्रूं त्रैं त्रों त्रः) लगाकर करांगन्यासादि करें। तब अभीष्ट-दायिनी कामाख्या देवी का ध्यान करें। लाल वस्त्रधारिणी, एक हाथ में वरद मुद्रा धारण किये हुए, सिन्दूर का तिलक लगाये हुए, निर्मल चन्द्रमा के समान उज्ज्वल कामाख्या-मन्त्र एवं विधान { 287 }

अथवा कमल के समान कान्तिमान मुख वाली, स्वर्णादि तथा मणि माणिक्य जटित आभूषणों से सुसज्जित, विविध रत्नों से निर्मित सिंहासन पर विराजित, हसमुखी, पद्म राग मणि जैसी आभा वाली, सर्वोत्तम, चौड़े और ऊचे स्तनों वाली, क्षीणकाय (पतली), कृष्णवर्णा, कानों तक फैले बड़े-बड़े नेत्रों वाली, कटाक्ष मात्र से महा ऐश्वर्य प्रदान कर देने वाली, परमेश्वरी, सर्वांग सुन्दरी, नित्या, विद्याओं से घिरी हुई, डाकिनी, योगिनी, विद्याधरी समूहों से शोभायमान, सुन्दर स्त्रियों से युक्त, विविध सुगन्धों से सुगन्धित, हाथों में पान (ताम्बूल) आदि लिये हुए नायिकाओं से सुशोभिता और समस्त सिद्धों द्वारा वंदिता, त्रिनेत्रा, सम्मोहन करने वाली, पुष्प-धनुष-धारिणी, किन्नरियों के द्वारा भगलिंग-समाख्यान को सुनती हुई, सरस्वती और लक्ष्मी से युक्ता, किन्नरियों के समान नृत्यपरायणा देवी के अमृतमय वचनों को सुनने के लिए उत्सुका, समस्त गुणों से सम्पन्ना, करुणा की सागर कामाख्या असीम दयामयी एवं मंगलरूपिणी देवी का ध्यान करना चाहिए।

पूजाविधिवर्णनम्

आवाहयेत्ततो देवीमेवं ध्यात्वा च साधकः।
 पूजयेच्च यथाशक्ति विधानेन हरप्रिये॥१८॥
 कुंकुमाद्यैः रक्तपुष्टैः सुगन्धिकुसुमैस्तथा।
 जवायावकसिन्दूरैः करवीरैर्विशेषतः॥१९॥
 करवीरेषु देवेशि कामाख्या तिष्ठति स्वयम्।
 जवायाज्च तथा विद्व मालत्यादिसमीपके॥२०॥
 करवीरस्य माहात्म्यं कथितुं नैव शक्यते।
 प्रदानात् जवायाज्च गाणपत्यमवाज्ञयात्॥२१॥

पूजा-विधि— उपर्युक्त प्रकार से ध्यान करके कामाख्या देवी का आवाहन करें। हे हरप्रिये! ध्यान के उपरान्त कुंकुम आदि, लाल पुष्पों, सुगन्धित फूलों, गुड़हल के फूल, यावक (अलकत्क), सिन्दूर और विशेषकर कनेर के फूलों से यथाशक्ति देवी की पूजा करें। हे देवेशि! करवीर तथा जवाकुसुम (गुड़हल पुष्प) के पुष्पों में कामाख्या स्वयं निवास करती हैं तथा मालती के समीप रहती हैं। कनेर पुष्प की महिमा कहना सम्भव नहीं है। देवी को जवा पुष्प अर्पित करने से साधक गणपति के समान हो जाता है।

पञ्चमकारमहिमावर्णनम्

पूजयेदम्बिकां देवीं पञ्चतत्त्वेन सर्वदा।
 पञ्चतत्त्वं विना पूजामभिचाराय कल्पते॥२२॥
 पञ्चतत्त्वेन देव्यास्तु प्रसादो जायते क्षणात्।
 पञ्चमेन महादेवि शिवो भवति साधकः॥२३॥
 पञ्चतत्त्वसमं देवि नास्ति नास्ति कलौ युगे।
 पञ्चतत्त्वं परं ब्रह्म पञ्चतत्त्वं परा गतिः॥२४॥
 पञ्चतत्त्वं महादेवी पञ्चतत्त्वं सदाशिवः।
 पञ्चतत्त्वं स्वयं ब्रह्मा पञ्चतत्त्वं जनार्दनः॥२५॥

पंचमकार की महिमा— अम्बा देवी की पूजा सदैव पंचतत्व (पंचमकार— मांस, मदिरा, मत्स्य, मुद्रा तथा मैथुन) से करनी चाहिए। पंचतत्व के विना की गयी पूजा अभिचार के लिए समझी जाती है (व्यथा)। पंचतत्वों के द्वारा देवी क्षणभर में प्रसन्न हो जाती है। हे महादेवि! इस कलियुग में पंचतत्व के समान कोई वस्तु नहीं है। पंचतत्व परब्रह्म है, पंचतत्व परमगति है, पंचतत्व महादेवी और

सदाशिव है, पंचतत्त्व स्वयं ब्रह्मा और विष्णु है।

पञ्चतत्त्वं भुक्तिपुक्ती महायोगः प्रकीर्तिः।
पञ्चतत्त्वेन देवेशि महापातककोटयः॥२६॥
नश्यन्ति तत्क्षणेनैव तृण (तूल) राशिमिवानलः।
यत्रैव पञ्चतत्त्वानि तत्र देवी वसेद् ध्रुवम्॥२७॥
पञ्चतत्त्वविहीने तु विमुखी जगदम्बिका।
पञ्चतत्त्वं विना नान्यत् शाक्तानां सुखमोक्षयोः॥२८॥
शैवानां वैष्णवानाऽच्य शाक्तानाऽच्य विशेषतः।

पंचतत्त्व से भोग, मोक्ष दोनों मिलते हैं, उनका साधन महायोग कहा गया है। हे देवेशि ! पंचतत्त्व के द्वारा करोड़ों महापाप उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे अग्नि के द्वारा कपास का ढेर भस्म हो जाता है। जहां पंचतत्त्व होते हैं वहां भगवती का निवास हो जाता है। पंचतत्त्व से रहित स्थानों से जगदम्बिका दूर ही रहती है। पंचतत्त्व के अभाव में शैव, वैष्णव और विशेष रूप से शक्ति-साधकों को न तो सुख प्राप्त होता है और न ही मोक्ष।

मद्येन मोदते स्वर्गे मांसेन मानवाधिपः॥२९॥
मत्स्येन भैरवीपुत्रो मुद्रया धातृतां द्रजेत्।
परेण च महादेवि सायुज्यं लभते नरः॥३०॥

“मद्य” से पूजा करने पर स्वर्ग का आनन्द प्राप्त होता है, “मांस” से देवी की पूजा करने पर साधक राजा बन जाता है। “मत्स्य” से देवी का पूजन करने पर वह भैरवी पुत्र की योग्यता प्राप्त करता है। “मुद्रा” से विधाता हो जाता है अर्थात् उसमें साधुता आ जाती है। हे महादेवि ! परम तत्त्व “पंचम” (मैथुन) से मनुष्य (शक्ति के साथ) सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करता है।

आवरणपूजाविधिवर्णनम्

भक्तियुक्तो यजेद् देवीं तदा सर्वं प्रजायते।
 स्वयम्भूकुसुमैः शुक्लैः कुण्डगोलोद्भवै शुभैः॥३१॥
 कुंकुमाद्यैरासवेन चार्घ्यं देव्यै निवेदयेत्।
 नानोपहारैनैवेद्यैरन्नाद्यैः पायसैरपि॥३२॥
 वस्त्रभूषादिभिर्देवीं प्रपूज्यावरणं यजेत्।
 इन्द्रादीन् पूजयेत्तत्र तेषां यन्त्राणि शांकरि॥३३॥
 पाश्वर्योः कमलां वाणीं पूजयेत्साधकोत्तमः।

आवरण-पूजा-विधि— भक्ति-युक्त भाव से यदि साधक देवी (कामाख्या) की पूजा करे तो सब कुछ प्राप्त हो सकता है। सफेद रंग के स्वयम्भु (स्वयं पैदा हुए) पुष्पों से, कुण्ड और गोल से उत्पन्न शुभ वस्तुओं, कुंकुम आदि से और आसव से देवी को अर्घ्य निवेदित करे। अनेक प्रकार के उपहारों, नैवेद्यों, अन्न आदि तथा पायस (खीर) एवं वस्त्र-आभूषण आदि से भगवती का पूजन करने के उपरान्त आवरण-पूजा करनी चाहिए। हे शांकरि! इस पूजा में इन्द्रादि देवताओं और उनके अस्त्रों की भी पूजा करनी चाहिए। श्रेष्ठ साधक को भगवती के दोनों पाश्वों में लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा करनी चाहिए।

क्षेमदारोग्यदा चैव शुभदा धनदा तथा॥३४॥
 वरदामोहदा देवि ऋद्धिदा सिद्धिदापि च।
 बुद्धिदा शुद्धिदा चैव भुक्तिदा मुक्तिदा तथा॥३५॥
 मोक्षदा सुखदा चैव ज्ञानदा कान्तिदा तथा।
 एताः पूज्या महादेव्यः सर्वदा यन्त्रमध्यतः॥३६॥
 हे देवि! देवी कामाख्या के यन्त्र के मध्य में क्षेमदा, आरोग्यदा,

शुभदा, धनदा, वरदा, मोहदा, ऋषिदा, सिद्धिदा, बुद्धिदा, शुद्धिदा,
भुक्तिदा, मुक्तिदा, मोक्षदा, सुखदा, ज्ञानदा तथा कान्तिदा— इन
सोलह महादेवियों की पूजा करनी चाहिए।

डाकिन्याद्यास्तथा पूज्या सिद्धयो यत्ततः शिवे।
षडंगानि ततो देव्या यजेत् पुष्पाऽजलि क्षिपेत्॥३७॥
यथाशक्ति जपेन्मनं शुद्धभावेन साधकः।
जपं समर्प्य वाद्याद्यैस्तोषयेत् परदेवताम्॥३८॥
पठेत् स्तोत्रञ्च कवचं प्रणमेद् विधिवन्मुदा।
ततश्च हृदये देवीं संयोज्य शैषिकां प्रति॥३९॥
निर्माल्यं निक्षिपेदैशे त्रिकोणं परिकल्पयेत्।
निर्माल्यं साधकैः सार्धं गृहणीयाद् भक्तिभावतः॥४०॥
विहरेत् पञ्चतत्त्वेन यथाविधि स्वशक्तितः।

इसी प्रकार डाकिनियों एवं सिद्धियों की पूजा करनी चाहिए।
इसके बाद देवी के षडंगों की पूजा करके पुष्पांजलि अर्पित करें।
तदोपरान्त साधक को शुद्ध भाव से यथाशक्ति जप करना चाहिए।
अन्त में जप का समर्पण करके घण्टा घड़ियाल बजाकर देवी को
प्रसन्न करें तथा स्तोत्र और कवच का पाठ करके विधिपूर्वक प्रणाम
करें। इसके उपरान्त शैषिका अर्थात् जिनकी पूजा न हुई हो ऐसे
अवशिष्ट देवता के प्रति हृदयस्थ देवी को उन्मुख करके ईशानकोण में
त्रिकोण की कल्पना करके उस पर निर्माल्य छोड़ें। फिर अपनी शक्ति
के अनुसार यथाविधि पंचतत्वों से विहार करें।

शक्ति-महिमावर्णनम्

शक्तिमूलं साधनञ्च शक्तिमूलं जपादिकम्॥४१॥

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 292 }

शक्तिमूला गतिश्चैव शक्तिमूलञ्च जीवनम्।
 ऐहिकं शक्तिमूलञ्च पारत्रं शक्तिमूलकम्॥४२॥
 शक्तिमूलं तपः सर्वं चतुर्वर्गस्तथा प्रिये।
 शक्तिमूलानि सर्वाणि स्थावराणि चराणि च॥४३॥
 अज्ञात्वा पापिनो देवि रौरवं यान्ति निश्चितम्।
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेन साधकैश्च शिवाज्ञया॥४४॥
 शक्त्युच्छिष्टं भक्षितव्यं चान्यथा यान्ति रौरवम्।
 शक्त्यै यद् दीयते देवि तत्तु देवार्पितं भवेत्॥४५॥
 सफलं तस्य तत् कर्म सत्यं सत्यं कुलेश्वरि।
 शक्तिं विना कौलचक्रं करोति कारयेदपि॥४६॥
 स याति नरकं घोरं निस्तारो नहि (नैव) विद्यते।
 एवञ्च पूजयेद् देवीं यं यं चोदिदश्य साधकः॥४७॥
 तं तं कामं करे कृत्वा प्रिये जयति निश्चितम्।

शक्ति की महिमा— शक्ति ही साधना एवं जपादि का मूल है। शक्ति के कारण ही साधना होती है। वही जीवन का मूल तथा वही इहलोक और परलोक का मूल है। समस्त तप और चतुर्वर्ग, सभी स्थावर और जंगम का मूल शक्ति ही है। जो यह सत्य नहीं जानते वे निश्चय ही रौरव नरक को प्राप्त होते हैं। इसलिए शिवाज्ञा के अनुसार साधकों को शक्ति का उच्छिष्ट अर्थात् बचा हुआ भोज्य पदार्थ खाना चाहिए। अन्यथा वे रौरव नरक में जाते हैं। हे देवि! शक्ति को जो दिया जाता है वह देवता को ही अर्पित होता है। जिन उद्देश्यों से वह दिया जाता है वे सब सफल होते हैं। शक्ति के बिना जो चक्रार्चन करता है या करत्वाता है वह घोर नरक में जाता है। उनका उद्धार नहीं

होता है। इस प्रकार साधक जिस भी उद्देश्य को दृष्टिगत करके भगवती की आराधना करता है, हे प्रिये! वह उसी उद्देश्य में सफल होकर विजय प्राप्त करता है।

कामाख्यापुरश्चरणविधिवर्णनम्

पुरश्चरणकाले तु लक्ष्मेकं जपेत् सुधीः॥४८॥
 तद् दशांशं हुनेदाज्यैः शर्करामधुपायसैः।
 तर्पयेत्तद्दशांशैश्च जलैश्चन्दनमिश्रितैः॥४९॥
 गन्धाद्यैः साधकाधीशस्तद् जलैरभिषेचयेत्।
 अभिषेकदशांशेन भोजयेच्च द्विजोत्तमान्॥५०॥
 मिष्ठानैः साधकान् देवि देवीभक्तांश्च पञ्चमैः।
 एवं पुरक्रियां कृत्वा सिद्धो भवति साधकः॥५१॥
 प्रयोगेषु ततो देवि योग्यो भवति निश्चतम्।
 एतत् पूजादिकं सर्वकामाख्याप्रीतिकारकम्॥५२॥

पुरश्चरण-विधि- पुरश्चरण काल में साधक को मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। उसका दशांश ($1/10$ भाग) 'हवन' धी, शक्कर तथा मधुयुक्त खीर से करना चाहिए। हवन के दशांश (एक हजार) मन्त्रों से गन्ध व चन्दन युक्त जल से 'तर्पण' तथा तर्पण के दशांश मन्त्रों से गन्धादि द्वारा 'मार्जन' (अभिषेक) करना चाहिए। 'मार्जन' के दशांश की संख्या में श्रेष्ठ ब्राह्मणों को मिष्ठान से भोजन कराना चाहिए। हे देवि! साधकों और देवीभक्तों को पंचमकार से तृप्त करना चाहिए। इस प्रकार साधक मन्त्र का पुरश्चरण करके सिद्ध हो जाता है। हे देवि! तब वह प्रयोगों को करने में निश्चित रूप से योग्य हो जाता है। यह समस्त पूजनादि कामाख्या

को प्रसन्न करने वाला है।

योनिपूजावर्णनम्

महाप्रीतिकरी पूजा योनिचक्रे कुलेश्वरि।
योनिपूजा महापूजा तत्समा नास्ति सिद्धिदा॥५३॥
तत्र देवीं यजेद्धीमान् सैव देवी न चान्यथा।
आवाहनादि कर्माणि न तत्र सर्वथा प्रिये॥५४॥
लेपयेत्तां सुगन्धाद्यैः पूजयेद्द्विविधेन च।
महाप्रीतिर्भवेद् देव्याः सिद्धो भवति तत्क्षणात्॥५५॥
योनिपूजासमा पूजा नास्ति ज्ञाने तु मामके।
चुम्बनाल्लेहनाद् योनेः कल्पवृक्षमतिक्रमेत्॥५६॥
दर्शनात् साधकाधीशः स्पर्शनात् सर्वमोहनः।
लिंगयोनिसमाख्यानं कामाख्याप्रीतिवर्धनम्॥५७॥
तदेव जीवनं तस्या गिरिजे बहु किं वचः।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन योनिपूजां समाचरेत्॥५८॥

योनिपूजा-वर्णन – हे कुलेश्वरि! योनिचक्र में की गयी पूजा से देवी अत्यधिक प्रसन्न होती है। यह योनिपूजा ही महापूजा है। उसके समान अन्य कोई पूजा सिद्धि प्रदान करने वाली नहीं है। श्रेष्ठ साधक को उसमें (योनि में) भगवती कामाख्या की पूजा करनी चाहिए। योनि ही देवी है, दूसरी कोई नहीं है। हे देवि! वहां आवाहन आदि कोई कर्म नहीं होता। साधक को उसका गन्ध आदि से लेपन करना चाहिए और विविध प्रकार से उसकी पूजा करनी चाहिए। इससे भगवती अत्यधिक प्रसन्न होती है (यह क्रिया त्रिकोण यन्त्र पर भी की जा सकती है) और साधक तत्क्षण सिद्ध हो जाता है। मेरे ज्ञान

कामाख्या-मन्त्र एवं विधान { 295 }

में योनिपूजा के समान अन्य कोई पूजा नहीं है। श्रेष्ठ साधक योनि चुम्बन, लेहन (चाटने), दर्शन व स्पर्श से कल्पवृक्ष से भी बढ़कर कामनापूर्ति करने में सक्षम हो जाता है। वह सबको आकर्षित कर लेता है। लिंग-योनि का यह समाख्यान जगदम्बा को अत्यधिक प्रसन्न करता है। वही कामाख्या का जीवन है। हे गिरिजे! इससे अधिक क्या कहा जाये, साधक को प्रयासपूर्वक योनिपूजा करनी ही चाहिए।

परस्त्रीयोनिमासाद्य विशेषेण यजेत् सुधीः।
वेश्यायोनिः परा देवि साधनं तत्र कल्पयेत्॥५९॥
त्रिरात्रावेव सिद्ध्यन्ति नात्र कार्या विचारणा।
त्रहतुयुक्तलतामध्ये साधयेद्विविधान्मुदाः॥६०॥
अचिरात् सिद्धिमाजोति देवानामपि दुर्लभाम्।
सारात् सारतरं देवि योनिसाधनमीरितम्॥६१॥
विना तत्साधनं देवि महापापः प्रजायते।

विद्वान् साधक को दूसरी स्त्री की योनि को प्राप्त करके विशेष पूजन करना चाहिए। हे देवि! वेश्या की योनि सबसे उत्तम होती है। वहां साधना करनी चाहिए। इसकी साधना से साधक तीन रात्रि में ही सिद्ध हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए। रजस्वला स्त्रियों के बीच साधक को प्रसन्नता के साथ विविध प्रयोगों को करना चाहिए। इस प्रकार वह देवताओं को भी दुर्लभ सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। हे देवि! योनिपूजा साधना का मूल कही गयी है। उसकी साधना के बिना साधक महापापी हो जाता है।

योनिनिन्दां घृणां योनौ यः करोति नराधमः॥६२॥
अचिरात् रौरवं याति देवि सत्यं शिवाज्ञया।
योनिमध्ये वसेद् देवी योगिन्यश्चकुरे स्थिताः॥६३॥

त्रिकोणेषु त्रयो देवाः शिवविष्णुपितामहाः।
 तस्मान् निन्दयेद् योनिं यदीच्छेदात्मनो हितम्॥६४॥
 योनिनिन्दां प्रकुर्वाणः सर्वाशेन विनश्यति।
 योनिस्तुतिपरो देवि शिवः स्यात् तत्क्षणेन च॥६५॥
 किं द्रूपो योनिमाहात्म्यं योनिपूजाफलानि च।
 चाज्ज्वल्यात् गदितं किञ्चित् क्षन्तव्यं कामरूपिणी॥६६॥

हे देवि ! जो नराधम योनि-निन्दा और योनि से घृणा करता है शिव की आङ्गा से वह रौरव नरक में जाता है, जहां से उसे मुक्ति प्राप्त नहीं होती । यही सत्य है । देवी कामाख्या योनि में निवास करती हैं । योनि के चारों ओर उगे हुए बालों में योगिनियां रहती हैं । त्रिकोणाकार में ब्रह्मा, विष्णु और महेश विराजते हैं । इसीलिए साधक यदि अपने कल्याण की कामना करता है तो उसे योनि की निन्दा नहीं करनी चाहिए अन्यथा वह पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है । जबकि योनि के प्रति प्रशंसा भाव रखने वाला साक्षात् शिव-स्वरूप हो जाता है । मैं योनि के महत्व और पूजा के फल के विषय में अधिक क्या कहूँ । हे कामरूपिणी ! मुझे क्षमा करो क्योंकि चंचलता के कारण मैंने यह सब कुछ कह दिया है ।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे तृतीयः पटलः)

ॐ

4. चतुर्थः पटलः

मन्त्र का स्वरूप

“कामाख्या तन्त्र” के चतुर्थ पटल में भगवती के मन्त्र का स्वरूप, उसकी महिमा, भगवती के ध्यान, भग-लिंग साधना-विधान का वर्णन किया गया है। साथ ही साथ इस साधना के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है।

कामाख्या-मन्त्र-स्वरूप वर्णनम्

भैरव उवाच—

वरमन्त्रं प्रवक्ष्यामि सादरं शृणु पार्वति।
यस्य प्रसादमासाद्य ब्रह्मविष्णुशिवा अपि॥१॥
इन्द्राद्या देवताः सर्वा भजन्ते कामिनीयुताः।
गन्थर्वाः किनरा देवि तथा विद्याधरादयः॥२॥
यत्प्रसादात् समागत्य स्वकीयविषयान्विताः।
योगिनी - डाकिनी-विद्या-भैरवी-नायिकादिकाः॥३॥
कामाख्यामन्त्रमासाद्य भजन्ति (न्ते) योग्यतां पराम्।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये ये सिद्ध्यन्ति साधकाः॥४॥

मन्त्र का स्वरूप – भैरव (भगवान शिव) ने कहा— हे पार्वति ! अब मैं कामाख्या देवी के श्रेष्ठ मन्त्र का वर्णन करूँगा, उसे आदरपूर्वक सुनो । इसके प्रसाद से ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा इन्द्र आदि समस्त

देवगण सपलीक अपनी कामनाओं की पूर्ति करते हैं। हे देवि! गन्धर्व, किन्नर और विद्याधर आदि तथा योगिनी, डाकिनी, मैरवी, नायिका आदि विद्यायें इनकी कृपा प्राप्त करके परम योग्यता को प्राप्त हो जाती हैं। स्वर्गलोक, मृत्युलोक तथा पाताललोक में जो-जो साधक हैं, इस मन्त्र की कृपा से वे सिद्ध हो जाते हैं।

निजबीजत्रयं देवि क्रोधद्वयमतः परम्।
वधूबीजद्वयञ्चैव कामाख्ये च पुनर्वदेत्॥५॥
प्रसीदेति पदञ्चैव पूर्वबीजानि कल्पयेत्।
ठद्वयान्ते मनुः प्रोक्तः सर्वतन्त्रेषु दुर्लभः॥६॥
(त्रीं त्रीं त्रीं हूँ हूँ स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये! प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूँ
हूँ त्रीं त्रीं त्रीं स्वाहा स्वाहा।)

हे देवि! अपने तीन बीज (त्रीं त्रीं त्रीं), उसके बाद दो क्रोध-बीज (हूँ हूँ) और तीन वधू-बीज (स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं) फिर 'कामाख्ये' कहना चाहिए। बाद में 'प्रसीद' बोलकर पूर्वोक्त सभी बीजों को कहना चाहिए। अन्त में दो बार 'ठः' (स्वाहा स्वाहा) कहें। इस मन्त्र के पहले प्रणव (ॐ) लगाना चाहिए। सभी तन्त्रों में यह दुर्लभ मन्त्र कहा गया है।

कामाख्यामन्त्रमहिमावर्णनम्

प्रणवाद्या महाविद्या त्रैलोक्ये चातिदुर्लभा।
चतुर्वर्गप्रदा साक्षात् महापातकनाशिनी॥७॥
स्मरणादेव मन्त्रस्य सर्वे विज्ञाः समाकुलाः।
नश्यन्ति चानले दीप्ते पतंगा इव पार्वति॥८॥

मन्त्रग्रहणमात्रेण जीवन्मुक्तो हि साधकः।

भुक्तिर्मुक्तिः करे तस्य सर्वेषां प्रियतां द्रजेत्॥९॥

मन्त्र की महिमा— इस मन्त्र के पहले प्रणव लगायी गयी यह महाविद्या धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदायिनी, महापापों को नष्ट करने वाली साक्षात् देवी स्वरूप हो जाती है। हे पार्वति! इस मन्त्र के स्मरण मात्र से समस्त विष्ण उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे अग्नि में जलकर पतंगे भस्म हो जाते हैं। साधक मन्त्र को ग्रहण करते ही जीवन मुक्त हो जाता है। भोग और मोक्ष उसके हाथ में आ जाते हैं और वह सबका मित्र हो जाता है।

आवृणोति स्वयं लक्ष्मीर्वदने गीः सदा वसेत्।

पुत्राः पौत्राः प्रपौत्राश्च भवन्ति चिरजीविनः॥१०॥

पृथिव्यां सर्वपीठेषु कामाख्यादिषु शांकरि।

सिद्धिश्चलति तस्यैव नात्र कार्या विचारणा॥११॥

तस्य नाम च संस्मृत्य प्रणामन्ति सदा जनाः।

नाम श्रुत्वा वारमेकं पलायन्ते च हिंस्रकाः॥१२॥

स्वयं लक्ष्मी उसका वरण कर लेती है और सरस्वती उसके मुख में निवास करती है तथा उसके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र चिरंजीवी होते हैं। हे शांकरि! पृथ्वी पर, कामाख्या आदि समस्त पीठों पर उन्हीं की सिद्धि चलती है— इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए। उनके नाम का स्मरण करके श्रेष्ठ लोग प्रणाम करते हैं और हिंसक प्राणी उस नाम को सुनते ही भाग जाते हैं।

यावत्यः सिद्धयः सन्ति स्वर्गे मत्ये रसातले।

साधकानां परिचर्या कुर्वन्ति नात्र संशयः॥१३॥

तं दृष्ट्वा साधकेन्द्रं च वादी सखलति तत्क्षणात्।
 सभायां कोटिसूर्याभं पश्यन्ति सर्वसज्जनाः॥१४॥
 जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि।
 वर्णितुं नैव शक्नोमि मन्त्रमेकं कुलेश्वरि॥१५॥

स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक में जितनी भी सिद्धियां हैं वे सब साधकों की सेवा करती हैं— इसमें संशय नहीं है। उस साधक को देखकर शास्त्रार्थ करने वाला कुण्ठित हो जाता है और सभा में सभी विद्वान उसे करोड़ों सूर्य के समान आभा वाला देखते हैं। हे कुलेश्वरि! मैं हजारों करोड़ जिह्वाओं से और सैकड़ों मुखों से भी इस मन्त्र की महिमा का वर्णन नहीं कर सकता।

न्यासपूजादिकं सर्वं पूर्ववच्च वरानने।
 पुरश्चर्याविधौ किन्तु षट्सहस्रं मनुं जपेत्॥१६॥
 यथाविधि षट्शतानि होमादीश्च समाचरेत्।
 सिद्धो भवति मन्त्रज्ञः प्रयोगेषु ततः क्षमः॥१७॥

हे वरानने! इस मन्त्र के पुरश्चरण के विधान में न्यास पूजा आदि सब पूर्ववत् ही करनी चाहिए किन्तु इसके पुरश्चरण में मन्त्र का छः हजार जप करना चाहिए। उसके उपरान्त यथाविधि छः सौ मन्त्रों से होम आदि करना चाहिए। इतना करने से साधक को मन्त्र सिद्ध हो जाता है और फिर साधक इसका प्रयोग करने में समर्थ हो जाता है।

कामाख्याध्यानवर्णनम्

ध्यानं शृणु महादेव्या धनधान्यसुतप्रदम्।
 दारिद्र्यनाशनं देवि क्षणेनैव न चान्यथा॥१८॥

कामाख्या-ध्यान- हे देवि ! अब इसका ध्यान सुनो जो धन-धान्य और पुत्र प्रदान करने वाला है तथा एक क्षण में दरिद्रता का नाश करने वाला है, इस कथन में सन्देह नहीं है ।

अतिसुललितवेशां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां
जितजलदसुकान्तिं पट्टवस्त्रां प्रकाशम्।
अभयवरकराद्यां रत्नभूषातिभव्यां
सुरतक्तलपीठे रत्नसिंहासनस्थाम्॥१९॥
हरिहरविधिवन्द्यां शुद्धबुद्धिस्वरूपां
मदनशरसमावतां कामिनीं कामदात्रीम्।
निखिलजनविलासां कामरूपां भवानीं
कलिकलुषनिहन्त्रीं योनिरूपां भजामि॥२०॥

मैं उस योनिरूपा भवानी का भजन करता हूँ जो सुन्दर वेशभूषा वाली हैंसमुखी त्रिनेत्रा हैं और अपनी दीप्ति से नीले बादलों की कान्ति को पराजित करने वाली हैं । रेशमी वस्त्रों से वे प्रकाशमाना हैं । उन्होंने हाथों में अभय और वरमुद्रा धारण की हुई है । रत्नजटित आभूषणों से वे बहुत भव्य हैं । कल्पवृक्ष के नीचे स्थित पीठ पर रत्नजटित सिंहासन पर विराजित हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा बन्दनीया, शुद्ध-बुद्धि स्वरूपा हैं । कामदेव के मनमोहक वाण से विद्धु, कामिनी, कामदायिका, सभी लोगों की कामनाओं को पूर्ण करने वाली, कमनीया और कलिकाल के पापों का नाश करने वाली हैं ।

गुह्याद् गुह्यतरं देवि ध्यानं दारिद्र्यनाशनम्।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु तत्वं भावात् प्रकाशितम्॥२१॥
हे देवि ! यह ध्यान गुप्त से भी गुप्ततर है और दरिद्रता का नाश

करने वाला है। समस्त तन्त्रों में गोपनीय रूप से सुरक्षित है। तुम्हारे भक्तिभाव के कारण इसे मैंने प्रकट किया है।

भगलिंगसाधनावर्णनम्

स्वयम्भू कुसुमेनैव तिलकं परिकल्प्य च।
तूलिकायां महादेवि कुलशक्ति समाविशेत्॥२२॥

कर्पूरपूरितमुखः साधकश्चुम्बयेन्मुदा।
तस्याधरं यथा भृंगो नीरजव्याकुलः शिवे॥२३॥

दन्तक्षतिवितानाज्व परमं तत्र कारयेत्।
आलिंगयेन्मदोन्मत्तः सुदृढं कुचमर्दनम्॥२४॥

नखधातैर्नितम्बे च रमयेद् रतिपण्डितः।
पुनः पुनश्चुम्बनज्व योनौ कुर्यात् कुलेश्वरि॥२५॥

शुक्रन्तु स्तम्भयेत् वीरो योनौ लिंगं प्रवेशयेत्।
आधातैस्तोषयेत्तान्तु सन्धानभेदतः प्रिये॥२६॥

ततो लिंगे स्थिते योनौ आज्ञां तस्य प्रगृह्ण च।
अष्टोन्नरशतं मन्त्रं जपेद्द्वोमादिकांक्षया॥२७॥

दिनत्रयं महावीरः प्रजपेत् ध्यानतत्परः।
प्राप्यते मानसं वस्तु नात्र कार्या विचारणा॥२८॥

भगलिंग साधना— हे देवि! साधक स्वयम्भू पुण्य के द्वारा तिलक करके रुई से बने गदूदे में स्त्री साधिका को बिठाकर, अपने मुख में कपूर लेकर उसी प्रकार प्रसन्न भाव से उसके अंदरों का चुम्बन करें, जिस प्रकार भ्रमर कमल को चूमने के लिए व्याकुल रहता है। उस कुलशक्ति को दांतों के प्रहार से अत्यन्त विह्वल कर दे।

मदोन्मत्त होकर उसका आलिंगन करे और दृढ़ता से उसके कुचों का मर्दन करे। रतिक्रिया में निपुण साधक को अपने नाखूनों से उसके नितम्बों को सहलाते हुए उसे आनन्दित करना चाहिए। हे कुलेश्वरि! साधक को बारम्बार उसकी योनि का चुम्बन करना चाहिए परन्तु वीराचारी साधक को स्ययं पर नियन्त्रण रखते हुए अपने शुक्र का क्षरण नहीं होने देना चाहिए। इसके उपरान्त अपने लिंग को उस स्त्री की योनि में प्रविष्ट कर देना चाहिए। हे प्रिये! फिर जिस अंग पर आधात करने से वह स्त्री प्रसन्न होती हो उसे ध्यान में रखते हुए आधात करके पूर्णतः सन्तुष्ट करे। तदोपरान्त अपने लिंग को उसकी योनि में ही रोककर उसकी अनुमति लेकर होम आदि की कामना से 108 बार भगवती कामाख्या के मन्त्र का जप करे। एक वीराचारी साधक को भगवती के ध्यान में तत्पर होकर तीन दिनों तक यहीं प्रक्रिया दोहरानी चाहिए। इस अनुष्ठान को करने पर साधक मनोवाञ्छित फल प्राप्त करता है। इसमें सन्देह न करें।

ऋतुयुक्तलतां देवि निवेश्य तूलिकोपरि।
 करवीरप्रसूनञ्च तस्या लिंगोपरि न्यसेत्॥२९॥
 तद् वीक्ष्य देवदेवेशि जपेदष्टसहस्रकम्।
 दिनत्रयं ततो देव्याः प्रीतिः स्यादचला प्रिये॥३०॥
 धनं विन्दति तस्यैव लक्ष्यसंख्यं न संशयः।
 आनन्दं बद्धते नित्यं साधकस्य न चान्यथा॥३१॥

हे देवि! रजस्वला स्त्री को गद्दे वाले विस्तर पर विठाकर उसकी योनि के समक्ष कनेर का पुष्प अर्पित करना चाहिए। हे देवदेवेशि! फिर योनि पर ध्यान केन्द्रित करके एक हजार आठ (1008) की संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए। हे देवि! इसी प्रकार तीन दिन तक

जप करने से भगवती कामाख्या की प्रसन्नता प्राप्त होती है। एक लाख की संख्या में जप करने से साधक को धन की प्राप्ति होती है और दिन-प्रतिदिन उसके आनन्द की वृद्धि होती है।

अष्टोत्तरशतं योनिं सञ्चुम्ब्य पूज्य सञ्जनः।
पुनर्लिंगे स्थिते योनौ जपेदष्टसहस्रकम्॥३२॥
कांक्षापञ्चगुणं वित्तं प्राप्यते सर्वदा सुखी।
नित्यं तस्य महेशानि नायिकासंगमो भवेत्॥३३॥

उत्तम साधक को स्त्री-योनि का 108 बार चुम्बन करके अपने लिंग को उसकी योनि में स्थापित करके 1008 बार मन्त्र-जप करना चाहिए। इस प्रयोग को करने पर साधक को उसकी इच्छा का पांच गुना धन प्राप्त होता है। वह सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। हे महेशानि! उसका प्रतिदिन नयी-नयी स्त्रियों से समागम होता है।

वेश्यालतां समानीय कुलचक्रं विधाय चा।
तस्या योनौ यजेद् देवीं हष्टचित्तेन साधकः॥३४॥
भगलिंगसमाख्यानं सुस्वरेण समुच्चरेत्।
योनिं वीक्ष्य जपेन्मन्त्रं सप्तवारमतन्द्रितः॥३५॥
प्रत्यहं त्रिशतं कृत्वा सोऽपि सिद्धीश्वरः कलौ।
आज्ञां गृहणाति धनदस्तस्य देवि न संशयः॥३६॥
सदगुरोः स्मरणं कृत्वा योनेश्च साधनं यदि।
तदा सिद्धिमवाज्ञोति चान्यथा हास्यमेव च॥३७॥

वेश्या स्त्री को लाकर कुल चक्र की रचना करके प्रसन्नचित होकर साधक को उसकी योनि का पूजन करना चाहिए। फिर भगलिंग समाख्यान का ऊंचे स्वर में उच्चारण करना चाहिए। उसके उपरान्त

ध्यानपूर्वक योनि को देखते हुए सात दिनों तक मन्त्र-जप करना चाहिए। जप संख्या प्रतिदिन तीन सौ होनी चाहिए। इस प्रकार यजन-पूजन और मन्त्र-जप करने वाला साधक इस कलिकाल में सिद्धियों का स्वामी हो जाता है। हे देवि! कुबेर भी उसकी आङ्गा का पालन करते हैं। इसमें सन्देह न करें। उत्तम गुरु का स्मरण करके उनके दिशा-निर्देश में यदि साधक योनि-साधना सम्पन्न करता है तभी उसे साधना में सिद्धि प्राप्त होती है अन्यथा वह हंसी का पात्र बनता है।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे चतुर्थः पटलः)



5. पंचमः पटलः

गुरु-तत्व का वर्णन

इस पटल में गुरु-तत्व का वर्णन किया गया है। कथन किया गया है कि मनुष्य गुरु नहीं होता, उसमें केवल गुरु की भावना ही की जाती है। गुरु तो 'सदाशिव' को ही कहा जाता है। महाकाली से युक्त वे देव सच्चिदानन्द स्वरूप होते हैं। जिस व्यक्ति में ज्ञानत्रय का प्रकाश होता है वही गुरु होता है, शिवस्वरूप होता है। ज्ञान ही श्रेष्ठ है। ज्ञान के लिए ही देवता की उपासना की जाती है। जिस प्रकार मधु की कामना से भौंगा एक फूल से दूसरे फूल पर जाता है उसी प्रकार ज्ञान-पिपासु शिष्य को एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जाना चाहिए। ज्ञानी लोगों में ही भक्त शिष्यों की 'गुरुत्व' की कल्पना होती है। शान्त, संयमी, कुलीन, सदा शुद्ध अन्तःकरण और पंचतत्वों से अर्चन करने वाला जो ज्ञानी है, वही 'सद्गुरु' कहलाता है।

श्री देव्युवाच—

गुरुतत्त्वं महादेव विशेषेण वद् प्रभो।
दुर्वहा गुरुता देव सम्भवेन्मानुषे कथम्॥१॥
तत्रैव सद्गुरुः को वा श्रेष्ठः को वा वद् प्रभो।
दूरीकुरु महादेव संशयं मे महोत्कटम्॥२॥
इति देव्या वचः श्रुत्वा प्रोवाच शंकरप्रभुः।
श्री देवी बोली— हे प्रभु महादेव! गुरु तत्व का विशेष रूप से

वर्णन कीजिए। हे देव! गुरुत्व का निर्वाह बहुत कठिन है। मनुष्य के भीतर यह किस प्रकार सम्भव है? मनुष्यों में कौन सदगुरु और कौन श्रेष्ठ गुरु है— यह भी कथन कीजिये। हे महादेव! मेरे इस धोर संशय को दूर करें। देवी की इस बात को सुनकर भगवान् शिव बोले।

श्री शंकर उवाच—

शृणु सारतरं ज्ञानं साधूनां हितकारणम्॥३॥
 गुरुः सदाशिवः प्रोक्त आदिनाथः स उच्यते।
 महाकाल्या युतो देवः सच्चिदानन्दविग्रहः॥४॥
 सनातनः परं ब्रह्म श्रीधर्मस्त्रिगुणः प्रभुः।
 तत्प्रसादान्महामाये शिवोऽहमजरामरः॥५॥
 अत एव गुरुनैव मनुजः किन्तु कल्पना।
 दीक्षायै साधकानाऽच्च वृक्षादौ पूजनं यथा॥६॥

शंकर बोले— हे देवि! सज्जनों के लिए हितकारक श्रेष्ठ सारपूर्ण ज्ञान सुनो। सदाशिव को ही गुरु कहा गया है। वे आदिनाथ कहलाते हैं। महाकाली से युक्त वे देव सत्त्वित आनन्दित शरीर वाले, सनातन, परब्रह्म, त्रिगुण और प्रभावशील हैं। हे महामाया! उन्हीं की कृपा से मैं शिव अजर और अमर हूँ। जिस प्रकार वृक्षादि में देवत्व मानकर उनकी आराधना होती है, उसी प्रकार साधकों की दीक्षा के लिए मनुष्य में गुरु की कल्पना की जाती है। इस प्रकार मनुष्य ‘गुरु’ नहीं है, उसमें केवल गुरु की भावना मात्र है।

मन्त्रदातुः शिरः पद्मे यज्ञानं कुरुते गुरोः।
 तज्ज्ञानं शिष्यशिरसि चोपदिष्टं न चान्यथा॥७॥

अत एव महेशानि कुतो हि मानुषो गुरुः।
मानुषे गुरुता देवि कल्पना न तु मुख्यता॥८॥

सदाशिव मन्त्र प्रदान करने वाले गुरु के कमलवत् शिर में जिस ज्ञान की प्रतिष्ठा करते हैं (अर्थात् मन्त्रदाता अपने शिरस्थ कमल में गुरु का जो ध्यान करता है) उसी ज्ञान का शिष्य के शिर में उपदेश जाता है (अर्थात् उसी ध्यान को वह शिष्य के सिर में कान के माध्यम से उपदिष्ट करता है)। इसलिए हे महेशानि ! मनुष्य गुरु किस प्रकार हो सकता है ? हे देवि ! मनुष्य में गुरुता केवल कल्पना मात्र होती है । अन्य कोई बात नहीं है ।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचराम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥९॥
प्रसिद्धमिति यद् देवि तत्पदं दर्शको नरः।
अत एव नरे देवि गुरुता कल्पनैव हि॥१०॥

अखण्ड मण्डल के आकार वाला चराचर जगत् जिसके द्वारा व्याप्त है, उस सच्चिदानन्द ब्रह्म के पद का जिसने दर्शन कराया है, उस श्रीगुरु को नमस्कार है । हे देवि ! जो यह प्रसिद्ध वाक्य है, उससे स्पष्ट है कि उस सच्चिदानन्द ब्रह्मपद को दिखाने वाला चूंकि मनुष्य ही होता है, इसलिए हे देवि ! मनुष्यों में ही गुरुत्व की कल्पना की जाती है ।

न तु गुरुः स्वयं न च मुख्यता चोभयोरपि।
अयं गुरुरिति ज्ञानं शिष्योऽयं खलु मे सदा॥११॥
दर्शकः पठनश्चैव न स्वयं मानुषो गुरुः।
मोक्षो न जायते सत्यं मानुषे गुरुभावना॥१२॥

मनुष्य स्वयं गुरु नहीं होता है और न स्वयं शिष्य— दोनों की यह मूर्खता ही होती है कि वे सदैव यही समझते हैं कि यह मनुष्य ‘गुरु’ है और यह मनुष्य ‘शिष्य’। मनुष्य गुरु केवल दर्शक होता है जबकि मनुष्य ‘शिष्य’ केवल पाठक होता है। मनुष्य स्वयं गुरु नहीं होता। जिसकी मनुष्य में गुरुभावना होती है उसको मोक्ष नहीं मिलता। अर्थात् मनुष्य में गुरुभावना रखने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, यह वचन सत्य है।

यथा भोक्तरि भोज्यं हि स्वर्णादि पात्रकेण च।
 दीयते च तथा देवि तस्मै सर्वं समर्पणम्॥१३॥
 यदि निन्द्यज्य तत्पात्रं भग्नं वापि कुलेश्वरि।
 तदा त्यजेत् तत्पात्रं अन्यपात्रेण तोषयेत्॥१४॥
 अतो हि मनुजं लुब्धं दुष्टं शिष्यं हि संत्यजेत्।
 अहंकृतस्तु लोकैर्यस्तत्र रुष्टः सदाशिवः॥१५॥

हे देवि! जिस प्रकार भोजन करने वाले को भोजन स्वर्णादि के पात्र में दिया जाता है उसी प्रकार उस गुरु को सब कुछ समर्पित कर देना चाहिए। हे कुलेश्वरि! यदि वह भोज्यपात्र निन्दनीय अथवा खण्डित होता है तो उस पात्र को त्यागकर अन्य पात्र में भोजन परोसा जाता है और उसे सन्तुष्ट किया जाता है। इसी प्रकार दुष्ट लोभी मनुष्य शिष्य को पाकर उसे भी छोड़ देना चाहिए क्योंकि जो लोगों के द्वारा अहंकारी समझा जाता है, अर्थात् जो संसार में निन्दनीय है, उसे मन्त्र प्रदान करने से सदाशिव रुष्ट हो जाते हैं।

राजस्वं दीयते राज्ञे प्रजाभिर्मण्डलादिभिः।
 यथा तथैव तस्मै तु शिष्यदानं समर्पणम्॥१६॥

तत्रैव ग्राहका हिंसा मण्डलाद्याः शुभे यदि।
अन्यद्वारेण दातव्यं तांस्तान् संत्यज्य सर्वदा॥१७॥

जिस प्रकार राजाओं को प्रजा और मण्डल आदि के द्वारा राजस्व प्रदान किया जाता है, उसी प्रकार सदाशिव को शिष्य दान समर्पण किया जाता है। मण्डलादि दान के क्षेत्र में जिस प्रकार हिंसक दानग्रहीता को त्यागकर सदैव अन्य माध्यम से दान दिया जाता है, उसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में ज्ञानदान के समय भी उसी नियम का पालन किया जाता है।

सर्वेषां भुवने सत्यं ज्ञानाय गुरुसेवनम्।
ज्ञानान्मोक्षमवाप्नोति तस्माज् ज्ञानं परात् परम्॥१८॥
अतो यो ज्ञानदातार्हस्तमेव संश्रयेद् गुरुम्।
अन्नाकांक्षी निरन्तर्च यथा संत्यज्यति प्रिये॥१९॥
ज्ञानं यत्र समाभाति स गुरुः शिव एव हि।
अज्ञानिनं वर्जयित्वा शरणं ज्ञानिनं द्वजेत्॥२०॥

इस संसार में सत्य ज्ञान के लिए ही गुरु की सेवा की जाती है। ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है, अतः ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसलिए जो योग्य ज्ञानदाता है उसे ही गुरु मानना चाहिए। जिस प्रकार अन्न की इच्छा रखने वाला व्यक्ति अन्नहीन का त्याग कर देता है, उसी प्रकार ज्ञान की इच्छा रखने वाला व्यक्ति ज्ञानहीन व्यक्ति को छोड़ देता है (अर्थात् उसे गुरु नहीं बनाता)। जिस व्यक्ति में ज्ञान आभासित होता है, वही गुरु है और वही शिव है। अज्ञानी व्यक्ति का त्याग करके ज्ञानवान् व्यक्ति की ही शरण लेनी चाहिए। अर्थात् उसे ही गुरु बनाना चाहिए।

ज्ञानाद्धर्मो भवेनित्यं ज्ञानादर्थो हि पार्वति।
ज्ञानात् कामानवाज्ञोति ज्ञानान्मोक्षो हि निर्मलः॥२१॥

ज्ञानं हि परमं वस्तु ज्ञानं सारतरं हि च।
ज्ञानाय भजते देवं ज्ञानं हि तपसः फलम्॥२२॥

हे पार्वति! ज्ञान से ही 'धर्म' होता है, ज्ञान से नित्य 'अर्थ' होता है, ज्ञान से ही सदा 'काम' की प्राप्ति होती है और ज्ञान से ही सदा निर्मल 'मोक्ष' मिलता है। ज्ञान ही श्रेष्ठ वस्तु है। उससे श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। ज्ञान के लिए ही देवता की उपासना की जाती है। ज्ञान ही तपस्या का फल है।

मधुलुब्धो यथा भृंगः पुष्पात् पुष्पान्तरं ब्रजेत्।
ज्ञानलुब्धस्तथा शिष्यो गुरोर्गुर्विन्तरं ब्रजेत्॥२३॥
गुरवो बहवः सन्ति शिष्यविज्ञापहारकाः।
दुर्लभः स गुरुर्देवि शिष्यसन्तापहारकः॥२४॥

जिस प्रकार मधु का लोभी भंवरा एक फूल से दूसरे फूल पर जाता है, उसी प्रकार वर्तमान गुरु से अनुमति लेकर एक ज्ञान पिपासु शिष्य को एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जाना चाहिए। हे देवि! शिष्य का धन लेने वाले गुरु बहुत हैं परन्तु उसके दुःख को दूर करने वाले अर्थात् उसके सन्ताप को हरने वाले सद्गुरु दुर्लभ हैं।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाव्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥२५॥
इति ज्ञात्वा साधकेन्द्रो गुरुतां कल्पयेत् सदा।
ज्ञानिन्येव शिष्यभक्ताः केवलं कल्पना शिवे॥२६॥

शान्तो दान्तः कुलीनश्च शुद्धान्तःकरणः सदा।
पञ्चतत्त्वार्चको यस्तु सद्गुरुः स प्रकीर्तिः॥२७॥

अज्ञानरूपी अंधेपन को ज्ञानरूपी अंजन की सलाई से (मायाग्रस्त शिष्य की आंखों को) जिसने खोल दिया, अर्थात् ज्ञान प्रदान कर दिया, उन श्रीगुरुदेव को नमस्कार है। उक्त बात को जानकर ही साधक को गुरु बनाना चाहिए। हे शिव! ज्ञानी जनों में ही भक्त शिष्यों की ‘गुरुत्व’ की कल्पना होती है। जो शान्त, दान्त, कुलीन, संयमी, शुद्ध अन्तकरण वाला तथा पंचतत्त्वों से अर्चन करने वाला होता है, उसे ही सद्गुरु कहा जाता है।

सिद्धोऽसाविति विख्यातो बहुभिः शिष्यपालकः।
चमत्कारी दैवशक्त्या सद्गुरुः कथितः प्रिये॥२८॥
अश्रुतं संवृतं वाक्यं व्यक्ति साधु मनोहरम्।
तन्त्रं मन्त्रं समं वेत्ति य एव सद्गुरु सदा॥२९॥
शिष्यबोधाय निपुणो हिताय च (समाकुलः)।
निग्रहानुग्रहे शक्तः सद्गुरुः परिकीर्तिः॥३०॥

हे प्रिये! बहुत से शिष्यों को आश्रय देने के कारण “वह सिद्ध व्यक्ति है” उन्हें ऐसी ख्याति प्राप्त होती है। शिष्यपालक और दैवशक्ति से युक्त गुरु को ही सद्गुरु कहा जाता है। जो मनोहर हितकारी, अभूतपूर्व, समीचीन और तर्कपूर्ण बातें करते हैं और तन्त्र-मन्त्र से युक्त कथन करते हैं, वही सदा ‘सद्गुरु’ हैं। जो सदैव शिष्य के उद्बोधन कराने में निपुण और उसके कल्याण के लिए व्याकुल रहते हैं, उस पर अनुशासन करने और अनुग्रह करने को सदा तत्पर रहते हैं, वे ही सद्गुरु माने जाते हैं।

परमार्थं सदा दृष्टिः परमार्थप्रकीर्तनम्।
 गुरुपादाम्बुजे भक्तिर्यस्यैव सदगुरुर्मतः॥३१॥
 इत्यादि गुणसम्पत्तिं दृष्ट्वा देवि गुरुं भजेत्।
 त्यक्त्वाऽक्षमं गुरुं शिष्यो नात्र कार्या विचारणा॥३२॥

हे देवि! जिसकी दृष्टि सदैव परमार्थ-साधन में लगी रहती है और जो परमार्थ की चर्चा करता रहता है, गुरु चरणों में जो सदा आसक्त रहता है, वही 'सदगुरु' कहलाता है। उक्त गुणों को देखकर तथा असमर्थ गुरु को छोड़कर शिष्य को योग्य गुरु की सेवा करनी चाहिए। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं करना चाहिए।

केवलं शिष्यसम्पत्तिग्राहको बहुयाचकः।
 व्यंगितश्च समक्षे यो लोकैर्निन्द्यो गुरुर्यतः॥३३॥
 कायेन मनसा वाचा शिष्यं भक्तियुतं यदि।
 दृष्ट्वानुमोदनं नास्ति यस्य देवि स निन्दितः॥३४॥

हे देवि! केवल शिष्य की सम्पत्ति के ग्राहक और बहुत मांगने वाले, स्पष्ट रूप से विकलांग वहुत से गुरु होते हैं, ऐसे गुरु, लोगों के द्वारा निन्दनीय होते हैं। शरीर, वाणी और मन से भक्तियुक्त शिष्य को देखकर जो प्रसन्न नहीं होता और उसे सान्त्वना नहीं देता तो वह गुरु, निन्दा योग्य होता है।

कर्मणा गहितेनैव हन्ति शिष्यधनादिकम्।
 शिष्याहितैषिणं लोके वर्जयेत् तं नराधमम्॥३५॥
 महाऽविद्यां समादाय वीराचारं ददाति न।
 स याति नरकं घोरं शिष्योऽपि पतितो ध्रुवम्॥३६॥

जो घृणित कर्मों से शिष्य के धन आदि का नाश करता है और

शिष्य के हितैषी जनों की उपेक्षा करता है, उस नीच मनुष्य (गुरु) को छोड़ देना चाहिए। जो गुरु शिष्य को महाविद्या मन्त्र का दान देकर 'वीराचार' साधना का मार्ग नहीं बताता, वह घोर नरकगामी होता है और उसके शिष्य का भी पतन होता है, यह निश्चित है।

पशुभावे स्थितो यो हि कालिकातारिणीमनुष्म्।
दत्त्वाचारं बदेनैव नरकान्न निवर्तते॥३७॥
तस्मात् पशुगुरुस्त्याज्यः साधकैः सर्वदा प्रिये।
पशोर्दीक्षाधमा प्रोक्ता चतुर्वर्गविधातिनी॥३८॥

जो गुरु पशुभाव में रहते हुए शिष्य को काली अथवा तारा के मन्त्र की दीक्षा देकर उनका 'आचार' नहीं बताता, उसे नरक से छुटकारा नहीं मिलता। इसलिए हे प्रिये! साधकों को 'पशु गुरु' का सदैव त्याग करना चाहिए। पशु गुरु द्वारा दी गयी दीक्षा अधम होती है। वह शिष्य के चारों वर्गों— धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को नष्ट कर देती है।

यदि दैवात् पशोर्दीक्षां लभते शक्तिमान्नरः।
कौलात्तु कौलिकीं प्रार्थ्य तन्मनुं पुनरालभेत्॥३९॥
तदा विद्या प्रसन्ना स्यात् फलदा जननी समा।
अन्यथा विमुखी देवी कुतस्तस्यैव सद्गतिः॥४०॥

संयोगवश यदि कोई पशु गुरु से दीक्षा प्राप्त कर ले तो उसे प्रार्थना करके कौल गुरु से कौलिकी दीक्षा प्राप्त करके पुनः उस मन्त्र को प्राप्त करे। तब वह विद्या (मन्त्र) माँ के समान अभीष्ट फल देने वाली हो जाती है, अन्यथा देवी साधक से विमुख रहती है। फिर उस साधक की सद्गति नहीं होती।

पूर्वोक्तदोषयुक्तश्च दिव्यो वा वीर एव च।
 तयोरपि न कर्तव्यं शिष्येण गुरुभावनम्॥४१॥
 किन्तु भाव्यं हितैषित्वं गुरुताकल्पनां त्यजेत्।
 दिव्ये वीरे वरारोहे न दोषोऽत्र शिवाज्ञया॥४२॥

पूर्वोक्त दोषों से युक्त चाहे कोई 'दिव्य' साधक हो या फिर 'वीर' साधक, उनके प्रति शिष्य को गुरु भावना नहीं रखनी चाहिए। उन्हें केवल अपना हितैषी मानना चाहिए अर्थात् गुरु मानना छोड़ देना चाहिए। इसमें शिव की आज्ञा से कोई दोष नहीं होता।

साधकों का स्वरूप

श्री देव्युवाच—

दिव्यतो वीरतो देव पशुत्वं किं विशेषतः।
 वद मे परमेशान श्रोतुमिच्छामि शंकर॥४३॥

साधक का स्वरूप— श्रीदेवी ने कहा— हे परमेशान! 'दिव्य', 'वीर' और 'पशु' साधकों की क्या विशेषता है, मुझे बताइये? हे शंकर! मैं सुनना चाहती हूँ।

श्री शिव उवाच—

शृणु देवि जगद्वन्द्ये यत् पृष्ठं तत्त्वमुत्तमम्।
 दिव्यः सर्वमनोहारी सत्यवादी स्थिरासनः॥४४॥
 गम्भीरः शिष्टवक्ता च स भावध्यानतत्परः।
 गुरुपादाम्बुजे भीरुः सर्वत्र भयवर्जितः॥४५॥

सर्वदशीं सर्ववक्ता सर्वदुष्टनिवारकः।

सर्वगुणान्वितो दिव्यः सोऽहं किं बहुवाक्यतः॥४६॥

दिव्य साधक- श्री शिव बोले— हे जगद्‌वन्दनीय देवि! तुमने जिस थ्रेष्ठ सार को पूछा है, उसे सुनो। ‘दिव्य’ साधक मनोहारी, सत्यवादी, स्थिर आसन वाला, गम्भीर, शिष्टता से बात करने वाला, भावुक, ध्यान में तत्पर रहने वाला, गुरुचरण-कमलों के अतिरिक्त अन्य सबसे निर्भय रहता है। वह सब कुछ देखने वाला, सब कुछ बताने वाला, सब दुष्टों को हटाने वाला, सर्वगुण सम्पन्न, दिव्य, इसके अतिरिक्त और अधिक क्या कहूँ, मेरे जैसा ही तेजस्वी होता है।

निर्भयोऽभयदो वीरो गुरुभक्तिपरायणः।

वाचालो बलवान् शुद्धः पञ्चतत्त्वे सदा रतिः॥४७॥

महोत्साहो महाबुद्धिर्महासाहसिकोऽपि च।

महाशयः सदावीरो साधूनां पालने रतिः॥४८॥

तत्त्वमयः सदावीरो विनयेन महोत्सुकः।

एवं बहुगुणीर्युक्तो वीरो रुद्रसमः प्रिये॥४९॥

वीर साधक- हे देवि! वीर साधक निर्भय, अभयदाता, गुरुभक्ति परायण, वाकपटु, शक्तिशाली, सच्चरित्र और पंचतत्त्व में सदैव प्रीति रखने वाला होता है। वह अति उत्साही, अत्यन्त बुद्धिमान, साहसी, महाविचारक और सज्जनों की रक्षा में निरत रहता है। तत्त्वों से युक्त वीर साधक सदा नप्रता दिखाने को उत्सुक रहता है। इस प्रकार बहुत से गुणों से युक्त वीर साधक रुद्र के समान सर्वसमर्थ होता है।

पशून् शृणु वरारोहे सर्वदेवबहिष्कृतान्।

अधमान् पापचित्तांश्च पञ्चतत्त्वविनिन्दकान्॥५०॥

केचिच्छागोपमा देवि केचिन्मेषोपमा भुवि।
 केचित् खरोपमा भ्रष्टाः केचिच्च शूकरोपमाः॥५१॥
 इत्याद्या पश्वो देवि ज्ञेया दुष्टा नराधमाः।
 एषां देव्यर्चनं सिद्धिर्गणनं वा कुतो भवेत्॥५२॥
 ततो हि पशवश्छेद्या भैद्या खंगेन वीरकैः।
 वर्जिताः सर्वथा भद्रे परमार्थबहिष्कृताः॥५३॥

पशु साधक— हे वरारोहे! सभी देवताओं द्वारा बहिष्कृत पशु साधकों के विषय में सुनो। ये अधम, पापी मन वाले तथा पंचतत्व की निन्दा करने वाले होते हैं। हे देवि! इनमें से कुछ भूमि पर बकरे के समान कामुक, कुछ भेड़े के समान क्रोधी, कुछ गदहे के समान मूर्ख और कुछ सुअर के समान दुराचारी होते हैं। हे देवि! ऐसे पशुओं को दुष्ट और नराधम समझना चाहिए। ये देवी की अर्चना नहीं करते तब इनको सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है। इसलिए ऐसे पशु, वीराचारी साधकों द्वारा खड़ग से छेदनीय और भेदनीय होते हैं। वे परमार्थ के कार्यों में सर्वथा वर्जित और बहिष्कृत होते हैं।

श्री देव्युवाच—

किं चित्रं कथितं नाथ सन्देहः प्रबलीकृतः।
 क्षुद्रो हि पशुभावश्च गदितोऽयं स्वयं सदा॥५४॥
 अर्चितं पशुभावेन परं साधारणं यदि।
 देवता नैव जानाति तस्मात् समर्पितं नहि॥५५॥
 भज्ज भज्जाशु सन्देहं करुणासागर प्रभो।
 सूर्यो यथा सदा हन्ति चान्धकारं क्षणादपि॥५६॥
 श्री देवी ने कहा— हे नाथ! आपने कैसी विचित्र वात कही है।

इसको सुनकर मेरा सन्देह और भी प्रबल हो गया है। आपने स्वयं कहा है कि पशुभाव सदा क्षुद्र होता है। इसे “साधारण भाव” कहना अधिक उचित होगा परन्तु पशुभाव से की गयी साधना को यदि देवता “साधना” न समझें और उस साधना का फल देवता को समर्पित न हो सके, तो साधक के उक्त क्षुद्रभाव को ‘पशुभाव’ अथवा ‘साधारण भाव’ कैसे कहा जा सकता है। हे करुणासागर प्रभो! जिस प्रकार सूर्य अन्धकार को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार मेरे इस सन्देह को शीघ्र दूर कीजिए।

श्री शिव उवाच—

भद्रमुक्तं त्वया विज्ञे तत्त्वन्तु शृणु विस्तरम्।
 य उक्तः पशुभावो हि कलौ कस्तदुपासकः॥५७॥
 पञ्चतत्त्वं न गृहणाति तत्र निन्दां करोति न।
 शिवेन कथितं यत्र तत् सत्यमिति भावयन्॥५८॥
 निन्दासु वारयेल्लोकान् निन्दासु भयविह्वलः।
 निन्दायां पातकं वेत्ति पाशवः संप्रकीर्तिः॥५९॥

श्री शिव ने कहा— हे विज्ञानवती देवि! तुमने उचित कहा। अब शुद्ध सार को विस्तारपूर्वक सुनो। जिसे ‘पशुभाव’ कहा गया है कलियुग में उस प्रकार का उपासक कौन है? शिव कथन को सत्य समझता हुआ, जो पंचतत्व का ग्रहण तो नहीं करता किन्तु उसकी निन्दा भी नहीं करता। लोगों को उसकी निन्दा करने से रोकना है। स्वयं भी निन्दा करना वह पाप समझता है। वही पशुभाव का पालन करने वाला है।

तस्याचारं वदाम्याशु शृणु संशयनाशकम्।
 हविष्यं भक्षयेनित्यं ताम्बूलं न स्पृशेदपि॥६०॥
 ऋतुस्नातां विना नारीं कामभावे न संस्पृशेत्।
 परस्त्रियं कामभावाद् दृष्ट्वा स्वर्णं समुत् सृजेत्॥६१॥
 संत्यजेत् मत्स्यमांसानि पशुश्च नित्यमेव च।
 गन्धमाल्यानि वस्त्राणि चीराणि प्रभजेन हि॥६२॥

उसके 'आचार' को मैं बतला रहा हूँ जो कि संशय का नाशक है, उसे सुनो। 'पशुभाव' का पालन करने वाला नित्य हविष्य अन्न खाये किन्तु ताम्बूल का स्पर्श भी न करे। ऋतुस्नान की हुई स्त्री के अतिरिक्त किसी नारी को कामभाव से स्पर्श भी न करे। पराई स्त्री को कामभाव से यदि देखे तो तत्काल स्वर्णदान करे। एक पशुसाधक मत्स्य मांस का नित्य त्याग करता है। गंध, पुष्प माला, रेशमी वस्त्र और चीर आदि धारण नहीं करता है।

देवालये सदा तिष्ठेदाहारार्थं गृहं ब्रजेत्।
 कन्यापुत्रादिवात्सल्यं कुर्यान्नित्यं समाकुलः॥६३॥
 ऐश्वर्यं प्रार्थयेनैव यद्यस्ति तत् न त्यजेत्।
 सदा दानं समाकुर्यात् यदि सन्ति धनानि च॥६४॥
 कार्पण्यं नैव कर्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम्।
 सेवनं परमं कुर्यात् पित्रोर्नित्यं समाहितः॥६५॥
 परनिन्दां परद्रोहानहंकारादिकान् क्षिपेत्।
 विशेषेण महादेवि क्रोधं संवर्जयेदपि॥६६॥
 कदाचिद् दीक्षयैनैव पशुश्च परमेश्वरि।
 सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नान्यथा वचनं मम॥६७॥

पशुभाव का साधक सदा मन्दिर में रहता है और केवल भोजन के लिए ही घर जाता है। पुत्र-पुत्री आदि से सदा व्याकुल भाव से स्नेह करता है। वह ऐश्वर्य और धन-सम्पत्ति की कामना नहीं करता लेकिन जो उसके पास है उसका त्याग भी नहीं करता है। यदि धन पास में हो तो दान-पुण्य करता है। यदि अपना हित चाहता हो तो कभी कंजूसी न करे और प्रतिदिन एकाग्र चित्त से माता-पिता की सेवा करे। कर्म-बन्धन में बांधने वाले अहंकार आदि को दूर करे। हे महादेवि! विशेष रूप से क्रोध कभी न करे। परनिन्दा, दूसरों से शत्रुता और घमण्ड से दूर रहे। हे परमेश्वरि! पशुभाव वाले को कभी दीक्षा प्रदान न करे। यह बचन सत्य है, इसकी उपेक्षा कदापि न करे।

अज्ञानाद् यदि वा मोहान् मन्त्रदानं करोति यः।
 सत्यं सत्यं महादेवि देवीशापः प्रजायते॥६८॥
 इत्यादि बहुधाचारः कथितोऽयं पशोर्मतः।
 तथापि न च मोक्षः स्यात् सिद्धिर्नैव कदाचन॥६९॥
 यदि चंक्रमणे शक्तिः खंगधारे सदा नरः।
 पश्वाचारं सदा कुर्यात् किन्तु सिद्धिर्न जायते॥७०॥

जो पशुसाधक अज्ञान अथवा लोभवश यदि कोई मन्त्रदान करता है तो हे महादेवि! उसे देवी का शाप लगता है, यह अटल सत्य है। इस प्रकार पशुसाधक के अनेक ‘आचार’ मैंने कहे हैं। ऐसा आचरण करने पर भी न तो उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है और न ही सिद्धि मिलती है। यदि किसी को खड़ग की धार पर चलने की भी शक्ति प्राप्त हो जाये और वह पश्वाचार का पालन भी करे परन्तु उसे सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

जम्बुद्वीपे कलौ देवि ब्राह्मणो हि विशेषतः।
 पशुर्न स्यात् पशुर्न स्यात् पशुर्न स्यात् शिवाज्ञया॥७१॥
 सत्ये क्रमेच्चतुर्वर्णैः क्षीरजैर्मधुपायसैः।
 त्रैतायां पूजिता देवी घृतेन सर्वजातिभिः॥७२॥
 मधुभिः सर्ववर्णेश्च पूजिता द्वापरे युगे।
 पूजनीया कलौ देवी केवलैरासवैश्च तु॥७३॥

हे देवि! कलियुग में जम्बुद्वीप का कोई ब्राह्मण पशुसाधक न बने, ऐसी शिव की आज्ञा है। सत्युग में चारों वर्ण दूध से बनी खीर से देवी की पूजा करते थे। त्रैतायुग में सभी वर्णों द्वारा धी से और द्वापर में सभी जातियां शहद से पूजा करती थीं और हे देवि! कलियुग में देवी की पूजा केवल आसव से करनी चाहिए।

नानुकल्पः कलौ दुर्गे नानुकल्पः कलौ युगे।
 न सन्देहो न सन्देहो न सन्देहः कलौ युगे॥७४॥
 सत्यमेतत् सत्यमेतत् सत्यमेतच्छिवोदितम्।
 सदगुरोः शरणं गत्वा कुलाचारं भजेन्नरः॥७५॥
 दिव्यत्वं लभते किम्वा वीरत्वं लभते शुभे।
 असाध्यं साधयेद्वीरोऽप्यनायासेन यद् भुविः॥७६॥

हे दुर्गे! कलियुग में अनुकल्प का कोई विधान नहीं है। अर्थात् आसव के स्थान पर किसी अन्य वस्तु अर्पण करने का विकल्प नहीं है। इसमें किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है। शिव का यह कथन सर्वथा सत्य है। व्यक्ति को चाहिए कि वह सदगुरु की शरण लेकर कुलाचार का पालन करे। हे शुभे! इस प्रकार वह दिव्यता अथवा वीरता को प्राप्त करता है। वीर साधक इस पृथ्वी पर जो असाध्य है उसे भी वह विना परिश्रम प्राप्त कर लेता है।

श्री कामाख्या-रहस्यम् (322)

वीरत्वं क्लेशतो देवि! प्राप्नोतीह न चान्यथा।
 पशुकल्पशतैर्वापि साधितं न च तत्क्षमः॥७७॥
 लड्घतुं नैव शक्नोति यथा पंगुर्गिरं क्वचित्।
 अति गुह्यमिदं प्रोक्तं रहस्यं त्वयि सुन्दरि।
 गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं सदानधे॥७८॥

हे देवि! इस संसार में वीरभाव बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है।
 सैकड़ों पशुकल्पों से भी वैसी सिद्धि कोई पाने में समर्थ नहीं होता।
 यह ठीक ऐसा ही है जैसे कोई पंगु कभी पर्वत को पार नहीं कर
 सकता। हे सुन्दरि! इस अति गुप्त रहस्य को मैंने केवल तुमसे ही
 कहा है। हे अनधे! इसे गुप्त ही रखना।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे पंचमः पटलः)



6. षष्ठः पटलः

पञ्चतत्त्व-माहात्म्यम्

कामाख्या तन्त्र के छठे पटल में पंचतत्त्व के माहात्म्य, कुलाचार के माहात्म्य, कौल साधना-पद्धति का वर्णन किया गया है। पंचतत्त्व की महत्ता बताते हुए कथन किया गया है कि काली और तारा की साधना पंचतत्त्व के बिना वैसी ही होती है जैसे रजस के बिना स्त्री को सन्तान प्राप्त नहीं होती। कलियुग में जो साधक पंचतत्त्व से कुलेश्वरी का पूजन करता है, तीनों लोकों में उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। इसके उपरान्त साधना-विधि का वर्णन किया गया है।

श्री देव्युवाच—

कस्या देव्याः साधकानामेकान्तनिन्दनं महत्।
न कृत्वा पञ्चतत्त्वेन पूजनं परमेश्वर॥१॥

पंचतत्त्व का माहात्म्य— श्रीदेवी बोली— हे परमेश्वर! जो साधक पंचतत्त्वों से देवी का पूजन नहीं करते उनमें किन देवियों के साधक सर्वदा निन्दनीय हैं।

श्री शिव उवाच—

कलौ तु सर्वशाक्तानां ब्राह्मणानां विशेषतः।
पञ्चतत्त्वविहीनानां निन्दनं परमेश्वरि॥२॥
तन्मध्ये कालिकातारासाधनानां कुलेश्वरि।
मद्यं विना साधनञ्च महाहास्याय कल्पते॥३॥

यथा दीक्षां विना देवि साधनं हास्यमेव हि।
तथानयोः साधनानां ज्ञेयं तत्त्वं विना सदा॥४॥
शिलायां शस्यवापैश्च न भवेदंकुरो यथा।
अनावृष्ट्या क्षितौ देवि शस्यञ्चैव यथा नहि॥५॥

श्री शिव ने कहा— हे परमेश्वरि! कलियुग में सभी शक्ति साधक और विशेष रूप से ब्राह्मण यदि पंचतत्व विहीन हैं तो वह निन्दनीय है। हे कुलेश्वरि! उनमें भी काली और तारा के साधकों की साधना यदि मध्य विहीन हो तो वह हास्यास्पद होती है। हे देवि! जिस प्रकार दीक्षा के बिना साधना करना हास्यास्पद है, उसी प्रकार बिना पंचतत्व के इन दोनों देवियों (काली और तारा) की साधना हास्यास्पद होती है। हे देवि! जिस प्रकार पत्थर पर बोया हुआ बीज अंकुरित नहीं होता, जिस प्रकार वर्षा के अभाव में भूमि में अन्न उत्पन्न नहीं हो सकता।

ऋतुं विना स्त्रिया देवि कुतोऽपत्यं प्रजायते।
 गमनञ्च विना देवि ग्रामप्राप्तिर्यथा नहि॥६॥
 अतो देव्याः साधने तु पञ्चतत्त्वं सदा लभेत्।
 पञ्चतत्त्वैः साधकेन्द्रः साधयेद् विधिना मुदा॥७॥
 मर्यामांसैस्तथा मत्स्यमुद्राभिर्मैथुनैरपि।
 स्त्रीभिः सार्थं सदा साधुरच्चयेत् जगदम्बिकाम्॥८॥
 अन्यथा च महानिन्दा गीयते पण्डितैः सुरैः।
 कायेन मनसा वाचा तस्मात्तत्त्वपरो भवेत्॥९॥

जिस प्रकार रजस्वला हुए विना स्त्री को सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती और विना चले किसी गांव तक नहीं पहुंचा जा सकता, ठीक उसी प्रकार पंचतत्वों के विना देवी की पूजा सफल नहीं हो सकती

(अर्थात् पंचतत्व के बिना साधक को सिद्धि प्राप्त नहीं होती)। इसलिए देवी की साधना में सदा पंचतत्व को लेना चाहिए। साधक को प्रसन्नचित्त से पंचतत्वों का प्रयोग करना चाहिए। साधु पुरुष को मध्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन के द्वारा स्त्रियों के साथ जगदम्बा का उत्तम अर्चन करना चाहिए अन्यथा पण्डितों और देवताओं के द्वारा उसकी महानिन्दा की जाती है। अतः शरीर, वाणी तथा मन से तत्त्व परायण होना चाहिए।

कालिकातारिणीदीक्षां गृहीत्वा मद्यसेवनम्।
न करोति नरो यस्तु स कलौ पतितो भवेत्॥१०॥
वैदिकी तान्त्रिकी सन्ध्या जपहोमबहिष्कृतः।
अद्वाह्यणः स एवोक्त स एव हस्तिमूर्खकः॥११॥
शुनीमूत्रसमं तस्य तर्पणं यत् पितृष्वपि।
अतो न तर्पयेत् सोऽपि यदीच्छेदात्मनो हितम्॥१२॥

इस कलियुग में कालिका और तारा की दीक्षा लेकर जो साधक मध्य का सेवन नहीं करता, उसका पतन हो जाता है। वैदिकी तथा तान्त्रिकी सन्ध्या और जप-होम से बहिष्कृत होकर उसे अद्वाह्यण कहा जाता है। वह हस्तिमूर्खक, अर्थात् हाथी के समान विशाल होने पर भी मन्दबुद्धि होता है। उसके द्वारा किया गया पितृतर्पण भी कुतिया के मूत्र के समान होता है। इसलिए यदि वह अपना कल्याण चाहता है तो पितरों का तर्पण करायि न करे।

कालीतारामनुं प्राप्य वीराचारं करोति न।
शूद्रत्वं तच्छरीरेण प्राप्तं तेन न चान्यथा॥१३॥
क्षत्रियोऽपि तथा देवि वैश्यश्चाण्डालतां व्रजेत्।
शूद्रो हि शूकरत्वञ्च याति याति न संशयः॥१४॥

अवश्यं ब्राह्मणो नित्यं राजा वैश्यश्च शूद्रकः।
पञ्चतत्त्वेर्भजेद् देवीं न कुर्यात् संशयं क्वचित्॥१५॥

काली और तारा के मन्त्र की दीक्षा प्राप्त करके जो साधक वीराचार का पालन नहीं करता, उस (ब्राह्मण) के शरीर में शूद्रता आ जाती है, अर्थात् वह शूद्र हो जाता है। यह वचन असत्य नहीं है। हे देवि ! ऐसे क्षत्रिय की भी वही दशा होती है। वैश्य चाण्डाल के समान और शूद्र सुअर के समान हो जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसलिए हे देवि ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र – सभी को पंचतत्वों से देवी की पूजा करनी चाहिए। इसमें तनिक भी शंका न करें।

कुलाचार की महिमा

पञ्चतत्त्वैः कलौ देवि पूजयेद् यः कुलेश्वरीम्।
तस्यासाध्यं त्रिभुवने न किञ्चिदपि विद्यते॥१६॥
स ब्राह्मणो वैष्णवश्च शाक्तो गाणपतोऽपि च।
शैवः स परमार्थी च स एव पूर्णदीक्षितः॥१७॥
स एव धार्मिकः साधुज्ञानी चैव महाकृती।
याज्ञिकः सर्वकर्मार्हः सोऽपि देवो न चान्यथा॥१८॥

हे देवि ! कलियुग में जो पंचतत्वों से कुलेश्वरी की पूजा करता है, तीनों लोकों में उसके लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं होता। ऐसा व्यक्ति ही ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मज्ञानी, वैष्णव, शाक्त, गणेशोपासक, सूर्य-उपासक परमार्थी और पूर्ण दीक्षित माना जाता है। वास्तव में वह व्यक्ति ही धार्मिक, साधु, ज्ञानी, पुण्यात्मा, यज्ञकर्ता, सभी कार्यों में योग्य और देवता स्वरूप होता है। इसे अन्यथा न समझें।

पावनानीह तीर्थानि सर्वेषामिति सम्मतम्।
 तीर्थानां पावनः कौलो गिरिजे बहु किं वचः॥१९॥
 अस्यैव जननी धन्या धन्या हि जनकादयः।
 धन्या जातिकुटुम्बाश्च धन्या आलापिनो जनाः॥२०॥

हे गिरिजे! शास्त्रों का मत है कि तीर्थों से सब पवित्र होते हैं, किन्तु कौलसाधक तीर्थों को भी पवित्र करने वाला होता है। इससे अधिक और क्या कहें। उसकी माता धन्य है और उसका पिता भी धन्य है। जाति, कुटुम्ब और उसकी चर्चा करने वाले भी धन्य होते हैं।

नृत्यन्ति पितरः सर्वे गाथां गायन्ति ते मुदाः।
 अपि कश्चित् कुलेऽस्माकं कुलज्ञानी भविष्यति॥२१॥
 तदा योग्या भविष्यामः कुलीनानां सभातले।
 समागन्तुमिति ज्ञात्वा सोत्सुकाः पितरः परे॥२२॥
 कुलाचारस्य माहात्म्यं किं ब्रूमः परमेश्वरि।
 पञ्चवक्त्रेण देव्या हि सनातन्याः फलानि च॥२३॥

हे परमेश्वरि! यह सोचकर कि हमारे कुल में कुलज्ञानी होगा, उसके समस्त पित्रगण आनन्द से नाचने लगते हैं, जिससे हम भी कुलीनों की सभा में सम्मिलित हो सकेंगे। ऐसा जानकर अन्य पित्रगण भी उत्सुकता से भर उठते हैं। हे देवेश! सनातनी देवी के इस अर्चन और फलों का वर्णन हम अपने पांचों मुखों से भी नहीं कर सकते।

कौल साधना

श्री देव्युवाच—

साधनं वद कौलानां साधकानां सुखावहम्।

दिव्यं रम्यं मनोहारि सर्वाभीष्ट - फलप्रदम्॥२४॥

श्री देवी बोली— कौलसाधकों की दिव्य, सुखदायी, सुन्दर, मनोहारी और सभी वाञ्छित फलों को देने वाली साधना-पद्धति मुझे बताइये ।

श्री शिव-उवाच—

शृणु कामकले कान्ते साधकस्य सुखावहम्।

यत्किंचित् गदितं पूर्वं तद् वदाम्यहम्॥२५॥

श्री शिव बोले— हे कामकले ! हे कान्ते ! साधकों को सुख प्रदान करने वाला जो कुछ मैंने पहले बताया, वह विस्मृत हो गया है । उसी को अब मैं विस्तार से सुनाता हूँ ।

अतिसुललितदिव्यं स्थानमालोक्य भक्त्या

हृदि च परमदेवीं सम्बिभाव्यैकचित्तः।

मधुर-कुसुम-गन्धे-व्याप्तमावृत्य साधु

तदुपरि खलु तिष्ठेत् साधनार्थं कुलज्ञः॥२६॥

कुलज्ञाता साधक अति सुन्दर और दिव्य स्थान का चयन करके भक्तिपूर्वक एकाग्रचित्त होकर अपने हृदय में परमा देवी का ध्यान कर मधुर, सुन्दर और सुगन्धित पुष्पों से उस स्थान को सुसज्जित करके साधना के लिए उस पर बैठे ।

जयवति यतमानः शब्दपुण्यं क्षिपेत्तत्
 स खलु करकबीजान्यत्र दुर्गे ततो हि।
 चिरभवबकपुण्यं वर्जयित्वार्चयित्वा
 यदि जपति विधिज्ञस्तत्क्षणात् सोष्यहञ्च॥२७॥
 उपवनपरियुक्ते शुद्धरम्यालये यो
 विधिधृतवरलिंगं लेपयित्वा सुगन्धैः।
 विविधकुसुमधूपैर्धूपयित्वा लतां सः
 प्रतिजपति सुभक्त्या त्वत्सुतो जायते सः॥२८॥
 अचलशिखरम्ये शीघ्रमालम्बयित्वा
 कनककुसुमसार्धं मधु (सीधु) पुण्यं निवेद्य।
 कृतबहुविधपूजः श्रीगुरुं भावयित्वा,
 जपति यदि विलासी विष्णुरेव स्वयं सः॥२९॥
 परिचरति स साधुः सिद्धिवर्गः सशंकः
 परमतमलतानां वक्रपद्मोपभोगी।
 जयति भुवनमध्ये निर्जरश्चामरोऽपि
 व्रजति तमनु नित्यं सार्वभौमो नृणां सः॥३०॥
 अभिनवशुभनीरं रक्तपद्मप्रकीर्णम्
 विविधकमलरम्यं भर्जमीनप्रयुक्तम्।
 अपरविहितवस्तुव्याप्तमीशेश्वरोऽपि
 विगतजनसमूहे प्राप्य देहि प्रकोणम्॥३१॥
 धनधनितसुशोभे विद्युदादीपिरम्ये
 हृदि च परमेदेवीं चिन्तयित्वा सभक्त्या।

विधिविहितविधानैः स्नानपूजां समाप्य
 प्रतिजपति निशायां गहणरे ब्रह्मकः स्यात्॥३२॥
 इह च गुरुवराज्ञां प्राप्य शीर्षे निधाय
 प्रतिजपति कुलज्ञो भावभेदात् कुलेशि।
 सुरगुरुरिह को वा कोऽपि चन्द्रो दिनेशो
 ब्रजति भुवनमध्ये दिक्पतित्वञ्च कोऽपि॥३३॥
 इति च परमदेव्याः साधनं यन्मयोक्तं
 यदि पठति सुभव्यो गन्धापुष्ट्यैर्नमेच्च।
 अभिमतफलसिद्धिः सर्वलोकैवरिण्यो
 भवति भुवनमध्ये पुत्रदारैर्युतोऽपि॥३४॥
 अचलधनसमूहस्तस्य भोगे वसेन्तु
 प्रतिदिनमधिपूजा देवताया गृहे च।
 परिजनगणभक्तिः सर्वदा तत्र तिष्ठेत्
 सदसि वसति राज्ञः सादरः सोऽपि वन्द्यः॥३५॥

विजय प्राप्ति अर्थात् सिद्धि के लिए प्रयत्नशील साधक को “जय” शब्द का उच्चारण करके ‘क्रुं’ का उच्चारण करना चाहिए। फिर ‘दुर्गे’ का उच्चारण करे अर्थात् ‘जय क्रुं दुर्गे’ कहे। इस मन्त्र से मौलसिरी के पुण्य को छोड़कर किसी अन्य पुण्य से भगवती कामाख्या का पूजन करके उत्तम साधक को मन्त्र-जप करना चाहिए। ऐसा करने से वह साधक और मैं तत्काण एक हो जाते हैं, अर्थात् वह मेरे जैसा हो जाता है॥२७॥

साधक भैरवी के द्वारा विधिवत् पकड़े गये अपने लिंग को सुगन्ध से उपलिप्त करके, उस उपवन में वने सुन्दर गृह में, अनेक प्रकार के

सुगन्धित पुष्पों तथा धूप से उस भैरवी को धूपित करके काली अथवा तारा का जप करे तो वह तुम्हारे पुत्र जैसा हो जाता है॥२८॥

पर्वत की रमणीय चोटी (अचल, दृढ़ लिंग) पर उस भैरवी को शीघ्र ले जाकर स्वर्ण से निर्मित अथवा धतुरे के पुष्प के साथ महुए के पुष्प अथवा मध्य और पुष्प का नैवेद्य देकर विविध प्रकार से पूजन करने वाला साधक यदि निज गुरु का ध्यान करके मन्त्र जप करे तो वह स्वयं विष्णु जैसा बन जाता है॥२९॥

अतीव सुन्दर स्त्रियों के मुख कमल का उपभोग करने वाला वह साधक यदि सावधान होकर सिद्धियों की परिचर्या करता है तो उसे कभी वीमारी नहीं होती और वह अमरता को प्राप्त करके भुवनों के मध्य विजयी होता है और वह संसार उसका अनुसरण करता है तथा वह मनुष्यों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है॥३०॥

लाल कमल युक्त ताजे और स्वच्छ जल में जिसमें अनेक प्रकार के कमल और भुनी हुई मछली तथा अन्य वाँछित सामग्री भी हो, हे देवि! उसे किसी निर्जन स्थान के किसी कोने में ले जाकर, मणि तथा रत्नों आदि से इसे गुप्त ही रखना।

उपयुक्त अथवा वर्षाकालीन काले मेघों के समान सुन्दर छटा वाली अथवा आकाशीय विद्युत की चमक जैसे रमणीय हृदय में भक्तिपूर्वक मानसिक रूप से अनेक प्रकार से स्नान और पूजा करने के उपरान्त साधक रात्रिकाल में योनि में लिंग का प्रवेश करके जप करे तो वह ब्रह्मस्वरूप हो जाता है॥३१-३२॥

हे देवेशि! यदि साधक अपने कुलीन (कौलाचारी) गुरु से अनुमति प्राप्त करके लिंग को स्त्री की योनि में रखकर योनि और लिंग को शक्ति तथा शिव मानते हुए कालिका मन्त्र का जप करता

है तो वह बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य अथवा दिक्पालों के समान तेजस्वी होकर पृथ्वीलोक पर विचरण करता है॥३३॥

हे देवि! मैंने जो परमा देवी की यह साधना कही है, यदि कोई श्रेष्ठ साधक उसे पढ़ता है, गन्ध-पुष्पों आदि से परमा देवी की पूजा करके उसे नमस्कार करता है तो निश्चित ही वाञ्छित फल प्राप्त करके इस लोक में समस्त लोगों में सर्वोच्च होकर स्त्री और सुयोग्य पुत्रों से युक्त हो जाता है॥३४॥

वह साधक अपार सम्पत्ति का उपभोग करता है। मन्दिरों में देवताओं के समान वह भी पूजनीय हो जाता है। अपने परिजनों में भी वह देवरूप में पूजा जाता है। राज-सभा में भी वह उच्च स्थान प्राप्त करके राजाओं द्वारा बन्दनीय हो जाता है॥३५॥

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे षष्ठः पटलः)

५

7. सप्तमः पटलः

शत्रु-विनाश-विधान

श्री देव्युवाच—

श्रुतं रहस्यं देवेश कामाख्याया महेश्वर।

महाशत्रु विनाशाय साधनं किं बद प्रभो॥१॥

शत्रु-विनाश-प्रयोग— श्रीदेवी ने कहा— हे देवेश! हे महेश्वर! कामाख्या के रहस्य को मैंने सुना। महाशत्रु के विनाश हेतु कौन से साधन हैं, यह मुझसे कहें।

श्री शिव उवाच—

अति गुह्यतमं देवि तव स्नेहाद्वितन्यते।

महावीरः साधकेन्द्रः प्रयोगं तु समाचरेत्॥२॥

पूजयित्वा महादेवीं पञ्चतत्त्वेन साधकः।

महानन्दमयो भूत्वा साधयेत् साधनं महत्॥३॥

स्वमूत्रं तु समादाय कूच्छबीजेन शोधयेत्।

तर्पयेद् भैरवीं घोरां शत्रुनाम्ना पिबेत् स्वयम्॥४॥

दशदिक्षु महापीठे प्रक्षिपेदाननेऽपि च।

नग्नो भूत्वा भ्रमेत् तत्र, शत्रु-नाशो भवेद् ध्रुवम्॥५॥

श्री शिव ने कहा— हे देवि! तुम्हारे स्नेह के कारण और भी अधिक गुप्त साधन तुम्हें बताता हूँ। महावीर श्रेष्ठ साधक ही

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 334 }

इस प्रयोग को करे, अन्य नहीं। पंचतत्वों से महादेवी की पूजा करके अत्यन्त आनन्दित होकर इस महान साधन की सिद्धि करे।

अपने मूत्र को लेकर कूर्च बीज (हूँ) से शुद्ध करें। फिर उससे घोरा भैरवी का तर्पण करें। फिर शत्रु का नाम लेकर उसे पी जायें। दशों दिशाओं, महापीठ और अग्नि में उसे छिड़कें। फिर नग्न होकर वहां भ्रमण करें। इस प्रयोग से निश्चय ही शत्रु का नाश हो जायेगा।

शुक्रशोणितमूत्रेषु वीरो यदि घृणी भवेत्।
भैरवी कुपिता तस्य सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥६॥
दृष्ट्वा श्रुत्वा महेशानि निन्दां यो कुरुते नरः।
स महानरकं याति यावच्चन्द्रिवाकरौ॥७॥
वीराचारं महेशानि न निन्देन्मनसापि च।
वीरो यः स महादेवः स्वेच्छाचारी सदा शुचिः॥८॥

वीर्य, रक्त (रज) तथा मूत्र से यदि वीराचारी साधक घृणा करता है तो भैरवी उससे कुपित हो जाती है, यह मैं सत्य कहता हूँ। हे महेशानि! यदि कोई व्यक्ति इन वस्तुओं को देखकर इनकी निन्दा करता है तो वह तब तक भयंकर नरक में रहता है, जब तक सूर्य और चन्द्रमा आस्तित्व में हैं। हे महेशानि! 'वीराचार' की निन्दा मन से भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि एक वीराचारी महादेव के समान स्वेच्छाचारी होकर भी सदा पवित्र होता है।

मृत्यात्रन्तु समादाय साध्यनाम लिखेत् शिवे।
वायुना पूरितं कृत्वा स्वमूत्रं तत्र निश्चिपेत्॥९॥

मायाबीजं महेशानि अष्टोन्तरशतं जपेत्।
भैरव्यै तर्पयेद् देवि मारणोच्चाटनं भवेत्॥१०॥

हे शिवे! मिट्टी का पात्र लेकर उसके भीतर शत्रु का नाम लिखें। फिर नाम को वायु बीज ‘यं’ से सम्पुटित करके उस पर अपना मूत्र छिड़कें। हे महेशानि! इसके बाद माया बीज ‘ह्रीं’ या ‘हलीं’ का 108 की संख्या में जप करें। हे देवि! फिर भैरवी का तर्पण करें। इससे शत्रु का मारण तथा उच्चाटन होता है।

स्वमूत्रञ्च समादाय वामहस्तेन शंकरि।
शोधितं भैरवीमत्रे निःक्षिपेत् साधकोन्तमः॥११॥
उन्मादो जायते शत्रुग्नियते वा महेश्वरि।
मोहितः क्षोभितश्चापि वश्यो वापि भवेत् (वति) ध्रुवम्॥१२॥
मूत्रसाधनमात्रेण सहस्राक्षसमं रिपुम्।
नाशयेत् साधको वीरो नात्र कार्या विचारणा॥१३॥

हे शांकरि! अपने बायें हाथ में स्वमूत्र को लेकर उसे भैरवी मन्त्र ‘हम्मैं’ से शोधित करें। उसे शत्रु के ऊपर फेंकने से शत्रु निश्चय ही या तो पागल हो जाता है अथवा मर जाता है या फिर मृदृ, क्षुब्ध या वशीभूत हो जाता है। वीर साधक केवल मूत्र के द्वारा इन्द्र के समान शत्रु को भी नष्ट कर देता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

श्री देव्युवाच—

शुक्रशोणितमूत्राणि शुद्धानीह कथं प्रभो।
तद्वदस्व महेशान सन्देहनाशनं मम॥१४॥
शुक्रादि की शुद्धता— श्री देवी ने कहा— हे प्रभो! वीर्य, रक्त

(रज) और मूत्र शुद्ध कैसे हैं? यह बताकर मेरे सन्देह को नष्ट कीजिए।

श्री शिव उवाच—

शृणु देवि रहस्यञ्च महाज्ञानं वदाम्यहम्।
शुक्रोऽहं शोणितस्त्वं हि द्वयोरेवाखिलं जगत्॥१५॥
शुद्धं सर्वशरीरं तु शुक्रशोणितं यतः।
एवंभूतशरीरे तु यद् यद्वस्तु प्रजायते॥१६॥
अशुद्धं तत् कथं देवि पापरो निन्दति ध्रुवम्।
ब्रह्मज्ञानमिदं देवि मया ते गदितं किल॥१७॥
अतः शुद्धं जगत् सर्वं स्वकायस्थे तु का कथा।
ब्रह्मज्ञानं विना देवि न च मोक्षः प्रजायते॥१८॥

श्री शिव ने कहा— हे देवि! मैं तुम्हें महाज्ञान और रहस्य को बताता हूँ। वीर्य मैं हूँ और रक्त (रज) तुम हो। इन दोनों से ही यह सम्पूर्ण विश्व है। यह समस्त शरीर ही शुद्ध है क्योंकि यह वीर्य और रज से उत्पन्न होता है। इसलिए इस शरीर में जो-जो वस्तुयें (मल-मूत्र आदि) होती हैं, हे देवि! वे अशुद्ध किस प्रकार हो सकती हैं। निश्चय ही अज्ञानी व्यक्ति ही इनकी निन्दा करता है। हे देवि! यह ब्रह्मज्ञान है, जिसे मैंने तुमसे कहा। इस प्रकार यह समस्त संसार ही शुद्ध है फिर अपने शरीर में विद्यमान वस्तुओं/पदार्थों के विषय में क्या कहना, ये तो शुद्ध हैं ही।

ब्रह्मज्ञानी शिवः साक्षात् विष्णुब्रह्मा च पार्वति।
स एव दीक्षितः शुद्धो ब्राह्मणो वेदपारगः॥१९॥
क्रोडे तस्य वसन्तीह सर्वतीर्थानि निश्चितम्॥२०॥

कामाख्या-मन्त्र एवं विधान { 337 }

हे देवि! ब्रह्मज्ञान के बिना मोक्ष नहीं मिलता। हे पार्वति! ब्रह्मज्ञानी साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश ही होता है। वही दीक्षा प्राप्त साधक होता है तथा शुद्ध ब्राह्मण और वेदों में पारंगत होता है। निश्चय ही समस्त तीर्थ उसकी गोद में निवास करते हैं।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे सप्तमः पटलः)



४. अष्टमः पटलः

पूर्णाभिषेक एवं गुरु-लक्षण

श्री देव्युवाच—

महादेव जगद्गुरु करुणासागर प्रभो।

पूर्णाभिषेकं कौलानां वद मेसुखमोक्षदम्॥१॥

पूर्णाभिषेक वर्णन— श्री देवी बोलीं— हे विश्व-वन्दनीय महादेव! हे करुणासागर! हे प्रभो! कौलों के ‘पूर्णाभिषेक’ के विषय में मुझे बतायें, जो सुखप्रद और मोक्षप्रद है।

श्री शिव उवाच—

शृणु देवि मम प्राणवल्लभे परमाद्भुतम्।

पूर्णाभिषेकं सर्वाशापूरकं शिवताप्रदम्॥२॥

श्री शिव ने कहा— हे मेरी प्राणवल्लभे! हे देवि! परम अद्भुत, सभी आशाओं को पूर्ण करने वाले और शिवतत्व को प्रदान करने वाले ‘पूर्णाभिषेक’ के विषय में सुनिए।

आगत्य सद्गुरुं सिद्धं तन्त्रमन्त्रविशारदम्।

कौलं सर्वजनश्रेष्ठमभिषेकविधिञ्चरेत्॥३॥

अतिगुप्तालये शुद्धे रम्ये कौलिकसंमते।

वेश्यांगनाः समानीय तत्त्वानि च सुयलतः॥४॥

विशिष्टान् कौलिकान् भक्त्या तत्रैव सन्निवेशयेत्।
 अर्चयेदभिषेकार्थं गुरुं वस्त्रादिभूषणैः॥५॥
 प्रणमेद् विधिवद् भक्त्या तोषयेत् स्तुतिवाक्यतः।
 प्रार्थयेत् शुद्धभावेन कुलधर्मं वदेति च॥६॥
 कृतार्थं कुरु मे नाथ श्रीगुरो करुणानिधे।
 अभिषिक्तैः साधकैश्च सेवार्थं शरणागतः॥७॥

तन्त्र-मन्त्र में विशारद् सिद्ध और श्रेष्ठतम् कौल सद्गुरु के पास आकर ‘अभिषेक’ विधि को सम्पन्न करें। कौलिकों द्वारा समर्पित अत्यन्त गुप्त, शुद्ध तथा सुन्दर गृह में प्रयत्नपूर्वक वेश्या स्त्रियों और पंचतत्वों— मांस, मद्य आदि को लाकर भक्ति के साथ प्रवेश करायें। फिर वहीं अभिषेक के लिए गुरु की वस्त्राभूषणों आदि से पूजा करें। बाद में शुद्ध भावना के साथ स्तुति, वचनों से उन्हें प्रसन्न करते हुए प्रार्थना करें कि— हे दयासागर! हे गुरुदेव! मैं अभिषिक्त साधकों के साथ आपकी सेवा के लिए आपकी शरण में आया हूँ। हे नाथ! कुलधर्म को बताकर मुझे कृतार्थ करें।

ततोऽभिषिच्य तत्त्वानि शोधयेत् शक्तिमान्मुदा।
 स्थापयित्वा पुरः कुम्भं मन्त्रैर्मुद्रादिभिः प्रिये॥८॥
 वितानैर्धूपदीपैश्च कृत्वा चामोदितं स्थलम्।
 नानागन्धैस्तथा पुष्ट्यैः सर्वोपकरणैर्यजेत्॥९॥
 समाप्य महतीं पूजां तत्त्वानि सन्निवेद्य च।
 आदौ स्त्रीभ्यः समर्प्यार्थं प्रसादं प्रभजेत्ततः॥१०॥
 शुभचक्रं विनिर्माय आगमोक्तविधानतः।
 अभिषिच्य साधकांश्च पाययेत् स्वयं पिबेत्॥११॥

भुज्जीत मत्स्यमांसाद्यैश्चर्व्यचोष्यादिभिश्च तैः।
 रमेच्च परमानन्दैर्वेश्यायाज्ञ्य यथा सुखम्॥१२॥
 वदेयुः कर्मकर्तुश्च सिद्धिर्भवतु निश्चला।
 अभिषेचनकर्मास्तु निर्विघ्नज्ञेति निश्चितम्॥१३॥

हे प्रिये! तब शक्तिमान् गुरु प्रसन्न होकर मांस आदि तत्वों का शोधन करें। फिर मन्त्र और मुद्रा आदि के द्वारा सामने कलश की स्थापना करके धूप, दीप आदि से वातावरण को सुगन्धित कर दें। तत्पश्चात् अनेक प्रकार के गन्ध, पुष्प आदि उपचारों से कलश-पूजन करें। महापूजा को समाप्त करके और सुरा आदि तत्वों को अपित करके पहले स्त्रियों को देकर फिर थोड़ा प्रसाद स्वयं ग्रहण करें। तन्त्रोक्त विधि से चक्र की रचना कर साधकों का अभिषेक करें और उन्हें मद्य पिलायें और स्वयं भी पियें। मत्स्य, मांस, चोष्य और चर्व्य आदि का भोजन करते-करते परम आनन्द के साथ वेश्याओं के साथ रमण करें और कहें कि— कर्म कराने वाले को निश्चय ही अटल सिद्धि प्राप्त हो तथा यह अभिषेक कर्म निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो।

चक्रालयानिःसरेन जन एकोऽपि शंकरि।
 प्रातःकृत्यादिकर्माणि कुर्यात्तत्रैव साधकः॥१४॥
 दिनानि त्रीणि संव्याप्य भक्त्या तांस्तु समर्चयेत्।
 शिष्यश्चादौ दिवारात्रमभिषिक्तो भवेत्ततः॥१५॥

हे शंकरि! चक्रालय से एक भी व्यक्ति बाहर न निकले। प्रत्येक साधक को वहीं प्रातः कृत्य आदि कर्म करने चाहिए। इस प्रकार तीन दिनों तक साधक भक्ति के साथ उन आहूत कौलों का पूजन करे। इस प्रकार तीन दिन-रात्रि तक शिष्य का अभिषेक होता है।

अनुष्ठानविधिं वक्ष्ये सादरं शृणु पार्वति।
 न प्रकाण्डं नहि क्षुद्रं प्रमाणं घटमाहरेत्॥१६॥
 ताम्रेण निर्मितं वापि स्वर्णेन निर्मितञ्च वा।
 प्रवालं हीरकं स्वर्णं मुक्तास्तथे तथैव च॥१७॥
 नानालंकारवस्त्राणि नानाद्रव्याणि भूरिशः।
 कस्तूरीकुंकुमादीनि नानागन्धानि चाहरेत्॥१८॥
 नानापुष्पाणि माल्यानि पञ्चतत्त्वानि यतः।
 विहितान् धूपदीपांश्च घृताक्तान् परमेश्वरि॥१९॥

हे पार्वति! अब अनुष्ठान की विधि कहता हूँ। उसे आदरपूर्वक सुनो। न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा, अर्थात् मध्यम आकार का एक घट (घड़ा) लाना चाहिए। वह घट तांवा या स्वर्ण का बना हो। मूँगा, हीरा, मोती, चांदी, सोना आदि, विविध प्रकार के आभूषण और वस्त्र, पर्याप्त मात्रा में अनेक प्रकार के द्रव्य, कस्तूरी, कुंकुम तथा अनेक प्रकार के गन्ध आदि इकट्ठा करें। हे परमेश्वरि! अनेक प्रकार के पुष्प, मालाएं, ‘पंचतत्त्व’, धूप तथा घृतयुक्त दीप प्रयत्न करके एकत्र करें।

ततः शिष्यं समानीय गुरुः शुद्धालये प्रिये।
 वेश्याभिः साधकैः सार्धं पूजनञ्च समाचरेत्॥२०॥
 पटलोक्तविधानेन सावधानेन भविततः।
 पूजां समाप्य देव्यास्तु स्तवैस्तु प्रणमेन्मुदा॥२१॥
 ततो हि शिवशक्तिभ्यो गन्धमाल्यानि दापयेत्।
 आसनं वस्त्रभूषां च प्रत्येकेन कुलेश्वरि॥२२॥
 हे प्रिये! फिर शिष्य को लेकर गुरुदेव शुद्ध गृह में लाएं तथा

वेश्याओं और साधकों के साथ पूजन शुरू करें। इस पटल में बतायी गयी विधि के अनुसार भक्तिपूर्वक देवी की पूजा करें और प्रसन्नता के साथ स्तुतिगान करके प्रणाम करें। इसके बाद हे कुलेश्वरि! शिव-शक्तियों को गन्ध, पुष्प-मालादि से सुशोभित करके आसन, वस्त्र तथा आभूषण प्रदान करें।

ततः शंखादिवाद्यैश्च मंगलाचरणैः परैः।
 घटस्थापनकं कुर्यात् क्रमं तत्र बदामि ते॥२३॥
 कामबीजेन संप्रोक्ष्य वाग्भवेनैव शोधयेत्।
 शक्त्या कलशमारोप्य मायया पूर्वेज्जलैः॥२४॥
 प्रवालादि पञ्चरत्नज्ञविन्यसेत् जले ततः।
 आवाहयेच्च तीर्थानि मन्त्रेणानेन देशिकः॥२५॥
 ॐ गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च।
 सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि जलदा नदाः॥२६॥
 हृदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्गपातालभूगताः।
 सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधिम्॥२७॥

तदनन्तर शंख आदि वाय बजाते हुए, मंगलगान के साथ ‘घट’ की स्थापना करें। हे प्रिये! उसका विधान सुनो। काम-बीज क्लीं से घट का प्रोक्षण करके वाग्भव बीज ऐं से उसे शुद्ध करें। शक्ति बीज सौः से कलश को स्थापित करके माया बीज हीं/हीं से उसमें जल भरना चाहिए। उसमें प्रवाल (मूंगा) आदि पंचरत्न डालकर निम्न मन्त्र से पवित्र तीर्थों का आवाहन करें— ‘ॐ गंगाद्याः सरितः सर्वाः, समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि जलदा नदाः॥ हृदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्ग-पाताल-भूगताः। सर्व-तीर्थानि पुण्यानि, घटे कुर्वन्तु सन्निधिम्॥’

कामाख्या-मन्त्र एवं विधान { 343 }

अर्थात् गंगा आदि समस्त नदियां, समुद्र तथा सरोवर, सभी सागर एवं धाराएं, तालाब, नद और जलाशय, पवित्र झरने आदि जो समस्त पवित्र तीर्थ स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर हैं, इस घट में एकत्रित हो जाएं।

रमाबीजेन जप्तेन पल्लबान् प्रतिदापयेत्।
 कूर्चेन फलदानं स्यात् गन्धवस्त्रे हृदा मुदात्मना॥२८॥
 ललनयैव सिन्दूरं पुण्यं दद्यात् कामतः।
 मूलेन दूर्वाः प्रणवैः कुर्यादभ्युक्षणं ततः॥२९॥
 हूँ फट् स्वाहेति मन्त्रेण कुर्याद् दर्भेश्च ताडनम्।
 विचिन्त्य मूलपीठन् तत्र संपूज्य पूजयेत्॥३०॥

रमाबीज श्रीं जपते हुए घट के ऊपर पल्लव रखें। कूर्च बीज हूँ से फल तथा हृद बीज नमः से गन्ध एवं वस्त्र प्रदान करें। ललना बीज स्त्रीं से सिन्दूर और काम बीज कलीं से पुण्य अर्पित करें। मूल-बीज त्रीं से दूर्वा तथा प्रणव ॐ से घट का अभ्युक्षण करें। कुश लेकर हूँ फट् स्वाहा बोलकर घट का ताङ्न करें। फिर घट में योनि-पीठ का ध्यान कर उसका पूजन करके घट में जल भरें।

स्वतन्त्रोक्तविधानेन प्रार्थयेदमुना बुधः।
 तदघटे हस्तमारोष्य शिष्यं पश्यन् गुरुश्च सः॥३१॥
 उत्तिष्ठ ब्रह्मकलश देवताभीष्टदायक।
 सर्वतीर्थाम्बुसम्पूर्णं पूर्य त्वं मनोरथम्॥३२॥
 अभिषिञ्चेन गुरुः शिष्यं ततो मन्त्रैश्च पार्वति।
 मण्डलैर्निखिलैः सर्वैः साधकैः शक्तिभिः सह॥३३॥

पल्लवैराग्रकैश्चैव लतां संबीक्ष्य एव च।

आनन्दः परमेशानि भक्तानां हितकारिण॥३४॥

तदोपरान्त उस घट के ऊपर कौलतन्त्र में वर्णित विधान से हाथ रखकर गुरुदेव शिष्य को देखते हुए कहें— हे ब्रह्मस्वरूप कलश ! हे देवताओं के अभीष्ट फल को प्रदान करने वाले ! हे समस्त तीर्थों के जल से पूरित ! उठो और हमारे मनोरथ को पूर्ण करो । हे पार्वति ! इसके बाद मन्त्रों द्वारा गुरु को शिष्य का आग्र पल्लवों से अभिषेक करना चाहिए । हे परमेशानि ! हे भक्तों की हितकारिणी ! फिर सभी उपस्थित साधकों और शक्तियों सहित समस्त मण्डल पर जल छिड़कें । आनन्द के साथ स्त्री को देखकर शिष्य को नतमस्तक होना चाहिए । इससे सभी भक्तों का हित होता है ।

अभिषेक के समय पाठ

(विनियोग)—

ॐ अस्याभिषेकमंत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्कृषिरनुष्टुप् छन्दः।

शक्तिर्देवता सर्वसंकल्पसिद्धये विनियोगः॥३५॥

इस अभिषेक मन्त्र के ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द अनुष्टुप् और देवता शक्ति हैं । समस्त संकल्प की सिद्धि के लिए इसका विनियोग किया जाता है । (दाहिने हाथ में जल लेकर ॐ से विनियोगः तक पढ़कर जलभूमि पर छोड़ दें ।) इसके बाद पाठ करें ।

ॐ राजराजेश्वरी शक्तिर्भैरवी रुद्रभैरवी।

श्मशानभैरवी देवी त्रिपुरानन्दभैरवी॥३६॥

त्रिजटा त्रिपुटा देवी तथा त्रिपुरसुन्दरी।

त्रिपुरेशी महादेवी तथा त्रिपुरमालिका॥३७॥

त्रिपुरानन्दिनी देवी तथैव त्रिपुरातनी।
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥३८॥
 ॐ छिनमस्ता महाविद्या तथैवैकजटेश्वरी।
 परा तारा जयदुर्गा शूलिनी भुवनेश्वरी॥३९॥
 हरिताख्या महादेवी तथैव च त्रिखण्डिका।
 नित्यानित्यस्वरूपा च वज्रप्रस्तारणी तथा॥४०॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ अश्वारूढा महादेवी तथा महिषमर्दिनी॥४१॥
 दुर्गा च नवदुर्गा च श्रीदुर्गा भगमालिनी।
 तथा भगन्दरी देवी भगविलना तथा परा॥४२॥
 सर्वचक्रेश्वरी देवी तथा नीलसरस्वती।
 सर्वसिद्धिकरी देवी सिद्धगन्धर्वसेविता॥४३॥
 उग्रतारा महादेवी तथा च भद्रकालिका।
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥४४॥
 ॐ क्षेमंकरी महामाया चानिरुद्रसरस्वती।
 मातंगी चानपूर्णा च राजराजेश्वरी तथा॥४५॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका॥४६॥
 चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपातिचण्डिका।
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥४७॥
 ॐ उग्रदंष्ट्रा सुदंष्ट्रा च महादंष्ट्रा कपालिनी।
 भीमनेत्रा विशालाक्षी मंगला विजया जया॥४८॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन् मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ मंगला नन्दिनी भद्रा लक्ष्मीः कान्तिर्यशस्त्रिनी॥४९॥
 पुष्टिमेधा शिवा धात्री यशा शोभा जया धृतिः।
 श्रीनन्दा च सुनन्दा च नन्दिनी नन्दपूजिता॥५०॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन् मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ विजया मंगला भद्रा धृतिः शान्तिः शिवा क्षमा॥५१॥
 सिद्धिस्तुष्टिरुमा पुष्टिः श्रद्धा चैव रतिस्तथा।
 दीप्तिः कान्तिर्यशा लक्ष्मीरीश्वरी बुद्धिरेव च॥५२॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन् मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ चक्री जयावती ब्राह्मी जयन्ती चापराजिता॥५३॥
 अजिता मानवी श्वेता अदितिश्चादिरेव च।
 माया चैव महामाया क्षोहिनी श्लोभिनी तथा॥५४॥
 कमला विमला गौरी शरण्यम्बुधिसुन्दरी।
 दुर्गा क्रियाऽरुन्धती (च) घण्टाहस्ता कपालिनी॥५५॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन् मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ रौद्री काली च मायूरी त्रिनेत्राचापराजिता॥५६॥
 सुरूपा च कुरूपा च तथैव विग्रहात्मिका।
 चर्चिका चापरा ज्ञेया तथैव सुरपूजिता॥५७॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन् मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ वैवस्वती च कौमारी तथा माहेश्वरी परा॥५८॥
 वैष्णवी च महालक्ष्मीः कार्त्तिकी कौशिकी तथा।
 शिवदूती च चामुण्डा मुण्डमालाविभूषिता॥५९॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा॥६०॥
 पवनो धनदेशानौ ब्रह्माऽनन्तो दिगीश्वराः।
 एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥६१॥
 ॐ सम्वत्सरश्चायनश्च मासपक्षौ दिनानि च।
 तिथयश्चाऽभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥६२॥
 ॐ रविः सोमः कुजः सौम्यो गुरुः शुक्रः शनैश्चरः।
 राहुः केतुश्च सततमभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः॥६३॥
 ॐ नक्षत्रं करणं योगोऽमृतं सिद्धिस्ततः परम्।
 दग्धं पापं तथा भद्रा योगा वाराः क्षणास्तथा॥६४॥
 वारवेला कालवेला दण्डा राश्यादयस्तथा।
 अभिषिञ्चन्तु सततं मन्त्रपूतेन वारिणा॥६५॥
 ॐ असितांगो रुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्तसंज्ञकः।
 कपाली भीषणाख्यश्च संहारश्चाष्टभैरवाः॥६६॥
 अभिषिञ्चन्तु सततं मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ डाकिनीपुत्रकाश्चैव राकिनीपुत्रकास्तथा॥६७॥
 लाकिनीपुत्रकाश्चान्ये काकिनीपुत्रका परे।
 शाकिनीपुत्रका भूयो हाकिनीपुत्रकास्तथा॥६८॥
 ततश्च यक्षिणीपुत्राः देवीपुत्रास्ततः परम्।
 मातृणाञ्च तथा पुत्राः ऊर्ध्मुख्याः सुताश्च ते॥६९॥
 अधोमुख्याः सुताश्चैव कालमुख्याः सुताः परे।
 अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे मन्त्रपूतेन वारिणा॥७०॥

ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
 एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥७१॥
 आत्माऽन्तरात्मा परमज्ञानात्मानः प्रकीर्तिताः॥७२॥
 आत्मनश्च गुणाश्चैव स्थूलाः सूक्ष्माश्च परे।
 एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥७३॥
 ॐ वेदादिबीजं श्रीबीजं तथा तनीलकेतनम्।
 शक्तिबीजं रमाबीजं मायाबीजं गुणाष्टकम्॥७४॥
 चिन्तामणिर्महाबीजं नारसिंहं च शांकरम्।
 मार्तण्डभैरवं दौर्गं बीजं श्रीपुरुषोत्तमम्॥७५॥
 गाणपत्यं च वाराहं कालीबीजं भयापहम्।
 एतानि चाभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥७६॥
 ॐ गंगा गोदावरी रेवा यमुना च सरस्वती।
 आत्रेयी भारती चैव सरयूर्गण्डकी तथा॥७७॥
 करतोया चन्द्रभागा श्वेतगंगा च कौशिकी।
 भोगवती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा॥७८॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ॐ भैरवो भीमरूपश्च शोणो घर्षर एव च॥७९॥
 सिन्धुश्चैव हृदश्चैव तथा पातालसंभवाः।
 एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥८०॥
 ॐ यानि कानि च तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च।
 तानि त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रतन्त्रौषधानि च॥८१॥
 ॐ जम्बुद्वीपादयो द्वीपाः सागरा लवणादयः।
 अनन्ताद्यास्तथा नागाः सर्पाद्याः तक्षकादयः॥८२॥

कामाद्या-मन्त्र एवं विधान { 349 }

एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।
 ३० रतिश्च वल्लभा बह्वर्षट् कूर्चमतः परम्॥८३॥
 वौषट्कारस्तु फट्कारअभिषिञ्चन्तु सर्वदा।
 नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा दानवा राक्षसाश्च ये।
 पिशाचा गुह्यका भूता अभिषेकेण ताडिताः॥८४॥
 अलक्ष्मीः कालरात्रिश्च पापानि च महान्ति च।
 नश्यन्तु चाभिषेकेण ताराबीजेन ताडिताः॥८५॥
 रोगाः शोकाश्च दारिद्र्यं दौर्बल्यं चित्तविक्रिया।
 नश्यन्तु चाभिषेकेण वाग्बीजेनैव ताडिताः॥८६॥
 लोकानुरागत्यागश्च दौर्भाग्यमपि दुर्यशः।
 नश्यन्तु चाभिषेकेण मन्मथेन च ताडिताः॥८७॥
 तेजोनाशः बुद्धिनाशः शक्तिनाशस्तथैव च।
 नश्यन्तु चाभिषेकेण काली - बीजेन ताडिताः॥८८॥
 विषाऽपमृत्युरोगाश्च डाकिन्यादिभयं तथा।
 घोराऽभिष्यारकूराश्च ग्रहा नागास्तथा परे॥८९॥
 नश्यन्तु विपदः सर्वाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः।
 अभिषेचनमात्रेण पूर्णाः सन्तु मनोरथाः॥९०॥
 ततो गुरुः प्राप्तमन्त्रं दीक्षयेत् पुनरेव हि।
 तदा सिद्धिर्भवेत् सत्यं नान्यथा वचनं मम॥९१॥
 ततः शिष्यो गुरुं देवीं प्रणमेद् बहुधा मुदा।
 दक्षिणां गुरवे दद्यात् कनकाज्जलिमानतः॥९२॥

नानावस्त्रैरलंकारैर्गन्धमाल्यादिभिस्तथा ।
 तोषयेत् स्तुतिवाक्यैश्च प्रणमेत् पुनरेव हि॥१३॥
 कायेन मनसा वाचा गुरुः कुर्यात् तथाशिष्ठः।
 वचनैर्विविधैः शिष्यं ग्राहयेत् तत्त्वमुत्तमम्॥१४॥
 गुरुश्च भैरवैः सार्थं शक्तिभिर्विहरेन्मुदा।
 भैरवाः शक्तयश्चापि कुर्युराशीः सुयत्तः॥१५॥
 तथा त्रिदिवसं व्याप्य भोजयेत् भैरवान् बुधः।
 अष्टमे दिवसे शिष्यं पुनः कुर्यात् सेचनम्॥१६॥
 ताप्रपात्रोदकैर्देवि विद्यारत्नं जपन् सुधीः।
 कुम्भकांश्च तथा सप्त संपूर्तिः सिद्धिहेतवे॥१७॥
 शक्तिभ्यो भैरवेभ्योऽपि ततो वस्त्रादिभूषणम्।
 दद्यात् प्रयत्नतः साधुविद्धि देवि समापनम्॥१८॥

भावार्थ- राजराजेश्वरी, शक्ति, भैरवी, रुद्र भैरवी, श्मशान भैरवी, त्रिपुर भैरवी, आनन्द भैरवी, त्रिजटा, त्रिपुटा, त्रिपुर सुन्दरी, त्रिपुरेशी, त्रिपुरमालिका, त्रिपुरानन्दिनी, त्रिपुरातनी— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

छिन्नमस्ता, महाविद्या, एकजटा, परा, तारा, जयदुर्गा, शूलिनी, भुवनेश्वरी, हरिता, महादेवी, त्रिखण्डा, नित्या, अनित्या तथा वज्रप्रस्तारिणी— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

अश्वारूढा, महादेवी, महिसासुर-मर्दिनी, दुर्गा, नवदुर्गा, श्रीदुर्गा, भगमालिनी, भगन्दरी, भगविलन्ना, परा, सर्वचक्रेश्वरी, नीलसरस्वती, सर्व सिद्धिकरी, सिद्ध गन्धर्व सेविता, उग्रतारा तथा भद्रकाली— ये

सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

क्षेमंकरी, महामाया, अनिरुद्ध सरस्वती, मातंगी, अन्नपूर्णा, राजराजेश्वरी— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

उग्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डवती, चण्डरूपा और अतिचण्डिका— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

उग्रदंष्ट्रा, सुदंष्ट्रा, महादंष्ट्रा, कपालिनी, भीमनेत्रा, विशालाक्षी, मंगला, विजया, जया— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

मंगला, नन्दिनी, भद्रा, लक्ष्मी, कान्ति, यशस्विनी, पुष्टि, मेधा, शिवा, धात्री, यशा, शोभा, जया, धृति, श्रीनन्दा, सुनन्दा, नन्दिनी तथा नन्दपूजिता— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

विजया, मंगला, भद्रा, धृति, शान्ति, शिवा, क्षमा, सिद्धि, तुष्टि, उमा, पुष्टि, श्रद्धा, रति, दीप्ति, कान्ति, यशा, लक्ष्मी, ईश्वरी और बुद्धि— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

चक्री, जयावती, ब्राह्मी, जयन्ती, अपराजिता, अजिता, मानवी, श्वेता, अदिति, आदि, माया, महामाया, क्षोहिनी, लोभिनी, कमला, विमला, गौरी, शरणी, अम्बुधि, सुन्दरी, दुर्गा, क्रिया, अरुन्धती, घण्टाहस्ता तथा कपालिनी— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

रौद्री, काली, मायूरी, त्रिनेत्रा, अपराजिता, सुरूपा, कुरुपा, विग्रहात्मिका, चर्चिका, अपरा, झेया और सुरपूजिता— ये सभी देवियां

मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिसंचन करें।

वैवस्वती, कौमारी, माहेश्वरी, वैष्णवी, महालक्ष्मी, कार्तिकी, कौशिकी, शिवदूती, मुण्डमाला से विभूषित चामुण्डा— ये सभी देवियां मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिसंचन करें।

इन्द्र, अग्नि, यम, निक्षति, वरुण, पवन, कुवेर, ईशान, ब्रह्मा, तथा अनन्त— ये सभी दिव्याल मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

संवत्सर, अयन, मास, पक्ष, दिन तथा तिथियां— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिसंचन करें।

रवि, सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु— ये सभी ग्रह मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

नक्षत्र, करण, योग, अमृत, सिद्धि, दग्ध पाप, भद्रयोग, वार, क्षण, वारवेला, कालवेला, दण्ड, राशि आदि— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

असितांग भैरव, रुहु भैरव, चण्ड भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपाली भैरव, भीषण भैरव और संहार भैरव— ये अष्ट भैरव मन्त्रपूरित जल से तुम्हें अभिधिक्त करें।

डाकिनीपुत्र, राकिनीपुत्र, लाकिनीपुत्र, काकिनीपुत्र, शाकिनीपुत्र, हाकिनीपुत्र, यक्षिणीपुत्र, देवीपुत्र, मातृपुत्र, ऊर्ध्वमुखी के पुत्र, अधोमुखी के पुत्र और कालमुखी के पुत्र— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

पुरुष, प्रकृति, सोलह विकार, आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा,

ज्ञानात्मा, आत्मा के स्थूल और सूक्ष्म गुण— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

वेदादि बीज ॐ, श्री बीज इ उ, नीलकेतन इ, शक्ति बीज हसौः, रमा बीज श्रीं, माया बीज ह्रीं, आठ गुण, चिन्तामणि महाबीज कं, दुर्गा बीज दुं दुः, पुरुषोत्तम बीज क्लीं, नरसिंह बीज क्षं, शंकर बीज शं, मार्तण्ड भैरव ह्रीं, गणपति बीज गं, वाराह बीज औं, काली बीज क्रीं— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

गंगा, गोदावरी, रेवा, यमुना, सरस्वती, आत्रेयी, भारती, सरयू, गण्डक, करतोया, चन्द्रभागा, श्वेतगंगा, कौशिकी, भोगवती, पाताल और स्वर्ग की गंगा— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हें अभिषिक्त करें।

भैरवताल, भीमताल, शोणभद्र, घाघरा, सिंधु तथा पाताल से उत्पन्न मन्दाकिनी— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

जो कोई तीर्थ और पुण्य के आयतन हैं तथा तन्त्र-मन्त्र औषधियाँ हैं— ये सब तुम्हारा अभिषेक करें।

जम्बू आदि ढीप, क्षार आदि सागर, अनन्त आदि नाग, सर्प आदि, तक्षक आदि— ये सब मन्त्रपूरित जल से तुम्हारा अभिषेक करें।

रति, अग्नि-वल्लभा, वषट्, कूर्च, वौषट्कार, फट्कार सौव तुम्हारा अभिषेक करें।

प्रेत, कुम्भाण्ड, दानव, राक्षस, पिशाच, गुह्यक और भूत— ये सब अभिषेक से ताड़ित होकर नष्ट हो जायें। अलक्ष्मी, कालरात्रि, और भयंकर पाप तारा बीज त्रीं वाले अभिषेक से ताड़ित होकर नष्ट हो जायें।

रोग, शोक, दारिद्र्य, दुर्बलता, चित्तविकार— ये सब वाम्बीज ऐं वाले अभिषेक से ताड़ित होकर नष्ट हो जायें। लोकानुराग का त्याग,

दुर्भाग्य, अपयश मन्मथ वीज कर्लीं वाले अभिषेक से ताड़ित होकर नष्ट हो जायें।

तेजोनाश, बुद्धिनाश, शक्तिनाश काली वीज क्रीं से ताड़ित होकर नष्ट हो जायें। विष, अपमृत्यु, रोग, डाकिनी आदि से भय, घोर अभिचार, क्रूर ग्रह, नाग तथा समस्त विपत्तियां नष्ट हो जायें तथा सम्पत्तियां स्थिर हो जायें। मात्र अभिषेक से ही समस्त मनोरथ पूर्ण हो जायें।

इसके उपरान्त गुरु, शिष्य को पुनः दीक्षा प्रदान करें। निश्चय ही तभी सिद्धि मिलती है। मेरे इस वचन की सत्यता में सन्देह न करें। इसके उपरान्त शिष्य प्रसन्नता के साथ गुरुदेव और देवी को प्रणाम करें तथा गुरु को एक अंजली सोना, अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, गन्ध, माला आदि से उनका स्तुतिगान करते हुए दक्षिणा के रूप में प्रदान करके गुरुदेव को सन्तुष्ट करें।

गुरुदेव को भी मन, वाणी और शरीर से शिष्य को आशीष वचन कहकर उसे तत्व ज्ञान कराना चाहिए तथा प्रसन्नचित्त से आहुत कौलिकों और शक्तियों के विहार करना चाहिए। भैरवों तथा शक्तियों को भी शिष्य को यत्नपूर्वक आशीर्वाद देना चाहिए।

इस प्रकार योग्य भैरवों तथा शक्तियों को भोजन कराना चाहिए। हे देवि! आठवें दिन गुरु को पुनः शिष्य का ताम्रपात्र के उदक से अभिषेक करना चाहिए। उस समय विद्वान् गुरु को “ॐ त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये प्रसीद त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं स्वाहा” मन्त्र का जप करना चाहिए। सिद्धि के लिए सात घड़ीं को जल से आपूरित करना चाहिए। तदोपरान्त भैरवों तथा शक्तियों को शिष्य द्वारा यत्नपूर्वक वस्त्र-आभूषण दान देने चाहिए। हे देवि! इस

प्रकार यह अनुष्ठान पूर्ण माना जाता है।

अभिषेक करने हेतु अधिकारी व्यक्ति

श्री देव्युवाच—

श्रुतं रहस्यं देवेशं चाभिषेचनकर्मणः।
गुरुः को वाधिकारी स्यादत्र तमे वद प्रभो॥१९॥

श्री देवी ने कहा— हे देवेश! अभिषेक कर्म का रहस्य मैंने सुना। हे प्रभु! अब मुझे यह बताइये कि इस कर्म को करने का अधिकारी या गुरु कौन व्यक्ति है?

श्री शिव उवाच—

महाज्ञानी स कौलेन्द्रः शुद्धो गुरुपरायणः।
निग्रहानुग्रहे शक्तः शिष्यपालनतत्परः॥१००॥
पुत्रदारादिभिर्युक्तः स्वजनैश्च प्रपूजितः।
श्रद्धावानागमे नित्यं सोऽधिकर्ता च नान्यकः॥१०१॥

श्री शिव ने कहा— जो महाज्ञानी, शुद्ध आचरण करने वाला, श्रेष्ठ कौलिक, गुरुभक्त, निग्रह और अनुग्रह में समर्थ हो तथा जो शिष्यों की रक्षा में लगा रहता हो, पत्नी-पुत्र आदि से युक्त, स्वजनों द्वारा सम्मानित होता रहता हो और आगम-शास्त्रों में श्रद्धा रखता हो, वही इस अभिषेक-कर्म को करने का अधिकारी होता है, अन्य कोई नहीं।

अन्धं खञ्जं तथा रुणं स्वल्पज्ञानयुतं पुनः।
सामान्यकौलं वरदे वर्जयेन्मतिमान् सदा॥१०२॥

उदासीनं विशेषेण वर्जयेत् सिद्धिकामुकः।
 उदासीनमुखाद् दीक्षा वन्ध्या नारी यथा तथा॥१०३॥
 अज्ञानाद् यदि वा मोहात् उदासीनात् पामरः।
 अभिषिक्तो भवेद् देवि विघ्नस्तस्य पदे पदे॥१०४॥
 किं तस्य जपपूजाभिः किं ध्यानैः किं च भविततः।
 सर्वं हि विफलं तस्य नरकं याति चान्तिमे॥१०५॥
 कल्पकोटिशतं देवि भुक्ते स नरकं सदा।
 ततो हि बहुजन्मभ्यो देवीमन्त्रमवाञ्यात्॥१०६॥
 ततो हितं महाशुद्धं गृहस्थं गुरुमालभेत्।
 अभिषेचनकर्मणि पुनः कुर्यात् प्रयत्नः॥१०७॥

हे वरदे ! बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वह अन्धे, लूले, रोगी और अल्प ज्ञानी सामान्य कौल को गुरु न बनाये । सिद्धि की कामना करने वाले साधक को, विरक्त व्यक्ति को विशेष रूप से छोड़ देना चाहिए क्योंकि हे प्रिये ! विरक्त व्यक्ति से ली गयी दीक्षा उसी प्रकार निष्फल होती है, जिस प्रकार बांझ स्त्री सन्तानोत्पत्ति में । हे देवि ! अज्ञानवश अथवा मोह के कारण विरक्त से जो अभिषिक्त होता है, उसे पग-पग पर विज्ञों का सामना करना पड़ता है । उसके जप, पूजा, ध्यान और भवित से कोई लाभ नहीं होता । उसके सब कर्म निष्फल हो जाते हैं और अन्त में वह नरक को जाता है । हे देवि ! सौ करोड़ कल्प तक वह नरक भोगता है । अनेक जन्मों के बाद ही उसे देवी का मन्त्र प्राप्त होता है । इसीलिए विघ्नसम्मत शुद्ध गृहस्थ शक्ति को ही गुरु बनाना चाहिए । फिर प्रयत्न करके अभिषेक कर्म कराना चाहिए ।

सफलं हि सदा कर्म सर्वं तस्य भवेद् ध्रुवम्।
 विद्यापि जननीतुल्या पालिता सततं प्रिये॥१०८॥
 यथा पशुं परित्यज्य कौलिकं गुरुमालभेत्।
 उदासीनं परित्यज्य तथाभिषेचनं मतम्॥१०९॥

हे प्रिये! उसके सब कर्म निश्चय ही सफल होते हैं। उसी की विद्या फलित होकर माँ के समान उसकी रक्षा करती है। जिस प्रकार पशु गुरु का त्याग करके कौलिक गुरु को प्राप्त करना चाहिए, उसी प्रकार विरक्त साधक को त्यागकर कौल साधक से ही अभिषेक कराना शास्त्र-सम्मत है।

अभिषिक्तः शिवः साक्षादभिषिक्तो हि दीक्षितः।
 स एव ब्राह्मणो धन्यो देवि देवपरायणः॥११०॥
 तस्यैव सफलं जन्म धरण्यां शृणु पार्वति।
 तस्यैव सफलं कर्म तस्यैव सफलं धनम्॥१११॥
 तस्यैव सफलो धर्मः कामश्च फलदो मतः।
 दीक्षा हि सफला देवि क्रिया च सफला तनुः॥११२॥

हे देवि! अभिषिक्त साधक साक्षात् शिव होता है। वास्तव में वही दीक्षित है। वही देवपरायण है, वही ब्राह्मण धन्य है। हे पार्वति! सुनो। उसी अभिषिक्त साधक का जन्म सफल है, उसके सभी कार्य सफल होते हैं। उसी का धन सफल होता है, और उसी का धर्म सफल होता है। उसकी सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। हे देवि! उसी की दीक्षा, क्रिया और तन सफल होता है।

सर्वं हि सफलं तस्य गिरजे! बहु किं वचः।
 यत्र देशे वसेत् साधुः सोऽपि वाराणसीसमः॥११३॥

तस्य क्रोडे वसन्तीह सर्वतीर्थानि निश्चयतम्।
 सत्यं सत्यं महामाये गुरुतत्त्वं मयोदितम्॥११४॥
 उक्तानि यानि यानीह सेचनानि च पार्वति।
 सर्वतन्त्रेषु तान्यस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥११५॥

हे गिरिजे ! और अधिक क्या कहूं, जिस स्थान में वह निवास करता है, वह वाराणसी के समान हो जाता है । निश्चय ही उसकी गोद में समस्त तीर्थ निवास करते हैं । हे महामाये ! मैंने वास्तविक गुरुतत्त्व को मैंने तुम्हें बताया । हे पार्वति ! सभी तन्त्रों में मैंने जिन अभिषेकों का वर्णन किया है, वे सब इस अभिषेक की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं हैं ।

योग्यं गुरुं तथा शिष्यं विनैतद्घटनं नहि।
 जायते देवदेवेशि सत्यं सत्यं मयोदितम्॥११६॥
 इदन्तु सेचनं देवि त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
 गणेशः पात्रमत्रैव कार्तिकेयोऽपि पार्वति॥११७॥
 मम तुल्यो विष्णुतुल्यो ब्रह्मतुल्योऽत्र भाजनम्।
 पञ्चवक्त्रैश्च शक्तो न वर्णितुं परमेश्वरि॥११८॥

हे देवि ! अभिषेक की इस पद्धति का क्रियान्वयन योग्य गुरु और योग्य शिष्य के अभाव में सम्भव नहीं होता । मैंने यह सत्य कहा है । हे देवि ! यह अभिषेक पद्धति तीनों लोकों में दुर्लभ है । हे पार्वति ! इस विषय में गणेश और कार्तिकेय जैसे साधक ही पात्र हो सकते हैं । मेरे समान अथवा ब्रह्मा और विष्णु जैसा व्यक्ति ही इसका पात्र है । हे परमेश्वरि ! अपने पांच मुखों से भी इस अभिषेक की महिमा का वर्णन करना मेरे सामर्थ्य में नहीं है ।

इति ते कथितं गुह्यं सेचनं परमं महत्।
 गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रथलतः॥११९॥
 यथा रतिगोपनीया यथा हि स्तनमण्डलम्।
 यथा योनिगोपनीया तथाभिषेचनं परम्॥१२०॥
 निखाते धनमारोप्य गोपयेत् यथा नरः।
 तथैव तु महामाये गोपनीयं ममाज्ञया॥१२१॥

इस प्रकार इस अत्यन्त गुप्त अभिषेक का वर्णन मैंने तुमसे किया। जिस प्रकार रतिक्रीड़ा गोपनीय है, जिस प्रकार योनि गोपनीया है, जिस प्रकार स्तनमण्डल गोपनीय है, ठीक उसी प्रकार यह अभिषेक भी गोपनीय है। जिस प्रकार भूगर्भ में धन रखकर व्यक्ति उसकी रक्षा करता है अथवा उसे गुप्त रखता है, उसी प्रकार हे महादेवि! मेरी आज्ञा से इसे गुप्त रखना चाहिए।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे अष्टमः पटलः)

५६

९. नवमः पटलः

मुक्ति का साधन

श्री देव्युवाच—

मुक्तितत्त्वं महादेव बद मे करुणानिधे।

यस्मिन् षड् दर्शनानीह चोपहास्यं गतानि च॥१॥

श्री देवी ने कहा— हे महादेव! हे करुणा के सागर! मुझे उस मुक्तितत्व को बताइये, जिसके समक्ष छहों दर्शनों का ज्ञान भी उपहास का पात्र बन जाता है।

श्री शिव उवाच—

शृणु देवि शुभे विज्ञे यत् पृष्ठं तत्त्वमुज्जमम्।

एतन्मर्मं च त्वं वेत्सि अहं वेदिम् तथा हरिः॥२॥

मोदकेन यथा लोकः प्रतारयति बालकान्।

निगडेन यथा देवि बधाति दुर्जनं नृपः॥३॥

तथा मुख्यीकृता लोके दर्शनैश्चाथवा मया।

दुर्जने यदि मुक्तिः स्यात् शंकयेति शुभानने॥४॥

षड् दर्शनमहाकूपे पतिताः पश्वः प्रिये।

परमार्थं न जाननि तत् सर्वं काकभाषितम्॥५॥

श्री शिव ने कहा— हे शुभे! हे विज्ञे! श्रेष्ठ तत्व को सुनो। इस रहस्य को तुम जानती हो, मैं जानता हूँ और विष्णु जानते हैं। जिस

प्रकार लोग लड्डू देकर बच्चों को बहलाते हैं तथा जिस प्रकार राजा दुर्जन को बेड़ी से बांध देता है, उसी प्रकार दर्शनशास्त्रों के द्वारा अथवा स्वयं मेरे द्वारा लोगों को मूढ़ बना दिया गया है। (अहंकारी को मोह में डाल दिया जाता है) हे शुभानने! छ: दर्शनरूपी महाकृप में पशु भाव वाले लोग गिर जाते हैं और वे परमार्थ को नहीं समझ पाते। उनका पद्दर्शन का ज्ञान कौए के वचन के समान व्यर्थ होता है।

न सारः कदलीवृक्षे एरण्डे तु यथानये।
 दर्शनेषु तथा मुक्तिर्नास्ति नास्ति कलौ युगे॥६॥
 यथा मरीचिकायाश्च निवर्तन्ते पुनर्मृगाः।
 दर्शनेभ्यो निवर्तन्ते तथा मुमुक्षवः पुनः॥७॥
 श्रीगुरोश्च प्रसादेन मुक्तिमादौ समालभेत्।
 विचरेत् सर्वशास्त्रेषु कौतुकाय ततः सुधीः॥८॥

हे अनये! जिस प्रकार केले अथवा ऐरण्ड के पेड़ में कोई तत्त्व नहीं होता, उसी प्रकार हे देवि! कलियुग में 'दर्शन' के ज्ञान से मुक्ति नहीं होती। जिस प्रकार जल की कामना से मृगमरीचिका के पीछे दौड़ने वाले हिरन निराश होकर पुनः वापस लौट आते हैं, उसी प्रकार मोक्ष की कामना करने वाले दर्शनशास्त्र का अध्ययन करके मोक्ष से विमुख हो जाते हैं। मुक्ति तो गुरुकृपा से ही मिलती है। इसलिए विद्वान व्यक्ति को उनकी (गुरु की) कृपा प्राप्त करने के उपरान्त ही सभी शास्त्रों का अध्ययन केवल अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए ही करना चाहिए।

मुक्तितत्त्वं प्रवक्ष्यामि सारं च शृणु पार्वति।
 शरीरं धारणं यत्तु कुर्वन्तीह पुनः पुनः॥९॥

आदावनुग्रहो देव्याः श्रीगुरोस्तदनन्तरम्।
 तथा नाना शुभा दीक्षा भक्तिस्तस्य प्रजायते॥१०॥
 ततो हि साधनं शुद्धं तस्माज् ज्ञानं सुनिर्मलम्।
 ज्ञानान्मोक्षो भवेत् सत्यमिति शास्त्रस्य निर्णयः॥११॥

हे पार्वति ! अब मैं मुक्तितत्त्व को कहता हूँ। उसका सार सुनो ।
 जो इस संसार में बार-बार जन्म लेते हैं, उन पर पहले देवी का, फिर
 श्री गुरुदेव का अनुग्रह होता है। परिणाम यह होता है कि उसकी
 अनेक प्रकार की दीक्षायें होती हैं जिससे उसके भीतर भक्ति उत्पन्न
 होती है। भक्ति के कारण वह साधना करता है। इससे उसमें निर्मल
 ज्ञान उत्पन्न होता है तब ज्ञान से मोक्ष होता है। ऐसा शास्त्र का निर्णय
 है।

मुक्तिश्चतुर्विधा प्रोक्ता सालोक्यन्तु शुभानने।
 सारूप्यं सहयोज्यं च निर्वाणं च परात् परम्॥१२॥
 सालोक्यं वसति लोके सारूप्यं तु स्वरूपता।
 सायोज्यं कलया युक्तं निर्वाणं च मनोलयः॥१३॥

हे शुभानने ! मुक्ति चार प्रकार की कही गयी है— (1) सालोक्य,
 (2) सारूप्य, (3) सायोज्य और (4) निर्वाण। इनमें निर्वाण मुक्ति
 श्रेष्ठ है। सालोक्य मुक्ति में इष्टदेवता के लोक में निवास करने का
 सौभाग्य प्राप्त होता है। सारूप्य में साधक का स्वरूप इष्टदेवता जैसा
 हो जाता है। सायोज्य में वह इष्टदेव की कला से युक्त हो जाता है
 और निर्वाण मुक्ति में इष्टदेव में मन का लय हो जाता है।

श्री देव्युवाच-

सम्यग् लयो जनस्यैव निर्वाणं यत्तु कथ्यते।
तत् किम् वद महादेव संशयं लयसात् कुरु॥१४॥

श्री देवी ने कहा— जीव का लय समुचित रूप से जिस मुक्ति द्वारा होता है, जिसे निर्वाण कहते हैं, वह क्या है? हे महादेव उसे कहिये और मेरे संशय को दूर कीजिये ।

श्री शिव उवाच-

व्यक्तिर्लयात्मिका मुक्तिरसुराणां दयानिधे।
दुर्जनत्वाल्लोपयित्वा क्रीड़यामि सुरानहम्॥१५॥
मनोलयात्मिका मुक्तिरिति जानीहि शंकरि।
प्राप्ता मया विष्णुना च ब्रह्मणा नारदादिभिः॥१६॥

श्री शिव ने कहा— हे दयानिधे! आसुरी व्यक्तित्व का लोप होना ही ‘मुक्ति’ है। अर्थात् दुर्जन व्यक्तियों का जन्म होना फिर मेरे द्वारा उनका वध होने पर उनका मुझमें लीन हो जाना ही ‘मुक्ति’ है। इसी प्रकार देवताओं की भी स्थिति होती है। उनका पुण्यकाल क्षीण होने पर उनका लोप करके उनके रूप में मैं क्रीड़ा करता हूँ। यह भी निर्वाण है। हे शंकरि! मनोलयात्मिका मुक्ति को मैंने, विष्णु और ब्रह्मा तथा नारद आदि ने प्राप्त किया ।

सालोक्य केवलं तत्तु सारूप्यं युगलद्वयम्।
त्रिधा सायोन्यवानेति निर्वाणो सर्वमेव हि॥१७॥
नीलोत्पलदलश्यामा मुक्तिर्द्विदलवर्तिनी।
मुक्तस्यैव सदा स्फीता स्फुरत्यविरतं प्रिये॥१८॥

श्री कामाख्या-रहस्यम् (364)

सनातनी जगन्माता सच्चिदानन्दरूपिणी।

परा च जननी सैव सर्वाभीष्टप्रदायिनी॥१९॥

‘सालोक्य’ मुक्ति वह है जिसमें जीव अपने इष्टदेवता के लोक में अकेला रहता है। ‘सारूप्य’ वह है जिसमें जीव शिव या शक्ति का रूप धारण करता है। ‘सायुज्य’ में वह तीन रूप वाला अर्थात् शिव, शक्ति और स्वयं अपने स्वरूप में मुझसे संयुक्त रहता है। दो दल वाले कमल के मध्य में (आज्ञाचक्र के दो दल कमल) निवास करने वाली, नीलकमल की पंखुड़ियों के समान वर्ण वाली मुक्ति देवी मुक्त जीव के समक्ष प्रकट होकर उसे निरन्तर आनन्दित करती रहती है अर्थात् स्फुरित होती रहती है। वह मुक्ति देवी सनातनी है, विश्व की माता, सत् चित् आनन्दरूपिणी, परा, जननी और समस्त अभीष्टों को प्रदान करने वाली है।

इष्टे निश्चलसम्बन्धः स च निर्वाणमीरितः।

मुक्तिज्ञानं कुलज्ञानं नान्यज्ञानं महेश्वरि॥२०॥

साधूनां देवदेवेशि सर्वेषां विद्धि निश्चितम्।

स्वर्गं मर्त्ये च पाताले ये ये मुक्ता भवन्ति हि॥२१॥

बभूवुश्च भविष्यन्ति सर्वेषां मुक्तिरीदृशी।

तथा हि साधनं ज्ञेयं पञ्चतत्त्वैश्च मुक्तिदम्॥२२॥

इष्टदेव के साथ स्थिर सम्बन्ध होना ही ‘निर्वाण’ मुक्ति है। हे देवेश्वरि! कुल का ज्ञान ही मुक्ति का ज्ञान है। कुल धर्म के ज्ञाता साधक मुक्ति के इस ज्ञान से अवश्य परिचित होते हैं। अन्य ज्ञान उनके लिए महत्वहीन हैं। वे मुक्तिदायक पञ्चतत्त्वों की साधना से पूर्णतः परिचित होते हैं। स्वर्ग, मृत्यु और पाताल में जो-जो लोग मुक्त होते हैं, हुए हैं और होंगे, उन सबकी मुक्ति ऐसी ही है। पञ्चतत्त्वों के

द्वारा की गयी साधना को मुकितदायक समझना चाहिए।

अनुग्रहश्च देव्याश्च कुलमार्गप्रदर्शकः।

दीक्षा कुलात्मिका देवि श्रीगुरोर्मुखपंकजात्॥२३॥

कुलद्रव्येषु या भक्तिः सा मोक्षदायिनी मता।

ज्ञात्वा चैवं प्रयत्नेन कुलज्ञानी भवेद् बुधः॥२४॥

यदि भाग्यवशाद् देवि मन्त्रमेतत् लभ्यते।

मुक्तेश्च कारणं तस्याः स्वयं ज्ञातं न चान्यथा॥२५॥

देवी का अनुग्रह ही कुलमार्ग का प्रदर्शक होता है। हे देवि! गुरुदेव के मुख-कमल से जो दीक्षा मिलती है वह कुलान्तिका होती है। कुलद्रव्यों से जो भक्ति होती है वही मोक्षदायिनी कही गयी है। प्रयत्नपूर्वक ऐसा जानकर बुद्धिमान व्यक्ति को कुलज्ञानी होना चाहिए। भाग्यवश यदि ऐसी मन्त्रदीक्षा किसी को मिलती है तो उसकी मुक्ति का मार्ग स्वयं खुल जाता है, इसमें सन्देह न करें।

अश्रुतं मुक्तितत्त्वं हि कथितं ते महेश्वरि।

आत्मयोनिर्यथा देवि तथा गोप्यं ममाज्ञया॥२६॥

हे महेश्वरि! अब तक न सुने गये मुक्तितत्व को मैंने तुम्हें बताया है। इसे अपनी योनि के समान ही मेरी आज्ञा से सदैव गुप्त रखना।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे नवमः पटलः)

ॐ

10. दशमः पटलः

कामाख्या स्वरूप

श्री देव्युवाच—

कामाख्या या महादेवी कथिता सर्वरूपिणी।
सा का बद जगन्नाथ कपटं मा कुरु प्रभो॥१॥
कुर्यास्तु कपटं नाथ यदि मे शपथस्त्वयि।
रत्तौ का कामिनी योनिं सम्यग् न दर्शयेत् पतिम्॥२॥
श्रुत्वैतत् गिरिजावाक्यं प्रहस्योवाच शंकरः।

श्री देवी बोलीं— हे जगन्नाथ! जो सर्वरूपिणी महादेवी कामाख्या नाम से जानी जाती हैं, वे कौन हैं? हे प्रभो! यह बताइये, कपट मत कीजिये। यदि आप बताने में कपट करते हैं तो आपको मेरी सीगन्ध है। रतिकाल में कौन कामिनी पति को सम्यक् रूप से योनि न दिखाये, अर्थात् रतिकाल में पुरुष को योनि का स्पष्ट दर्शन नहीं करना चाहिए। पार्वती के इस कथन को सुनकर शंकर ने हँसकर कहा।

श्री शंकर उवाच—

शृणु देवि मम प्राणवल्लभे कथयामि ते॥३॥
या देवी कालिका माता सर्वविद्यास्वरूपिणी।
कामाख्या सैव विख्याता सत्यं देवि न चान्यथा॥४॥
सैव ब्रह्मेति जानीहि संज्ञार्थं दर्शनानि च।
विचरन्ति चोत्सुकानि यथा चन्द्र हि वामनः॥५॥

कामाख्या-मन्त्र एवं विभान { 367 }

अस्या हि जायते सर्वं जगदेतच्चराचरम्।
लीयते पुनरस्यां च सन्देहं मा कुरु प्रिये॥६॥

श्री शंकर बोले— हे मेरी प्राणप्रिया देवि! सुनो। मैं तुम्हें बताता हूँ। सर्वविद्यारूपिणी माता कालिका देवी ही ‘कामाख्या’ के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह कथन सत्य है, अन्यथा कोई बात नहीं है। वे ही ‘कामाख्या’ नाम से विख्यात हैं, यह निःसन्देह सत्य है। यज्ञ और दर्शनशास्त्रों में वे ही ‘ब्रह्म’ हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा के विषय में चकोर पक्षी अथवा बौने व्यक्ति उत्सुक रहते हैं वैसे ही दर्शनशास्त्र भी उसके लिए उत्सुक रहते हैं। उस महादेवी से ही सारे चराचर जगत् की उत्पत्ति होती है जो फिर उसी में लय हो जाता है। इस विषय में कोई सन्देह मत करो।

स्थूला सूक्ष्मा परा देवी सच्चिदानन्दरूपिणी।
अमेयविक्रमाख्या सा करुणासागरा मता॥७॥
मुक्तिमयी जगद्वात्री सदानन्दमयी तथा।
विश्वभरी क्रियाशक्तिस्तथा सैव सनातनी॥८॥
यथा कर्मसमाप्तौ च दक्षिणा फलसिद्धिदा।
तथा मुक्तिरसौ देवि सर्वेषां फलदायिनी॥९॥
अतो हि दक्षिणा काली कथ्यते वरवर्णिनि।
कृष्णवर्णा सदा काली आगमेषु च निर्णयः॥१०॥
उक्तानि सर्वतन्त्राणि तथा नान्येति निर्णयः।

सच्चिदानन्द स्वरूपिणी ये देवी तीन रूपों— ‘स्थूला’, ‘सूक्ष्मा’ और ‘परा’ वाली हैं। वे अमेयविक्रमा नाम वाली और अपार दया वाली माँ हैं। वे मुक्तिदायिनी, सकल जगत् का पालन करने वाली और आनन्दमयी हैं। वे ही विश्व का पालन करने वाली क्रियाशक्ति

और सनातनी महादेवी हैं। जिस प्रकार यज्ञादि कर्मों की समाप्ति पर 'दक्षिणा' ही अभीष्ट फलदायिनी होती है, इसी प्रकार यह देवी मुक्तिदायिनी और सबके अभीष्ट फल को देने वाली हैं। इसी से हे वरवर्णिनी! वे "दक्षिणा काली" कही जाती हैं। तन्त्रशास्त्रों का यह निर्णय है कि काली सदा कृष्ण वर्ण की है। सभी तन्त्रों में ऐसा कहा गया है। अन्य कोई बात नहीं, यही निर्णय है।

कृत्वा संकल्पमित्यस्य काम्येषु पाठयेद् बुधः॥११॥
 पठेद् वा पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि।
 तं तं काममवाज्ञोति श्रीमत्कालीप्रसादतः॥१२॥
 यथा स्पर्शमणिर्देवि तथैतत्तन्त्रमुत्तमम्।
 यथा कल्पतरुर्दाता तथा ज्ञेयं मनीषिभिः॥१३॥
 यथा सर्वाणि रत्नानि सागरे सन्ति निश्चितम्।
 तथात्र सिद्ध्यः सर्वाः भुक्तिर्भुक्तिर्वरानने॥१४॥
 सर्वदेवाश्रयो मेरुर्यथा सिद्धिस्तथा पुनः।
 सर्वविद्यायुतं तन्त्रं शपथेन वदाम्यहम्॥१५॥
 यस्य गेहे वसेत् देवि तन्त्रमेतद् भयापहम्।
 रोगशोकपातकानां लेशो नास्ति कदाचन॥१६॥
 तत्र दस्युभयं नास्ति ग्रहराजभयं न च।
 न चोत्पातभयं तस्य न च मारीभयं तथा॥१७॥
 न वा पराजयस्तेषां भयं नैव मयोदितम्।

संकल्प करके जो बुद्धिमान काम्य कर्मों से फल प्राप्ति के लिए इस तन्त्र का पाठ करता या करवाता है अथवा सुनता या सुनवाता है, वह श्री काली की कृपा से उन-उन फलों को प्राप्त करता है।

अर्थात् उसकी वांछित कामनाओं की पूर्ति होती है। हे देवि! स्पर्शमणि के समान यह तन्त्र उत्तम फलदायक है। जिस प्रकार 'कल्पवृक्ष' सभी कामनाओं की पूर्ति करता है उसी प्रकार विद्वान् लोग इस तन्त्र को भी समझें। हे वरानने! जिस प्रकार सारे रत्न समुद्र में रहते हैं, उसी प्रकार इस तन्त्र में समस्त सिद्धियाँ और भोग, मोक्ष निहित हैं। जिस प्रकार सब देवों का आश्रय-स्थल मेरु पर्वत है और सर्वसिद्धि प्रदाता है उसी प्रकार सर्वविद्याओं से युक्त यह तन्त्र सर्वसिद्धि प्रद है। यह मैं सत्य कहता हूँ। हे देवि! जिसके घर में भय को दूर करने वाला यह तन्त्र रहता है वहाँ कभी भी रोग, शोक और पापों का लेशमात्र भी नहीं रहता। वहाँ न डाकुओं का भय रहता है, न ग्रहों का और न ही राजदण्ड का भय रहता है। उस घर में निवास करने वालों को न तो उत्पातों का भय रहता है, न ही महामारी का। उनकी कभी पराजय नहीं होती और न मेरे द्वारा कोई भय रहता है।

भूतप्रेतपिशाचानां दानवानां च रक्षसाम्॥१८॥
 न भयं क्वापि सर्वेषां व्याघ्रादीनां तथैव च।
 कूष्माण्डानां नैव यक्षादीनां भयं न च॥१९॥
 विनायकानां सर्वेषां गन्धर्वानां तथा न च।
 स्वर्गे मत्ये च पाताले ये ये सन्ति भवानकाः॥२०॥
 ये ये विघ्नकराश्चैव न तेषां भयमीश्वरि।
 यमदूताः पलायने विमुखा भयविह्न्ताः॥२१॥
 सत्यं सत्यं महादेवि शपथेन वदाम्यहम्।
 सम्पत्तिरतुला तत्र तिष्ठति साप्तपौरुषम्॥२२॥
 वाणी तथैव देव्यास्तु प्रसादेन तु ईरिता।
 भूत, प्रेत, पिशाच, दानव, राक्षस, व्याघ्र आदि सबका कहीं भी

श्री कामाख्या-रहस्यम् { 370 }

भय नहीं रहता । कूप्पाण्डा, यक्ष आदि, सभी गन्धर्व, तथा तीनों लोकों में जो भी भयानक और विज्ञकारी जीव हैं, उन सबका भय भी उन्हें नहीं रहता । हे महादेवि ! मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ कि यमदूत भी वहाँ से भय से व्याकुल होकर भाग जाते हैं । यह मैं शपथपूर्वक कहता हूँ । अतुल और अचल सम्पत्ति सात पीढ़ियों तक वहाँ विद्यमान रहती है । देवी कामाख्या की कृपा से सरस्वती भी उस घर में सात पीढ़ियों तक बनी रहती है ।

एतत् कथितं स्नेहात् न प्रकाश्यं कदाचन॥२३॥

गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं सदा प्रिये।

पशोरग्रे विशेषेण गोपयेत् प्रयत्नतः॥२४॥

भ्रष्टानां साधकानां च सानिध्ये न वदेदपि।

न दद्यात् काणखञ्जेभ्यो विगीतेभ्यस्तथैव च॥२५॥

हे प्रिये ! यह सब मैंने तुम्हें तुम्हारे स्नेहवश बताया है । यह सदैव गोपनीय है, इसे कभी प्रकट न करें । विशेषतः पशुभाव वाले साधकों से इसे प्रयत्न करके छिपाना चाहिए । भ्रष्ट साधकों के समक्ष भी इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए । इस तन्त्र को काने, लंगड़े, निन्दनीय, कुलचार-त्यागी और विरक्त लोगों के समक्ष नहीं बताना चाहिए ।

उदासीनजनस्यैव सानिध्ये न वदेदपि।

दाम्भिकाय न दातव्यं नाभक्ताय विशेषतः॥२६॥

मूर्खाय भावहीनाय दरिद्राय ममाज्ज्या।

दद्यात् शान्ताय शुद्धाय कौलिकाय महेश्वरि॥२७॥

कालीभक्ताय शैवाय वैष्णवाय शिवाज्ज्या।

अद्वैतभावचुक्ताय महाकालप्रजापिने॥२८॥

सुरास्त्रीवन्द्यकायापि शिवाबलिप्रदाय च।

उदासीन लोगों के समक्ष भी इसे नहीं कहना चाहिए। अहंकारी, भवित्वानि, मूर्ख, भावहीन और दरिद्र को भी नहीं बताना चाहिए। हे महेश्वर! जो शान्त, शुद्ध, अद्वैत भाव से युक्त, कौलिक, काली-भक्त, शैव या वैष्णव, महाकाल का उपासक हो, सुरा सुन्दरी की बन्दना करने वाला हो, विनम्र, शिव स्वरूप और काली को बलि प्रदान करने वाला हो, ऐसे साधक को ही इसे देना चाहिए। यह शिव की (मेरी) आज्ञा है।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे दशमः पटलः)

५८

11. एकादशः पटलः

कामाख्या-पीठ-स्थान

नेपालं च महापीठं, पौगण्डं वर्द्धमानथा।
 पुरस्थिरं महापीठं, चरस्थिरमतः परम्॥१॥
 काश्मीरं च तथा पीठं, कान्यकुब्जमथो भवेत्।
 दारुकेशं महापीठमेकाग्रं च तथा शिवे!॥२॥
 त्रिस्रोतपीठमुद्दिवष्टं, कामकोटमतः परम्।
 कैलासं भृगुनगं च, केदारं पीठमुत्तमम्॥३॥
 श्रीपीठं च तथोंकारं, जालन्धरमतः परम्।
 मालवं च कुलाब्जं च, देवमातृकमेव च॥४॥
 गोकर्णं च तथा पीठं, मारुतेश्वरमेव च।
 अष्टहासं च वीरजं, राजगृहमतः परम्॥५॥
 पीठं कोलगिरिश्चैव, एलापुरमतः परम्।
 कालेश्वरं महापीठं, प्रणवं च जयन्तिका॥६॥
 पीठमुञ्जयिनी चैव, क्षीरिकापीठमेव च।
 हस्तिनापूरकं पीठं, पीठमुद्दीशमेव च॥७॥
 प्रयागं च हि षष्ठीशं, मायापुरं कुलेश्वरि।
 मलयं च महापीठं, श्रीशैलं च तथा प्रिये!॥८॥
 मेरुगिरिः महेन्द्रं च, वामनं च महेश्वरि!।
 हिरण्यपूरकं पीठं, महालक्ष्मीपुरं तथा॥९॥

कामाख्या-मन्त्र एवं विधान { 373 }

उड्डीयानं च महापीठं, काशीपुरमतः परम्।
पीठान्येतानि देवेश! अनन्तफलदायिनि॥१०॥

हे शिवे! अनन्त फल प्रदान करने वाले महापीठ इस प्रकार हैं—

(1) नेपाल (2) पौगण्ड (3) वर्धमान (4) पुरस्थिर (5) चरस्थिर (6) काश्मीर (7) कान्यकुब्ज (8) दारुकेश और (9) एकाम्र— ये नौ साधारण पीठ हैं। इनके बाद पांच अत्यन्त उत्कृष्ट पीठ हैं— (1) त्रिस्रोत (संगम) (2) कामकोट (3) कैलाश पर्वत (4) भृगु पर्वत (5) केदार। दश अन्य पीठ इस प्रकार हैं— (1) ऊँकारेश्वर (2) जालन्धर (3) मालवा (4) कुलाब्ज (5) देवमातृका (6) गोकर्ण (7) मारुतेश्वर (8) अष्टहास (9) वीरज और (10) राजगृह। अन्य पांच महापीठ इस प्रकार हैं— (1) कोलगिरी (2) एलापुर (3) कालेश्वर (4) प्रणव तथा (5) जयन्तिका। अन्य चार पीठ— (1) उज्जयिनी (2) क्षीरिका (3) हस्तिनापुर और (4) उड्डीश। इनके अतिरिक्त बारह अन्य पीठ भी हैं— (1) प्रयाग (2) पष्ठीश (3) मायापुरी (4) कुलेश्वरी (5) मलय पर्वत (6) श्री शैल (7) महेन्द्र पर्वत (8) वामन पर्वत (9) हिरण्यपुर (10) महालक्ष्मी (11) सुमेरु पर्वत और (12) उड्डीयान पीठ। इस प्रकार कुल मिलाकर 45 कामाख्या पीठ हैं। इन सभी पीठों में साधना करने से अनन्त फल प्राप्त होता है।

यत्रास्ति कालिका मूर्तिर्निर्जनस्थानकानने।
बिल्ववनादिकान्तारे, तत्रास्थायाष्टमी दिने॥११॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां, शनिभौमदिने तथा।
महानिशायां देवेश! तत्र सिद्धिरनुत्तमा॥१२॥
अन्यान्यपि च पीठानि, तत्र सन्ति न संशयः।
देवदानवगन्धर्वाः, किनराः प्रमथादयः॥१३॥

यक्षाद्या नायिका: सर्वाः किनर्यश्चामरांगनाः।
 अर्चयन्त्यत्र देवेशीं, पञ्चतत्त्वादिभिः पराम्॥१४॥
 वाराणस्यां सदा पूज्या, शीघ्रं तु फलदायिनी।
 ततस्तु द्विगुणा प्रोक्ता, पुरुषोत्तमसन्निधौ॥१५॥
 ततो हि द्विगुणा प्रोक्ता, द्वारावत्यां विशेषतः।
 नास्ति क्षेत्रेषु तीर्थेषु, पूजा द्वारावती समा॥१६॥

हे देवेश! यदि किसी निर्जन स्थान में, जंगल में, वेल वृक्षों के बन में, या किसी दुर्गम घने जंगल में, जहां भगवती काली की प्रतिमा हो तो किसी कृष्ण पक्ष की अष्टमी, अथवा चतुर्दशी को यदि शनिवार या मंगलवार पड़ता हो तब वहां बैठकर महानिशा में कालिका देवी की साधना करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

भारतवर्ष में अन्य पीठ भी हैं इसमें कोई संशय नहीं है। इन पीठों में देव, दानव, गंधर्व, किन्नर, प्रमथ तथा यक्ष आदि और उनकी सभी नायिकायें, किन्नरियां, देवताओं की स्त्रियां, पंचतत्वों आदि से परा देवी का पूजन करती हैं।

वाराणसी में कामाख्या सदैव पूजनीय है और शीघ्र फल प्रदान करती है। उससे दो गुना फल पुरुषोत्तम तीर्थ में मिलता है। द्वारावती (द्वारिका) में उससे भी दो गुना फल प्राप्त होता है। अन्य क्षेत्रों और तीर्थों में द्वारिका के समान फल नहीं मिलता।

विन्ध्येऽपि षड्गुणा प्रोक्ता, गंगायामपि तत्समा।
 आर्यावर्ते मध्यदेशे, ब्रह्मावर्ते तथैव च॥१७॥
 विन्ध्यवत् फलदा प्रोक्ता, प्रयागे पुष्करे तथा।
 एतच्च द्विगुणं प्रोक्तं, करतोयानदीजले॥१८॥

ततश्चतुर्गुणं प्रोक्तं नदीकुण्डे च भैरवे।
 एतच्चतुर्गुणं प्रोक्तं बल्मीकेश्वरसनिधौ॥१९॥
 यत्र सिद्धेश्वरी योनौ, ततोऽपि द्विगुणा स्मृता।
 ततश्चतुर्गुणा प्रोक्ता लौहित्यनदपयसि॥२०॥

विन्ध्याचल और गंगा किनारे पूजा करने से उँगुना फल प्राप्त होता है। आर्यावर्त, मध्य देश एवं ब्रह्मावर्त में भी सम्पन्न की गयी पूजा विन्ध्य पूजा के समान ही फल प्रदान करती है। प्रयाग और पुष्कर तथा करतोया नदी के जल में की गयी पूजा का फल भी दो उँगुना कहा गया है।

नदीकुण्ड और भैरवकुण्ड में की गयी पूजा का चार उँगुना फल मिलता है। उससे भी चार उँगुना फल बल्मीकेश्वर में मिलता है। जहाँ योनि में सिद्धेश्वरी देवी स्थित है, वहाँ की गयी पूजा पूर्व पूजा से दो उँगुनी फलदायी कही गयी है। उससे चार उँगुना फल लोहित (सोनभद्र) नदी के जल में की गयी पूजा से मिलता है।

तत्समा कामरूपे च सर्वत्रैव जले स्थले।
 देवीपूजा तथा शस्ता, कामरूपे सुरालये॥२१॥
 देवीक्षेत्रे कामरूपं, विद्यते नहि तत्समम्।
 सर्वत्र विद्यते देवी, कामरूपे गृहे गृहे॥२२॥
 ततश्चतुर्गुणं प्रोक्तं, कामाख्या योनिमण्डलम्।
 कामाख्यायां महामाया, सदा तिष्ठति निश्चितम्॥२३॥
 एषु स्थानेषु देवेश! यदि दैवात् गतिर्भवेत्।
 जप पूजादिकं कृत्वा, नत्वा गच्छेत् यथा सुखम्॥२४॥
 कामरूप में जल और स्थल में सभी जगह की गयी पूजा पूर्व

पूजाओं के समान फल देती है। कामरूप में मन्दिर में की गयी पूजा बहुत ही महत्वपूर्ण कही गयी है। देवीक्षेत्र में कामरूप विद्यमान रहता है, उसके समान कोई भी क्षेत्र नहीं है। इस प्रकार देवी कामरूप के घर-घर में विद्यमान रहती है।

कामरूप क्षेत्र की अपेक्षा कामाख्या योनिमण्डल चार गुना फलदायी है। कामाख्या में महामाया सदैव निश्चित रूप से विद्यमान रहती है। हे देवेशि! यदि उक्त स्थान पर कोई संयोगवश पहुंच जाये तो वहां जप, पूजन आदि करके देवी को नमस्कार करके अभीष्ट स्थान को जाना चाहिए।

स्त्रीसमीपे कृता पूजा, जपश्चै वरानने॥
कामरूपाच्छतगुणं, फलं हि समुदीरितम्॥२५॥
अत एव महेशानि! संहतियोषितां प्रिये॥
गृहीत्वा रक्तवसनां, दुष्टां तु वर्जयेत् सुधीः॥२६॥
एकनित्यादिपीठे वा, श्मशाने वरवर्णिनि॥
स्त्रीरूपे हि सदा सन्ति, पीठेऽन्यत्रापि च प्रिये॥२७॥
स्वयंगेषु च महामाया, जागर्ति सततं शिवे॥
देहपीठं महापीठं प्रत्यक्षं दिव्यरूपिणि॥२८॥

हे वरानने! स्त्री के समीप की गयी पूजा और जप का फल कामरूप के प्रभाव की अपेक्षा सी गुना अधिक होता है। अतः हे महेशानि! हे प्रिये! अनुष्ठानों में रक्त वस्त्र धारण करने वाली स्त्री का सहयोग लेना चाहिए। दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री का सहयोग विद्वान साधक कभी न ले।

हे प्रिय सुन्दरि! एकनित्या आदि पीठ में अथवा श्मशान में या अन्य पीठों में स्त्रीरूप में देवी सदा विराजित रहती है। हे शिवे! स्त्रियों

के अंगों में महामाया सदा जाग्रत रहती है। हे दिव्यरुपिणि ! देहपीठ ही महापीठ है, वहां देवी रूप प्रत्यक्ष दिखायी देता है।

भ्रान्त्याऽन्यत्र भ्रमन्ति ये, देशे देशे च मानवाः।

पश्वस्ते (वृषाः सिंहाः शूकराश्च) यथानधे!॥२९॥

हे अनधे ! स्त्री-देह-पीठ को छोड़कर जो मनुष्य भ्रमवश देश-देश में भटकते फिरते हैं, वे पशु (वैल, सिंह और सूअर) के समान ही हैं।

कालीमूर्तिर्यत्र निर्जने विधिने कान्तारे वापि।

कृष्णाष्टमीनिशाभागे कालीं सम्पूज्य पञ्च(भिः)॥३०॥

गुटिकाखंगसिद्धिं च खेचरीसिद्धिमेव च।

यक्षगन्धर्वनागानां नायिकानां महेश्वरि!॥३१॥

भूतवेतालदेवानां कन्यानां सिद्धिमेव च।

जायते परमेशानि! किं पुनः कथयामि ते!॥३२॥

पञ्चतत्त्वविहीनानां सर्वं निष्फलता ब्रजेत्॥३३॥

निर्जन स्थान में, वन या घने जंगल में जहां कहीं भी काली की मूर्ति स्थापित हो, कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रात्रि में पंचतत्वों से काली की पूजा करने से गुटिका-सिद्धि, खड़ग-सिद्धि, खेचरी-सिद्धि, यक्ष-गन्धर्व-नाग-नायिका-भूत-वेताल और कन्याओं की सिद्धि प्राप्त होती है। हे परमेशानि ! इससे अधिक तुमसे क्या कहूं। पंचतत्व के बिना लोगों के सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं।

(इति श्री कामाख्या तन्त्रे शिवपार्वती संवादे एकादशः पटलः)

५६

• • •

-ः श्री योगेश्वरानन्द द्वारा लिखित अन्य ग्रन्थ :-

- श्री बगलामुखी साधना और सिद्धि
- पोडशी महाविद्या (श्री यन्त्र-पूजन पद्धति)
- मन्त्र-साधना

**-ः श्री योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल द्वारा
लिखित अन्य ग्रन्थ :-**

- पट्टकर्म विधान
- आगम रहस्य
- श्री बगलामुखी तन्त्रम्
- श्री प्रत्यगिरा-साधना रहस्य
- यन्त्र-साधना
- श्री कामाख्या रहस्यम्

-ः आगामी ग्रन्थ :-

- अधोरी (प्रेस में)
- जीवन में बाधायें : कारण और निवारण (प्रेस में)
- मन्त्रसिद्धि-रहस्य
- सूर्य आस्था से स्वास्थ्य तक
- महाविद्या श्री तारा साधना और सिद्धि
- श्री धूमावती साधना और सिद्धि
- श्री बगलामुखी नामाचर्ण पद्धति
- श्री महाकाली साधना और सिद्धि



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

